इस्लामी सुविचारात 6

जस्टिस मौलाना मुफ्ती मुहम्मद तकी साहिब उस्मानी
इस्लाही ख़ुतबात

(6)

जस्टिस मौलाना मुफ़्ती
मुहम्मद तक़ी साहिब उस्मानी

अनुवादक
मुहम्मद इमरान क़ासमी एम.ए (अलीग)

प्रकाशक
फरीद बुक डिपो प्रां० लि०
422, मटिया महल, ऊर्दू मार्किट, जामा मस्जिद देहली ६
फोन आफिस, 3289786, 3289159, आवास, 3262486
सर्वाधिकार प्रकाशक के लिए सुरक्षित हैं

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

नाम किताब इस्लाही खुलबात जिल्द (8)
ख़िताब मोलाना मुहम्मद तकी उस्मानी
अनुवादक मुहम्मद इमरान क़ासमी
संयोजक मुहम्मद नासिर ख़ान
tायादाद 2100
p्रकाशन वर्ष दिसंबर 2001
cम्पोजिंग इमरान कम्प्यूटर्स
मुज़फ्फर नगर (0131-442408)

>>>>>>>>>>>>>>>>>

प्रकाशक

फरीद बुक डिपो प्राण लिंग
422, मटिया महल, ऊर्फ बार्किट, जामा मस्जिद देर द नरी 6
फ़ोन आफिस, 3289786,3289159, आवास, 3262486
(49) तौबा गुनाहों का तिर्याक़ 17 - 68
(50) दुरुद शरीफ़ के फज्जाइल 69 - 104
(51) सिलास्वत और नाप-तोल में कमी 105 - 126
(52) भाई भाई बन जाओ 127 - 147
(53) बीमार की इयादत के आदाब 148 - 162
(54) सलाम करने के आदाब 163 - 175
(55) मुसाफ़ा करने के आदाब 176 - 187
(56) छः क़ीमती नसीहतें 188 - 220
(57) मुस्लिम क़ौम आज कहां ख़ड़ी हैं? 221 - 242
<table>
<thead>
<tr>
<th>क्र.स.</th>
<th>क्या?</th>
<th>कहां?</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1.</td>
<td>झुपूरे पाक का सी बार इस्तिगफ़ार करना</td>
<td>17</td>
</tr>
<tr>
<td>2.</td>
<td>गुनाहों के वसूलः सब को आते हैं</td>
<td>18</td>
</tr>
<tr>
<td>3.</td>
<td>यह ख्याल गुलत है</td>
<td>19</td>
</tr>
<tr>
<td>4.</td>
<td>ज्ञानी में तौबा कीजिए</td>
<td>19</td>
</tr>
<tr>
<td>5.</td>
<td>झूँगों की सोहबत का असर</td>
<td>20</td>
</tr>
<tr>
<td>6.</td>
<td>हर बक़़ा नफ़्स की निगरानी ज़रूरी है</td>
<td>21</td>
</tr>
<tr>
<td>7.</td>
<td>एक लकड़—हारे का किस्सा</td>
<td>22</td>
</tr>
<tr>
<td>8.</td>
<td>नफ़्स भी एक अज्ञदा है</td>
<td>22</td>
</tr>
<tr>
<td>9.</td>
<td>गुनाहों का तिर्यक्त इस्तिगफ़ार और तौबा</td>
<td>23</td>
</tr>
<tr>
<td>10.</td>
<td>कुदरत का अजीब करिमा</td>
<td>24</td>
</tr>
<tr>
<td>11.</td>
<td>जमीन के ख़तीफ़ा को तिर्यक्त देकर भेजा</td>
<td>25</td>
</tr>
<tr>
<td>12.</td>
<td>तौबा तीन चीज़ों का मज़ूमआ है</td>
<td>26</td>
</tr>
<tr>
<td>13.</td>
<td>&quot;किरामन् कातिबीन&quot; में एक अमीर एक मामूर</td>
<td>27</td>
</tr>
<tr>
<td>14.</td>
<td>अगर तू सी बार तौबा तोड़े फिर भी वापस आ</td>
<td>28</td>
</tr>
<tr>
<td>15.</td>
<td>रात को सोने से पहले तौबा कर लिया करो</td>
<td>28</td>
</tr>
<tr>
<td>16.</td>
<td>गुनाह का अन्देशा इरादे के मनाफी नहीं</td>
<td>29</td>
</tr>
<tr>
<td>17.</td>
<td>मायूस मत हो जाओ</td>
<td>30</td>
</tr>
<tr>
<td>18.</td>
<td>शैतान मायूसी पैदा करता है</td>
<td>31</td>
</tr>
<tr>
<td>19.</td>
<td>ऐसी तैसी मेरे गुनाहों की</td>
<td>31</td>
</tr>
<tr>
<td>20.</td>
<td>इस्तिगफ़ार का मतलब</td>
<td>32</td>
</tr>
<tr>
<td>21.</td>
<td>क्या ऐसा शक्षस मायूस हो जाये?</td>
<td>32</td>
</tr>
<tr>
<td>22.</td>
<td>हराम रोजगार वाला शक्स क्या करे?</td>
<td>33</td>
</tr>
<tr>
<td>23.</td>
<td>तौबा नहीं, इस्तिगफ़ार करे</td>
<td>34</td>
</tr>
<tr>
<td>क्र.स.</td>
<td>कथा?</td>
<td>कहाँ?</td>
</tr>
<tr>
<td>-------</td>
<td>-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------</td>
<td>-------</td>
</tr>
<tr>
<td>24.</td>
<td>इस्तिगफार के बेहतरीन अल्फाज़</td>
<td>35</td>
</tr>
<tr>
<td>25.</td>
<td>सधिदुल इस्तिगफार</td>
<td>36</td>
</tr>
<tr>
<td>26.</td>
<td>बेहतरीन हदीस</td>
<td>37</td>
</tr>
<tr>
<td>27.</td>
<td>इन्सान के अन्दर गुनाह की सलाहियत पैदा की</td>
<td>37</td>
</tr>
<tr>
<td>28.</td>
<td>यह कृपियाँ का कमाल नहीं</td>
<td>38</td>
</tr>
<tr>
<td>29.</td>
<td>जन्मत की लज़बते सिफ़ू इन्सान के लिए हैं</td>
<td>39</td>
</tr>
<tr>
<td>30.</td>
<td>कुफ़र भी हिकमत से ख़ाली नहीं</td>
<td>39</td>
</tr>
<tr>
<td>31.</td>
<td>दुनिया की रहस्यंते और गुनाह ईधन हैं</td>
<td>40</td>
</tr>
<tr>
<td>32.</td>
<td>ईमान की मिलास</td>
<td>40</td>
</tr>
<tr>
<td>33.</td>
<td>गुनाह पैदा करने की हिकमत</td>
<td>41</td>
</tr>
<tr>
<td>34.</td>
<td>तीव्र के ज़रिये दर्ज़ों की बुलंदी</td>
<td>41</td>
</tr>
<tr>
<td>35.</td>
<td>हज़रत मुआविया रज़ि. का वाकिफ़</td>
<td>42</td>
</tr>
<tr>
<td>36.</td>
<td>वर्ना दूसरी नस्भूक पैदा कर देंगे</td>
<td>43</td>
</tr>
<tr>
<td>37.</td>
<td>गुनाह से बचना लाज़मी फर्ज़ है</td>
<td>44</td>
</tr>
<tr>
<td>38.</td>
<td>बीमारी के ज़रिये दर्ज़ों की बुलंदी</td>
<td>44</td>
</tr>
<tr>
<td>39.</td>
<td>तीव्र व इस्तिगफार की तीन किस्में</td>
<td>45</td>
</tr>
<tr>
<td>40.</td>
<td>तीव्र का मुक्कमल होना</td>
<td>45</td>
</tr>
<tr>
<td>41.</td>
<td>मुख़स्सर तीव्र</td>
<td>46</td>
</tr>
<tr>
<td>42.</td>
<td>तफ़सीली तीव्र</td>
<td>46</td>
</tr>
<tr>
<td>43.</td>
<td>नमाज का हिसाब लगाए</td>
<td>47</td>
</tr>
<tr>
<td>44.</td>
<td>एक वसीयत नामा लिख ले</td>
<td>48</td>
</tr>
<tr>
<td>45.</td>
<td>क़ज़ा-ए-उमरी की अदायगी</td>
<td>49</td>
</tr>
<tr>
<td>46.</td>
<td>गुनाहों के बजाए क़ज़ा नमाज़ पढ़ना दुरुस्त नहीं</td>
<td>50</td>
</tr>
<tr>
<td>47.</td>
<td>क़ज़ा रोज़ों का हिसाब और वसीयत</td>
<td>50</td>
</tr>
<tr>
<td>48.</td>
<td>वाज़िब ज़कात का हिसाब और वसीयत</td>
<td>50</td>
</tr>
<tr>
<td>49.</td>
<td>बद्दों के हुक़ूक अदा करे या माफ़ कराये</td>
<td>51</td>
</tr>
<tr>
<td>50.</td>
<td>आशिर्वाद की फ़िक्र करने वालों का हाल</td>
<td>52</td>
</tr>
<tr>
<td>क्र.स.</td>
<td>क्या?</td>
<td>कहाँ?</td>
</tr>
<tr>
<td>-------</td>
<td>----------------------------------------------------------------------</td>
<td>-------</td>
</tr>
<tr>
<td>51.</td>
<td>पाँचों के हुएक बाकी रह जायें तो?</td>
<td>52.</td>
</tr>
<tr>
<td>52.</td>
<td>अल्लाह के मग़फ़िस्त फरमाने का अजीब वाक़िया</td>
<td>53.</td>
</tr>
<tr>
<td>53.</td>
<td>पिछले गुप्ते भुला दो</td>
<td>55.</td>
</tr>
<tr>
<td>54.</td>
<td>याद आने पर इस्तिमफ़ार कर लो</td>
<td>55.</td>
</tr>
<tr>
<td>55.</td>
<td>मौजूदा हालत (वर्तमान) को दुरुस्त कर लो</td>
<td>56.</td>
</tr>
<tr>
<td>56.</td>
<td>बेहतरीन जमाना</td>
<td>57.</td>
</tr>
<tr>
<td>57.</td>
<td>हज़रात ताबीई की एहतियात और उर</td>
<td>58.</td>
</tr>
<tr>
<td>58.</td>
<td>हदीसः बयान करने में एहतियात करनी चाहिए</td>
<td>59.</td>
</tr>
<tr>
<td>59.</td>
<td>शैतान की बात दुरुस्त थी, लेकिन......</td>
<td>60.</td>
</tr>
<tr>
<td>60.</td>
<td>मैं आदम (अल्लाहुअल्लाह) से बेहतर हूँ</td>
<td>61.</td>
</tr>
<tr>
<td>61.</td>
<td>अल्लाह तअ़ाला से मोहत मांग ली</td>
<td>61.</td>
</tr>
<tr>
<td>62.</td>
<td>शैतानः बड़ा बुजुर्ग था</td>
<td>61.</td>
</tr>
<tr>
<td>63.</td>
<td>मैं मौत तक उसका बहकाता रहूँगा</td>
<td>62.</td>
</tr>
<tr>
<td>64.</td>
<td>मैं मौत तक तौबा क़ुरूल करता रहूँगा</td>
<td>62.</td>
</tr>
<tr>
<td>65.</td>
<td>शैतानः एक आज़माईश है</td>
<td>63.</td>
</tr>
<tr>
<td>66.</td>
<td>बेहतरीन गुप्तहार बन जाओ</td>
<td>63.</td>
</tr>
<tr>
<td>67.</td>
<td>अल्लाहः की रहमत के सी हिस्से हैं</td>
<td>64.</td>
</tr>
<tr>
<td>68.</td>
<td>उस जात से मायूसी कैसी?</td>
<td>65.</td>
</tr>
<tr>
<td>69.</td>
<td>सिफ़ूर तमन्ना करना काफ़ी नहीं</td>
<td>65.</td>
</tr>
<tr>
<td>70.</td>
<td>एक शक्सः का अजीब वाक़िया</td>
<td>66.</td>
</tr>
</tbody>
</table>

(50) दुरुदः शरीफः के फ़ज़ाइल

1. इन्सानियतः के सब से बड़े मुहिसन                                69.    
2. मैं तुम्हें आगः से रोक रहा हूँ                                 70.    
3. अल्लाह तअ़ाला भी इस अमलः में शरीक हैं                       71.    
4. बद़ा किस तरह दुरुदः मेरे?                                    72.    
5. हज़ूर सल्लाल्लाहु अल्लाहः अल्लाहः व सल्लमः का मर्तबा। अल्लाह तअ़ाला ही जानते हैं 73.
<table>
<thead>
<tr>
<th>क्र.स.</th>
<th>क्या?</th>
<th>कहाँ?</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>6.</td>
<td>यह दुआ सौ फौसद कुबूल होगी</td>
<td>74</td>
</tr>
<tr>
<td>7.</td>
<td>दुआ करने का अदब</td>
<td>74</td>
</tr>
<tr>
<td>8.</td>
<td>दुरुद शरीफ पर अज्ञ व सवाब</td>
<td>75</td>
</tr>
<tr>
<td>9.</td>
<td>दुरुद शरीफ फजाईल का मजमूआ है</td>
<td>76</td>
</tr>
<tr>
<td>10.</td>
<td>दुरुद शरीफ न पढ़ने पर वईद</td>
<td>76</td>
</tr>
<tr>
<td>11.</td>
<td>बहुत ही मुख़स्सर दुरुद शरीफ</td>
<td>78</td>
</tr>
<tr>
<td>12.</td>
<td>सत्क़म या &quot;साद&quot; लिखना दुरुदः नहीं</td>
<td>78</td>
</tr>
<tr>
<td>13.</td>
<td>दुरुद शरीफ लिखने का सवाब</td>
<td>79</td>
</tr>
<tr>
<td>14.</td>
<td>मुहदिसीने इज़ाम मुक़र्रब बन्दे हैं</td>
<td>79</td>
</tr>
<tr>
<td>15.</td>
<td>फरिश्ते रहमत की दुआ करते हैं</td>
<td>80</td>
</tr>
<tr>
<td>16.</td>
<td>दस रहमतें, दस बार सलामती</td>
<td>80</td>
</tr>
<tr>
<td>17.</td>
<td>दुरुद शरीफ पहुँचाने वाले फरिश्ते</td>
<td>81</td>
</tr>
<tr>
<td>18.</td>
<td>मे खुद दुरुद सुनता हं</td>
<td>81</td>
</tr>
<tr>
<td>19.</td>
<td>दुख और परेशानी के बज़ात दुरुद शरीफ पढ़ें</td>
<td>82</td>
</tr>
<tr>
<td>20.</td>
<td>दुजूरे अक्सर सल्ल. की दुआयें हासिल करें</td>
<td>82</td>
</tr>
<tr>
<td>21.</td>
<td>दुरुद शरीफ के अलफाज़ क्या हों?</td>
<td>84</td>
</tr>
<tr>
<td>22.</td>
<td>मन घड़त दुरुद शरीफ न पढ़ें</td>
<td>84</td>
</tr>
<tr>
<td>23.</td>
<td>नालैन मुबारक का नव़शा और उसकी फ़ज़ीलत</td>
<td>85</td>
</tr>
<tr>
<td>24.</td>
<td>दुरुद शरीफ का हुक्कम</td>
<td>85</td>
</tr>
<tr>
<td>25.</td>
<td>वाजिब और पूज़ में पूर्ण</td>
<td>86</td>
</tr>
<tr>
<td>26.</td>
<td>हर बार दुरुद शरीफ पढ़ना चाहिये</td>
<td>86</td>
</tr>
<tr>
<td>27.</td>
<td>वुज़ू के दौरान दुरुद शरीफ पढ़ना</td>
<td>87</td>
</tr>
<tr>
<td>28.</td>
<td>जब हाथ पांव सुन हो जायें</td>
<td>87</td>
</tr>
<tr>
<td>29.</td>
<td>मस्जिद में दाखिल होते और निकलते बक़्त</td>
<td>88</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>दुरुद शरीफ</td>
<td>88</td>
</tr>
<tr>
<td>30.</td>
<td>इन दुआओं की हिकमत</td>
<td>88</td>
</tr>
<tr>
<td>31.</td>
<td>आहम बात से पहले दुरुद शरीफ</td>
<td>90</td>
</tr>
<tr>
<td>क्र.स.</td>
<td>क्या?</td>
<td>कहां?</td>
</tr>
<tr>
<td>-------</td>
<td>----------------------------------------------------------------------</td>
<td>-------</td>
</tr>
<tr>
<td>32.</td>
<td>गुस्से के बजत दुरूद शरीफ पढ़ना</td>
<td>91</td>
</tr>
<tr>
<td>33.</td>
<td>सोने से पहले दुरूद शरीफ पढ़ना</td>
<td>92</td>
</tr>
<tr>
<td>34.</td>
<td>रोजाना तीन सौ बार दुरूद शरीफ</td>
<td>93</td>
</tr>
<tr>
<td>35.</td>
<td>दुरूद शरीफ मुहब्बत बदायीने का जारिया</td>
<td>93</td>
</tr>
<tr>
<td>36.</td>
<td>दुरूद शरीफ दीदारे रसूल का सबब</td>
<td>94</td>
</tr>
<tr>
<td>37.</td>
<td>जागते में हुजूरे पाक की जियारत</td>
<td>95</td>
</tr>
<tr>
<td>38.</td>
<td>हुजूरे पाक की जियारत का तरीका</td>
<td>95</td>
</tr>
<tr>
<td>39.</td>
<td>हज़रत मुफ्ती साहिब रह. का मैलान</td>
<td>96</td>
</tr>
<tr>
<td>40.</td>
<td>हज़रत मुफ्ती साहिब रहतुसलाहिं अलेहि और रोजा–ए-अक्दस की जियारत</td>
<td>96</td>
</tr>
<tr>
<td>41.</td>
<td>असल चीज सुन्नत की इतिहा है</td>
<td>97</td>
</tr>
<tr>
<td>42.</td>
<td>दुरूद शरीफ में नये तरीके ईजाद करना</td>
<td>98</td>
</tr>
<tr>
<td>43.</td>
<td>यह तरीका बिदर्शत है</td>
<td>98</td>
</tr>
<tr>
<td>44.</td>
<td>नमाज में दुरूद शरीफ की कैफ़ियत</td>
<td>99</td>
</tr>
<tr>
<td>45.</td>
<td>क्या दुरूद शरीफ के बजत हुजूरे पाक तशरीफ लाते हैं?</td>
<td>100</td>
</tr>
<tr>
<td>46.</td>
<td>हदिया देने का अदब</td>
<td>101</td>
</tr>
<tr>
<td>47.</td>
<td>यह गलत अकीदा है</td>
<td>101</td>
</tr>
<tr>
<td>48.</td>
<td>आहिस्ता और अदब के नाथ दुरूद शरीफ पढ़े</td>
<td>102</td>
</tr>
<tr>
<td>49.</td>
<td>खाली जेहन होकर सोचिये</td>
<td>103</td>
</tr>
<tr>
<td>50.</td>
<td>तुम बहरे को नहीं पुकार रहे हो</td>
<td>103</td>
</tr>
</tbody>
</table>

(51) मिलावट और नाप तोल में कमी

<table>
<thead>
<tr>
<th>नंबर</th>
<th>मुद्दा</th>
<th>पृष्ठ</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1</td>
<td>कम तौलना एक बड़ा गुनाह</td>
<td>105</td>
</tr>
<tr>
<td>2</td>
<td>आयतों का तर्जुमा</td>
<td>106</td>
</tr>
<tr>
<td>3</td>
<td>शुआब अलेहिसलाम की कौम का जुबाह</td>
<td>107</td>
</tr>
<tr>
<td>4</td>
<td>शुआब अलेहिसलाम की कौम पर अजाब</td>
<td>108</td>
</tr>
<tr>
<td>5</td>
<td>ये आग के अंगारे हैं</td>
<td>109</td>
</tr>
<tr>
<td>क्र.स.</td>
<td>क्या?</td>
<td>कहाँ?</td>
</tr>
<tr>
<td>-------</td>
<td>----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------</td>
<td>-------</td>
</tr>
<tr>
<td>6.</td>
<td>उत्तर: कम देना गुनाह है</td>
<td>109</td>
</tr>
<tr>
<td>7.</td>
<td>मज़बूत को मज़बूती फौरन दे दो</td>
<td>110</td>
</tr>
<tr>
<td>8.</td>
<td>नौकर को खाना कैसा दिया जाये?</td>
<td>110</td>
</tr>
<tr>
<td>9.</td>
<td>नौकरी के बक़्रों में डंडी मारना</td>
<td>111</td>
</tr>
<tr>
<td>10.</td>
<td>एक-एक मिनट का हिसाब होगा</td>
<td>111</td>
</tr>
<tr>
<td>11.</td>
<td>दारुल उलूम देवबन्द के उस्ताज़ हज़रत</td>
<td>112</td>
</tr>
<tr>
<td>12.</td>
<td>तनख़वाह हराम होगी</td>
<td>113</td>
</tr>
<tr>
<td>13.</td>
<td>सरकारी दफ़्तरों का हाल</td>
<td>113</td>
</tr>
<tr>
<td>14.</td>
<td>अल्लाह ताबाला के हुकूक में कोताही</td>
<td>114</td>
</tr>
<tr>
<td>15.</td>
<td>मिलावट करना हक़ तल्फ़ी है</td>
<td>115</td>
</tr>
<tr>
<td>16.</td>
<td>अगर शोक विक्रेता मिलावट करे?</td>
<td>115</td>
</tr>
<tr>
<td>17.</td>
<td>ख़ूर्दार के सामने बज़ाहत कर दे</td>
<td>115</td>
</tr>
<tr>
<td>18.</td>
<td>ऐब के बारे में ग्राहक को बता दे</td>
<td>116</td>
</tr>
<tr>
<td>19.</td>
<td>धोखा देने वाला हम में से नहीं</td>
<td>116</td>
</tr>
<tr>
<td>20.</td>
<td>इमाम अबु हनीफा रह. की दियानतदारी</td>
<td>117</td>
</tr>
<tr>
<td>21.</td>
<td>आज हमारा हाल</td>
<td>118</td>
</tr>
<tr>
<td>22.</td>
<td>बीवी के हुकूक में कोताही गुनाह है</td>
<td>118</td>
</tr>
<tr>
<td>23.</td>
<td>मेहर माफ़ कराना हक़ तल्फ़ी है</td>
<td>119</td>
</tr>
<tr>
<td>24.</td>
<td>ख़र्च में कमी हक़ तल्फ़ी है</td>
<td>120</td>
</tr>
<tr>
<td>25.</td>
<td>यह हमारे गुनाहों का पुलाल है</td>
<td>120</td>
</tr>
<tr>
<td>26.</td>
<td>हराम पैसों का नतीजा</td>
<td>121</td>
</tr>
<tr>
<td>27.</td>
<td>अज़ाब का सबब गुनाह है</td>
<td>122</td>
</tr>
<tr>
<td>28.</td>
<td>यह अज़ाब सब को अपनी लपेट में ले लेगा</td>
<td>123</td>
</tr>
<tr>
<td>29.</td>
<td>गैर मुसलमानों की तरफ़ का सबब</td>
<td>123</td>
</tr>
<tr>
<td>30.</td>
<td>मुसलमानों की खुशसियत</td>
<td>124</td>
</tr>
<tr>
<td>31.</td>
<td>ख़ुलासा</td>
<td>125</td>
</tr>
<tr>
<td>क्र.स.</td>
<td>क्या?</td>
<td>कहाँ?</td>
</tr>
<tr>
<td>---</td>
<td>---</td>
<td>---</td>
</tr>
<tr>
<td>1.</td>
<td>आयत का मतलब</td>
<td>127</td>
</tr>
<tr>
<td>2.</td>
<td>झगड़े दीन को मूंडने वाले हैं</td>
<td>127</td>
</tr>
<tr>
<td>3.</td>
<td>बातिन को तबाह करने वाली चीजें</td>
<td>128</td>
</tr>
<tr>
<td>4.</td>
<td>अल्लाह की बारगाह में आमाल की पेशी</td>
<td>129</td>
</tr>
<tr>
<td>5.</td>
<td>वह शर्मा रोक लिया जाए</td>
<td>129</td>
</tr>
<tr>
<td>6.</td>
<td>बुग्रूजा से कुफ्र का अन्देशा</td>
<td>130</td>
</tr>
<tr>
<td>7.</td>
<td>शाबे बराबर में भी मस्फिरत नहीं होगी</td>
<td>130</td>
</tr>
<tr>
<td>8.</td>
<td>बुग्रूजा की हकीकत</td>
<td>131</td>
</tr>
<tr>
<td>9.</td>
<td>हसद और कीने का बेहतरीन इलाज</td>
<td>131</td>
</tr>
<tr>
<td>10.</td>
<td>दुश्मनों पर रहम, नबी की सीरत</td>
<td>132</td>
</tr>
<tr>
<td>11.</td>
<td>झगड़ा इत्म का नूर क्षति कर देता है</td>
<td>133</td>
</tr>
<tr>
<td>12.</td>
<td>हज़रत थानवी रह. की कुब्वते कलाम</td>
<td>134</td>
</tr>
<tr>
<td>13.</td>
<td>मुनाजरे से आम तौर पर फायदा नहीं होता</td>
<td>135</td>
</tr>
<tr>
<td>14.</td>
<td>जनने में घर की ज्ञानत</td>
<td>136</td>
</tr>
<tr>
<td>15.</td>
<td>झगड़ों के नतीजे</td>
<td>136</td>
</tr>
<tr>
<td>16.</td>
<td>झगड़े किस तरह ख़त्म हों?</td>
<td>137</td>
</tr>
<tr>
<td>17.</td>
<td>उम्मीदें भत रखो</td>
<td>138</td>
</tr>
<tr>
<td>18.</td>
<td>बदला लेने की नियत मत रखो</td>
<td>138</td>
</tr>
<tr>
<td>19.</td>
<td>हज़रत मुफ़्ती साहिब रह. की अजीम कुर्बानी</td>
<td>139</td>
</tr>
<tr>
<td>20.</td>
<td>मुक़े इस में बर्कत नज़र नहीं आती</td>
<td>140</td>
</tr>
<tr>
<td>21.</td>
<td>सुलह कराना सदृश है</td>
<td>141</td>
</tr>
<tr>
<td>22.</td>
<td>इस्लाम का करिस्मा</td>
<td>143</td>
</tr>
<tr>
<td>23.</td>
<td>ऐसा शर्म झूठा नहीं</td>
<td>143</td>
</tr>
<tr>
<td>24.</td>
<td>खुला झूठ जायज़ नहीं</td>
<td>144</td>
</tr>
<tr>
<td>25.</td>
<td>ज़बान से अच्छी बात निकालो</td>
<td>145</td>
</tr>
<tr>
<td>क्र. स.</td>
<td>क्या?</td>
<td>कहाँ?</td>
</tr>
<tr>
<td>-------</td>
<td>----------------------------------------------------------------------</td>
<td>--------</td>
</tr>
<tr>
<td>26.</td>
<td>सुलह कराने की आहिमियत</td>
<td>145</td>
</tr>
<tr>
<td>27.</td>
<td>एक सहाबी का बाकिया</td>
<td>145</td>
</tr>
<tr>
<td>28.</td>
<td>सहाबा—ए—किराम रज़ियल्लाहु अल्लूम की हालत</td>
<td>146</td>
</tr>
</tbody>
</table>

(53) बीमार की इयादत के आदाब

<table>
<thead>
<tr>
<th>विषय</th>
<th>पृष्ठ</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1. सात बातें</td>
<td>148</td>
</tr>
<tr>
<td>2. बीमार पुरस्सी एक इबादत</td>
<td>149</td>
</tr>
<tr>
<td>3. सुन्नत की नियम से बीमार पुरस्सी करें</td>
<td>149</td>
</tr>
<tr>
<td>4. जैती निर्धारत</td>
<td>150</td>
</tr>
<tr>
<td>5. सिला रहमी की हरीकृत</td>
<td>151</td>
</tr>
<tr>
<td>6. बीमार पुरस्सी की फ़ज़ीलत</td>
<td>152</td>
</tr>
<tr>
<td>7. सत्तर हज़ार फ़रिश्तों की दुआ हासिल करें</td>
<td>153</td>
</tr>
<tr>
<td>8. अगर बीमार से नाराजगी हो तो</td>
<td>153</td>
</tr>
<tr>
<td>9. मुख्तसर इयादत करें</td>
<td>153</td>
</tr>
<tr>
<td>10. यह तरीका सुन्नत के खिलाफ है</td>
<td>154</td>
</tr>
<tr>
<td>11. हज़रत अबुदुल्लाह बिन मुबारक रह. का एक बाकिया</td>
<td>155</td>
</tr>
<tr>
<td>12. इयादत के लिये मुनासिब वक़्त का चयन करो</td>
<td>156</td>
</tr>
<tr>
<td>13. वे तकल्लूफ दोस्त इयादा देर वेल सकता है</td>
<td>157</td>
</tr>
<tr>
<td>14. मरीज के हक में दुआ करो</td>
<td>157</td>
</tr>
<tr>
<td>15. &quot;बीमारी&quot; गुनाहों से पाकी का ज़रिया है</td>
<td>158</td>
</tr>
<tr>
<td>16. शिफ़ा हासिल करने का एक अमल</td>
<td>159</td>
</tr>
<tr>
<td>17. हर बीमारी से शिफ़ा</td>
<td>159</td>
</tr>
<tr>
<td>18. इयादत के वक़्त नुक़्ता—ए—नज़र बदल लो</td>
<td>160</td>
</tr>
<tr>
<td>19. दीन किस चीज का नाम है</td>
<td>161</td>
</tr>
<tr>
<td>20. इयादत के वक़्त हंदिया ते जाना</td>
<td>161</td>
</tr>
<tr>
<td>क्र.स.</td>
<td>क्या?</td>
</tr>
<tr>
<td>-------</td>
<td>-----------------------------------------------------------------------</td>
</tr>
<tr>
<td>1.</td>
<td>सात बातों का हुक्म</td>
</tr>
<tr>
<td>2.</td>
<td>सलाम करने का फायदा</td>
</tr>
<tr>
<td>3.</td>
<td>सलाम अल्लाह का अतीया है</td>
</tr>
<tr>
<td>4.</td>
<td>सलाम करने का अज व सवाब</td>
</tr>
<tr>
<td>5.</td>
<td>सलाम के वक्त यह नियत कर लें</td>
</tr>
<tr>
<td>6.</td>
<td>नमाज़ में सलाम फेरते वक्त की नियत</td>
</tr>
<tr>
<td>7.</td>
<td>जवाब सलाम से बढ़ कर होना चाहिए</td>
</tr>
<tr>
<td>8.</td>
<td>मज्लिस में एक बार सलाम करना</td>
</tr>
<tr>
<td>9.</td>
<td>इन मीकों पर सलाम करना जायज़ नहीं</td>
</tr>
<tr>
<td>10.</td>
<td>दूसरे के जरिये सलाम भेजना</td>
</tr>
<tr>
<td>11.</td>
<td>सिर्फ़ सलाम का जवाब वाजिब है</td>
</tr>
<tr>
<td>12.</td>
<td>गैर मुस्लिमों को सलाम करने का तरीका</td>
</tr>
<tr>
<td>13.</td>
<td>एक यहूदी का सलाम करने का वाकिफ</td>
</tr>
<tr>
<td>14.</td>
<td>जहांं तक हो सके नर्मी करना चाहिए</td>
</tr>
<tr>
<td>15.</td>
<td>सलाम एक दुआ</td>
</tr>
<tr>
<td>16.</td>
<td>हज़रत मारुफ़ करसी रह. की हालत</td>
</tr>
<tr>
<td>17.</td>
<td>हज़रत मारुफ़ करसी रह. का एक वाकिफ</td>
</tr>
<tr>
<td>18.</td>
<td>&quot;शुक्रिया&quot; के बजाए &quot;जज़ाकुमुल्लाह&quot; कहना चाहिए</td>
</tr>
<tr>
<td>19.</td>
<td>सलाम का जवाब बुलंद आवाज से देना चाहिए</td>
</tr>
</tbody>
</table>

(55) मुसाफ़ा करने के आदाब

<table>
<thead>
<tr>
<th>क्र.स.</th>
<th>क्या?</th>
<th>कहाँ?</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1.</td>
<td>हुज़ूर सल्ल. के खादिमे ख़ास हज़रत अनस रज़ि.</td>
<td>176</td>
</tr>
<tr>
<td>2.</td>
<td>हुज़ूर सल्ल. की शफकत</td>
<td>177</td>
</tr>
<tr>
<td>क्र.स.</td>
<td>क्या?</td>
<td>कहाँ?</td>
</tr>
<tr>
<td>-------</td>
<td>----------------------------------------------------------------------</td>
<td>-------</td>
</tr>
<tr>
<td>3.</td>
<td>हुजूरे सल्ल. से दुआओं का हासिल करना</td>
<td>177</td>
</tr>
<tr>
<td>4.</td>
<td>हदीस का तर्जुमा</td>
<td>178</td>
</tr>
<tr>
<td>5.</td>
<td>हुजूरे अवबद्ध सल्ल. और तवाजो</td>
<td>178</td>
</tr>
<tr>
<td>6.</td>
<td>हुजूरे सल्ल. के मुसाफ़ा करने का अन्दाज</td>
<td>179</td>
</tr>
<tr>
<td>7.</td>
<td>दोनों हाथों से मुसाफ़ा करना सुनन्त है</td>
<td>180</td>
</tr>
<tr>
<td>8.</td>
<td>एक हाथ से मुसाफ़ा करना सुनन्त के ख़िलाफ है</td>
<td>180</td>
</tr>
<tr>
<td>9.</td>
<td>मौका देख कर मुसाफ़ा किया जाए</td>
<td>181</td>
</tr>
<tr>
<td>10.</td>
<td>यह मुसाफ़े का मौका नहीं</td>
<td>182</td>
</tr>
<tr>
<td>11.</td>
<td>मुसाफ़े का मक्कद &quot;मुहब्बत का ईज़हार करना&quot;</td>
<td>182</td>
</tr>
<tr>
<td>12.</td>
<td>उस वक्त मुसाफ़ा करना गुनाह है</td>
<td>183</td>
</tr>
<tr>
<td>13.</td>
<td>यह तो दुसरी है</td>
<td>183</td>
</tr>
<tr>
<td>14.</td>
<td>अकीदत की इतिहास का वाकिया</td>
<td>183</td>
</tr>
<tr>
<td>15.</td>
<td>मुसाफ़ा करने से गुनाह झड़ते है</td>
<td>184</td>
</tr>
<tr>
<td>16.</td>
<td>मुसाफ़ा करने का एक अदब</td>
<td>185</td>
</tr>
<tr>
<td>17.</td>
<td>मुलाकात का एक अदब</td>
<td>186</td>
</tr>
<tr>
<td>18.</td>
<td>इहादत करने का अजीब वाकिया</td>
<td>186</td>
</tr>
</tbody>
</table>

(56) छ: कीमती नसीहतें

<table>
<thead>
<tr>
<th>क्र.स.</th>
<th>क्या?</th>
<th>कहाँ?</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>1.</td>
<td>हुजूरे अवबद्ध सल्ल. से पहली मुलाकात</td>
<td>188</td>
</tr>
<tr>
<td>2.</td>
<td>सलाम का जवाब देने का तरीका</td>
<td>189</td>
</tr>
<tr>
<td>3.</td>
<td>दोनों पर जवाब देना वाजिब है</td>
<td>190</td>
</tr>
<tr>
<td>4.</td>
<td>शरीआत में अलफाज़ भी मक्तूद है</td>
<td>190</td>
</tr>
<tr>
<td>5.</td>
<td>सलाम करना मुसलमानों का शिकायत है</td>
<td>191</td>
</tr>
<tr>
<td>6.</td>
<td>एक सहाबी का वाकिया</td>
<td>192</td>
</tr>
<tr>
<td>7.</td>
<td>इतिहा-ए-सुनन्त पर अज़ व सवाब</td>
<td>192</td>
</tr>
<tr>
<td>8.</td>
<td>हज़रत अबू बक़र और हज़रत उमर</td>
<td>192</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>रज़ियस्लाहु अल्रहमा के तहज़्जुद का वाकिया</td>
<td>193</td>
</tr>
<tr>
<td>9.</td>
<td>हमारे बताए हुए तरीकों के मुताबिक अमल करो</td>
<td>194</td>
</tr>
<tr>
<td>क्र.स.</td>
<td>क्या?</td>
<td>कहा?</td>
</tr>
<tr>
<td>-------</td>
<td>----------------------------------------------------------------------</td>
<td>-------</td>
</tr>
<tr>
<td>10.</td>
<td>मैं सच्चे खुदा का रसूल हूं</td>
<td>195</td>
</tr>
<tr>
<td>11.</td>
<td>बड़ी से नसीहत तलब करनी चाहिए</td>
<td>196</td>
</tr>
<tr>
<td>12.</td>
<td>पहली नसीहत</td>
<td>197</td>
</tr>
<tr>
<td>13.</td>
<td>हज़रत सिद्दीके अकबर रज़ि. का एक वाक़िया</td>
<td>197</td>
</tr>
<tr>
<td>14.</td>
<td>इस नसीहत पर ज़िन्दगी भर अमल किया</td>
<td>198</td>
</tr>
<tr>
<td>15.</td>
<td>अमल को बुरा कहो, ज़ात को बुरा न कहो</td>
<td>198</td>
</tr>
<tr>
<td>16.</td>
<td>एक चरवाहे का अजीब वाक़िया</td>
<td>199</td>
</tr>
<tr>
<td>17.</td>
<td>बकरियां वापस करके आओ</td>
<td>201</td>
</tr>
<tr>
<td>18.</td>
<td>उसको ज़म्मुल फिर्दूस में पहुँचा दिया गया</td>
<td>201</td>
</tr>
<tr>
<td>19.</td>
<td>पतिीक खात्से का है</td>
<td>202</td>
</tr>
<tr>
<td>20.</td>
<td>एक बुजुर्ग का नसीहत भरा वाक़िया</td>
<td>202</td>
</tr>
<tr>
<td>21.</td>
<td>हज़रत हकीमुल उम्मत रह. की तवाज़ों की ईन्तिहा</td>
<td>203</td>
</tr>
<tr>
<td>22.</td>
<td>तीन अल्लाह वाले</td>
<td>204</td>
</tr>
<tr>
<td>23.</td>
<td>अपने ऐबों पर नज़र करो</td>
<td>205</td>
</tr>
<tr>
<td>24.</td>
<td>हज़ज़ाज बिन यूसुफ की ग़ीतित करना</td>
<td>205</td>
</tr>
<tr>
<td>25.</td>
<td>अंबिया अल्लाहुस्स्लाम का रेाय</td>
<td>206</td>
</tr>
<tr>
<td>26.</td>
<td>हज़रत शाह इमाम शाहीद रह. का वाक़िया</td>
<td>207</td>
</tr>
<tr>
<td>27.</td>
<td>दूसरी नसीहत</td>
<td>207</td>
</tr>
<tr>
<td>28.</td>
<td>शैतान का दाब</td>
<td>208</td>
</tr>
<tr>
<td>29.</td>
<td>छोटा अमल भी नज़ात का सबब है</td>
<td>208</td>
</tr>
<tr>
<td>30.</td>
<td>एक फ़ाहिशा औरत का वाक़िया</td>
<td>208</td>
</tr>
<tr>
<td>31.</td>
<td>मगफ़िरत के भरोसे पर गुनाह मत करो</td>
<td>209</td>
</tr>
<tr>
<td>32.</td>
<td>एक बुजुर्ग की मगफ़िरत का वाक़िया</td>
<td>210</td>
</tr>
<tr>
<td>33.</td>
<td>नेकी नेकी को खौचती है</td>
<td>212</td>
</tr>
<tr>
<td>34.</td>
<td>नेकी का ख़ुलास अल्लाह का मेहमान है</td>
<td>212</td>
</tr>
<tr>
<td>35.</td>
<td>शैतान का दूसरा दाब</td>
<td>213</td>
</tr>
<tr>
<td>36.</td>
<td>किसी गुनाह को छोटा मत समझो</td>
<td>214</td>
</tr>
<tr>
<td>क्र.स.</td>
<td>क्या?</td>
<td>कहाँ?</td>
</tr>
<tr>
<td>-------</td>
<td>----------------------------------------------------------------------</td>
<td>-------</td>
</tr>
<tr>
<td>37.</td>
<td>छोटे गुनाह और बड़े गुनाह में फर्क करना</td>
<td>215</td>
</tr>
<tr>
<td>38.</td>
<td>गुनाह गुनाह को खींचता है</td>
<td>215</td>
</tr>
<tr>
<td>39.</td>
<td>तीसरी नसीहत</td>
<td>216</td>
</tr>
<tr>
<td>40.</td>
<td>चौथी नसीहत</td>
<td>217</td>
</tr>
<tr>
<td>41.</td>
<td>पांचवीं और छठी नसीहत</td>
<td>218</td>
</tr>
</tbody>
</table>

(56) मुस्लिम क़ौम आज कहां खड़ी है?

**विश्लेषण और अमल की राह**

1. मुस्लिम क़ौम के अलग अलग दो मुख्तलफ़ पहलू 221
2. "हक" दो इतिहासों के दरमियान 222
3. इस्लाम से दूरी की एक मिसाल 223
4. इस्लामी बेदारी (जागरूकता) की एक मिसाल 224
5. कुल मिला तो इस्लाम दुनिया की सूरते हाल 224
6. इस्लाम के नाम पर कृपचारियाँ 225
7. तहरीकें की नाकामी के अस्वाभ क्या हैं? 225
8. गैर मुस्लिमों की साजिशें 226
9. साजिशों की कामयाबी के अस्वाभ 227
10. शहीदत (शक्ति) की तापीर से गुफ्फत 227
11. सैक्कूलरिज़ंम की तरदीद 228
12. इस फ़िकर को रख करने का नतीजा 229
13. हमने इस्लाम को सियासी बना दिया 229
14. हुजूर सल्ल. की मक्की ज़िन्दगी 230
15. मक्के में शहीदत बनाने का काम हुआ 230
16. शहीदत बनाने के बाद कैसे अफ़राद तैयार हुए? 231
17. हम लोग एक तरफ झुक गए 232
18. हम फर्ड की इस्लाम से ग़ाफिल हो गये 232
<table>
<thead>
<tr>
<th>क्र.स.</th>
<th>कथा?</th>
<th>कहाँ?</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>19.</td>
<td>जो बात दिल से निकलती है</td>
<td>233</td>
</tr>
<tr>
<td></td>
<td>वो दिल पर असर करती है</td>
<td></td>
</tr>
<tr>
<td>20.</td>
<td>अपने सुधार की पहले पिक्र करो</td>
<td>234</td>
</tr>
<tr>
<td>21.</td>
<td>बिगड़े हुए समाज में काम का क्या तरीक़ा इक्ष़ितयार करें?</td>
<td>235</td>
</tr>
<tr>
<td>22.</td>
<td>हमारी नाकामी का एक अहम सबब</td>
<td>236</td>
</tr>
<tr>
<td>23.</td>
<td>&quot;अफ़ग़ान जिहाद&quot; हमारी तारीख़ का इतिहास रोशन अध्याय, लेकिन!</td>
<td>237</td>
</tr>
<tr>
<td>24.</td>
<td>हमारी नाकामी का दूसरा अहम सबब</td>
<td>238</td>
</tr>
<tr>
<td>25.</td>
<td>हर दौर में इस्लाम की अनुकूलता का तरीक़ा मुख़्तलिफ़ रहा है</td>
<td>239</td>
</tr>
<tr>
<td>26.</td>
<td>इस्लाम की अनुकूलता का तरीक़ा—ए—कार</td>
<td>240</td>
</tr>
<tr>
<td>27.</td>
<td>नई ताबीर का नुकता—ए—नज़ार ग़लत है</td>
<td>241</td>
</tr>
<tr>
<td>28.</td>
<td>खुलासा</td>
<td>242</td>
</tr>
</tbody>
</table>
तीबा

गुनाहों का तिर्यक्क

हुज्जूरे पाक का सी बार इस्तिगफार करना

ि उल्लक्क लिखते है कि मैंने रस्तुल्लाह सल्लाल्लाहु अल्लाह सुना कि आपने फरमाया। "कभी–कभी मेरे दिल तथा आप आए जाता है यहाँ तक कि मैं अल्लाह जिल्ला जलालुद्दीन से रोजाना सी बार इस्तिगफार करता हूँ। यह कौन फरमा रहे हैं? वह जात जिनको अल्लाह तजाला ने गुनाहों से पाक और मसूम पैदा फरमाया। आप से किसी गुनाह का सादिर होना मुस्किन ही नहीं, और अगर कभी आप से कोई भूल चूक हुई भी तो अल्लाह तजाला की तरफ से वह ऐलान फरमा दिया गया कि आपकी अगली पिछली सब भूल चूक हमारी तरफ से माफ हैं। चुनाचे इराशद है।

लीफ़र के लिए मतिमँद मनुक और मातलेरे। (सौरा लिफ़ि)
ताकि अल्लाह आपके अगले पिछले गुनाह भांप कर दे।

इसके बावजूद हुजूर अल्लाह उल्लाह अल्लाह व सल्लल्लाहु अल्लाह के सल्ल फर्मान रहे हैं कि मैं दिन में सो बार इस्तिगाफ़कर करता हूँ। इस हदीस की तस्वीर में उलमा ने फरमाया कि इस हदीस में ५०० का जो अदा आपने बयान फरमाया इस से गिनती बयान करना मकःबुद नहीं है, बल्कि इस्तिगाफ़कर की कस्तूरत की तरफ इशारा मकःबुद है।

गुनाहों के वस्तुस्वस सब को आते हैं

फिर इस हदीस में इस्तिगाफ़कर करने की वजह भी बयान फरमान दी कि मैं इतनी कस्तूरत से इस्तिगाफ़कर इसलिये करता हूँ कि कभी-कभी मेरे दिल पर भी बादल सा छा जाता है। मतलब यह है कि कभी-कभी इतनी तकज़े की वजह से एक नबी के दिल में भी ख्यालात और वसाविस पेदा हो सकते हैं। कोई आदमी नेकी और तकज़े के फिरने ही बुलद मकःब र पट्टा जाए, लेकिन गुनाहों को झलकियाँ से नहीं बच सकता। नबी करीम सल्लल्लाहु अल्लाह व सल्लम का मकःब तो बहुत आला और बुलद है, इस मकःब तक कोई पट्टा ही नहीं सकता, लेकिन जितने औलिया-ए-कियाम, बड़े बड़े सूफ़ीयाँ और बुजुर्गैने दीन गुज़रे हैं, उनमें से कोई ऐसा नहीं कि उनके दिल में गुनाहों का कभी वस्तुस्वस और ख्याल भी न आया हो, और कोई ख्यालिया भी पेदा उंटुई हो। लिहाज़ा गुनाहों की झलकियाँ तो बड़ी-बड़ी को आती हैं, अलबत्ता फ़र्क यह होता है कि हम जैसे गाफ़िल मेरे तो गुनाहों की ज़रा सी झलकी पर हकीयाद डाल देंते हैं और गुनाह कर बैठते हैं। लेकिन जिन लागों को अल्लाह ताज़ाला तौफ़ीक अरा फरमाते हैं, उनको भी गुनाहों के ख्यालात और वस्तुस्वस आते हैं और दिल में गुनाहों के इरादे पेदा होते हैं। लेकिन अल्लाह ताज़ाला के फ़ज़्ल, और गुज़हदें की इरादे से वे ख्यालात, वस्तुस्वस और इरादे कमजोर हो जाते हैं। फिर वे इरादे इस्मान पर गाफ़िल नहीं आते, जिसका नतीज़ा यह होता है कि गुनाहों का ख्याल आने के
बावजूद उस ख्याल पर अमल नहीं होता। हजरत यूसुफ अल्लहैस्सलाम के बारे में कुरआने करीम में है कि:

و لقد همت به و هم بها (سورة يوسف : ۲۴)

यानी जुलेफा ने गुनाह की दावत दी तो उस वक़्त हजरत यूसुफ अल्लहैस्सलाम के दिल में भी गुनाह का धोड़ा ना ख्याल आ गया था लेकिन अल्लाह तजाला ने उनको उस गुनाह से महफूज़ रखा।

यह ख्याल ग़लत है

लिहाज़ा तस्मानूफ़ व तरीक़त के बारे में यह नहीं समझना चाहिए कि इसमें कदम रखने के बाद बुराइयों का बिलकुल ख़ाला हो जायेगा और फिर गुनाहों का बिलकुल ही ख्याल नहीं आयेगा। बल्कि होता यह है कि मुजाहदा करने और मर्ज करने के नतीजे में गुनाहों के तकाज़े मगलूब और कमज़ोर हो जाते हैं और फिर उनका मुकाबला करना आसान हो जाता है। लिहाज़ा इस साधन में बड़ी कामयाबी यही है कि गुनाहों के तकाज़े मगलूब और कमज़ोर पड़ जाएं और इन्सान के ऊपर ग़ालिब न आने पाएं। लेकिन यह सोचना कि मुजाहदा करने के बाद दिल में गुनाह का ख्याल ही नहीं आयेगा, यह बात मुहल (ना मुफ़्किन) है। यह कभी नहीं हो सकता।

जवानी में तोबा कीजिए

इसलिये कि अल्लाह तहाला ने इन्सान के दिल में गुनाह का ज़ब्रा और तकाज़ा पैदा फरमाया है। कुरआने करीम में इसराद है:

"فَالَهِمُهَا فَجُورُهُمَا وَتَقَوَاهَا (سورة الخشى: ۸)

यानी हमने इन्सान के दिल में गुनाह का भी तकाज़ा पैदा किया है और तक़्वे का तकाज़ा भी पैदा किया है, इसी में इतिहास है। इसलिये अगर इन्सान के दिल से गुनाह का तकाज़ा बिलकुल ख़ाल हो जाए और फ़ना हो जाए तो फिर गुनाहों से बचने में इन्सान का क्या कमाल हुआ। न तो नफ़स से मुकाबला हुआ और न शीतान से मुकाबला हुआ, न इन से झगड़ा पेश आया, तो फिर जन्नत किसके
इस्लाही खुदबात

जिल्द (6)

बदले मिलेगी? इसलिये जन्मत तो इसी बात का इनाम है कि दिल में गुनाहों के तकाज़े और ज़बात पैदा हो रहे हैं लेकिन इन्सान उनको शिकस्त देकर अल्लाह के खौफ और डर से और अल्लाह की अज्ञूनत और जलाल से उन तकाज़ाओं पर अभिल नहीं करता। तब आकर इन्सान का कमाल जाहिर होता है। शैख सादी रह. फरमाते हैं:

वक़्ते पीरी गर्ग जालिम भी श-वद परहेज़गार
dar jawaani tība kurdun shewa-ē-pairāmāri

यानि बुद़ापे में जालिम भेड़िया भी मुलाक़ी और परहेज़गार बन जाता है, इसलिये कि उस वक़्त न मुह में दांत रहे और न पेट में आंत रही, अब ज़ुल्म करने की ताकत ही नहीं है, इसलिये अब परहेज़गार नहीं बनेगा तो और क्या बनेगा। लेकिन पैग़म्बरों का तरीक़ा यह है कि आदमी जवानी के अन्दर तीबा करे, जब कुछत और ताकत मौजूद है और गुनाहों का तकाज़ा भी शिहद से पैदा हो रहा है, और गुनाहों के मौक़े में मस्सर हैं, लेकिन इसके बावजूद अल्लाह के खौफ से आदमी गुनाहों से बच जायें, यह है पैग़म्बरों का तरीक़ा।

बुजुर्गों की सोहबत का असर

बाज़ लोग यह सोचते हैं कि कोई अल्लाह बाला हम पर ऐसी नज़र डाल दे और अपने सीने से लगा ले और सीने से अपने आन्दार मुल्तकिल कर दे और इसके नतीजे में गुनाह का ज़ब्ज़ा ही दिल से भिड जाए। यदि रखो ऐसा कभी भी नहीं होगा, जो शहीद इस ख़याल में रहे वह धोखे में है, अगर ऐसा हो जाता तो फिर दुनिया में कोई काफ़िर बाकी न रहता, इसलिये कि फिर तसरफ़ात के ज़रिये सारी दुनिया मुसलमान हो जाती।

हज़रत धानबी रह. की ख़िदमत में एक बार एक साहिब हाफ़िज़ हुए और कहा कि हज़रत, कुछ नसीहत फरमा दीजिये, हज़रत ने नसीहत फरमा दी, फिर वह साहिब रुखसत होते हुए कहने लगे कि
हज़रत अल्लाह आप अपने सीने में से कुछ अता फर्मा दीजिये, उनका मक्क़ाद यह था कि सीने में से कोई नूर निकल कर हमारे सीने में दाख़िल हो जाए और उसके नतीजे में बेड़ा पार हो जाए और गुनाहों की उँचाई ख़त्म हो जाए। हज़रत ने जवाब में फ़र्सा या कि सीने में से क्या दूँ मेरे सीने में तो बल्ग़म है, चाहिये तो ले लो। बहर हाल यह जो ख्याल है कि किसी बुजुर्ग की निगाह पड़ गयी, या सीने में से कुछ मिल जायेगा तो सब बुराइयां दूर हो जायेंगी, यह ख्याल बेकार है। यह ख्याल एक पागल पन है।

अलबत्ता अल्लाह ने बुजुर्गों की सोहबत में तासीर ज़ुरुर रखी है कि उसके ज़रिये इन्सान की फ़िक्र और सोच का रूख बदल जाता है, जिसके नतीजे में इन्सान सही रास्ते पर चल पड़ता है, मगर काम ख़ुद ही करना होगा और अपने इश्क़ियार से करना होगा।

हर व्य़क्त नफ़्स की निगरानी ज़ुरुरी है

बहर हाल, गुनाह के वस्तुओं और इरादों का बिल्क़ूल खाला नहीं हो सकता, चाहे किसी बड़े से बड़े मक़ाम तक पहुँच जाए अलबत्ता कमजोर ज़ुरुर पड़ जाते हैं। यही वजह है कि अगर कोई शख्स सालों तक किसी बुजुर्ग की सोहबत में रहा और जो चीज़ बुजुर्गों की सोहबत में हासिल की जाती है, वह हासिल भी हो गई और तकमील भी हो गई और दिल में ख़ौफ़, ख़र और तकवा मैदा हो गया, अल्लाह के साथ निस्बत और तात्पूर्व भी हासिल हो गया, इन सब चीज़ों के हासिल हो जाने के बावजूद इन्सान को हर क़दम पर अपनी निगरानी रखनी पड़ती है, यह नहीं है कि अब शैख़ बन गये और शैख़ से इजाज़त हासिल हो गई तो अब आप अपने आप से अपने नफ़्स से गाफ़िल हो गये और यह सोचा कि अब तो हम पहुँच गये। उस मक़ाम पर पहुँच गये के अब तो नफ़्स और शैख़ मार कुछ नहीं बिगाड़ सकता, यह ख्याल बिल्क़ूल गलत है, इसलिये कि शैख़ की सोहबत की बर्कत से इतना ज़ुरुर हुआ कि गुनाह का
इस्लामी खुलबात

मकतब ए अश्रफ

इरादा और जज्बा कमजोर पड़ गया, लेकिन नफस की निगरानी फिर भी हर बख़्त खूनी पड़ती है। इसलिये कि किसी बक़्त भी यह तक जाना दौड़ा। जिन्दा होकर इस्लाम को परेशान कर सकता है, इसलिये फरमाया कि:

अन्दरी रह भी तराश व भी ख़राश
ta daste Aakhir daste Faariq Mabash

यानी इस राह में कांट छांट हमेशा की है यहां तक कि आख़री सांस आने तक किसी बक़्त भी गाफ़िल होकर मत बेचना। इसलिये कि यह नफस किसी बक़्त भी इस्लाम को धोखा दे सकता है।

एक लकड़-हारे का किस्सा

मसूनवी में मौलाना रुबी रह. ने एक किस्सा लिखा है कि एक लकड़-हारा था, जो जंगल से जाकर लकड़ियां काट कर लाया करता था और उनको बाजार में बेच देता था। एक बार जब लकड़ियां काट कर लाया, लकड़ियों के साथ एक बड़ा सांप भी लिपट कर आ गया, उसको पता नहीं चला, लेकिन जब घर पहुँचा तो तब उसने देखा कि एक सांप भी आ गया है, अलबत्ता उसमें जान नहीं थी। ऐसा मालूम हो रहा था कि वह मुर्दा है, इसलिये उस लकड़-हारे ने उसकी तरफ कोई खास तवज्जोह नहीं दी, वहीं घर के अन्दर ही रहने दिया, बाहर निकलने की जरुरत महसूस नहीं की, लेकिन जब उसको गर्मी पहुँची तो उसको अन्दर हर्कत पैदा होनी शुरू हो गई और आहिस्ता आहिस्ता उसने रंगना शुरू कर दिया।

लकड़-हारा गफ़लत में लेटा हुआ था, उस सांप ने जाकर उसको डस लिया, अब घर चाले परेशान हुए कि यह तो मुर्दा सांप था, कैसे जिन्दा होकर इसने डस लिया?

नफस भी एक अज्ज़दा है

यह किस्सा नकल करने के बाद मौलाना रुबी रह. फरमाते हैं कि इस्लाम के नफस का भी यही हाल है, जब इस्लाम किसी अल्लाह
वाले की सोहबत में रह कर मुजाहदे और रियाज़तें करता है तो इसके नतीजे में यह नफ़स कमज़ोर हो जाता है, और ऐसा मालूम होता है कि यह अब मुर्दा हो चुका है, लेकिन हक़ीकत में वह मुर्दा नहीं होता, अगर इस्नान इंसकी तरफ़ से गाफ़िल हो जाए तो किसी भी वक़्त वह जिंदा होकर डाल लेगा। चुनावे मौलाना सभी रह।

फर्माते हैं कि:

नफस अज़ह्दा अस्त मुर्दा अस्त
अज़ ग़मे वे आल्ती अफ़सुरवा अस्त

यानी यह इस्नान का नफस भी अज़ह्दा के जैसा है, अगर मरा नहीं है लेकिन चूँकि मुजाहदे और रियाज़तें करने की चोटें इस पर पड़ी हैं इसलिये वह तित्तरा हुआ पड़ा हुआ है, लेकिन किसी वक़्त भी ज़िन्दा होकर डाल लेगा। इसलिये किसी लम्बे भी नफस से गाफ़िल होकर मत बैठो।

गुनाहों का तियार क इस्तिग़फार और तोबा

लेकिन जिस तरह अल्लाह तमाला ने नफस और शैलान दो ज़हरीली चीज़ें पेदा फर्माई हैं, जो इसको परेशान और ख़राब करती हैं, और दोज़ख़ के अज़ह़ब की तरफ़ इस्नान को लेज़ाना चाहती हैं, इसी तरह इन दोनों का तियार क भी बड़ा ज़बरदस्त पेदा फर्माया। अल्लाह तमाला की हिक्रत से यह बात दूर थी कि ज़हर तो पेदा फर्मा देते और उसका तियार क पेदा न फर्माते, और वह तियार क इन्त ज़बरदस्त पेदा फर्माया कि फौरन उस ज़हर का असर ख़त्म कर देता है। वह तियार क है “इस्तिग़फार” “तोबा” लिखाणा जब भी यह नफस का सांप तुम्हें ढ़से या इसके झसने का अंदेशा हो तो तुम फौरन यह तियार क इस्तेमाल करते हुए कहो:

“अस्तफ़िस्फ़लः ह रब्बी मिन कुल्लि ज़मिनः अतुतु इलेही”

यह तियार क उस ज़हर का सारा असर ख़त्म कर देगा। बहर
हाल जो बीमारी या ज़हर अल्लाह तख़्ताला ने पैदा फर्माया उसका तिर्यक्त भी पैदा फर्माया।

कूदरत का अजीव करिमा

एक बार में दक्षिण अफ़्रीका में कैप टाउन के इलाक़े में रेत गाड़ी पर सफर कर रहा था, रास्ते में एक ज़हर पहाड़ी इलाक़े में गाड़ी रुक गई, हम नमाज़ के लिये नीचे उतरे, वहां मैं देखा कि एक ख़ूबसूरत पौधा है, उसके पत्ते बहुत ख़ूबसूरत थे और वह पौधा हसीन व ज़मील मालूम हो रहा था, वे इस्तिमार दिल बाहा कि उसके पत्तों को तोड़ ले, मैं ने जैसे ही उसके पत्ते को तोड़ने के लिये हाथ बढ़ाया तो मेरे जो रहनुमा थे वह एक दम जोर से चीख़ पड़े कि हज़रत इसको हाथ मत लगाइये, मैंने पुछा क्यों? उन्होंने ने बताया कि यह बहुत ज़हरीली झाड़ी है, इसके पत्ते देखने में तो बहुत ख़ूननुमा है लेकिन यह इतना ज़हरीला है कि इसको छूने से इम्सन के जिसमें ज़हर चढ़ जाता है, और जिस तरह बिचू पेड़ के डालने से ज़हर की लहरें उठती है इसी तरह इसके छूने से भी लहरें उठती है। मैंने कहा कि अल्लाह का शुक्र है कि मैंने हाथ नहीं लगाया, और पहले से मालूम हो गया, यह तो बड़ी ख़तरनाक चीज़ है। देखने में बड़ी ख़ूबसूरत है, फिर मैं उस से कहा कि यह मामला तो बड़ा ख़तरनाक है, इसलिये कि आपने मुझे तो बता दिया, जिसकी वजह से मैं बच गया लेकिन अगर कोई अन्जान आदमी जाकर इसको हाथ लगा दे, वह तो मुसीबत और तकलीफ़ में मुबाला हो जाएगा। इस पर उन्होंने ने इस से भी ज़्यादा अजीव बात बताई, वह यह कि अल्लाह तख़्ताला की कूदरत का अजीव करिमा है कि जहां कहीं यह ज़हरीली झाड़ी होती है तो इसकी ज़ड़ में आस पास ज़ुरूर ही एक पौधा और होता है इसलिये अगर किसी घास का हाथ इस ज़हरीले पौधे पर लग जाये तो फिर उस पौधे के पत्ते को हाथ लग दे, उसी वक़्त इसका ज़हर ख़ल्त हो जाएगा। चुनांवें उन्होंने ने उसी की
जड़ में वह दूसरा पीड़ा भी दिखाया कि यह इसका तिर्यक्क है।
पत्त यही मिसाल है हमारे गुनाहों की और इस्तिफाफ़ार की और तोबा की, इसलिये जहां कहीं गुनाह का ज्हार चढ़ जाये तो फौरन तोबा इस्तिफाफ़ार का तिर्यक्क इस्तेमाल करो, उसी वक़्त उस गुनाह का ज्हार उत्तर जायेगा।

जमीन के ख़लीफ़ा को तिर्यक्क देकर भेजा
हमारे हज़रत जा. अखुल हई साहिब रह. ने एक नर्तका इरशाद फ़ैरमाया कि अल्लाह तख़ाला ने इज्ज़त के अन्दर गुनाह की सलाहियत रखी है, और फिर उसको ख़लीफ़ा बना कर दुनिया में भेजा और जिस मक़्कुल में गुनाह करने की सलाहियत नहीं थी उसको अपना ख़लीफ़ा बनाने का अहल भी करार नहीं दिया, यानि फ़रिसत कि उनके अन्दर गुनाह करने की सलाहियत और अहलियत मौजूद नहीं तो वे ख़लीफ़ा के भी अहल नहीं, और इज्ज़त के अन्दर गुनाह की सलाहियत भी रखी और दुनिया के अन्दर भेजने से पहले नमूने और मक़्कुल के तौर पर एक ग़लती भी करवाई गई। चुनांचे जब हज़रत आदम अल्लाहसल्लाम को जननत में भेजा गया तो कह दिया गया कि पूरी जननत में जहां चाहो जाओ, जो चाहो खाओ, मगर इस दरख़्त को मत खाना। उसके बाद शोख़जान जननत में पहुंच गया और उसने हज़रत आदम अल्लाहसल्लाम को बहका दिया जिसके नतीजे में उन्हों ने उस दरख़्त को खा लिया और ग़लती जाहिर हो गई। यह ग़लती उनसे, करवाई गई। इसलिए कि कोई काम अल्लाह तख़ाला की चाहत के बगैर नहीं हो सकता। लेकिन ग़लती करवाने के बाद उनके अन्दर अशीमन्दरी बैठा हुई कि या अल्लाह मुझ से कैसी ग़लती हो गई, उसके बाद अल्लाह तख़ाला ने चाचा कलिमे सिखाए और उनसे फ़ैरमाया कि अब तुम ये कलिमा करों:

रब्बँ तैलमा अन्ना अन्ना ने मे तैलवराते अवँ ने क्यों तैलकोमा अन्ना ने 
(सूरत का अर्थ)
"रचना जलमना अन्फु-सना व इल्लम तमगियर लना व तहमना ल-नकूनन्-ना मिनल खासिरीन"  
कूसआने करिम में यह फरमाया है कि हमने ये कलमात हज़रत आदम अल्लाहसलाम को सिखाये, यह भी तो अल्लाह ताज़ाला की कुदरत में था कि ये कलिमे उनको सिखाए बग़ैर और उन से कहलवाये बग़ैर वैसे ही माफ फरमा देते, और उन से कह देते कि हमने तुम्हें माफ कर दिया, लेकिन अल्लाह ताज़ाला ने ऐसा नहीं किया, क्यों? हमारे हज़रत डा. साहिब फरमाया करते थे कि अल्लाह ताज़ाला ने यह सब कुछ करा कर उनको बता दिया कि जिस दुनिया में तुम जा रहे हो वहां यह सब कुछ होगा, वहां भी शैतान तुम्हारे पास आयेगा और नफ़स भी लगा हुआ होगा और कभी तुम से कोई गुनाह करायेगा और कभी कोई गुनाह करायेगा, और तुम जब तक उनके लिए अपने साथ तिर्यङ्क लेकर नहीं जाओगे उस वक़्त तक दुनिया में सही जिन्दगी नहीं गुज़ार सकोगे। वह तिर्यङ्क है इस्तिफ़ाद़ार और तौबा। इसलिए गुलती और इस्तिफ़ाद़ार दोनों चीजें उनको सिखा कर फरमाया कि अब दुनिया में जाओ। और यह तिर्यङ्क भी बहुत आसान है कि जबान से इस्तिफ़ाद़ा कर ले तो इन्हा अल्लाह वह गुनाह माफ हो जायेगा।  

tौबा तीन चीज़ों का मज़बूता है  
आम तौर पर दो लफ़ज़ इस्तेमाल होते हैं, एक इस्तिफ़ाद़ार एक तौबा। असल इनमें से तौबा है और इस्तिफ़ाद़ार उस तौबा की तरफ़ जाने वाला रास्ता है, और यह तौबा तीन चीज़ों का मज़बूता होती है। जब तक ये तीन चीज़ें जमा न हों, उस वक़्त तक तौबा कामिल नहीं होती। एक यह कि जो गुलती और गुनाह हो गया है, उस पर नदामत और शरमिन्दरी हो। पश्चिमानी और दिल लोड़ड़ना हों। दूसरे यह कि जो गुनाह हुआ हो उसको फिल्हाल फौसन छोड़ दे, और तीसरे यह कि आइँदा गुनाह न करने का कामिल हो। जब ये तीन
अल्लाह से में अमीर एक मामूर

बल्कि मैं एक बात अपने शेख से सुनी, किसी किताब में नहीं देखी। वह यह कि हर इन्सान के साथ ये जो दो फरिस्तें हैं जिनको किरामन् कातिबीन कहा जाता है। जो इन्सान की नेकियां और

"किरामन् कातिबीन" में एक अमीर एक मामूर

बल्कि मैं एक बात अपने शेख से सुनी, किसी किताब में नहीं देखी। वह यह कि हर इन्सान के साथ ये जो दो फरिस्तें हैं जिनको किरामन् कातिबीन कहा जाता है। जो इन्सान की नेकियां और

"किरामन् कातिबीन" में एक अमीर एक मामूर

बल्कि मैं एक बात अपने शेख से सुनी, किसी किताब में नहीं देखी। वह यह कि हर इन्सान के साथ ये जो दो फरिस्तें हैं जिनको किरामन् कातिबीन कहा जाता है। जो इन्सान की नेकियां और

"किरामन् कातिबीन" में एक अमीर एक मामूर

बल्कि मैं एक बात अपने शेख से सुनी, किसी किताब में नहीं देखी। वह यह कि हर इन्सान के साथ ये जो दो फरिस्तें हैं जिनको किरामन् कातिबीन कहा जाता है। जो इन्सान की नेकियां और

"किरामन् कातिबीन" में एक अमीर एक मामूर

बल्कि मैं एक बात अपने शेख से सुनी, किसी किताब में नहीं देखी। वह यह कि हर इन्सान के साथ ये जो दो फरिस्तें हैं जिनको किरामन् कातिबीन कहा जाता है। जो इन्सान की नेकियां और

"किरामन् कातिबीन" में एक अमीर एक मामूर

बल्कि मैं एक बात अपने शेख से सुनी, किसी किताब में नहीं देखी। वह यह कि हर इन्सान के साथ ये जो दो फरिस्तें हैं जिनको किरामन् कातिबीन कहा जाता है। जो इन्सान की नेकियां और

"किरामन् कातिबीन" में एक अमीर एक मामूर

बल्कि मैं एक बात अपने शेख से सुनी, किसी किताब में नहीं देखी। वह यह कि हर इन्सान के साथ ये जो दो फरिस्तें हैं जिनको किरामन् कातिबीन कहा जाता है। जो इन्सान की नेकियां और
बाला फरिश्ता दारी तरफ चाले फरिश्ते से पूछता है कि इस बदने ने फला गुनाह किया है में उसको लिखू या नहीं? तो दारी तरफ बाला फरिश्ता कहता है, नहीं अभी मत लिखो, अभी ठहर जाओ, हो सकता है कि यह बन्दा तीबा कर ले। अगर लिख लोगे तो फिर मिटाना पड़ेगा। ठोड़ी देर तक बाद फिर पूछता है कि अब लिख लू? वह कहता है कि ठहर जाए, हो सकता है कि यह तीबा कर ले, फिर जब तीसरी बार यह फरिश्ता पूछता है और बन्दा उस वक्त तक तीबा नहीं करता तो उस वक्त कहता है कि अब लिख लो।

अगर तू सो बार तीबा तोड़े फिर भी वापस आ
अल्लाह ताप्पाला की रहमत यह है कि बन्दे को गुनाह के बाद मोहलत देते हैं कि वह गुनाह से तीबा कर ले, माफ़ी मांग ले। ताकि उसके आमाल नामे में लिखना ही न पड़े, लेकिन कोई सख्त अगर तीबा न करे तो लिख दिया जाता है, और उसके लिखने के बाद भी मरते दम तक दरवाजा खुला है कि जब चाहे तीबा कर लो। उसके अपने आमाल नामे से मिटवा लो। एक बार जब सच्चे दिल से तीबा कर लोगे तो गुनाह तुम्हारे आमाल नामे से मिटा दिया जाएगा, और जब तक मरने के करीब की हालत और गुप्ते की हालत तारी न हो, उस वक्त तक तीबा का दरवाजा खुला है, अल्लाहु अकबर, कैसे करीम और रहीम की बारगाह है। फरमाया:

बाज़ा आ बाज़ा आ हर आंचे हस्ती बाज़ा आ
गर कफ़िर व मिबर व हुट परस्ती बाज़ा आ
ए दरगह मा दरगह नो उम्मीदी नैस्त
सद बार गर तीबा शक्त्वती बाज़ा आ
अगर सी बार तीबा दूट गई है, तो फिर तीबा कर लो। और गुनाह से रुक जाओ। तीबा का दरवाजा खुला है।

रात को सोने से पहले तीबा कर लिया करो
हमारे एक बुजुर्ग गुज़रे हैं हज़रत बाबा नजम अहसान साहिब रह.
जो हजरत शानदार रहे के खलीफा थे, बड़े अजीब व गरीब बुजुर्ग थे।
जिन लोगों ने उनकी जियारत की है वे उनके मकाम से वाकिफ हैं।
अल्लाह तभी, ने उनको अजीब अक्रल व समझ अंता फरभाई थी,
अजीब बातें इरादाद फरमाया करते थे। एक दिन यह तौबा पर बयान
फरमा रहे थे, मैं भी करीब में बैठा हुआ था। उनके छोटे छोटे
घटकले हुआ करते थे। एक आज़ाद मन्दर नौजवान उस मजलिस में
आ गया। वह अपने किसी मक़सद से आया था, मगर यह अल्लाह
वालों तो हर वक़्त सिखाने और तर्कियत करने की फ़िक्र में रहते हैं।
चुनांके उस नौजवान से फरमाने लगे कि मियां! लोग समझते हैं कि
यह दीन बड़ा मुरिकल है, अरे यह दीन कुछ भी मुरिकल नहीं, बस
रात को बैठ कर अल्लाह तभी, से तौबा कर लिया करो। बस यही
सारा दीन है।

गुनाह का अन्देशा इरादे के मनाफ़ी नहीं
जब यह नौजवान चला गया तो मैंने कहा कि हजरत! यह तो
बाक़रै बड़ा अजीब व गरीब चीज़ है। लेकिन दिल में एक सवाल
रहता है जिसकी वजह से बैठनी रहती है। फरमाने लगे कि क्या?
मैंने कहा कि हजरत! तौबा की तीन शर्तें हैं। एक यह कि दिल में
शर्मिन्दगी हो, दूसरे यह कि फौरन उस गुनाह को छोड़ दे, तीसरे यह
कि आइन्दा के लिए यह अहद कर ले कि आइंदा यह गुनाह कभी
नहीं करता। इनसे से पहली दो बातों पर तो अमल करना आसान है
कि गुनाह पर शर्मिन्दगी भी हो जाती है और उस गुनाह को उस
वक़्त छोड़ भी दिया जाता है लेकिन तीसरी शर्त कि यह पक्का अहद
करना कि आइंदा यह गुनाह नहीं करता, यह बड़ा मुरिकल मालूम
होता है, और पता नहीं चलता कि यह सबी फका इरादा सही हुआ
या नहीं? और जब सही इरादा नहीं हुआ तो तौबा भी सही नहीं हुई,
और जब तौबा सही नहीं हुई तो उस गुनाह के बाक़ी रहने और
उसके मफ़्त न होने की परेशानी रहती है।
जबाब में हजरत बाबा नजम अहसन साहिब रह. ने फरमाया: जाओ मिया, तुम तो फक्के हराके का मतलब भी नहीं समझते, पक्के हराके का मतलब यह है कि अपनी तरफ से यह हराका कर लो कि आइन्दा यह गुनाह नहीं करेगा, अंब अगर यह हराका करते वक्त दिल में यह धड़का और अन्देशा लगा हुआ है कि पता नहीं कि मैं इस हराके पर साबित कदम रह सकेगा या नहीं? तो अन्देशा और धड़का इस हराके के मनाफी नहीं, और उस अन्देशा और खतरे की वजह से तोला में कोई नुकसान नहीं आता, शर्त यह है कि अपनी तरफ से पुक्ता हराका कर लिया हो, और दिल में जो यह खतरा लगा हुआ है इसका इलाज यह है कि तोला करने के साथ साथ अल्लाह तबाह तबाह से दुआ कर लो कि यह अल्लाह, मैं तोला तो कर रहा हूँ और आइन्दा न करने का हराका तो कर रहा हूँ लेकिन मेरा क्या? और मेरा हराका क्या? मैं कमजोर हूँ। मालूम नहीं कि इस हराके पर जमा रह सकेगा या नहीं? या अल्लाह, आप ही मुझे इस हराके पर साबित कदम फरमायें। आप ही मुझे इस पर जमा अन्त फरमायें, जब यह दुआ कर ली तो इन्हा अल्लाह वह खतरा और अन्देशा खत्म हो जायेगा।

हफीक़त यह है कि जिस वक़्त हजरत बाबा साहिब ने यह बात फरमायी, उसके बाद से दिल में ठन्डक पड़ गई।

मायूस मत हो जाओ

हजरत सिरी सक्ती रह. जो बड़े दर्जे के अल्लाह के वलियों में से है। हजरत जुनेद बगदादी रह. के शैख हैं, वह फरमाते हैं कि जब तक तुम्हें गुनाहों से बर लगता हो, और गुनाह करके दिल में शरीरियाँ गैर चाहिए हो, उस वक़्त तक मायूसी का कोई जवाज़ नहीं। हां, यह बात बड़ी खतरनाक है कि दिल से गुनाह का बर मिट जाये और गुनाह करने के बाद दिल में कोई शरीरियाँ गैर चाहिए न हो, और इन्सान गुनाह पर सीना जोरँ करने लगे, और उस गुनाह को
यानी ना उम्मीद की तरफ मत जाओ, क्योंकि उम्मीद के रास्ते बेशुमार हैं, अधेरे की तरफ मत जाओ क्योंकि बेशुमार सूरज मौजूद है। लिहाजा तौबा कर लो तो गुनाह सब ख़त्म हो जायेगे।

शैतान मायूसी पैदा करता है

और जब तक अल्लाह तआला ने तौबा का दरवाज़ा खोला हुआ है तो फिर मायूसी कैसी? यह जो कभी कभी हमारे दिल में स्थायी आता है कि हम तो बड़े मरदू हो गये हैं, हम से अगल वगैरह होते नहीं हैं। गुनाहों में मुबला हैं, इस ख़याल के बाद मायूसी दिल में पैदा हो जाती है। यदि रखो यह मायूसी भी पैदा करना शैतान की चाल है, और तुम यह देखो कि जिस बन्दे का मालिक इतना रहमान और रहीम है कि उसने मरते दम तक तौबा का दरवाज़ा खोल दिया है और यह ऐलान कर दिया है कि जो बन्दा तौबा कर लेगा उसके गुनाह आमाल नामे से भी मिटा देंगे। क्या वह बन्दा फिर भी मायूस हो जाये? उसको मायूस होने की कोई ज़रूरत नहीं। वस अल्लाह तआला की बारगाह में हाफिज होकर इस्तिमफ़ार करे और तौबा करे, सब गुनाह माफ़ हो जायेगे।

ऐसी तैसी मेरे गुनाहों की

अरे इन गुनाहों की क्या हकीकत है? तौबा के जरिये एक मिनट में सब उड़ जाते हैं, चाहे बड़े से बड़े गुनाह कियों न हों। वही हज़रत बाबा नज़म अहसन साहिब क़ृत्सल्लाहु सिर्फ़ू बड़े अच्छे शायर भी थे। उनके शेर हम जैसे लोगों के लिए बड़ी तस्वील के शेर होते थे। उनका एक शेर है:
दोलतें मिल गयी हैं आहों की
ऐसी तैसी मेरे गुनाहों की

यानी जब अल्लाह तख़्ताला ने आहों की दोलत अता फरमादी की दिल शर्मिंदगी से सुलग रहा है और इन्सान अल्लाह तख़्ताला के सामने हाज़िर है, और अपने गुनाहों की माफ़ी मांग रहा है, और शर्मिंदगी का इज़हार कर रहा है, तो फिर ये गुनाह हमारा क्या बिगाड़ लेंगे? लिहाज़ा जब तौबा का रास्ता खुला हुआ है तो अब मायूसी का यहां गुज़र नहीं।

इस्तिगफार का मतलब

बहर हाल, तौबा के अन्दर तीन चीजें शर्त हैं, उनके बग़ैर तौबा कामिल नहीं होती।

दूसरी चीज़ है "इस्तिगफार" यह इस्तिगफार तौबा के मुकाबले में आम है, इस्तिगफार के मायने यह है कि अल्लाह तख़्ताला से मगफ़िरत की दुआँ मांगना, अल्लाह तख़्ताला से बर्छिश्चा मांगना। हज़रत इमाम गज़ली रह. फरमाते हैं कि "इस्तिगफार" के अन्दर ये तीन चीजें शर्त नहीं बल्कि इस्तिगफार हर इन्सान हर हालत में कर सकता है। जब कोई ग़लती हो जाए या दिल में कोई वस्तुस्वस नैदानिक हो जाए, या इबादत में कोई ग़लती हो जाए, तो फौरन इस्तिगफार करे और कहें कि:

अस्ति अल्लाह वे मेरे कुल मिन कुल्लिज जुङ्खिंन्क अतुब इलेही

क्या ऐसा शर्स मायूस हो जाए?

इमाम गज़ली रह. फरमाते हैं कि मोमिन के लिए असल रास्ता तौबा है कि वह तौबा करे, और तीनों शर्तों के साथ करे, लेकिन कभी-कभी एक शर्स बहुत से गुनाह छोड़ देता है और जिन गुनाहों में मुबलता है उनको भी छोड़ने की कोशिश में लगा हुआ है लेकिन
एक गुनाह ऐसा रह गया जिसको छोड़ने पर कोशिश के बावजूद वह कादिर नहीं हो पा रहा है, बल्कि हालात या माहौल की वजह से मर्दबुद है और उस गुनाह को नहीं छोड़ पा रहा है। अब सवाल यह है कि क्या ऐसा शख्स तीव्र रूप से मायूस और ना उम्मीद होकर बैठ जाए, कि मैं इसके छोड़ने पर कादिर नहीं, इसलिए मैं तो तबाह हो गया?

हराम रोजगार वाला शख्स क्या करें?

जैसे एक शख्स बैंक में मुलाजिम है और बैंक की मुलाजिमत ना जायज़ और हराम है, इसलिए कि सूद की आमदनी है। जब वह दौन की तरफ आया और आहिस्ता आहिस्ता उस ने बहुत से गुनाह छोड़ दिये, नमाज़ रोजा शुरू कर दिया और शरीअत के दूसरे हुक्मों पर भी अमल करना शुरू कर दिया। अब वह दिल से तो यह चाहता है कि मैं अब इस हराम आमदनी से भी किसी तरह वच जाकर और बैंक की मुलाजिमत छोड़ दूं लेकिन उसके बीच बच्चे हैं उनके खर्च और हुकूक की जिम्मेदारी भी उसके ऊपर है, अब अगर वह मुलाजिमत छोड़ कर अलग हो जाये तो खतरा इस बात का है कि परेशानी और तकलीफ़ में मुबतला हो जाये, जिसकी वजह से वह बैंक की मुलाजिमत छोड़ने पर कादिर नहीं हो रहा है, अलब्तता दूसरी जायज़ मुलाजिमत की तलाश में भी लगा हुआ है। (बल्कि मैं तो यह कहता हूं कि ऐसा शख्स दूसरी मुलाजिमत इस तरह तलाश करे जिस तरह एक बेरोजगार आदमी मुलाजिमत तलाश करता है) तो क्या ऐसा सख्स मायूस होकर बैठ जाए? इसलिए कि मजबूरी की वजह से मुलाजिमत छोड़ नहीं सकता, जिसकी वजह से छोड़ने का पक्का इरादा भी नहीं कर सकता, जब कि तीव्र के अन्दर छोड़ने पर पक्का इरादा करना शर्त है, तो क्या ऐसे मुबतला सख्स के लिए तीव्र का कोई रास्ता नहीं है?
तौबा नहीं, इस्तिग़फ़ार करे

इमाम गुज़ली रह. फरमाते हैं कि ऐसे शक्स के लिए भी रास्ता मौजूद है, वह यह कि संजीवनी से कोशिश करने के बावजूद जब तक कोई जायज़ और हलाल रोज़गार नहीं मिलता, उस वक़्त तक मुलाज़मत न छोड़े, लेकिन साथ साथ इस पर इस्तिग़फ़ार भी करता रहे, उस वक़्त तौबा नहीं कर सकता, इसलिए कि तौबा के लिए गुनाह का छोड़ना शर्त है और यहां वह मुलाज़मत छोड़ने पर कादिर नहीं. इसलिए तौबा नहीं हो सकती, अलवता अल्लाह तआला से इस्तिग़फ़ार करे, और यह कहे कि या अल्लाह, यह काम तो गुलत और गुनाह है, मुझे इस पर नदामत और शर्मिन्दगी भी है, लेकिन या अल्लाह मैं मजबूर हूँ और इसके छोड़ने पर कादिर नहीं हो रहा हूँ, मुझे अपनी रहमत से माफ़ फरमा दीजिये और मुझे इस गुनाह से निकाल दीजिए। इमाम गुज़ली रह. फरमाते हैं कि जो आदमी यह काम करेगा तो इतना अल्लाह एक न एक दिन आगे चल कर उस गुनाह को छोड़ने की तौफ़ीक हो जाएगी, और एक हदीस से दलील पकड़ी है वह यह कि हज़ूर अक्फ़स सल्लल्लाहु अल्लाह तलब ने फरमाया कि:

(तरमीदः شريف)

यानी जो शक़्स इस्तिग़फ़ार करे वह इसरार करने वालों में शुमार नहीं होता, इसी बात को कुरआन के क़रीम में अल्लाह तआला ने इस तरह बयान फरमाया कि:

वहीं जो नफ़्र ज़ून्ब लाल्लाल नहीं नफ़्र नहीं नफ़्र नहीं नफ़्र नहीं नफ़्र नहीं करते हैं और अल्लाह के सिया क़ौन है जो गुनाहों की मग़फ़िरत करे. और जो गुनाह उन्होंने ने किया है उस पर इसरार नहीं
इसलिए इस्तिफ़ाफ़ तो हर हाल में करते रहना चाहिए। अगर किसी गुनाह के छोड़ने पर कुदरत नहीं हो रही है तब भी इस्तिफ़ाफ़ न छोड़े, बाज़ू झुंझुरों ने यहां तक फरमाया कि जिस ज़मीन पर गुनाह और गलती जाहिर हुई उस ज़मीन पर इस्तिफ़ाफ़ कर ले ताकि जिस वक़त यह ज़मीन तुम्हारे गुनाहों की गवाही दे वह तुम्हारे इस्तिफ़ाफ़ की भी गवाही दे कि इस बन्दे ने हमारे सामने इस्तिफ़ाफ़ भी कर लिया था।

इस्तिफ़ाफ़ के बेहतरीन अल्फ़ाज़

नबी—ए—क़रीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर कुर्बान जाएं। आप इस्तिफ़ाफ़ के लिए ऐसे ऐसे अल्फ़ाज़ उम्मत को सिखा गये कि अगर कोई इन्सान अपने ज़ेहन से सोच कर उन अल्फ़ाज़ तक पहुँचने की कोशिश भी करता तो नहीं पहुँच सकता था। युनाँचे फरमाया कि:

रब अफ़र वारहम और अफ़र वारहम और जज़ावज़ु मुहम्मद और जज़ावज़ु मुहम्मद

नूलम, उनके नूलम, उनके नूलम, उन्होंने नूलम, उन्होंने नूलम, उन्होंने नूलम, उन्होंने नूलम, उन्होंने नूलम, उन्होंने नूलम, उन्होंने नूलम, उन्होंने नूलम, उन्होंने नूलम, उन्होंने

इसलिए इसलिए इसलिए इसलिए इसलिए इसलिए इसलिए इसलिए इसलिए इसलिए इसलिए इसलिए इसलिए इसलिए

यानी ऐसे अल्लाह में सब्ज़िर फरमाइये और मुझे पर रहम फरमा दीज़िये, इसलिए कि आपके इत्म में हमारे वे गुनाह भी हैं जिनका इत्म हमें भी नहीं है, बेशक आप ही सब से ज्यादा इज़ज़त वाले और मुकरम हैं।

जब हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सफ़ा और मर्द के दरमियान सई किया करते थे उस वक़त आप मीलेन अख़ज़रने (हरे निशानों) के दरमियान यह दुआ पढ़ा करते थे।

देखिये बहुत से गुनाह ऐसे होते हैं जो हकीकत में गुनाह हैं लेकिन हमें उनके गुनाह होने का एहसास नहीं होता, और कभी—कभी इत्म नहीं होता, अब कहां तक इन्सान अपने गुनाहों का शुमार करके उनका इहाता करेगा, इसलिए दुआ में फरमा दिया कि जितने गुनाह
आपके इल्म में हैं, या अल्लाह उन सब को माफ़ करेगा।

सत्थिदुल् इस्तिगफ़ार

बेहतर यह है कि सत्थिदुल् इस्तिगफ़ार (इस्तिगफ़ार का सरदार) को याद करें और इसे पढ़ें करें, इसका मामूल बना लें:

اللهُمَّ أَنْتَ رَبِّي لَا إِلَهَ إِلَّا أَنَا خَلَقَتُنِي وَأَنَا عَبْدُكَ وَأَنَا عَلَى عِهْدِكَ وَوَعْدِكَ

ما استطعت اعوذ بِكِ من شَرِّ مَا صَنِعتَ أَبُو الْيَكَ بَنُوْكٍ عَلَى وَابْوٍ لَكَ

بَذَنْبِي فَاغْفِرْ لِي ذَنْبِي فَأَنَا لَا يَغْفِرُ الْذَّنْبُوْ الدَّنَوْبُ الَّا أَنَّتَ.

जिसका तर्ज़ूमा यह है कि:

या अल्लाह आप मेरे परवर्धिंगर हैं आपके सिवा कोई माजूं नहीं, आपने मुझे पैदा किया मैं आपका बन्दा हूं और मैं जहाँ तक हो सका आप से किये हुए अहद और वायदे पर कायम हूं, मैंने जो कुछ किया उसकी बुराई से आपकी पनाह मांगता हूं, आपने जो नेमते मुझे अता फरमायी उन्हें लेकर आप से रुजू करता हूं इसलिये मेरे गुनाह माफ़ फरमा दीजिए, क्योंकि आपके सिवा कोई गुनाह की मग्फित नहीं करता।

हदीस शरीफ़ में है कि जो शर्स सुबह के वक़्त इसकी पूरी यकीन के साथ पढ़े तो अगर शाम तक उसका इन्तिकाल हो गया तो वह सीधा जनन में जायेगा, और अगर कोई शर्स शाम के वक़्त पढ़े और सुबह तक उसका इन्तिकाल हो गया तो सीधा जनन में जायेगा। इसलिए सुबह शाम सत्थिदुल इस्तिगफ़ार पढ़ने का मामूल बना लें, बल्कि हर नमाज़ के बाद इसको एक बार पढ़ लिया करें कि इसको हुज़ूरें अबदस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लत ने सत्थिदुल इस्तिगफ़ार का लकब दिया। यानी यह तमाम इस्तिगफ़ारों का सरदार है। जब इस्तिगफ़ार के ये कलमें अल्लाह तबाला अपने नभी को सिखा रहे हैं और नीब ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लत अपनी उम्मत को सिखा रहे हैं तो फिर अल्लाह तबाला इस इस्तिगफ़ार के जरिये अपने बन्दों को नवाज़ना ही चाहते हैं और मग्फित करना ही
इस्लामी चुनौतियाँ

चाहते हैं, इसलिए इसको मामूलत में ज़रूर शामिल करें। अगर चाहेंगे
tो इस्तिफाफ़ के गुड़सर अल्फ़ज़ भी याद कर लें, वे ये हैं:

अस्टावफ़िर्लाह-ह रब्बी मिन कुलिन ज़मीन व अरुषु इलेहिं

और अगर सिफ़्र "अस्टाफ़िर्लाह-ह" ही पढ़ लिया करें तो भी
ढौक है।

बेहतरीन हदीस

उन इब्राहीम, रसूल अल्लाह द्वारा उनके द्वारा कहा गया कि:

हजरत अबु हुसैन रज़िय़लाहु अन्नु से रिवायत है कि
रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अल्लाह और सल्लम ने इरशाद फरमाया कि उस
ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है, (हुसैन बेग़द सल्लल्लाहु अल्लाह और सल्लम को जब कोई बात जो रहकर तत्पर
और बुद्धिमान के साथ बयान करनी मक़सूद होती तो क़सम खाकर
वह बयान फरमाते, और क़सम में और तुम अल्फ़ज़ फरमाते कि उस
ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है) अगर तुम बुधक
गुनाह न करो तो अल्लाह ताबाला तुम्हारा ब्यूद्ग़ प्रति कर दे और
ऐसे लोगों को पैदा करे कि जो गुनाह करें और फिर इस्तिफाफ़ करें
और फिर अल्लाह ताबाला उनकी मग़फ़िरत फरमा दें।

इन्सान के अन्दर गुनाह की सलाहियत पैदा की

इस हदीस में इस बात की तरफ इशारा फरमा दिया कि अगर
इन्सान की पैदाहिय़ से यह मक़सूद होता कि हम ऐसी मख़ल़ूक पैदा
करें जिसके अन्दर गुनाह करने की सलाहियत ही मौजूद न हो तो
फिर इस्लाम को पैदा करने की ज़रूरत ही नहीं थी, फिर तो फरिस्ते
भी काफ़ी थे, इसलिए कि वे ऐसी मख़ल़ूक हैं जो हर बक़्त
फरमाबदरी और इबादत ही में लगी रहती है; और अल्लाह ताबाला
की तस्बीह व पाकी बयान करने में मश्गूल रहती है। उसमें गुनाह करने की सलाहियत ही नहीं, अगर गुनाह करना चाहें तो भी नहीं कर सकती।

लेकिन इन्सान एक ऐसी मख्तूक है जिस में अल्लाह तज़ाला ने नेकी और गुनाह दोनों की सलाहियत पैदा फ़रमाई है। और पैसे नज़र यह था कि इन्सान में गुनाहों की सलाहियत होने के बावजूद वह गुनाहों से परहेज़ करे, और अगर कमी कोई गुनाह हो जाये तो फ़ौरन इस्तिफ़ाफ़ करे। अब अगर इन्सान यह अमल न करे तो उसको पैदा करने की क्या जरूरत थी? फिर तो फ़रिश्ते ही काफ़ी थे। चुनाव़े जब आदम अल्लाह तलिहसलाम को पैदा किया जा रहा था तो फ़रिश्तों ने यही कहा था कि यह आप कौन सी मख्तूक पैदा फ़रमा रहे हैं, जो जमीन पर ख़ून बहायेंगी, फ़साद मचायेंगी और हम आपकी तस्बीह व पाकी बयान करने में दिन रात लगे रहते हैं, तो अल्लाह तज़ाला ने उनको जवाब में फ़रमाया:

(سورة البقرة)  
(सोमी अँग माला तहल्लुन)  
यानी मैं ये बातें जानता हूँ जो तुम नहीं जानते।

यह फ़रिश्तों का कमाल नहीं

इसलिए कि गुनाह की सलाहियत होने के बावजूद जब यह मख्तूक गुनाहों से परहेज़ करेंगी तो यह तुम से भी आगे बढ़ जायेंगी, इसलिए कि तुम जो गुनाहों से बच रहे हो, इसमें तुम्हारा कोई कमाल नहीं। क्योंकि तुम्हारे अंदर गुनाह करने की सलाहियत ही नहीं।

जैसे एक आदमी अख्ता है, उसको कुछ दिखाई नहीं देता, अगर वह किसी गैर मेहम को न देखे, फिल्म न देखे, गृही किस्म की तस्वीरें न देखे तो इसमें उसका क्या कमाल है? इसलिए कि उसके अंदर देखने की सलाहियत ही नहीं। वह अगर देखना भी चाहें तो नहीं देख सकता। लेकिन एक शक्स यह है जिसकी बीनाई (नज़र) कामिल है, हर चीज़ देखने की सलाहियत मौजूद है, और उसके दिल
में स्वाहितों, उम्मेंग और शौक उपड रहा है, लेकिन इस सारे शौक और उम्मेंग के बावजूद अल्लाह का बन्दा होने का तसख्वय करके अपनी आंखों को गलत जगह पड़ने से बचाता है। यह वह मकाम है जिस पर अल्लाह तख्ताला ने जन्नत देने का वायदा किया है।

जन्नत की लफ़्ज़तें सिंह इन्सान के लिए हैं।

खूब समझ लीजिएः फ़रिश्ते अगरे जन्नत में रहें लेकिन जन्नत की लफ़्ज़तें उनके लिए नहीं, इसलिए कि उनके अंदर जन्नत की लफ़्ज़तें और राहतों को महसूस करने का मादा ही नहीं। जन्नत की लफ़्ज़तें अल्लाह तख्ताला ने उसी मनुष्कुक के लिए पैदा कराया है कि उसके अंदर गुनाह की भी सलाहित भौजूद है और नेती की भी सलाहित भौजूद है। अल्लाह तख्ताला की हिकमते बालिगा और मज़ी में कौन दखल दे सकता है। उस ने अपनी हिकमते बालिगा ही से सारा जहां इसलिए पैदा कराया ताकि इस जहां के अंदर ऐसा, इन्सान ने पैदा करने जिसके अंदर गुनाह करने की भी सलाहित हो और फिर वह गुनाह से रुके, और अगर कभी भूल चूक और बशर्ते के तकाज़े से कोई गुनाह हो जाए तो फौरन इस्तिग़फ़िर करे, और उस इस्तिग़फ़िर करने के नतीजे में वह इन्सान अल्लाह तख्ताला की गफ़फ़ारी का, उसकी सत्तारी का और उसके गफ़ूरुस्वीम होने का का मकाम व नहल बनता है। अब अगर गुनाह ही न होता तो फिर अल्लाह तख्ताला की गफ़फ़ारी कहां ज़ाहिर होती?

कुफ़र भी हिकमत से खाली नहीं

बुज़ूर्गों ने फ़रमाया कि इस कायमत में कोई चीज़ हिकमत और मसलिहत से खाली नहीं। यहां तक कि कुफ़र भी हिकमत से खाली नहीं, चुनांचे मौलाना रुमी रह. फ़रमाये हैं:

दर कारख़ाना-ए-इश्क अज़ कुफ़र ना गुज़ीर अस्त
आतिश करा बसोज़ज़द गर बू तहब्ब न बाशाद
यानी इस कारख़ाने में कुफ़र की भी ज़रूरत है, इसलिए कि अगर
इस्लामी खुशबुश

अबू लहब न होता यानी काफ़िर न होता तो जहानम की आय किस को जलाती?

इसलिये गुनाह भी अल्लाह ताक़ला की मज़ी का एक हिस्सा है, और इस गुनाह की ख़ाफ़िश बन्दे के अन्दर इसलिये पैदा की गई ताकि बन्दा उस ख़ाफ़िश को कुचले और उसको जलाए, क्योंकि बन्दा इस ख़ाफ़िश को जितना कुचलेगा, जितना जलायेगा, उतना ही उसका तक़क़ा ज़िमल होगा, और तक़क़े का नूर उसको हासिल होगा।

दुनिया की शह्वतें और गुनाह ईदन हैं

अल्लाह ताक़ला ने मौलाना सुमी रह. को मिसाल देने में कमाल अता फ़रमाया था। आप मिसाल देने में हमाम थे, फ़रमाते हैं कि:

शह्वतेदुनियामिसालेगुलखनअस्त
किअज़ोहमामेतक़कयोशोनाधस्त

यानी यह दुनिया की शह्वतें और गुनाह इस एतिबार से बड़े काम की चीज़ें हैं कि ये अल्लाह ताक़ला ने तुम्हें ईदन अता किया है।

ताकि तुम इस ईदन को जला कर तक़के का हमाम रोशन कर सको।

इसलिये कि तक़के का हमाम इसी ईदन के ज़रिये रोशन होगा।

इसलिये जिस बक़्त गुनाह की भरपूर ख़ाफ़िश पैदा हो रही हो, गुनाह का तक़क़ा दिल में उमड़ रहा हो, दिल मचल रहा हो, वेताब हो रहा हो, उस बक़्त तुम उस ख़ाफ़िश और उस तक़क़े को अल्लाह ताक़ला के लिए कुचल दो। जब उसको कुचल दोगे तो उसके ज़रिये तक़के का हमाम रोशन होगा, और तक़के का नूर हासिल होगा। अब अगर यह गुनाह का तक़क़ा ही न होता तो तुम्हें इस हमाम को रोशन करने का यह ईदन कहां से हासिल होता?

ईमान की मिसाल

हदीस शरीफ में है कि एक शख्स के दिल में ना मेहरम पर
निगाह डालने का तक़क़ा और शौक पैदा हुआ, लेकिन उस अल्लाह के बन्दे ने इस शौक और तक़क़े के बावजूद उस निगाह को ना
मेरहम पर डालने से रोक लिया, और यह सोचा कि मेरे अल्लाह और मेरे मालिक ने इस अमल से मना फरमाना है। हदीस शरीफ में है कि जो शह्स अल्लाह तजाला को याद करके इस तकाजे को रोक लेगा तो अल्लाह तजाला इसको ईमान की ऐसी मिठास अर्था फरमाएगे कि अगर वह नज़र डाल लेता तो उसको ऐसी मिठास हासिल न होती, जो अल्लाह तजाला उसको नज़र न डालने की वजह से ईमान की मिठास अर्था फरमाएगे। देखिये यही गुनाह का तकाज़ा ईमान की मिठास हासिल होने का जरिया बन गया, अगर यह गुनाह का तकाज़ा और जज्बा न होता तो ईमान की मिठास हासिल न होती।

गुनाह पैदा करने की हिकमत

एक सबाल पैदा होता है कि जब अल्लाह तजाला को बन्दे से गुनाह नहीं कराना तो फिर इस गुनाह को पैदा ही क्यों किया? इसका जवाब यह है कि इसमें अल्लाह तजाला की दो हिकमतें और मसलिहतें हैं, एक मसलिहत तो यह है कि जब बन्दा पूरी कोशिश करके उस गुनाह से बचने का एहतिमाम करेगा तो उसको तकवे का नूर हासिल होगा, और अल्लाह तजाला का कुर्ब (निकद्धता) हासिल होगा। क्योंकि इन्सान जितना जितना गुनाह से दूर होता जाएगा, उसी एतिहास में उसके दर्जों में तरककी होती बढ़ी जाएगी। कुरआने करीम में अल्लाह तजाला ने फरमाया:

(سورة الطلاق)

ومن يتق الله يجعل له مخرجا

यानी जो शह्स अल्लाह से डरेगा तो अल्लाह तजाला उसके लिए नए नए रास्ते पैदा करने देगा।

तोबा के ज़रिये दर्जों की वृद्धि

लेकिन अपनी पूरी कोशिश के बावजूद बशर होने के तकाजे की वजह से इन्सान किसी जगह फिसल गया और गुनाह कर लिया तो जब वह उस गुनाह पर इस्तिग्फार करेगा और नदामत और
मक्ताबे आश्रफ़ी के साथ अल्लाह तख़ाला के हुज़ूर हाजिर होगा, और यह कहेगा:

इस्तुफ़ार्आल्लाह रबी मन के जनब और नबी तैबे

यानी ऐं अल्लाह मुद्र से ग़लती हो गई, मुझे माफ़ करिगा। तो
अब उस नदामत और तौबा के नतीजे में उसके दर्जे और ज्यादा
बुलंद हो जायेंगे, और अल्लाह तख़ाला की गोप़िकारी और सत्तारी उस
पर जाहिर होगी।

ये बातें बहुत नाज़ुक हैं, अल्लाह तख़ाला इनको ग़लत समझने से
हमारी हिफ़ाज़त फर्माएं, आमीन। याद रखो: गुनाह पर कभी जुरूरत
नहीं करनी चाहिए, लेकिन अगर गुनाह हो जाए तो फिर मायूस भी न
होना चाहिए, अल्लाह तख़ाला ने तौबा और इस्तिनाफ़ार के रास्ते इसी
लिए रखे हैं ताकि इस्नान मायूस न हो।

इसलिए अगर कभी गुनाह हो जाए और उसके बाद दिल में
शर्मनदगी की आग भड़क उठे और उस नदामत के नतीजे में इस्नान
अल्लाह तख़ाला की तसफ़ रुज़ू करे, तौबा करे, अल्लाह तख़ाला के
सामने रोये, गिड़गिड़ाये, तो इस रोने और गिड़गिड़ाने के नतीजे में
कभी-कभी उसको वह मक़ाम हासिल होता है कि अगर वह गुनाह न
करता तो उस मक़ाम तक न पहुँचता।

हज़रत मुआविया रजि. का वाकिका

हकीमुल उम्मत हज़रत मोलीला थानवी रह. ने हज़रत मुआविया
रजियल्लाहु अन्तु का एक वाकिका लिखा है। हज़रत मुआविया रजि.
रोज़ाना तहज़ज़ुद की नमाज़ के लिए उठा करते थे। एक दिन
तहज़ज़ुद के बज़त आँख न खुली, यहाँ तक कि तहज़ज़ुद का वक़्त
निकल गया, चूँकि उस से पहले कभी तहज़ज़ुद की नमाज़ नहीं छूटी
थी, पहली बार यह वाकिका पेश आया था कि तहज़ज़ुद की नमाज़
छूट गई, चुनाये उसकी वजह से इस क्रूँज़ नदामत और रनज़ हुआ
कि सारा दिन रोते रोते गुज़ार दिया कि या अल्लाह मुद्र से आज
तहज्जुद की नमाज छूट गई। जब अगली रात को सोए तो तहज्जुद के बज़ते एक बड़े मियों ने तस्फीफ लाकर आपको तहज्जुद की नमाज़ के लिए जगाना शुरू कर दिया कि उठ कर तहज्जुद की नमाज पढ़ लो। हज़रत मुआविया रज़. फौरन उठ गये और उस से पूछा की तुम कौन हो? और यहां कैसे आये? उसने बताया कि मैं वही जमाना त्यो का बदनाम इब्लिस और शैतान हूं। हज़रत मुआविया रज़. ने पूछा कि तुम्हारा काम तो इस्नान को गुफ़लत में मुक्ताला करना है। नमाज़ के लिये उठाने से तुम्हारा क्या काम? शैतान ने कहा: इस से बहस मत करो, जाओ तहज्जुद पढ़ो और अपना काम करो। हज़रत मुआविया रज़. ने फरमाया कि नहीं, पहले बताओ कि क्या वजह है? मुझे क्यों उठा रहे थे? जब तक नहीं बताओगे मैं नहीं छोड़ूँगा। जब बहुत ज़िद की तो शैतान ने बताया कि असल में बात यह है कि कल रात मैंने आप पर गुफ़लत तारी कर दी थी, ताकि आपकी तहज्जुद की नमाज छूट जाए, चुनांचे आपकी तहज्जुद की नमाज़ निकल गई, लेकिन तहज्जुद छूट जाने के नतीजे में आपने सारा दिन रोते रोते गुज़ार दिया, और उस रोने के नतीजे में आपके इतने दर्जे बुलंद हो गए कि अगर आप उठ कर तहज्जुद पढ़ लेते तो आपके दर्जे इतने बुलंद न होते। यह तो बहुत घाटे को सौदा हुआ, इसलिए मैंने सोचा कि आज आपको उठा दूं ताकि और ज्यादा दर्जों की बुलंदी का रास्ता पैदा न हो।

वर्ना दूसरी मक़दूक पैदा कर देंगे.

इसलिए बुज़ूर्ग फ़रमाते हैं कि अगर इस्नान सच्चे दिल से तौबा और इस्तिग़फ़ार करें और अल्लाह ताबाला के हुज़ूर शर्मन्दरी और शिकस्तगी के साथ हाज़िर हो जाए तो कभी-कभी इसमें इस्नान के दर्जे इतने ज्यादा बुलंद हो जाते हैं कि इस्नान इसका तस्कियू भी नहीं कर सकता, इसलिए यह तौबा व इस्तिग़फ़ार बड़ी अज़ीम चीज़ है। इसलिए इस हदीस में हुज़ूरे अक्दस सल्लाल्लाहु अल्लाहिन व सल्लाम
फरमा रहे हैं कि अगर सारी मशक्कुक बिल्कुल गुनाह छोड़ दे तो अल्लाह तख़ाला दूसरी मशक्कुक पैदा फरमा देंगे जो गुनाह करेगी फिर अल्लाह तख़ाला के सामने तौबा और इस्तिमफ़ार करेगी तो अल्लाह तख़ाला उसके गुनाहों को माफ़ फरमा देंगे।

बहर हाल इस हदीस के जरिये हुजूर अकबर सल्लल्लाहु अल्लैहि व सल्लम ने हमें अभिलाष तालीम यह दी है कि अगर कभी गलती हो जाए तो मायूस मत हो जाओ बल्कि तौबा व इस्तिमफ़ार की तरफ़ रुजू करो, अलबत्ता अपनी तरफ़ से गुनाह की तरफ़ कदम मत बढ़ाओ बल्कि गुनाह से बचने की पूरी कोशिश करो, लेकिन अगर गुनाह हो जाये तो तौबा व इस्तिमफ़ार कर लो।

गुनाह से बचना लाज्ज़ी फरज़ है

कभी-कभी दिल में ख़्याल होता है कि फिर तो गुनाह छोड़ने की कोई ख़ास ज़रूरत नहीं बल्कि गुनाह भी करते रहो और इस्तिमफ़ार और तौबा भी करते रहो। ख़ुब समझ लीजिए कि गुनाह से बचना हर इन्सान के जिसे लाज्ज़ी फरज़ है, और इसके लिए ज़रूरी है कि वह अपने आपको ज़िन्दगी के हर गोष्ट में हर वक्त अपने आपको गुनाह से बचाये, लेकिन अगर बशर होने के तकाज़े के सबब कभी गुनाह हो जाये तो मायूस न हो बल्कि तौबा कर ले, या अगर कोई शख़्स गुनाह में मुलाता है और उसके लिए किसी क्षण से उसको छोड़ न मुक्तिन नहीं। फिर एक ही बैंक की नौकरी में मुबल्ता है तो उस सुरूत में वह दूसरी नौकरी इस तरह तलाश करे जैसे एक बेरोज़गार आदमी तलाश करता है, लेकिन साथ में वह तौबा व इस्तिमफ़ार भी करता रहे।

बीमारी के ज़रिये दर्जों की बुलन्दी

या जैसे अपने यह हदीस पुनी होगी कि जब इन्सान बीमार होता है तो बीमारी से गुनाह माफ़ होते हैं और उसके ज़रिये दर्ज बुलन्द होते हैं, और बीमारी जितनी उफादा सक्ता होगी उतने ही
इन्सान के दर्जे बुलन्द होंगे, लेकिन क्या इस हदीस का यह मतलब है कि आदमी अल्लाह तलाशा से बीमारी मांगें? या कौशिक करके बीमार पड़े? ताकि जब मैं बीमार हुंगा मेरे गुनाह माफ होंगे और मेरे दर्जे बुलन्द होंगे। जाहिर है कि बीमारी ऐसी चीज़ नहीं जिसको मांगा जाए और जिसको हासिल करने की कौशिक की जाए, जिसकी तमन्ना की जाए, बल्कि हदीस में खुद हुजूरे अक्लस सल्लल्लाहु अल्लाही व सल्लम ने फरमाया कि अल्लाह तलाशा से ख़ैर व अमन मांगो, कभी बीमारी भत मांगो, लेकिन अगर गैर इश्कियारी तौर पर बीमारी आ जाये तो उसको अल्लाह तलाशा की तरफ से समझ्हो और यह सोचो कि इसके जरिये हमारे गुनाह माफ हो रहे हैं, हमारे दर्जे बुलन्द हो रहे हैं। बिल्कुल इसी तरह गुनाह भी करने की चीज़ नहीं है, बल्कि बचने की चीज़ है, परहेज़ करने की चीज़ है, लेकिन कभी हालात के तकाज़े से मजबूर होकर गुनाह हो गया तो फिर इन्सान तौबा व इस्तिग़फ़ार की तरफ रुज़ू करे तो उसके नतीज़े में उसके दर्जे बुलन्द होंगे। यह है इस्तिग़फ़ार की हकीकत।

तौबा व इस्तिग़फ़ार की तीन किस्में

फिर तौबा व इस्तिग़फ़ार की तीन किस्में हैं। 1. गुनाहों से तौबा व इस्तिग़फ़ार, 2. इतालम में होने वाली कोतहियों से इस्तिग़फ़ार, 3. खूद इस्तिग़फ़ार से इस्तिग़फ़ार, यानी इस्तिग़फ़ार का भी हक अदा नहीं कर सके, इस से भी हम इस्तिग़फ़ार करते हैं।

तौबा का मुकम्मल होना

पहली किस्म यानी गुनाहों से इस्तिग़फ़ार करना हर इन्सान पर लाजसी और फर्ज़ है, कोई इन्सान इस से अलग नहीं, हर इन्सान अपने पिछले गुनाहों से इस्तिग़फ़ार करे। यही वजह है कि तस्क़ुफ़ और तस्क़ुफ़ में भर से पहला कुदम तौबा की तकमील है। अगले तमाम दर्जे तौबा को मुकम्मल करने पर मौक़ूफ़ हैं, जब तक तौबा मुकम्मल नहीं होगी आगे कुछ नहीं होगा, चुनाये जब कोई शक्स
अपनी इस्लाम व सुधार के लिए किसी बुजुर्ग के पास जाता है तो वह बुजुर्ग सब से पहले तीना की तकमील कराते हैं। इमाम गज़ाली रह. है।

यानी जो शख्स किसी शैव्ख के पास मुरीद होने के लिए आए तो उसके लिए सब से पहला काम तीना की तकमील है, और शैव्ख के लाभ पर जो बैठक की जाती है वह भी हकीकत में तीना ही की बैठती होती है। बैठक के वकःत मुरीद अपने पिछले गुनाहों से तीना करता है और आज़ाद गुनाह न करने का इरादा और अहंद करता है, उसके बाद शैव्ख उसकी तीना को मुक्मल कराता है।

**मुख्तसर तीना**

बुजुर्ग हजःरत फरमाते हैं कि तीना की तकमील के दो दर्जे हैं। एक मुख्तसर तीना और दूसरी तफसीली तीना। मुख्तसर तीना यह है कि इन्सान एक बार हिन्दीनान से शीत कर अपनी पिछली जिन्दगी के तमाम गुनाहों को मुख्तसर तीर पर याद करके ध्यान में लाकर उन सब से अल्ला तखःला के सामने तीना करे। मुख्तसर तीना का अहंद तरीका यह है कि सब से पहले नमाज़ तीना की नियत से दो रक्षक नमाज़ पढ़े, उसके बाद अल्लाह तखःला के सामने आज़ज़ी, अध्यक्ष, नदामत और शर्मिन्दगी और रोने व गिन्निज़ाने के साथ एक एक गुनाह का याद करके यह दुःख करे कि या अल्लाह, अब तक मेरी पिछली जिन्दगी में मुझ से जो कुछ गुनाह हुए हैं, चाहे वे जाहिरी गुनाह हों या बातिनी, अल्लाह के हुकःकुक से मुतालिक हुए हों या बन्दों के हुकःकुक से मुतालिक हुए हों, छोटे गुनाह हुए हों या बड़े गुनाह हुए हों। या अल्लाह में उन सब से तीना करता हूँ। यह मुख्तसर तीना हुई।

**तफसीली तीना**

लेकिन मुख्तसर तीना करने का यह मतलब नहीं कि अब
बिल्कुल पाक साफ़ हो गये, अब कुछ नहीं करना, बल्कि उसके बाद तफसीली तीबा जरूरी है, वह इस तरह कि जिन गुनाहों की तलाफी मुक्तिन है उन गुनाहों की तलाफी करना शुरू कर दें। जब तक इन्सान उनकी तलाफी नहीं करेगा उसे वक़्त तक उसकी तीबा कामिल नहीं होगी। जैसे फर्ज़ नमाज़ छूट गई थी, अब जब नमाज़ें छूट जाने का स्वायत्त आया तो अब तीबा कर ली, लेकिन जिन्दगी के अन्दर मौत से पहले उन नमाजों को कजा करना वाजिब है, और अगर तीबा करके इत्तमीनान से बैठ गया और नमाजों की कजा नहीं की तो इस सूरत में तीबा कामिल नहीं हुई। इसलिए कि जिन गुनाहों की तलाफी मुक्तिन थी उनकी तलाफी नहीं की, इसलिए इस्लाह के अन्दर सब से पहला कदम यह है कि तीबा को मुक्तमल करे, जब तक यह नहीं करेगा उस वक़्त तक इस्लाह मुक्तिन नहीं।

नमाज़ का हिसाब लगाए
तफसीली तीबा के अन्दर सब से पहला मामला नमाज़ का है। बालिग़ होने के बाद से अब तक जितनी नमाज़ें कजा हुई हैं उनका हिसाब लगाए। बालिग़ होने का मतलब यह है कि लड़का उस वक़्त बालिग़ होता है जब उसको एहतिलाम (स्वपन्दोष) हो। और लड़की उस वक़्त बालिग़ होती है, जब उसको हेज़ (माहवारी) आना शुरू हो जाए, और अगर किसी के अन्दर ये निशानियां जाहिर न हों तो उस सूरत में जिस दिन पन्द्रह साल उस्म हो जाए उस वक़्त वह बालिग़ हो जाता है, वाहे वह लड़का हो या लड़की हो, उस दिन से उसे बालिग़ समझा जायेगा। उस दिन से उस पर नमाज़ भी फर्ज़ है, रोज़े भी फर्ज़ हैं और दूसरे दीनी फराईज़ भी उस पर लागू हो जाएँगे।

इसलिए इन्सान सब से पहले यह हिसाब लगाए कि जब से में बालिग़ हुआ हूं उस वक़्त से अब तक कितनी नमाजें छूट गई हैं, बहुत से लोग तो ऐसे भी होते हैं जो दीनदार घराने में पैदा हुए और बचपन ही से मां बाप ने नमाज़ पढ़ने की आदत ढाल दी। जिसकी
वजह से बालिग़ होने के बाद से अब तक कोई नमाज़ करा ही नहीं हुई। अगर ऐसी सूरत है तो लुहानल्लाह। और हर एक मुस्लिम घरने में ऐसा ही होना चाहिए। इसलिए कि हमें अक्सर सल्लल्लाहु अल्लाह व सल्लम का इरादा है कि जब बच्चा सात साल का हो जाए तो नमाज़ की तलाकी करने। और जब बच्चा दस साल का हो जाए तो उसको मारे कर नमाज़ पढ़वाओ। लेकिन अगर फर्ज़ करे बालिग़ होने के बाद गफलत की वजह से नमाज़ें छूट गईं, तो उनकी तलाकी करना फर्ज़ है। तलाकी का तरीका यह है कि अपनी जिन्दगी का जायज़ा। लेकर याद करें कि मेरे जिम्मे कितनी नमाज़ें बाकी हैं, अगर थीक थीक हिसाब लगाना मुक्त हो तो थीक थीक हिसाब लगा लें, लेकिन अगर थीक थीक हिसाब लगाना मुक्त न हो तो उस सूरत में एक एहतियती अन्दाज़ा करके इस तरह हिसाब लगाए कि उसमें नमाज़ें कुछ ज्यादा तो हो जाए लेकिन कम न हो। और फिर उसको एक काफ़ी में लिख लें कि "आज इस तारीख़ को मेरे जिम्मे इतनी नमाज़ें फर्ज़ हैं, और आज से में उनका अदा करना शुरू कर रहा हूं, और अगर मे अपनी जिन्दगी में इन नमाज़ों को अदा न कर सका तो में वसीयत करता हूँ कि मेरे छोटे हुए माल में से इन नमाज़ों का फिदया अदा कर दिया जाए"।

एक वसीयत नामा लिख लें।

यह वसीयत लिखना इसलिए जरूरी है कि अगर आपने यह वसीयत नहीं लिखी और करा नमाज़ों को अदा करने से पहले आपका इंतिकाल हो गया तो इस सूरत में वारिसों के जिम्मे शारीर तौर पर जरूरी नहीं होगा कि आपकी नमाज़ों का फिदया अदा करना उनकी मर्ज़ी पर मौक़ूफ़ होगा। चाहे तो दं और चाहे न दं। अगर फिदया अदा करेंगे तो यह उनका एहसान होगा। शारीर तौर पर उनके जिम्मे फर्ज़ व वाजिब नहीं। लेकिन अगर आपने फिदया अदा करने की वसीयत कर दी तो इस सूरत में वारिस शारीर तौर पर इस
बात के पायलट होंगे कि वे कुल माल के एक तहाई में से उस वसीयत को नफ़्ज़ करें, और नमाज़ों का फ़िदया अदा करें।

हज़ूर अक्कद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इरादा है कि हर वह शाक्त जो अल्लाह पर और आखिरत के दिन पर ईमान रखता हो, और उसके पास कोई बात वसीयत लिखने के लिए मौजूद हो, तो उसके लिए दो रातें भी वसीयत लिखे बगैर गुज़ारना जायज़ नहीं।

(तिरमिज़ी शरीफ)

इसलिए अगर किसी के जिम्मे नमाज़ें क़ज़ा हैं तो इस हदीस की रोशनी में उसको वसीयत लिखना ज़रूरी है। अब हम लोगों को जरा अपने गरेबान में मुंह डाल कर देखना चाहिए कि हम में से कितने लोगों ने अपना वसीयत नामा लिख कर रखा हुआ है, हालांकि वसीयत नामा न लिखना एक मुस्तकिल गुनाह है। जब तक वसीयत नामा नहीं लिखेगा उस वक़्त तक यह गुनाह होता रहेगा। इसलिए फौरन आज ही हम लोगों को अपना वसीयत नामा लिख लेना चाहिए।

क़ज़ा-ए-उमरी की अदायगी

उसके बाद उन क़ज़ा नमाज़ों को अदा करना शुरू कर दें। उन को क़ज़ा-ए-उमरी भी कहते हैं। इसका तरीका यह है कि हर वक़्ती नमाज़ के साथ एक नमाज़ क़ज़ा भी पढ़ ले, और अगर किसी के पास वक़्त ज़्यादा हो तो एक से ज़्यादा भी पढ़ सकता है, ताकि जितनी ज़ल्दी उन नमाज़ों पूरी हों उतना ही बेहतर है। बल्कि वक़्ती नमाज़ों के साथ जो नवफ़़िल होते हैं उनके बजाए क़ज़ा नमाज़ पढ़ ले। और फ़ज़र की नमाज़ के बाद और असर की नमाज़ के बाद नफ़्सी नमाज़ पढ़ना तो जायज़ नहीं लेकिन क़ज़ा नमाज़ पढ़ना जायज़ है। इसमें अल्लाह तबाला ने इस्ती आसानी फ़रमा दी है, हमें चाहिए कि हम इस आसानी से फ़ायदा उठायें और जितनी नमाज़ें अदा करते जाएं उनको उस कार्य में साथ ही लिखते जाएं कि इतनी
अदा कर ली, इतनी बाकी हैं।

सुनन्तों के बजाए क़ज़ा नमाज़ पढ़ना दुरुस्त नहीं
कुछ लोग यह मस्लहा पूछते हैं कि चूंकि हमारे जिसे क़ज़ा नमाज़े बढ़त बाकी हैं तो क्या हम सुनन्ते पढ़ने के बजाए क़ज़ा नमाज़ पढ़ सकते हैं? ताकि क़ज़ा नमाज़ें जल्द पूरी हो जाएं। इसका जवाब यह है कि सुनन्ते मुआक़दा पढ़नी चाहिए। उनको छोड़ना दुरुस्त नहीं, हां नफ़िलों के बजाए क़ज़ा नमाज़ें पढ़ना जायज़ है।

क़ज़ा रोज़ों का हिसाब और वसीयत
इसी तरह रोज़ों का जायज़ा लें, जब से बालिग़ हुए हैं, उस वक़्त से अब तक रोज़े छूटे हैं या नहीं? अगर नहीं छूटे तो बढ़त अच्छा, अगर छूट गए हैं तो उनका हिसाब लगा कर अपने पास वसीयत नामे की कपी में लिख लें कि आज फ़ूला तारीख़ को मेरे जिम्मे इतने रोज़े बाकी हैं। मैं उनकी अदायेंगी शुरू कर रहा हूँ। अगर मैं अपनी ज़िद्द़ में इनको अदा नहीं कर सका तो मेरे मरने के बाद मेरे छोड़े हुए माल में से इन रोज़ों का फिदा अदा कर दिया जाए। उसके बाद जितने रोज़े अदा करते जाएं उस वसीयत नामे की कपी में लिखते जाएं, कि इतने रोज़े अदा कर लिये, इतने बाकी हैं। ताकि हिसाब साफ़ रहे।

वाजिब ज़क़ात का हिसाब और वसीयत
इसी तरह ज़क़ात का जायज़ा लें, बालिग़ होने के बाद ज़क़ात अदा करना फर्ज़ हो जाता है। इसलिए बालिग़ होने के बाद अगर अपनी मिलकियत में ज़क़ात के काबिल चीज़ें थीं और उनकी ज़क़ात अदा नहीं की थी, तो अब तक जितने साल गुज़रे हैं हर साल की अलग अलग ज़क़ात निकालें, और इसका बाक़ायदा हिसाब लगायें और फिर ज़क़ात अदा करें। और अगर याद न हो तो फिर पहलियाँ करके अन्दाज़ा करें, इसमे ज़्यादा हो जाए तो कोई हर्ज़ नहीं लेकिन कम न हो। और फिर उसकी अदायेंगी की फिक़ करें और उसको
अपने वसीयत नामे की कापी में लिख लें और जितनी जकात अदा करें उसको कापी में लिखते चलें जाएं। और जल्दी से जल्दी अदा करने की फिक्र करें।

इसी तरह हज़ ज़िन्दगी में एक बार हज़ फर्ज़ होता है, अगर हज़ फर्ज़ है और अब तक अदा नहीं किया तो जल्द से जल्द इस से भी फारिग होने की फिक्र करें। ये सब अल्लाह के हक हैं, इनको अदा करना भी तफ़सीली तौबा का एक हिस्सा है।

बन्दों के हुकूक अदा करें या माफ़ करायें

उसके बाद बन्दों के हुकूक का जायजा लें, कि किसी का कोई जानी हक या किसी का कोई माली हक अपने जिम्मे वाजिब हो और अब तक अदा न किया हो, तो उसको अदा करें या माफ़ करायें। या किसी को कोई तकलीफ़ पहुँचाई हो तो उस से माफ़ करायें। हदीस शरीफ में है कि एक बार हुजूरे अक्दस सल्लल्लाहु अल्लाह व सल्लम ने बाक़ायदा सहाबा—ए—किराम के मजम में खड़े होकर यह ऐलान फर्माया कि:

"अगर मैंने किसी को कोई तकलीफ़ पहुँचाई हो, या किसी को कोई सदना पहुँचाया हो, या किसी का कोई हक़ मेरे जिम्मे हो तो आज में आप सब के सामने खड़ा हूँ, वह शरक़ आकर मुझ से बदला ले ले, या माफ़ कर दे।"

इसलिए जब हुजूरे अक्दस सल्लल्लाहु अल्लाह व सल्लम माफ़ी मांग रहे हैं तो हम और आप किस गिनती में हैं। इसलिए ज़िन्दगी में अब तक जिन जिन लोगों से तालुक़ात रहे, या लेन देन के मामलत रहे, या उठना बैठना रहा, या यार रिश्तेदार हैं, उन सबः से संपर्क कायम करके ज़बानी या ख़त लिख कर उन से मालूम करें और अगर उनका तमाम जिम्मे कोई माली हक निकले तो उसको अदा करें, और अगर माली हक नहीं हैं बल्कि जानी हैं, जैसे किसी की ग़ीतकत की थी, किसी को बुरा भला कह दिया था, या किसी को सदना पहुँचाया था, उन सब से माफ़ी मांगना ज़रूरी है।
एक दूसरी हदीस में हुजूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फर्माया कि अगर किसी शख्स के दूसरे शख्स पर जुल्म कर रखा है, चाहे वह जुल्म जानी हो या माल जुल्म हो, आज वह उस से माफ़ी मांगे ले, या सोना चांदी देकर उस दिन के आर्थिक से पहले हिसाब साफ़ कर ले। जिस दिन न दिहल्म होगा और न दीनार होगा, कोई सोना चांदी काम नहीं आएगा।

आखिरत की फिक्र करने वालों का हाल

जिन लोगों को अल्लाह तबाला आखिरत की फिक्र अता फर्माते हैं वे लोग एक एक शख्स के पास जाकर उनके दुकूत अदा करते हैं या उन से दुकूत की माफ़ी करते हैं। हज़रत धानी रह। ने इसी सुनन्त पर अभिलाष करते हुए "अल ऊर्ज़ बन्रज़" के नाम से एक रिसाला लिख कर अपने तमाम ताल्लुकात वालो के पास भेजा, जिसमें हज़रत ने यह लिखा कि चूर्ख आप से मेरे ताल्लुकात से हैं, खुदा जाने किस वक़्त क्या गलती मुझ से हुई हो, या कोई वाजिब हक मेरे जिस्मे बाकी हो, खुदा के लिए आप मुझ से वह हक वुसूल कर लें। या माफ़ कर दें।

इसी तरह मेरे बालिक माजिद हज़रत मुसीद मुहम्मद शाफी साहिब रह। ने भी अपने तमाम ताल्लुकात रखने वालो को "कुछ तलाफ़ी—ए—माफ़ा" (यानी गुज़रे हुए की कुछ तलाफ़ी) के नाम से एक खत लिख कर भिजवाया। हुजूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुनन्त की पैरी में हमारे बुजुर्गों का यह मामूल रहा है, इसलिए हर आदमी को इसकी पाबंदी करनी चाहिए। ये सब बातें तफसीली तोबा का हिस्सा हैं।

बन्दों के दुकूत बाकी रह जारं तो?

यह बात तो अपनी जगह दुर्रस्त है कि अल्लाह के दुकूत तोबा से माफ़ हो जाते हैं, लेकिन बन्दों के दुकूत उस वक़्त तक माफ़ नहीं होते जब तक हक वाला माफ़ न करे, या उसको अदा न करे।
लेकिन हजरत थानवी रह. फरमाते हैं कि एक आदमी से जिन्दगी में बन्दों के हुकूक जाया हुए और बाद में अल्लाह तख़ाला ने उसके दिल में उन हुकूक की फिक्र अला फरमाई और तीव्र की ताकतक अला फरमाई. जिसके नीजे में उसने उन हुकूक की अदायेणी की फिक्र शुरू कर दी और अब लोगों से मालूम कर रहा है कि तेरे जिसे किस शह्स के व्या हुकूक रह गये हैं, तव्यि में उतनी अदा कर दूं लेकिन अबी उन हुकूक की अदायेणी की पूरा नहीं कर पाया था कि उस से पहले ही उसका इतिकाल हो गया, अब सवाल यह है कि चूंकि उसने हुकूक की अदायेणी मुकम्मल नहीं की थी और माफ़ भी नहीं कराए थे, क्या आखिर्द के अजाब से उसकी नजात और बचाव की कोई सूतर नहीं है? हजरत थानवी रह. फरमाते हैं कि उस शह्स को भी मायूस नहीं होना चाहिए, इसलिए कि जब यह आदमी हुकूक की अदायेणी और तीव्र के रास्ते पर चल पड़ा था और कोशिश भी शुरू कर दी थी, तो इन्हा अल्लाह उस कोशिश की कर्क देंगे, और वे हक़ वाले अन्या हक माफ़ फरमा देंगे।

अल्लाह तख़ाला के मगफिरत फरमाने का अजीब वाकिया

दलील में हजरत थानवी रह. ने हदीस शराफ़ का वह मशहूर वाकिया पेश किया कि एक शह्स ने निन्खनवी (६६) आदमी को क़ल्ल कर दिया था, उसके बाद उसको तीव्र की फिक्र हुई, अब सोचा कि मैं क्या करूं, चुनांचे वह ईसाई बुजुर्ग के पास गया और उसको जाकर बताया कि मैंने इस तरह ६६ आदमी को क़ल्ल कर दिया है, तो व्या मेरे लिए तीव्र का या नजात का कोई रास्ता है? उस आलिम ने जवाब दिया कि तू तबाह हो गया और अब तेरी तबाही और हलाकत में कोई शक नहीं, तेरी नजात और तीव्र का कोई रास्ता नहीं है। यह जवाब सुन कर वह शह्स मायूस हो गया. उसने सोचा कि ६६ क़ल्ल कर दिये हैं, एक और सही, चुनांचे उस
आलिम को भी कत्ल कर दिया और सी (१०६) की गिन्ती पूरी कर दी। लेकिन दिल में चूंकि तौबा की फिक्र लगी हुई थी इसलिए दोबारा किसी अल्लाह के तलाश में निकल गया, तलाश करते करते एक अल्लाह बाला उसको मिल गया, और जाकर उसे अपनी सारा किस्सा बताया, उसने कहा कि इसमें मायूस होने की जरूरत नहीं, अब तुम पहले तौबा करो और फिर इस बस्ती को छोड़ कर फलां बस्ती में चले जाओ, और वह नेक लोगों की बस्ती है, उनकी सोहबत इस्तिमार करो। चूंकि वह तौबा करने में मुश्किल था, इसलिए वह उस बस्ती की तस्फ़ चल पड़ा, अभी रास्ते में ही था कि उसकी मौत का वक़्त आ गया। रिवाज़ में आता है कि जब वह मरने लगा तो मरने लगे भी अपने आपको सीने के बल घसीट कर उस बस्ती के क़रीब करने लगा जिस बस्ती के क़रीब वह जा रहा था, ताकि मैं उस बस्ती के क़रीब हो जाएं। आख़िर कार जान निकल गई, अब उसकी रूह लेजाने के लिए रहमत के फरिस्ते और अज़ाब के फरिस्ते दोनों पढ़ गये और दोनों में इश्तिमाल शुरू हो गया। रहमत के फरिस्ते कहने लगे कि चूंकि यह शाफ़ि तौबा करके नेक लोगों की बस्ती की तस्फ़ जा रहा था, इसलिए इसकी रूह हम ले जाय़, अज़ाब के फरिस्ते कहने लगे कि इसने सी आदमियों को कत्ल किया है और अभी इसकी माफ़ी नहीं हुई, इसलिए इसकी रूह हम ले जाय़। आख़िर में अल्लाह त्वा ने यह पौछला फरमाया कि यह देखा जाय कि यह शाफ़ि कौन सी बस्ती से ज्यादा क़रीब है, जिस बस्ती से चला था उस से ज्यादा क़रीब है या जिस बस्ती की तस्फ़ जा रहा था उस से ज्यादा क़रीब है। अब दोनों तस्फ़ के फासलों की पैमाईश की गई तो मालूम हुआ कि जिस बस्ती की तस्फ़ जा रहा था उस से धोख़ा सा क़रीब है। चुनांचे रहमत के फरिस्ते उसकी रूह ले गये। अल्लाह त्वा ने उसकी कोशिश की बर्तन से उसको माफ़ फरमा दिया। (मुस्लिम शरीफ़)
हजरत थानाकी रहे। फरमाते हैं कि अगर भक्ति उसके जिम्मे बदन्दों के हुकूक थे, लेकिन चूँकि अपनी तरफ से कोशिश शुरू कर दी थी इसलिए अल्लाह तख़्ताला उस की मग्फित फरमाया दी। इसी तरह अल्लाह किसी इत्यादि के जिम्मे बदन्दों के हुकूक हों और वह उनकी अदायगिनी की कोशिश शुरू कर दे और इस फिक्र में लग जाये और फिर दरमियान में मीत आ जाए तो अल्लाह तख़्ताला की रहमत से उम्मीद है कि वह इसकी तीव्रता का आदेश देंगे।

बहर हाल, ये दो किस्म की तीव्रता कर ले, एक मुख्तार तीव्र और एक तृणसीली तीव्र, अल्लाह तख़्ताला अपनी रहमत से हम सब को इसकी तीव्रता अदा फरमाए, आमीन।

पिछले गुनाह भूला दो

हमारे हजरत डाक्टर अबुदुल हई साहिब फरमाया करते थे कि जब तुम ये दोनों किस्म की तीव्रता कर लो, तो उसके बाद अपने पिछले गुनाहों को याद भी न करो बल्कि उनको भूल जाओ। इसलिए कि जिन गुनाहों से तुम तीव्रता कर चुके हो उनको याद करना एक तरफ़ तो अल्लाह तख़्ताला की मग्फित की ना करदी है। क्योंकि अल्लाह तख़्ताला ने वायदा फरमाया है कि जब इस्तिग़फ़ार करोगे और तीव्रता करोगे तो में तुम्हारी तीव्रता को कुबूल कर लूंगा और तुम्हारे गुनाहों को माफ़ कर दूंगा। अब अल्लाह तख़्ताला ने उनको माफ़ फरमाया दिया लेकिन तुम उल्ला उन गुनाहों को याद करके उनका वाज़फ़ा पढ़ रहे हो, यह उनकी रहमत की ना करदी है। क्योंकि उनकी याद चम्पक कभी सकारात्मक न जाती है। इसलिए उनको याद मत करो, बल्कि भूल जाओ।

याद आने पर इस्तिग़फ़ार कर लो

कामिल और गैर कामिल में यही फर्क होता है, गैर कामिल कभी कभी उल्ला काम बता देते हैं। मेरे एक दोस्त बहुत नेत्र थे, हर वक़्त रोज़े से होते थे, तहज्जुद गुज़ार थे। एक पीर साहिब से उनका
लालकुंक था। वे बताया करते थे कि मेरे पीछे साहिब ने मुझे यह कहा है कि रात को जब तुम तहज्जुद की नमाज़ के लिए उठो। तो तहज्जुद पढ़ने के बाद अपने पिछले सारे गुनाहों को याद करो और उनको याद करके ख़ूब रोया करो। लेकिन हमारे हज़रत बाबा साहिब रहे। फरमाया करते थे कि यह तरीक़ा दुरुस्त नहीं। इसलिए कि अल्लाह तख़्ताला ने तौबा के बाद हमारे पिछले गुनाहों को माफ़ कर दिया है, और हमारे आमाल नामे से मिटा दिया है। लेकिन तुम उनको याद करके यह जाहिर करना चाहते हो कि अभी उन गुनाहों को नहीं मिटाया, और मैं तो उनको मिटने नहीं दूंगा, बल्कि उनको याद करूंगा। तो इस तरीक़े में अल्लाह तख़्ताला की शाने रहमत की ना कदरी और नाशुक़ी है, इसलिए कि जब उन्होंने उन्हारे आमाल नामे से उनको मिटा दिया है तो अब उनको भूल जाओ, उनको याद मत करो। और अगर कभी वे इख़्तियार उन गुनाहों का ख़ाल आ जाए तो उस वक़्त इस्तिफ़ादार पढ़ कर उसे ख़ाल को ख़ात्म कर दो।

मौजूदा हालत (वर्तमान) को दुरुस्त कर लो

हमारे हज़रत दा. साहिब रहे। ने क्या अच्छी बात बयान फरमाई, याद रखने के काबिल है। फरमाया कि जब तुम तौबा कर चुके तो फिर माज़ी (मूतकाल) की फ़िक्र छोड़ दो। इसलिए कि जब तौबा कर ली तो यह उम्मीद रखो कि अल्लाह तख़्ताला अपनी रहमत से कुबूल फरमाएँगे, इन्हा अल्लाह! और मुस्तकबिल (विद्वेष) की फ़िक्र भी छोड़ दो कि आइच्छा क्या होगा क्या नहीं होगा। हाल (वर्तमान) जो इस वक़्त गुज़र रहा है, उसकी फ़िक्र करो कि यह दुरुस्त हो जाए, यह अल्लाह तख़्ताला की इताबत में गुज़र जाए और इसमें कोई गुनाह जाहिर न हो।

आज कल हमारा यह हाल है कि या तो हम गुज़रे हुए जमाने में पड़े रहते हैं कि हम से इतने गुनाह हो चुके हैं, अब हमारा क्या हाल
होगा, किस तरह बिज्ञाश होगी। इसका नतीजा यह होता है कि मायूसी पैदा होकर हाल (वर्तमान) भी खराब हो जाता है। या मुस्तकबिल (विषय) की फिक्र में पड़े रहते हैं कि अगर इस अवस्था तीव्रा कर भी ली तो आयना किस तरह गुनाह से बचेगी। अरे यह सोचो कि जब आयना बड़ा आएगा, उस बड़ा देखा जाएगा, उस बड़ा की फिक्र करो जो गुजर रहा है, इसलिए कि यही हाल (वर्तमान) माजी (मूर्तकाल) बन रहा है, और हर मुस्तकबिल को हाल (वर्तमान) बनाना है। इसलिए बस अपने हाल (वर्तमान) को दुरूस्त कर लो, और माजी को याद करके मायूस मत हो जाओ। हकीकत में शैतान हमें बहकाता है, वह यह वस्तुंगा बलता है कि अपने माजी को देखो कि तुम कितने बड़े बड़े गुनाह कर चुके हो, और अपने मुस्तकबिल को देखो कि तुम से मुस्तकबिल में क्या बेनेगा? और माजी और मुस्तकबिल के चक्कर में डाल कर हमारे हाल (वर्तमान) को खराब करता रहता है, इसलिए शैतान के धोखे में मत आओ और अपने हाल (वर्तमान) को दुरूस्त करने की फिक्र करो। अल्लाह तअला हम सब को यह फिक्र अता फर्मा दे, आमीन।

बेहतरीन ज़माना

उन अबी قلادة رحمة الله تعالى عليه قائل: "أن الله لما لعن الابليس سائلة النظرة فا نظر إلى يوم الدين، قال و عزت ل انخرج من قلب ابن آدم ما دام فيه الروح، قال اللَّه تعالى و عزت لا احجب عنه الثوبة ما دام الروح فيه الجسد.

हज़रत अबू कलाबा रह. बड़े दर्जे के ताबिरेन में से हैं। अगर किसी ने इस्लाम की हालत में हज़ूरे अक्क़ास सल्लाल्लाहु अल्लाहि व सल्लम की जियारत की हो तो उसको सहाबी कहते हैं, और जिसने इस्लाम की हालत में किसी सहाबी की जियारत की हो उसको ताबिर बहते हैं, और अगर किसी ने इस्लाम की हालत में किसी ताबिर की जियारत की हो तो उसको तबूत ताबिर कहते हैं। ये तीन ज़माने हैं
जिनको हुजूरे अक्रम सल्लल्लाहु अल्लाहि व सल्लम ने ख़ैरल कुरुन (बेहतरीन ज्ञाना) क़सर दिया है।
चुनाचे आपने इरशाद क़रा: (बहारी,शरीफ)

خير الناس قرنى ثم الذين يلونهم ثم الذين يلونهم (بخاری شریف)

यानी सब से बेहतरीन लोग मेरे ज्ञाने के लोग हैं, फिर वे लोग जो उन से मिले हुए हैं, और फिर वे जो उन से मिले हुए हैं। इसलिए हज़रत सहाबा—ए—किराम रिज़वानुल्लाहि तलाला अल्लाहिम अज्ज़ीन की सोहबत की वर्तमान से अल्लाह तलाला ने ताबिरिन को भी बड़ा ऊँचा मकाम अता फ़रमाया है। हज़रत अबू क़लाबी रह. भी ताबिरिन में से हैं, उन्होंने ने बराहे रास्ता (प्रत्यक्ष रूप से) हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अल्लाहि व सल्लम की जियारत नहीं की, लेकिन अनेक सहाबा—ए—किराम की जियारत की है, और हज़रत अनस रज़ि. के ख़ास शारिकद हैं।

हज़रत ताबिरिन की एहतियात और झर

यह हदीस जो हज़रत क़लाबा रह. ने बयान फ़रमाई है, अगर्वे आपने कहावत के तौर पर बयान फ़रमाई है, लेकिन हकीकत में यह हदीस है, इसलिए कि वह अपनी तरफ से अपनी अङ्कल से ऐसी बात नहीं कह सकते। और अपन बात और कहावत के तौर पर इसलिए बयान फ़रमाया कि हज़रत ताबिरिन हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अल्लाहि व सल्लम की तरफ कोई बात मनसूब करते हुए डरते थे, इसलिए कि कहीं कोई बात करने में ऊँच नीच हो जाए, जिसके नीतज़े में हमारी पकड़ हो जाए कि तुमने हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अल्लाहि व सल्लम की तरफ ग़लत बात मनसूब कर दी, इसलिए कि हुज़ूरे अक्रम सल्लल्लाहु अल्लाहि व सल्लम का इरशाद है:

من كذب على متعمداً فليتبروا مقتعدة من النار

यानी जो शख्स जान बूझ कर मुझ पर झूठ बांधे और मेरी तरफ ऐसी बात मनसूब करे जो बेहतरीन नहीं कही तो उसको चाहिए कि अपना
ठिकाना जहानम में बना ले।

इतनी सख्त बईद आपने बयान फरमाई। इसलिए सहाबा—ए—किराम और ताबिर्वन हदीस बयान करते हुए कांपते थे।

हदीस बयान करने में इहतियात करनी चाहिए

एक ताबिर एक सहाबी के बारे में बयान फरमाते हैं कि जब यह सहाबी हमारे सामने हुजूर अक्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की कोई हदीस बयान फरमाते तो उस वक़्त उनका चेहरा पीला पड़ जाता था, और कभी कभी उन पर कपकपी तारी हो जाती थी, कि कहीं कोई बात बयान करने में गलती हो जाए। यहाँ तक कि कुछ सहाबी हदीस नकल करने के बाद फरमाते कि हुजूर अक्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस तरह की, या इस जैसी, या इस किस्म की बात बयान फरमाई थी, हो सकता है कि मेरे बयान करने में कुछ उलट फोर हो गया हो। यह सब इसलिए करते ताकि हुजूर अक्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ़ कोई बात गलत मन्सूब करने का गुनाह न हो। इस से हमें और आपको यह सबक मिलता है कि हम लोग बहुत सी बात तहकीक और इहतियात के बगैर हदीस बयान करनी शुरू कर देते हैं, जरा सी कोई बात कहीं से सुनी, फौरन हमने कह दिया कि हदीस में यूं आया है, हालांकि यह देखिए कि सहाबा—ए—किराम जिन्होंने ने बराबर रास्त हुजूर अक्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बातें सुनीं, वे कितनी इहतियात कर रहे हैं, लेकिन हम इसमें इहतियात नहीं करते। इसलिए हदीसें बयान करने में हमेशा बहुत इहतियात से काम लेना चाहिए। जब तक ठीक ठीक अल्फाॅज मालूम न हों, उस वक़्त तक उसको हदीस के तौर पर बयान नहीं करना चाहिए। इस हदीस में देखिए कि हजरत अबू कुलाबा रह। यह नहीं फरमा रहे हैं कि हुजूर अक्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यों फरमाया, बल्कि उसको अपने कौल (बात) के तौर पर फरमा रहे हैं, हालांकि हकीकत में यह हदीस है।
बहर हाल, यह फर्माते हैं कि जब अल्लाह तख़ाला ने सैद्धान्त को मर्दूद किया। हर मुसलमान को यह वाकिफ़ मालूम है कि सैद्धान्त को हुक्म दिया गया कि इज़रत आदम अल्लाहको सज्दा करे। उसने इंकार कर दिया कि मैं तो सज्दा नहीं करता, इस इंकार की वजह से अल्लाह तख़ाला ने उसको मर्दूद कर दिया।

सैद्धान्त की बात दुरुस्त थी, लेकिन……

एक बात यहां यह समझ लें कि अगर गौर किया जाए तो सैद्धान्त ज़ाहिर में जो बात कह रहा था, वह कोई बुरी बात नहीं थी, क्योंकि अगर वह यह बात कहता कि वह पैशानी (माथा) तो आपके लिए ख़ास है, वह पैशानी तो सिर्फ़ आपके सामने ख़ुल सकती है, किसी और के सामने नहीं ख़ुल सकती। यह मिट्टी का पुतला जिसको आपने अपने लाभ से बनाया, इसको में सज्दा क्यों करूँ? मेरा सज्दा तो आपके लिए है, तो बज़ाहिर यह बात गुलत नहीं थी। लेकिन यह बात इसलिए गुलत हुई कि जिस ज़ात के आगे सज्दा करना है, जब वह ज़ात ख़ुद ही हुक्म दे रही है कि इस मिट्टी के पुतले को सज्दा करे तो अब चूँ व चरा की मज़ाल न होनी चाहिए थी। इस हुक्म के बाद फिर अपनी अक़्ऱल के घोड़े नहीं दौड़ाने चाहिए थे कि यह मिट्टी का पुतला सज्दा करने के लायक है या नहीं?

देखिए: हकीकत में आदमी सज्दे के लायक तो नहीं था। चुनाव के जब हुक्म पर अक़्ऱल सल्लाल्हु अल्लाह व सल्लम की आख़री उम्मत इस दुनिया में आई तो हमेशा के लिए यह हुक्म दे दिया गया कि अब किसी इन्सान को सज्दा करना जायज़ नहीं। मालूम हुआ कि असल हुक्म यही था कि इन्सान को सज्दा करना किसी हाल में भी जायज़ नहीं था, लेकिन जब अल्लाह तख़ाला ही हुक्म फर्मायें कि सज्दा करो तो अब अक़रल घोडे नहीं दौड़ाने चाहिए। सैद्धान्त ने पहली ग़लती यह की कि अपनी अक़रल के घोड़े दौड़ाने शुरु कर दिये।
में आदम (अल्लाहुस्लाम) से बेहतर हूँ

दूसरी गलती यह की कि शैतान ने सज्दा न करने की वजह बताते हुए यह नहीं कहा कि यह पैशानी (माथा) तो आपके लिए है, बल्कि यह वजह बताई कि इस आदम को आपने मिट्टी से बनाया है और मुझे आपने आग से बनाया है, और आग मिट्टी से अफजल व बेहतर है, इसलिए मैं इसको सज्दा नहीं करता, इसके नतीजे में अल्लाह तख़ाला ने उसको मरदूद कर दिया और हुक्म दे दिया कि यहां से निकल जा।

अल्लाह तख़ाला से मोहलत मांग ली

बहर हाल! जिस वक़्त अल्लाह तख़ाला ने इसको अपनी बारगाह से निकाल दिया, (यानी मरदूद कर दिया) उसे वक़्त इसने अल्लाह तख़ाला से मोहलत मांगी, और कहा:

"انظرني الى يوم يبعثون"

यानी ऐ इसे लौटे उस वक़्त तक की मोहलत दे दीजिए जिस वक़्त आप लोगों को उठाएंगे, यानी मैं कियामत तक जिन्हा रहूँ और मुझे मौत न आए।

शैतान बड़ा बुज़ुर्ग था

हज़रत थानवी रह. फरमाते थे कि इस वक़्त इसे मलूम हुआ कि शैतान अल्लाह तख़ाला की बहुत भावित रखता था। बहुत बड़ा आरिफ़ (अल्लाह वाला) था, क्योंकि एक तरफ़ तो इसको धुतकाला जा रहा है, मरदूद किया जा रहा है, जननत से निकाला जा रहा है, अल्लाह तख़ाला का इस पर गुज़ब नाजिल हो रहा है, लेकिन ऐने गुज़ब की हालत में भी अल्लाह तख़ाला से दुआ मांग ली, और मोहलत मांग ली, इसलिए कि वह जानता था कि अल्लाह तख़ाला गुज़ब से मार्गों नहीं होते, और गुज़ब की हालत में भी अगर उससे कोई चीज़ मांगी जाए तो वे दे देते हैं, चुनाचे उसने मोहलत मांग ली।
मैं मीत तक उसको बहकाता रहूँगा
चुनावे अल्लाह तालाला ने जवाब में फर्माया कि:

अंक में दो दिनों तक यदि उम्र का मौका मौके में
हम तुम्हें कियागत तक के लिए मोहलत देते हैं, तुम्हें कियागत
तक मीत नहीं आएगी। जब मोहलत मिल गई तो अल्लाह तालाला से
मुख्रातिब होकर कहता है कि ऐत्र अल्लाह, मैं आपकी इज़जत की कसम
खाकर कहता हूँ कि में आदम की औलाद के दिल से उस वक्त तक
नहीं निकलूंगा जब तक उसके जिसमे रूह बाकी रहे। यानी मीत
আনে तक ন্যূন্তর নিজের হাতে। ওর বলে আদম কোন রীতিতে যে অাদম কোন জিসসে দিলে
সে উদ্দেশ্য বন্দ করে, উসকে দিলে মালক কিসম কে খ্যালাল
দালা রহ্যুগ, উসকে बहकाता रहूंगा, गुनाहों की ख्याहिया, उसके
जजे, उसके अतिरिक्त उसके दिल में नैद करता रहूंगा, और उसके
गुनाहों की तरफ़ माईल करता रहूंगा, जब तक यह ज़िन्दा है।

मैं मीत तक तौबा कुलूल करता रहूँगा
शैतान के जवाब में अल्लाह तालाला ने भी अपनी इज़जत की
कसम खाई, मेरी इज़जत की कसम में इस औलादे आदम के लिए
तौबा का दर्शाज़ा भी उस वक्त तक बन्द नहीं करएगा, जब तक
उसके जिसमे रूह बाकी रहे। तू मेरी इज़जत की कसम खाता है
कि में नहीं निकलूंगा, मैं भी अपनी इज़जत की कसम खाता हूँ कि में
उसके लिए तौबा का दर्शाज़ा बन्द नहीं करेगा। तू अगर जहार है तो
मैंने हर आदम के साथ को उस जहार का तिराक़ प्राप्त दे दिया है, कि
उसके लिए तौबा का दर्शाज़ा खुला है। जब आदम का बेटा गुनाहों से
तौबा कर लेगा तो मैं तेरे साथी फरेब, चालबाज़ी और तेरे साथी
बहकादे को उस तौबा के नतीजे में एक आन में ख़ल कर दूंगा।
गोरा कि अल्लाह तालाला ने आदम की औलाद के लिए अपनी रहमत
का आम ऐलान फर्मा दिया, और फर्मा दिया कि यह मत समझना
कि हमने कोई बाला तर ताकत शैतान की सूरत में तुम्हारे ऊपर
मुसल्लत कर दी है, जिस से तुम नजात नहीं पा सकते।

शैतान एक आज़माईश है

बात दर असल यह है कि हमने शैतान को सिर्फ तुम्हारी जरा सी आज़माईश और इम्तिहान के लिए फैदा कर दिया है, हमने ही उसको बनाया और हमने ही उसको बहकाने की ताक़त दी है।

लेकिन ऐसी ताक़त नहीं दी कि तुम उसको हरा न सको।

कुरआन ने साफ़ ऐलान कर दिया कि:

अन किद दिशेन माननें किदाफ़ा (سورة النساء)

यानी शैतान का जाल बहुत कमज़ोर है, और इतना कमज़ोर है कि अगर कोई शाखा इस शैतान के आगे डट जाये कि तेरी बात नहीं मानूंगा, तू जिस गुनाह पर आमदा करना चाह रहा है, मैं वह गुनाह नहीं करूंगा तो शैतान उसी वक़्त पिघल जाता है। यह शैतान बुज़ दिलों पर और उन लोगों पर शेर हो जाता है जो अपनी हिम्मत से काम लेने से जी चुराते हैं और जो गुनाहों को छोड़ने का इरादा ही नहीं करते। लेकिन अगर उसका दाय चल जाये, और कोई वे हिम्मत आदर्श उसकी बात मान लें तो फिर बेंगे तोबा का तिर्यक पैदा कर दिया है, हमारे पास आ जायें और अपने गुनाहों का इक्कार कर लो कि या अल्लाह हम से गलती हो गई, और अपने गुनाह से तोबा करो और कहो:

“अस्तिफ़िफ़्लाह ह रबी मिन कुल्लि जजम्बिन व अतुबु इलेही”

तो इसके नतीजे में शैतान का सारा असर एक लघु में ख़त्म हो जायेगा।

वेश्तरीन गुनाहगार बन जाओ

चुनावे इसी वजह से एक दूसरी हदीस में हुजूरे अक्बर सल्लल्लाहु अल्लाहिन व सल्लम ने बयान किया कि:

कलक्कुं खतारों व खिर खातारियों (तरमीनः शरीफः)

यानी तुम में से हर, शास्त्र बहुत खताकार है, अरबी में
"खलील-उ" उस शास्त्र को कहते हैं जो बहुत ज्ञाता गलतियां करे, और जो मामूली गलती करे उसको अर्थ में "खाती" कहते हैं, यानी गलती करने वाला। और "खलील-उ" के मायने हैं बहुत ज्ञाता गलती करने वाला, तो फरमाया कि तुम में से हर शास्त्र बहुत खताकार है। लेकिन साथ में यह भी फरमाया कि खताकारों में सब से बेहतर खताकार वह है जो तोबा भी बहुत करता है।

इस हदीस में इशारा इस बात की तरफ कर दिया कि दुनिया के अन्दर तुम से गुनाह भी होंगे, गुनाहों के जब्बे भी पैदा होंगे, लेकिन उनके आगे डट जाने की कोशिश करो, और उनके आगे जल्दी से हथियार मत ढाला करो, और अगर कभी गुनाह हो जाये तो फिर मायूस होने के बजाए हमारे दरबार में हाजिर होकर तोबा कर लिया करो" यहां भी "तब्बाब" का लफ़ज इस्तेमाल किया, "ताइब" नहीं कहा, इसलिए कि ताइब के मायने हैं "तोबा करने वाला" और "तब्बाब" के मायने हैं "बहुत तोबा करने वाला"। मतलब यह है कि सिर्फ़ एक बार तोबा कर लेना काफ़ी नहीं, बल्कि हर बार जब भी गुनाह हो जाये तो अल्लाह तहाला के सामने तोबा करते रहो, और जब कसूरत से तोबा करोगे तो फिर इस्लाम अल्लाह शैवान का दावा नहीं चलेगा, और शैवान से हिफ़ाज़त करेगी।

अल्लाह की रहमत के सौ हिस्से हैं

عن ابی هريرة رضی اللہ عنه قال : سمعت رسول اللہ صلى الله عليه وسلم يقول: جعل اللہ الرحمة مائدة جزء فامسك عنده تسمة وتسمع وانزل في الأرض جزء واحدا فن ذاك لجزء يتراحم لخلائق حتى ترفع لدابته

حافرا عن ولدها خشية ان تصيبه (سلم شريف)

هążरत अबू हुरेरह रजियल्लाहु अल्ल्ह रिखायत फ़रमाते हैं कि मैंने हुज़ूरे अक्बर सल्ल्लल्लाहु अल्ल्हि व सल्लम से सुना कि अल्लाह तहाला ने जो रहमत पैदा फरमाई है, उसके सौ हिस्से किये हैं, उन सौ में से एक हिस्सा रहमत का इस दुनिया में उतारा है, जिसकी
वजह से लोग आपस में एक दूसरे पर रहमत का तरस खाने का और शक्ति का मामला करते हैं। जैसे बाप अपने बेटे पर रहम कर रहा है, या मां अपने बच्चों पर रहम कर रही है, भाई भाई पर रहम कर रहा है, भाई बहन पर रहम कर रहा है, या एक दोस्त दूसरे दोस्त पर रहम कर रहा है। गोया कि दुनिया में जितने लोग भी आपस में शक्ति और रहम का मामला कर रहे हैं वह एक हिस्सा रहम का नतीजा और तुफान है, जो अल्लाह ताज़ाला ने इस दुनिया में नाज़िल फरमाया, यहां तक कि जब घोड़ी का बच्चा दूध पीने के लिए आता है तो वह घोड़ी अपना पांव उठा लेती है, कहीं ऐसा न हो कि दूध पीने के दौरान यह पांव बच्चे को लग जाये, यह भी उसी सीरीज़ हिस्से का एक हिस्सा है। और निन्ानवऱ्य हिस्से रहमत के अल्लाह ताज़ाला ने अपने पास महफ़ूज़ रखे हुए हैं, उनके जरिये आखिरत में अल्लाह ताज़ाला अपने बच्चों पर रहमत का मुज़ाहिरा फ़रमायेंगे।

उस जात से मायूसी कैसी?

इस हदीस के जरिये हुजूर ओर्द्दस सल्लल्लाहु अल्लै हिब और सल्लम ने हमें यह बता दिया कि क्या तुम उस जात की रहमत से मायूस होते हो, जिस जात ने आखिरत में तुफान ले लिए इतनी सारी रहमतें इकट्ठी करके रखी हुई हैं, उस जात से मायूसी का इजहार करते हो? क्या वह अपनी रहमत से तुम्हारों दूर कर देगा? अलबत्ता सिर्फ़ इतनी बात है कि उन रहमतों को अपनी तरफ़ मुतवज्जह करने की देर है। और उन रहमतों को अपनी तरफ़ मुतवज्जह करने का तरीका यह है कि गुनाहों से तौबा करो, इस्तिमाफ़ करो और जितना तौबा व इस्तिमाफ़ करोगे उतना ही अल्लाह ताज़ाला की रहमत तुम्हारी तरफ़ मुतवज्जह होगी, और आखिरत में तुम्हारा बेड़ा पार कर देगी।

सिर्फ़ तमन्ना करना काफ़ी नहीं

लेकिन यह रहमत उसी शख्स को फ़ायदा देगी जो यह चाहे कि मैं अल्लाह ताज़ाला की इस रहमत से फ़ायदा उठा लू। अब अगर
कोई शख्स इस रहमत से फायदा उठाना ही न चाहे, बल्कि सारी उम्र ग़लत ही में गुज़ार दे और फिर अल्लाह तख़्ता से तमना रखे कि अल्लाह तख़्ता बड़ा माफ़ करने वाला रहम करने वाला है, ऐसे लोगों के लिए हुजूर अब्दुस सल्लल्लाहु अल्लाह व सल्लम ने फरमाया कि:

العاجز من اتباع نفسه هواها و تمنى على الله

यानी आजिज शख्स वह है जो ख़ाफ़िशत को पीछे दौड़ा चला जा रहा है और अल्लाह तख़्ता पर उम्मीदें बांधे हुए है कि अल्लाह तख़्ता बड़ा बख़्ताने वाले और रहम करने वाले हैं, माफ़ फरमा देंगे। हां अब्दुल्ला जो शख्स अपने अगल से अल्लाह तख़्ता की रहमत का उम्मीदवार हो और कोशिश कर रहा हो, फिर अल्लाह तख़्ता की रहमत इन्हें अल्लाह उसको आख़िरत में ढांप लेगी।

एक शख्स का अजीब वाकिया

एक और हदीस हजरत अबु हुरैर रज़िय्यल्लाहु अल्लाहु से रिवायत है, फरमाते हैं कि एक बार हुज़ूर अब्दुस सल्लल्लाहु अल्लाह व सल्लम ने पिछली उम्मतों को एक शख्स का वाकिया बयान फरमाया कि एक शख्स था, जिसने अपनी जान पर बड़ा ज़ुल्म किया था, बड़े बड़े गुनाह किये थे, बड़ी ख़राब जिन्दगी गुज़ारी थी, और जब उसकी मौत का बक़्त आया तो उसने अपने घर वालों को वसीयत करते हुए कहा कि मैंने अपनी जिन्दगी गुनाहों और ग़फ़रों में गुज़ार दी है, कोई नेक काम तो किया नहीं, इसलिए जब में पर जाऊँगा तो मेरी लाश को जला देना, और जो राख बन जाए उसको बिलकुल बारीक पीस लेना फिर उस राख को विभिन्न जगहों पर तेज हवा में उड़ा देना, ताकि वे जरूर दूर दूर तक चले जाएं। यह वसीयत में इसलिए कर रहा हूँ कि अल्लाह की कसम: अगर में अल्लाह तख़्तालय के हाथ आ गया तो मुझे अल्लाह तख़्ता ऐसा ज़ज़ब़ देंगे कि ऐसा अज़ज़ब दुनिया में किसी और शख्स को नहीं दिया होगा, इसलिए कि मैंने
गुनाह ही ऐसे किये हैं कि उस अजाब का हकदार हूँ।

जब उस शार्स्स का इतिकाल हो गया तो उसके घर वालों ने उसकी वसीयत पर अभाव करते हुए उसकी लाश को जलाया, फिर उसको पीसा और फिर उसको हवाओं में उड़ा दिया। जिसके नतीजे में उसके जर्रे दूर दूर तक बिखर गये। यह तो उसकी बेवकूफी की बात थी कि शायद अल्लाह तखाला मेरे जर्रे को जमा करने पर कदिर नहीं होंगे। चुनौंवे अल्लाह तखाला ने हवा को हुक्म दिया कि उसके सारे जर्रे जमा कर दो, जब तमाम जर्रे जमा हो गये तो अल्लाह तखाला ने हुक्म दिया कि इसको दोबारा मुक्मल इन्सान जैसा था वैसा बना दिया जाये, चुनौंवे वह दोबारा जिन्दा होकर अल्लाह तखाला के सामने पेश किया गया, अल्लाह तखाला ने उस से सवाल किया कि तुमने अपने घर वालों को यह सब काम करने की वसीयत क्या की थी? जवाब में उसने कहा:

खशिक्क यारब

यानी ऐ अल्लाह! आपके दर की वजह से। इसलिए कि मैंने गुनाह बहुत किये थे। और उन गुनाहों के नतीजे में गुज़े यकीन हो गया था कि मैं आपके अजाब का हकदार हो गया हूँ और आपका अजाब बड़ा सख्त है, तो मैंने उस अजाब के दर से यह वसीयत कर दी थी। अल्लाह तखाला फरमायेंगे कि मेरे दर की वजह से तुमने यह काम किया था, जाओ मैंने तुम्हें माफ कर दिया।

यह वाकिया हुजूरे अक्षर सल्लल्लाहु अल्लाह व सल्लम ने बयान फरमाया और मुस्लिम शरीफ में सही सनद के साथ मौजूद है।

अब जरा सोचिये कि उस शार्स्स की यह वसीयत बड़ी अहमकाना थी, बल्कि गोरे से देखा जाये तो वह कफिराना थी। इसलिए कि वह शार्स्स यह कह रहा था कि अगर मैं अल्लाह तखाला के हाथ आ गया तो अल्लाह तखाला मुझे बहुत अजाब देगा, लेकिन अगर तुम लोगों ने मुझे जला कर और राख बनाकर उड़ा दिया तो फिर मैं अल्लाह
तत्त्वाला के हाथ नहीं आऊंगा। ख़ुदा की पनाह। यह अक्कीदा रखना तो कुफ़्फ़ और शिक्षा है, गोया कि अल्लाह तत्त्वाला राखे के जरूर को जमा करने पर कादिर नहीं हैं, लेकिन जब अल्लाह तत्त्वाला ने उस से पूछा कि तूने यह काम क्यों किया? तो उसने जवाब दिया कि ऐ अल्लाह! आपके दर की वजह से, अल्लाह तत्त्वाला फरमायेगे अच्छा तू जानता था कि हम तेरे सब हैं, और मानता था कि हम तेरे सब हैं। और यह भी मानता था कि तूने हमारी ना फरमानी की है, और उस ना फरमानी पर शर्मन्दा और नादिम भी था, और तूने अपने नर्सने से पहले अपने उन गुनाहों पर शर्मन्दगी का इजहार कर दिया था, इसलिए हम तेरी मग़फ़िरत करते हैं और तुझे माफ़ फरमाते हैं।

इस वाक्य इ को बयान करने से हुजूर अक्के अल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मक्कद यह था कि अल्लाह तत्त्वाला की रहमत हकीकत में बन्दे से सिर्फ़ एक चीज़ का मुलामबा करती है, वह यह कि बन्दा अपने किये पर सच्चे दिल से शर्मन्दा हो जाए, नादिम हो जाए और नादिम होकर उस वक़्त जो कुछ कर सकता है वह कर गुज़रे। तो फिर अल्लाह तत्त्वाला उसकी तीबा कुबूल करके उसको माफ़ फरमा देते हैं। अल्लाह तत्त्वाला हम सब को सही मायने में अपने गुनाहों पर शर्मन्दा होने और तीबा करने की तौफ़ीक अता फरमाएँ, और अपनी रहमत से हम सब की मग़फ़िरत फरमायें, आमीन!

واخر دعاً ان الحمد لله رب العالمين
दुरुद शरीफ़ के फज़ाइल

अल्लाहُ ﷲ नवाहुदा तथा सुवेजहुदा तथा सुसफ़्रीहुदा तथा सुवُكَّلُ عَلَىٰهُوَ وَتَعَمَّدَ ﴿۱۰۵﴾

إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصِلُّونَ عَلَى الْبِنِي ﷺ أَيُّهَا الْهَالِكُينَ أَنتَ وَلَدُوا صَلُّوا عَلَىٰهُ

وَسَلِيمُوا تَسْلِيمًا. (الاحزاب: 61)

وقال رسول الله ﷺ صلى الله عليه وسلم يحسب المؤمن من البخل إذا

ذُكرت عنده فلم يصل عليًّا. (كتاب الزهد: 227)

इन्सानियत के सब से बड़े मुहिसन

हुजूर अकबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरादे फरमाया, मोहिम के बयान बोलने के लिए यह बात काफी है कि जब मेरा जिक्र उसके सामने किया जाय तो वह मुझ पर दुरुद न भेजे, यानी यह एक मुसलमान के बयान बोलने की इन्तैहा है कि उसके सामने नबी—ए—करीम सरवरे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मुबारक नाम आये और वह आप पर दुरुद न भेजे, चूकि इस कायनात में एक मोहिम का सब से बड़ा मुहिसन नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सिवा कोई नहीं हो सकता, आपके जितने एहसानात इस उम्मत पर हैं, और ख़ास तौर से उन लोगों पर जिन्हें अल्लाह तज़ाता ने ईशान की दौलत से नवाज़ा, इतने किसी के भी एहसानात नहीं हैं, ख़ुद हुजूर अकबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह हाल था कि अपनी उम्मत की फिक्क में दिन रात चुलते रहते थे, एक सहायी हुजूर अकबर सल्लल्लाहु अलैहि व
सल्लम की इस हालत को बयान फर्माते हुए कहते हैं कि:

कान दांगों के तत्व, मतवालों और दर्शनीय

यानी जब भी आपको देखता हूँ तो ऐसा मालूम होता है कि आप किसी फिक्र में हैं, और कोई ग़म आप पर तारी है। उल्लमा फर्माते हैं कि यह फिक्र और ग़म कोई इस बात का नहीं था कि आपको तिज़ारत में नुक़सान हो रहा था और माल व दौलत में कमी आ रही थी, या दुनिया के और दूसरे माल: व अस्वाद में कमी आ रही थी, बल्कि यह फिक्र और ग़म इस उम्मत के लिये था कि मेरी उम्मत किसी तरीक़े से जहन्नम के अज़ाब से बच जाये और अल्लाह ताबाला की रिज़ा उसको हासिल हो जाये।

में तुम्हें आग से रोक रहा हूँ

एक हदीस में हुजूरे अक़ब्द सल्लल्लाहु अल्लाह व सल्लम
फर्माते हैं कि मेरी मिसाल और तुम्हारी मिसाल ऐसी है, जैसे एक
शख़्स ने आग रोशन की, अब परवाने आकर उस आग में गिरने लगे,
यह शख़्स उन पर्वानों को आग से दूर हटाने लगा ताकि वे आग में
जल कर ख़त्म न हो जायें इसी तरह में तुम्हारी कमर पकड़ पकड़
कर तुमको आग से रोक रहा हूँ और तुम मेरे हाथ से निकले जा रहे
हो, और उस आग में गिरे जा रहे हो। (मुस्लिम शरीफ)

बहर हाल हुजूरे अक़ब्द सल्लल्लाहु अल्लाह व सल्लम की सारी
जिन्दगी इस फिक्र में गुज़़री कि यह उम्मत किसी तरह जहन्नम के
अज़ाब से बच जाये, तो क्या एक उम्मती इतना भी नहीं करेगा कि
जब सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अल्लाह व सल्लम का नामे नामी
आये तो कम से कम आप पर एक बार दुखद भेज दे? जब कि दुखद
भेजने से हुजूरे अक़ब्द सल्लल्लाहु अल्लाह व सल्लम को जो फायदा
होता है वह तो होगा, खुद दुखद भेजने वाले को इसका फायदा
पहुँचता है।
अल्लाह तबाह़ाल भी इस अमल में शरीक हैं
अल्लाह तबाह़ाल ने कुरानी करीम में दुरुद भेजने के बारे में
अजब अन्दाज़ से बयान फरमाया, चुनांचे फरमाया:
"अन्न लल वन्देन्क निलुपनु ऊल दिनु, या इहार जिन्न अन्नो सब्बु अन्ना उलीए व सल्लम पर दुरुद और सलम भेजो।"

"या नी बेशा क अल्लाह तबाह़ाल और उसके फरिश्ते नबी—ए—पाक
सल्लल्लाहु अलैही व सल्लम पर दुरुद भेजते हैं, ऐ ईमान वालो, तुम
भी हुजूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैही व सल्लम पर दुरुद और सलम भेजो।"

देखिये शुरू में यह नहीं फरमाया कि तुम दुरुद भेजो, बल्कि यह फरमाया कि अल्लाह और उसके फरिश्ते दुरुद भेजते हैं, इस से दो बातें की तरफ इशारा फरमाया दिया, एक यह कि हुजूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैही व सल्लम को तुम्हारे दुरुद की जरूरत नहीं, इसलिये कि उन पर पहले ही से अल्लाह तबाह़ाल दुरुद भेज रहे हैं, और अल्लाह के फरिश्ते दुरुद भेज रहे हैं, उनको तुम्हारे दुरुद की क्या जरूरत है? लेकिन अगर तुम अपनी भलाई और ख़ैर चाहते हो तो तुम भी नबी—ए—करीम सल्लल्लाहु अलैही व सल्लम पर दुरुद भेजो।
दूसरे इस बात की तरफ इशारा फरमाया कि यह दुरुद शरीफ भेजने का जो अमल है, इस अमल की ज्यादा ही निर्णािै है, इसलिये कि कोई अमल भी ऐसा नहीं है जिसके करने में अल्लाह तबाह़ाल भी बन्दों के साथ शरीक हैं, जैसे नमाज हैं, बन्दा पढ़ता है अल्लाह तबाह़ाल नमाज नहीं पढ़ते, रोज़ा बन्दा रखता है अल्लाह तबाह़ाल रोज़ा नहीं रखते, जकात या हज़ वगैर्ह जितनी इबादतें हैं उनमें से कोई अमल ऐसा नहीं है जिसमें बन्दे के साथ अल्लाह तबाह़ाल भी शरीक हैं, लेकिन दुरुद शरीफ ऐसा अमल है जिसके बारे में अल्लाह तबाह़ाल ने फरमाया कि यह अमल में पहले से कर रहा हूं, अगर तुम भी करोगे तो तुम भी हमारे साथ इस अमल में शरीक हो जाओगे, "अल्लाहु अकबर" क्या ठिकाना है इस अमल का कि बन्दे के साथ
बन्दा किस तरह दुरुद भेजे?

लेकिन अल्लाह तख्ताला के दुरुद भेजने का मतलब और है और बन्दे के दुरुद भेजने का मतलब और है, अल्लाह तख्ताला के दुरुद भेजने का मतलब यह है कि अल्लाह तख्ताला बराहे रास्ता उन पर अपनी रहस्य फर्मा रहे हैं, और बन्दे के दुरुद भेजने का मतलब यह है कि वह बन्दा अल्लाह तख्ताला से दुश्र कर रहा है कि या अल्लाह, आप मुहम्मद सल्ल्ला तख्ताला अल्लाह सल्लाम पर दुरुद भेजिये। चुनावे हदीस शरीफ में आता है कि जब यह आयत नाजिल हुयी:

"अन्न लात और लातीकह अल्लाह पर उन्ले या इब्राहिम अन्न अलिय दै सल्लातुअलाम और उल मुहम्मद मिजीद।"
इसके मायने यह है कि ऐ अल्लाह! आप मुहम्मद सल्ल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दुरुद भेजीये, इस से इस बात की तरफ इशारा कर दिया कि जब बन्दा दुरुद भेजे तो यह समझे कि मेरी क्या हकीकत और हैसियत है कि मैं हुज़ूरे अक्बरस सल्ल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दुरुद भेजूं, मैं हुज़ूरे अक्बरस सल्ल्लाहु अलैहि व सल्लम के औसाफ और कमालात का इहाता कहां कर सकता हूं? मैं आपके एहसानात का बदला कैसे अदा कर सकता हूं? इसलिये पहले ही कदम पर अपनी आजजी का एतिराफ़ कर लो कि या अल्लाह! मैं तो हुज़ूरे अक्बरस सल्ल्लाहु अलैहि व सल्लम के दुरुद शरीफ का हक अदा नहीं कर सकता, ऐ अल्लाह! आप ही उन पर दुरुद भेज दिजीये। (मुस्लिम शरीफ)

हुज़ूर सल्ल्लाहु अलैहि व सल्लम का मर्तबा

अल्लाह तआळा ही जानते हैं

ग़ालिब अगरचे आज़ाद शायर थे, लेकिन बाज़ शेर ऐसे कहें हैं कि हो सकता है कि इसी पर अल्लाह तआळा उसकी मरगफिरत फरमा दे, एक शेर उसने बड़ा अच्छा कहा है। वह यह कि:

ग़ालिब सनाने ख़वाजा बह यज्ञदं गुजालम
कां जाते पाक मर्तबा दाने मुहम्मद अस्त

(सल्ल्लाहु अलैहि व सल्लम)

यानी ग़ालिब! हमने हुज़ूरे अक्बरस सल्ल्लाहु अलैहि व सल्लम की तारीफ़ का मामला तो अल्लाह तआळा ही पर छोड़ दिया है, इसलिये कि हम लोग कितनी भी तारीफ़ करेंगे मगर सरकारे दो आलम सल्ल्लाहु अलैहि व सल्लम के एहसानात का दसवां हिस्सा भी अदा नहीं कर सकते, इसलिये कि अल्लाह तआळा ही की जात एक ऐसी है जो मुहम्मद सल्ल्लाहु अलैहि व सल्लम के मर्तबे को जानती है, हम और आप उनके मर्तबे को जान भी नहीं सकते, इसलिये दुरुद शरीफ के जरिये यह बता दिया कि तुम इस बात का
एतिराफ करो कि मैं न सक्रिय अवस्था सत्तल्लाहु अल्लाह व सल्लम की खबरियों को पहचान सकता हूँ न उनके एहसानात का हक़ अदा कर सकता हूँ और न सही मायने में मेरे अन्दर दुरुद भेजने की अहलियत है, मैं तो यह दुआ ही कर सकता हूँ कि ऐं अल्लाह आप ही मुहम्मद सल्लल्लाहु अल्लाह व सल्लम पर दुरुद भेजिये।

यह दुआ सो फीसद कुबूल होगी

उलमा—ए—किरम ने फरमाया कि सारी कायनात में कोई दुआ ऐसी नहीं है जिसके सो फीसद कुबूल होने का यकीन हो, कौन शक्त यह कह सकता है कि मेरी यह दुआ सो फीसद ज़रूर कुबूल होगी. और जैसा में कह रहा हूँ वैसा ही होगा, यह नहीं हो सकता, लेकिन दुरुद शरीफ ऐसी दुआ है जिसके सो फीसद कुबूल होने का यकीन है, इसलिये कि दुआ करने से पहले ही अल्लाह तबाला ने यह ऐलान फरमा दिया कि:

"अन्लाह र मलान्कटे इस्लाम उ पली नबी।"

यानी हम और हमारे प्रियते तो तुम्हारी दुआ से पहले ही नबी—ए—पाक पर दुरुद भेज रहे हैं, इसलिये इस दुआ के कुबूल होने में मामूली से शुभ नहीं होगा.

दुआ करने का अदब

इसी लिये बुजूर्गों ने दुआ करने का यह अदब सिखा दिया कि जब तुम अपने किसी मकसद के लिये दुआ करो, तो उस दुआ से पहले और बाद में दुरुद शरीफ पढ़ लो. इसलिये कि दुरुद शरीफ का कुबूल होना तो यकीन ही है, और अल्लाह तबाला की शाने करीमी से यह बाइड है कि पहली दुआ कुबूल फरमा लें और आख़री दुआ को कुबूल फरमा लें और दरमियान की दुआ को कुबूल न फरमायें, इसलिये जब दुरुद शरीफ पढ़ कर फिर अपने मकसद के लिये दुआ कराओ तो इस्लाम अल्लाह उस दुआ को भी ज़रूर कुबूल फरमायेंगे, इसी लिये दुआ करने का यह अदब सिखा दिया कि पहले
अल्लाह ताज़ाला की तारीफ़ व सना करो, फिर नबी—ए—क़रीम सल्ल्लल्लाहु अल्लाह के सल्लम पर दुरूद शरीफ़ भेजो, और उसके बाद अपने मकसदों के लिये दुआ करो।

दुरूद शरीफ़ पर अंज व सवाब

और फिर दुरूद शरीफ़ पढ़ने पर अल्लाह ताज़ाला ने अंज व सवाब भी रखा है, फरमाया कि जो शक्त्स नबी—ए—क़रीम सल्ल्लल्लाहु अल्लाह के सल्लम पर एक बार दुरूद शरीफ़ भेजे तो अल्लाह ताज़ाला उस पर दस रहमतें नाजिल फरमाते हैं, एक रिवायत में है कि दस गुनाह माफ़ फरमाते हैं और दस दर्जे बुलंद फरमाते हैं। (निकाई शरीफ़)

हज़रत अबुर्रह्मान बिन ओफ़ रज़ियाल्लाहु अल्लाह के सल्लम फरमाते हैं कि एक दिन हुज़ौरे अब्दास सल्ल्लल्लाहु अल्लाह के सल्लम आबादी से निकल कर एक खज़ूर के बाग में पहुंचे और सजदे में गिर गये, मैं इन्तज़ार करने के लिये बैठ गया ताकि जब आप फारिग हो जाये तो फिर बात करूँ। लेकिन आपका सजदा इतना लम्बा था कि मुझे बैठे बैठे और इन्तज़ार करते करते बहुत देर हो गयी, यहां तक कि मेरे दिल में यह ख्यायल आने लगा कि कहीं आपकी रूह मुबारक तो परवाज नहीं कर गयी, और यह सोचा कि आपका हाथ हिला कर देखूँ, काफ़ी देर के बाद जब सजदे से उठे तो देखा कि आपके चेहरे पर बड़ी खुशी के आसार हैं, मैंने पूछा कि या रसूलल्लाहु सल्ल्लल्लाहु अल्लाह के सल्लम आज मैंने एक ऐसा मन्ज़ूर देखा कि जो पहले नहीं देखा था, वह यह कि आपने आज इतना लम्बा सजदा फरमाया कि इस से पहले इतना लम्बा सजदा नहीं फरमाया, और मेरे दिल में यह ख्याल आने लगा कि कहीं आपकी रूह परवाज न कर गयी हो, इसकी क्या वजह थी?

हुज़ौरे अब्दास सल्ल्लल्लाहु अल्लाह के सल्लम ने जवाब में फरमाया कि बात यह है कि हज़रत जिब्रेईल अल्लाहिस्सलाम ने आकर कहा कि मैं तुम्हें खुश ख़बरी सुनाता हूँ कि अल्लाह ताज़ाला ने फरमाया
कि जो शक्ति भी एक बार आप पर दुरुद भेजगा, मैं उस पर रहमत नाजुल करूगा और जो शक्ति आप पर सलाम भेजेगा मैं उस पर सलाम भेजूंगा, इस खूँख खबरी और इनाम के शुक्र में मैंने यह सज्जा किया।

दुरुद शरीफ़ फज़ाइल का मज़मूआ है

और फिर दुरुद शरीफ़ ऐसी अफ़ज़ल इबादत है कि "ज़िक्र" उसके अन्दर मीजूद है, हुजूरे अक्बर सल्लाल्हु अल्लाहित व सल्लम के एहसानात का अतिरिक्त इसमें है, दुआ की फजीलत इसमें है, बेशुमार फजाइल दुरुद शरीफ़ में जमा हैं, इसलिये जब यह दुरुद शरीफ़ इसी नई फजीलत वाला है तो आदमी फिर भी इतना बख़ील बन जायें कि जब नबी—ए—करीम सल्लाल्हु अल्लाहित व सल्लम का जिक्र मुबारक आये तो एक बार भी दुरुद न मेंजे? इसलिये हुजूरे अक्बर सल्लाल्हु अल्लाहित व सल्लम ने फरमाया कि मोमिन के बख़ील होने के लिये यह काफ़ी है कि उसके सामने मेरा नाम आये और वह मुक़ा में दुरुद न मेंजे।

दुरुद शरीफ़ न पढ़ने पर वईद

एक बार हुजूरे अक्बर सल्लाल्हु अल्लाहित व सल्लम मस्जिदे नबवी में खुँतबा देने के लिये तशरीफ़ लाये, जिस वक़्त मिम्बर की पहली सीढ़ी पर कदम रखा, उस वक़्त जबान से फरमाया "आमीन" फिर जिस वक़्त दूसरी सीढ़ी पर कदम रखा, उस वक़्त फिर फरमाया "आमीन" फिर जिस वक़्त तीसरी सीढ़ी पर कदम रखा, उस वक़्त फिर फर्माया "आमीन" उसके बाद आपने खुँतबा दिया, जब आप खुँतबे से फारिग होकर नीचे तशरीफ़ लाये तो सहाबा ने सवाल किया कि या रसूल्लाह आज आपने मिम्बर पर जाते हुए (बगैर किसी दुआ के) तीन बार "आमीन" कहा, इसकी क्या वजह है? हुजूरे अक्बर सल्लाल्हु अल्लाहित व सल्लम ने जवाब दिया कि बात असल में यह है कि जिस वक़्त में मिम्बर पर जाने लगा, उस वक़्त जिबराईल
इस्लामी क़ुरान

अल्हिस्स्लाम मेरे सामने आ गये, उन्होंने तीन दुआएँ की, और मैंने उन दुआओं पर “आमीन” कहा, हकीकत में वे दुआएँ नहीं थीं बल्कि वे बदू दुआएँ थीं।

आप तस्वीर करें कि मसिजदें नंबरी जैसा मुक्कदस मंकाम है, और गालिबन जुमे का दिन है, और ख़ुतबा-ए-जुमा का वक्त है जो दुआ के क़बूल होने का वक्त है और दुआ करने वाले जिबराइल अल्हिस्स्लाम हैं, और “आमीन” कहने वाले हुजूर अक़बाद सल्लल्हु अल्लाह व सल्लम हैं, किसी दुआ के क़बूल होने की इस से ज्यादा कथा गार्दी हो सकती है जिसमें इतनी चीज़ें जमा हो जायें।

फिर फ़रमाया कि पहली दुआ हज़रत जिबराइल अल्हिस्स्लाम ने यह की कि वह शख्स बर्बाद हो जाये जो अपने मां बाप को बुझाएँ में पाये और फिर उनकी ख़िदमत करके अपने गुनाहों की मग़फ़िरत न करा ले और जन्मत न हासिल कर। इसलिये कि कई बार मां बाप औलाद की ज़रा सी बात और ख़िदमत पर ख़ुश होकर दुआएँ दे देते हैं और इन्सान की मग़फ़िरत का सामना हो जाता है। इसलिये जिसके यह बाप बुझी हों और वह उनकी ख़िदमत करके जन्मत का परवाना हासिल न कर सके, और अपने गुनाहों को माफ़ न करा सके तो ऐसा शख्स हलाक व बर्बाद होने के लायक है, यह बदू दुआ हज़रत जिबराइल अल्हिस्स्लाम ने की और हुजूर अक़बाद सल्लल्हु अल्लाह व सल्लम ने इस पर “आमीन” कही।

दूसरी बदू दुआ यह की कि वह शख्स हलाक हो जाये जिस पर रमजानुल मुबारक का पूरा महीना गुज़र जाये, इसके बाक़ी वह अपने गुनाहों की मग़फ़िरत न करा ले, क्योंकि रमज़ानुल मुबारक में अल्लाह त़काला की रहमत मग़फ़िरत के बहाने बूझती है।

तीसरी बदू दुआ यह थी कि वह शख्स हलाक व बर्बाद हो जाये जिसके सामने मेरा नाम लिया जाये और वह गुज़र पर दुरुक्क न भेजे, दुरुक्क शरीफ़ न पढ़ने पर इतनी सख़्त वईद है, इसलिये जब भी
हुज्जूरे अक़्ब़द सल्ल्लाल्हु अलेहि व सल्लम का मुबारक नाम आए तो आय पर दुरूद शरीफ़ पढ़ना चाहिए। (तारीख़े कबीर)

बहुत ही मुज़त्सर दुरूद शरीफ़

असल दुरूद शरीफ़ तो “दुरूदे इब्राहीमी” है जो अम्मी मैने फढ़ कर सुनाया, जिसको नमाज़ के अन्दर भी पढ़ते हैं, अगरचे दुरूद शरीफ़ के और भी अलफ़ाज़ हैं लेकिन तमाम उलामा—ए—किराम को इस पर इतिफ़ाक़ है कि अफ़ज़ल दुरूद शरीफ़ “दुरूदे इब्राहीमी” है, क्योंकि हुज्जूरे अक़ब़द सल्ल्लाल्हु अलेहि व सल्लम ने बराहें रास्त सहाबा को यह दुरूद सिखाया है कि इस तरह मुझ पर दुरूद भेजा करो; लेकिन जब भी हुज्जूरे अक़ब़द सल्ल्लाल्हु अलेहि व सल्लम का मुबारक नाम आए तो हर बार चूँकि दुरूदे इब्राहीमी का पढ़ना मुरिकल होता है इसलिये दुरूद शरीफ़ का आसान और मुज़त्सर जुम़ला यह तत्पीज़ कर दिया कि:

"صلى الله عليه وسلم"

“सल्ल्लाल्हु अलेहि व सल्लम”

इसके मायने यह है कि अल्लाह तअला उन पर दुरूद भेजे और सलाम भेजे; इसमें दुरूद भी हो गया और सलाम भी हो गया, इसलिये अगर हुज़ूरे अकब़द सल्ल्लाल्हु अलेहि व सल्लम का मुबारक नाम सुनते वक़्त सिफ़ “सल्ल्लाल्हु अलेहि व सल्लम” कह लिया जाये या लिखते वक़्त सिफ़ “सल्ल्लाल्हु अलेहि व सल्लम” लिख दिया जाये तो दुरूद शरीफ़ की फज़ीलत हासिल हो जाती है।

“सल्ल्म” या सिफ़ “साद” लिखना दुरूस्त नहीं

लेकिन बहुत से हज़ारात को यह भी लम्बा लगता है, मालूम नहीं हुज़ूरे अकब़द सल्ल्लाल्हु अलेहि व सल्लम का पाक नाम लिखने के बाद “सल्ल्लाल्हु अलेहि व सल्लम” लिखने में उनको घबराहट होती है, या वक़्त ज़्यादा लगता है, या पोशाक ज़्यादा खर्च होती है।

चुनांचे “सल्ल्लाल्हु अलेहि व सल्लम” लिखने के बज़ाये “सल्ल्म”
लिख देते हैं, या बाज़ लोग सिर्फ “साद” लिख देते हैं। दुनिया के दूसरे सारे कामों में छोटा होने की फिक्र नहीं होती, सारा छोटा करने का काम हुज्जूरे अकःदस सल्ल्लाहु अलिहि व सल्लम के नाम से साथ दुरूद शरीफ़ लिखने में आता है, यहाँ कितनी बड़ी महरफ़ी और बुख़ल की बात है। और! पूरा “सल्ल्लाहु अलिहि व सल्लम” लिखने में क्या बिगड़ जायेगा?

दुरूद शरीफ़ लिखने का सवाब

हालांकि हदीस शरीफ़ में आया है कि अगर ज़बान से एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ो तो उस पर अल्लाह तज़ाला दस रहमतें नाजिल फरमाते हैं, दस नेकियां उसके नामा—ए—आमाल में लिख देते हैं और दस युनाह माफ़ फरमाते हैं। और अगर लिखने में “सल्ल्लाहु अलिहि व सल्लम” कोई शख्स लिखे तो हदीस में आता है कि जब तक वह तहरीर (लिखावत) बाक़ी रहेगी उस वक़्त तक फरिश्ते बराबर उस पर दुरूद भेजते रहेंगे। (जादुस—सईद)

इस से मालूम हुआ कि तहरीर में “सल्ल्लाहु अलिहि व सल्लम” लिखा तो अब जो शख्स भी उस तहरीर को पढ़गा। उसका सवाब लिखने वाले को भी मिलेगा, इसलिये लिखने के वक़्त मुख़तसर "साद" (सल्ल्लाहु अलिहि व सल्लम का निशान) या “सल्ल्लाहु अलिहि व सल्लम” लिखना यह बड़ी बड़ीली, कन्ज़ूसी और महरफ़ी की बात है, इसलिये कभी ऐसा नहीं करना चाहिये।

मुहद्दिस़ीने इज़ाम मुक़र्रभ बन्दे हैं

इल्मे हदीस के फज़ाइल सीरते तैयबा के फज़ाइल के बयान में उल्लमा—ए—किराम ने एक बात यह भी लिखी है कि इल्म के पढ़ने वाले और पढ़ने वाले को बार बार दुरूद शरीफ़ पढ़ने की तौफ़ीक होती है, क्योंकि जब भी हुज्जूरे अकःदस सल्ल्लाहु अलिहि व सल्लम का जिक्र मुबारक आयेगा, तो शख्स "सल्ल्लाहु अलिहि व सल्लम" कहेगा, इसलिये उसको फ्यादा से फ्यादा दुरूद भेजने की
تہیکہ ہو جاتی ہے، کہ اس کے لیے مکتہ ریاستا نے ایسے کا افزاء کیا جو
سید کے ساتھ مسببہ ہوتے ہیں، یہ ہر آباد تھا ہم کے سوب
سے اثر اور مکرتہ بنتے ہیں، اس لیے یہ ہمکرد شریف ہو چڑھتے
ہیں۔ یہ مکرتہ شریف اسی جیسی فیضیت کی گھی ہے۔ ہر آباد تھا ہم
ہم کو اس کے مکرتہ کو اگر فرمای جائے تھا اور اس کی
کتاب کرنے کی تہیکہ مکرتہ اپنی فرمایا یہ، آمین

فریشٹے رہمہ کی دعا کرتےہیں

"عن عامر بن ریبیا رضی اللہ عنه یکل: سمعت رسول اللہ صلی اللہ علی
 وسلم، یقول: من صلی على صلاة صلہ علیه للملائكة ما صلی على، فلیقل
عبد من ذلك ولیکر (ابن ماجه شریف)

ہزارہ آمبیر دین ربعی اکبری رضی اللہ علیہ ایچ نے فرمایتے ہیں کہ ہم
ہرآباد اکبری سالکلا اتھی و سلم سے سنا ہے کہ یہ شتع
مود پر مکرتہ میتجنا ہے تو یہ کہ ہمکرد مکرتہ رکھتے ہیں
فریشٹے وکھے مکرتہ کی دعا کرتی رہتےہیں، اس جسکہ دیل
چاہے فریشٹے کی رہمہ کی دعا اپنے لیے کام کر لے یا ہو چڑھ
کر ہے۔

داس رہمہ، داس بار سلاماتی

"عن ابن طلحة رضی اللہ عنه ان رسول اللہ صلی اللہ علیه وسلم جام
ذات يوم والبشری یہی در وجهہ فقہ: ہن جا چند یقین کہ فقہ: امیریکہ یا
محمد ان لا صلی على اک یا امکاہ صلیت عشرۃ و لا یسلم عليه اک
من امکاہ الا سلمت عليه عشرۃ (سسن تسائی شریف)

ہزارہ ابوبکر تالہ رضی اللہ علیہ ایچ نے فرمایتے ہیں کہ یہ ہم
ہرآباد اکبری سالکلا اتھی و سلم کہا تر ہیژ لیکہ لیکہ
کہ آپکے فریشٹے پر خیل ظاہر اور خوشی کے آسانے ہے، یہ کہ آپکے
فرما یا کہ مل کا پاس اگر جزیرے تاریک ایک لیکہ لیکہ، اور یہاں نے
آپکے فرمایا کہ یہ یہ موعود (سالکلا اتھی و سلم) اگر
تکلیف مکرتہ رہے ہیں کہ یہ آپکے راجیہہوں کے لیے یہ بات
کافی نہیں ہے کہ آپکی وصیت میں سے جو بندہ بھی آپ پر دوسرے بہتاء ہو تو میں ہم ہمیں داؤ رکھنے کا کرکمہ، اور جو بھی بندہ آپ پر دوسرے بہتاء ہو تو میں ہم ہمیں داؤ بار سلامتی ناہیں کرکمہ۔

دُرُعہ شریف پہنچانے والے فریضہ

"عن ابن مسعود رضی اللہ عنہ قَالُ رَسُول اللہ صلی اللہ علیه وسلم: "لله تعالی ملائکہ سیاحین فی الارض، يبلغون می امتی السلام".(سنن نسائی شریف)

ہمجرال حسنعلی بہین مسعودرہ سالنلی اہم انہوں فرمائے ہیں کہ ہمیں اکہا سلسلہ الحسنعلی اہم و سلام نے اکف جعل کی اکف بھی ایسے ہیں جو ہمیں پر هومنہ فریضہ ہے اور جو کوئی بندہ معاشرہ پر سلامتی بہتی ہے وہ فریضہ ہم ہمیں سلامتی کو معاشرہ پکھانے دیتے ہیں۔

اک عیسی میں ہے کہ جب کوئی بندہ ہمیں اکہا سلسلہ الحسنعلی اہم و سلام پر دوسرے بہتی ہے تو انہوں دوسرے اکہا سلسلہ الحسنعلی اہم و سلام کے پاس نام لکھ رہے ہیں اور کوئی بندہ اپنی خیال میں دوسرے شریف کا یہ توهفہ بہتی ہے۔ انسان کی اس سے بہتر کیا سمجھا ہوگی کہ نہیں اکہا سلسلہ الحسنعلی اہم و سلام کی بارگاہ میں ہمکا نام پکھانے جانے۔(کنجرل عیسی)

میں خود دوسرے سنگتہ ہوں

اک عیسی شریف میں ہمیں اکہا سلسلہ الحسنعلی اہم و سلام نے فرمائی کہ جب ہمیں علمتی فریضہ سے ہمیں اپنی زیندار دوسرے بہتی ہے تو انہوں کوئی فریضہ کے جریے وہ دوسرے معاشرہ پر پکھانے جاتا ہے اور جب کوئی علمتی میری کم پر آکر دوسرے بہتی ہے اور یہ کہتے ہیں کہ:

"الصلاة والسلام عليك يا رسول الله"

"أُسْمَانُ اللَّهُ وَاسْلَامُ عَلَیْهَ وَاَسْلَامُ"
उस वक्त में खुद उसके दुरुद व सलाम को सुनता हूँ।

(कन्जुल उम्माल)

अल्लाह तअला ने हुजूरे अक्दस सल्लल्लाहु अल्लाह व सल्लम को कब्र में एक ख़ास किस्म की जिन्दगी अता फरमाई हुई है, इसलिये वह सलाम आप ख़ुद सुनते हैं। और इसी कज़ह से उल्लमा ने फरमाया कि जब कोई आपकी कब्र पर जाकर दुरुद भेजे तो वे अलफ़ाज कहें:

"الصلاة والسلام عليک يا رسول الله"

"अस्सलातु वस्सलातु अलाय या रसूलल्लाह" और जब दूर से दुरुद शरीफ भेजे तो उस वक्त दुरुदें इबाहीमी पढ़े।

दुख और परेशानी के वक्त दुरुद शरीफ़ पढ़ें

मेरे शैख हज़रत डॉक्टर अबुल हई साहिब रहे। ने एक बार फरमाया कि जब आदमी को कोई दुख और परेशानी हो, या कोई बीमारी हो, या कोई ज़ुकरत और हाज़त हो तो अल्लाह तअला से दुआ तो करनी चाहिये कि या अल्लाह! मेरी इस ज़ुकरत को पूरा फरमा दीजिये, मेरी इस परेशानी और बीमारी को दूर फरमा दीजिये लेकिन एक तरीक़ा ऐसा बताता हूँ कि उसकी वर्कत से अल्लाह तअला उसकी ज़ुकरत को ज़ुकर ही पूरा फरमा देंगे, वह यह है कि जब कोई परेशानी हो उस वक्त दुरुद शरीफ़ कसरत से पढ़ें, उस दुरुद शरीफ़ की वर्कत से अल्लाह तअला उस परेशानी को दूर फरमा देंगे।

हुजूरे अक्दस सल्ल. की दुआय़े हासिल करें

दलील इसकी यह है कि सीरत है या वह बात लिखी हुई है कि जब कोई शख्स हुजूरे अक्दस सल्लल्लाहु अल्लाह व सल्लम की ख़िदमत में कोई हंदिया लाता तो आप इस बात की कोशिश फरमाते हैं उसके जवाब में उस से बेहतर लोहफ़ा उसकी ख़िदमत में पेश
करूँ, ताकि उसका बदल हो जाये, सारी जिन्दगी आपने इस पर अमल फरसाया, यह दुरुपद शरीफ भी हजूरूरे अक्दस सल्लल्लाहु अल्लाहि व सल्लम की खिदमत में हदिया है, और बूंकि सारी जिन्दगी में आपका यह मामूल था कि जवाब में उस से बढ़ कर हदिया देते थे, तो आज जब फरिस्ते दुरुपद शरीफ आपकी खिदमत में पहुँचायेंगे कि आपके फलां उम्मती ने आपकी खिदमत में दुरुपद शरीफ का यह तोहफा भेजा है तो गालिब गुमान यह है कि हजूरूरे अक्दस सल्लल्लाहु अल्लाहि व सल्लम इस हदिये का भी जवाब देंगे, यह जवाबी हदिया यह होगा कि वे अल्लाह ताज़ाला से दुआ करेंगे कि जिस तरह इस बन्दे ने मुझे हदिया भेजा, ऐ अल्लाह! इस बन्दे की हाजितें भी आप पूरी फरमा दें और इसकी परेशानियां दूर फरमा दें। अब इस वक़्त हम लोग हजूरूरे अक्दस सल्लल्लाहु अल्लाहि व सल्लम की खिदमत में जाकर यह नहीं कह सकते कि आप हमारे हक में दुआ फरमा दीजिये, दुआ की दरख़ास्त करने का कोई रास्ता नहीं है, हाँ एक रास्ता है, यह यह कि हम दुरुपद शरीफ कसूर से भेजे, जवाब में हजूरूरे अक्दस सल्लल्लाहु अल्लाहि व सल्लम हमारे हक में दुआ फरमायेंगे। इसलिये दुरुपद शरीफ पढ़ने का यह अज़ीज़ फायदा हमें हासिल करना चाहिये, इसी वजह से बहुत से बुजुर्गों से मनकूल है कि वे बीमारी और दुख की हालत में दुरुपद शरीफ की कसूर किया करते थे। इसलिये दिन भर में कम से कम सी बार दुरुपद शरीफ पढ़ लिया करें, अगर पूरा दुरुपद इबाहिमी पढ़ने की तौफीक हो जाये तो बहुत अच्छा है वर्तना मुख़तसर दुरुपद पढ़ लें:

“लल्हम सलिल अल्लाहु नबी आमी और आल्ह और वास्तविक और वास्तविक और सल्लम”

अल्लाहुम्—म सलिल अला मुहम्मदिन् नबियिलिन् उम्मियिन् और अला आलिहियां और अश्वाहियां और बारिक और सल्लिम्द्वै और भी मुख्तसर करना चाहें तो यह पढ़ लें:

“लल्हम सलिल अल्लाहु नबी आल मुहम्मदिन् और सल्लिम्द्वै”
या “सल्लल्लाहु अल्लाहिव सल्लम” पढ़ लें, लेकिन सी बार जरूर पढ़ लें, उसकी बर्तन से अज व सवाब के जख्वीरे भी जमा हो जायेंगे और इन्हा अल्लाह अल्लाह की रहमत से निर्विरोध होने की भी उम्मीद है।

दुरुद शरीफ के अल्फाज़ क्या हैं?

एक बात और समझ लें, यह दुरुद शरीफ पढ़ना एक इबादत भी है और एक दुआ भी है, जो अल्लाह तख़्ताला के हुक्कम पर की जा रही है, इसलिये दुरुद शरीफ के लिये वही अल्फाज़ इख्तियार करने चाहिए जो अल्लाह ने और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अल्लाह व सल्लम ने बताये हैं, और उल्लमा—ए—कियम ने इस पर मुख्तिकिल किताबें लिख दी हैं कि हुज्जूरे अब्दस सल्लल्लाहु अल्लाह व सल्लम से कौन कौन से दुरुद साबित और मन्नूल है, जैसे हाफिज़ ख़ाक़ी रहे ने एक किताब अर्थ में लिखी है:

“القول البديع في الصلاة على الحبيب الشفيع”

“अल् कौलुलू बदीयु फिरसलाति अलल हबीविशाफ़ी”

जिसमें तमाम दुरुद शरीफ जमा कर दिये हैं, इसी तरह हज़रत थानवी रह. ने एक पिसाला लिखा है जिसका नाम है “जादुस—सईद” जिसमें हज़रत थानवी रह. ने दुरुद शरीफ के वे तमाम अल्फाज़ और सीगे जमा फरभा दिये हैं जो हुज्जूरे अब्दस सल्लल्लाहु अल्लाह व सल्लम से साबित हैं, और उनकी फजीलतें बयान फरभाई हैं।

मन घड़त दुरुद शरीफ न पढ़ें

लेकिन हुज्जूरे अब्दस सल्लल्लाहु अल्लाह व सल्लम से इतनी कसारत से दुरुद शरीफ मन्नूल होने के बावजूद लोगों का यह शोक हो गया है कि हम अपनी तरफ़ से दुरुद बनाकर पढ़ेंगे, चुनांचे किसी ने दुरुदे ताज़ घड़ लिया, किसी ने दुरुदे लख़ी मढ़ लिया, बगैर वगैर। और उनके फज़ाइल भी अपनी तरफ से बना कर पेश कर दिये कि इसको पढ़ो तो यह हो जायेगा, हालांकि न तो ये अल्फाज़
इस्लामी खुदवात जिल्द(8)

हज़ूरे अक़्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मन्तूल हैं और न उनके ये फ़ज़ाइल मन्तूल हैं, बल्कि बाज़ के तो अल्फाज़ भी शरीफ़ के ख़िलाफ़ हैं, यहाँ तक कि बाज़ में शिकाया कालिने भी दर्ज हैं।
इसलिये सिर्फ वे दुरूद शरीफ़ पढ़ने चाहियें जो हज़ूरे अक़्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मन्तूल हैं, दूसरे दुरूद नहीं पढ़ने चाहियें।
इसलिये हज़रत धानबी रह. की किताब "जादुस-सईद" हर शाख़ को अपने घर में रखना चाहिये और उसमें बयान किये हुए

dुरूद शरीफ़ पढ़ने चाहियें।

नालेन मुबारक का नक़शा और उसकी फ़ज़ीलत

इस रिसाले में हज़रत धानबी रह. ने एक काम की चीज़ और एक नेमल और देदी है, वह है दुरूद अक़्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नालेन मुबारक (मुबारक जूतों) का नक़शा, उस नक़शे के बारे में बुज़ुग़ा का तजुबा यह है कि सख़्त बीमारी और परेशानी की हालत में अगर नालेन मुबारक के उस नक़शे को सीने पर रख दिया
जाये तो अल्लाह तब उसकी वर्कत से परेशानी और मुसीबत को
दूर फ़रमा देते हैं। इसलिये कोई घर इस रिसाले से ख़ाली नहीं होना
चाहिये। इसी तरह शैखुल हदीस हज़रत मीलाना मुहम्मद ज़ुकरिया
साहिब रह. का एक रिसाला है “फ़ज़ाइले दुरूद शरीफ़” वह भी अपने
घर में रखें और पढ़ें और दुरूद शरीफ़ को अपने लिये बहुत बड़ी
नेमल सभाप कर उसको क़ज़ीफ़ा बनायें।

दुरूद शरीफ़ का हुक़म

तमाम उलमा—ए—उम्मत का इस बात पर इतिफ़ाक है कि हर
शाख़ के जिम्मे ज़िन्दगी में कम से कम एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ना
लाज़मी फर्ज़ है, और बिल्कुल इसी तरह फर्ज़ है जैसे नमाज़, रोज़ा,
ज़कात और हज़ फर्ज़ हैं, इसके फर्ज़ होने की दलील कुरआने करीम
की यह आयत है:

"अन्नल्लाह रमलके यह झलकत उन्नियु, या बनया जिनों मन्त्र चले पर उनाए"
और इसके अलावा जब कभी एक ही मज़िल्स में हुजूरे अक्दस सल्लल्लाहु अल्लाहि व सल्लम का मुबारक नाम बार बार आये, चाहे पढ़ने में या सुनने में तो उस बक़़त एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ना वजिब है, अगर नहीं पढ़ेगा तो गुनाहगार होगा।

वाजिब और फर्ज़ में फर्ज़

वाजिब और फर्ज़ में अमली एतिबार से कोई फर्ज नहीं होता, इसलिये कि वाजिब पर भी अमल करना ज़रूरी है और फर्ज़ पर भी अमल करना ज़रूरी है, फर्ज़ को छोड़ने वाला भी गुनाहगार होता है और वाजिब को छोड़ने वाला भी गुनाहगार होता है। लेकिन दोनों के दरमियान फर्ज़ यह है कि अगर कोई शह्स फर्ज़ का इन्कार कर दे तो काफ़िर हो जाता है, जैसे अगर कोई शह्स कहे कि नमाज़ फर्ज़ नहीं है, (अल्लाह अपनी पनाह में रखे) तो वह शह्स मुसलमान नहीं रहेगा, काफ़िर हो जायेगा। या रोज़ें के फर्ज़ होने का इन्कार कर दे तो वह काफ़िर हो जायेगा, वाजिब के इन्कार करने से काफ़िर-नहीं होता, लेकिन सख़्त गुनाहगार और फासिक़ हो जाता है। जैसे अगर कोई शह्स वित्त की नमाज़ का इन्कार कर दे कि वित्त की नमाज़ वाजिब नहीं तो वह शह्स बहुत सख़्त गुनाहगार होगा और फासिक़ हो जायेगा, लेकिन अमली एतिबार से दोनों ज़रूरी हैं।

हर बार दुरूद शरीफ़ पढ़ना चाहिए

लेकिन शरीफ़ ने हर बात का लिहाज़ रखा है कि जो दुःख बन्दे को दिया जाये वह काबिले अमल हो। इसलिये अगर एक ही मज़िल्स में हुजूरे अक्दस सल्लल्लाहु अल्लाहि व सल्लम का पाक नाम बार बार लिया जाये तो सिर्फ़ एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ने से वाजिब अदा हो जाता है, अगर हर बार दुरूद शरीफ़ नहीं पढ़ेगा तो वाजिब छोड़ने का गुनाह नहीं होगा, लेकिन एक मुसलमान के इरादे का तकाज़ा यह है कि एक ही मज़िल्स में अगर बार बार भी हुजूरे
अक्कद सल्लल्लाहु अल्लैहि व सल्लम का जिन्हे मुबारक आये तो हर बार वह दुरूद शरीफ पढ़े अगर वे मुख्तासर ही “सल्लल्लाहु अल्लैहि व सल्लम” पढ़ ले।

बुज़ू के दौरान दुरूद शरीफ़ पढ़ना
कुछ वक्त ऐसे हैं जिन में दुरूद शरीफ़ पढ़ना मुश्ताहब है, बुज़ू करने के दौरान एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ना मुश्ताहब है, और बार बार पढ़ते रहना और ज्यादा फ़ज़ीलत का सबब है। इसलिये एक मुस्लिम मान को चाहिए कि जब तक बुज़ू में मशूल रहे दुरूद शरीफ़ पढ़ता रहे, उलमा-ए-किराम ने इसको मुश्ताहब करार दिया है।

जब हाथ पांव सुन हो जायें
इसी तरह हदीस शरीफ़ में आया है कि अगर तुम में से किसी शख्स का हाथ या पांव सुन हो जाये, यानी हाथ या पांव सो जाये, और उसकी वजह से उसके अन्दर उल्लास ख़त्म हो जाये और वह शायर हो जाये, उस वक़्त वह शख्स मुझ पर दुरूद शरीफ़ भेजें:

“लल्लम सल्ला उला मुहम्मदि-व अला आलिय गुहामदिअन
कमा सल्लै-ल अला इब्राहीम-म व अला आलिय इब्राहीम-म इन-क
हमीदुम-मजीद”

जब हुज़ूरे अक्कद सल्लल्लाहु अल्लैहि व सल्लम ने इस मौक़े पर दुरूद शरीफ़ पढ़ने की तलकीन फरमाई है तो इस से यह जाहिर होता है कि दुरूद शरीफ़ पढ़ना इस बीमारी का इलाज भी है, और अल्लाह तअला की रहमत से उम्मीद यह है कि दुरूद शरीफ़ पढ़ने से सुन हो जाने का असर ख़ाम हो जायेगा। मैं कहता हूँ कि यह इस बीमारी का इलाज हो या न हो, लेकिन एक मोमिन को हुज़ूरे अक्कद सल्लल्लाहु अल्लैहि व सल्लम पर दुरूद शरीफ़ भेजने और दुरूद शरीफ़ की फ़जीलत हासिल करने का एक मौका मिला है, इसलिये
इस मौके को गनीमत समझ कर एक मुसलमान को उस वक्त दुरूद शरीफ़ पढ़ना चाहिये।

मस्जिद में दाख़िल होते और निकलते वक्त दुरूद शरीफ़

इसी तरह मस्जिद में दाख़िल होते वक्त और मस्जिद से निकलते वक्त भी दुरूद शरीफ़ पढ़ना मुस्लिम है। चुनाव या मस्जिद में दाख़िल होने की मस्नून दुआ यह है:

اللهِ افتخِ لى ابوباء رحمتك

"अल्लाहुम्फ़तट ह़ली अब्बा—ब रहमती—क"

और मस्जिद से निकलने की मस्नून दुआ यह है:

اللهِ اني أستك من فضلك

"अल्लाहु—म इननी اسअलु—क मिनु मफ़्ज़िल—क"

रिवाज़ों में आता है कि इन दुआओं के साथ बिस्मिल्लाह और दुरूद शरीफ़ का इज़ाफ़ा भी कर लेना चाहिये, और मस्जिद में दाख़िल होते वक्त इस तरह दुआ पढ़नी चाहिये:

بسم اللہِ والصلاة والسلام على رسول اللہِ، اللہِ افتخِ لى ابوباء رحمتك

"बिस्मिल्लाहिर रज्जललातु वस्लामु अला रस्लिल्लाहिहि,
अल्लाहुम्फ़तट ह़ली अब्बा—ब रहमती—क"

और मस्जिद से निकलते वक्त इस तरह पढ़नी चाहिये:

بسم اللہِ والصلاة والسلام على رسول اللہِ، اللہِ اني أستك من فضلك

"बिस्मिल्लाहिर रज्जललातु वस्लामु अला रस्लिल्लाहिहि,
अल्लाहु—म इननी اسअलु—क मिनु मफ़्ज़िल—क"

इसलिये इन दोनों मौकों पर दुरूद शरीफ़ पढ़ना पसंदीदा है।

इन दुआओं की हिकमत

अल्लाह तख़ा़ला ने मस्जिद में दाख़िल होते वक्त और मस्जिद से निकलते वक्त ये दो अजीब दुआयें तल्कीन करती हैं, फर्माये कि दाख़िल होते वक्त यह दुआ करो कि ऐ अल्लाह! मेरे लिये अपनी
रहमत के दरवाजे खोल दे, और मस्जिद से निकलते वक़्त यह दुआ करो कि ऐ अल्लाह! मैं आप से आपका फ़ज़ल मांगता हूँ, गोया कि मस्जिद में दाखिल होते वक़्त रहमत की दुआ मांगी, और मस्जिद से निकलते वक़्त फ़ज़ल की दुआ मांगी। उल्लमा ने इन दोनों दुआओं की हिकमत यह बयान फरमाई कि कुराने करीम और हदीसों में आम तौर पर “रहमत” का इस्तेमाल आख़िरत की नेमतों पर होता है, चुनावें जब किसी का इन्तिकाल हो जाता है तो उसके लिये “रहमुल्लाह” या “रहमुल्लाहि अल्लाहि” के अल्फ़ाज़ से दुआ की जाती है, यानी अल्लाह तख़ाला उस पर रहम फरमाये। और “फ़ज़ल” का इस्तेमाल आम तौर पर दुनियाव्य नेमतों पर होता है, जैसे माल व दौलत, बीड़ी बच्चे, घर बार, रोजी कमाने के अन्वेषण वग़ैरह को “फ़ज़ल” कहा जाता है, इसलिये मस्जिद में दाखिल होते वक़्त यह दुआ करो कि ऐ अल्लाह मेरे लिये रहमत के दरवाजे खोल दीजिये, यानी आख़िरत की नेमतों के दरवाजे खोल दीजिये, और मस्जिद में दाखिल होने के बाद मुझे ऐसी इबादत करने की तौफीक अता फरमाइये, और इस तरह आपका ज़िक्र करने की तौफीक अता फरमाइये, जिसके ज़रिये आपकी रहमत के यानी आख़िरत की नेमतों के दरवाजे मुझ पर खुल जायें, और आख़िरत की नेमतें हासिल हो जायें।

और चूंकि मस्जिद से निकलने के बाद या तो आदमी अपने घर जायेंगा, या मुलाज़मत के लिये दफ्तर में जायेगा, या अपनी दुकान पर जायेगा और रोजी कमायेगा, इसलिये इस मौके पर यह दुआ तलकिन फरमाई, कि ऐ अल्लाह! मुझ पर अपने फ़ज़ल के दरवाजे खोल दीजिये, यानी दुनियाव्य नेमतों के दरवाजे खोल दीजिये।

आप गौर करें कि अगर इन्सान की सिफ़री ये दो दुआएं कुबूल हो जायें तो फिर इन्सान को और क्या चाहिए? इसलिये कि दुनिया में अल्लाह का फ़ज़ल मिल गया और आख़िरत में अल्लाह की रहमत हासिल हो गयी। “अल्लाह तबहाला हम सब के हक़ में इन दोनों
इस्लाही खुलाबात

जिल्द(6)

दुआओं को क़बूल फर्मायें, आमीन। और जब ये अज़ीज़मुस्लिम दुआँ करें तो इस से पहले हमारे नबी मुहम्मद सल्ल्लाहु अलाईहि व सल्लम पर दुरुढ़ भेज दिया करें। इसलिये कि जब तुम हमारे नबी सल्ल्लाहु अलाईहि व सल्लम पर दुरुढ़ भेजोगे तो चूंकि वह दुरुढ़ तो हमें क़बूल ही करना है, यह मुज़क़ूर नहीं कि हम उसको क़बूल न करें। इसलिये कि हम तो क़बूलियत का पहले से ऐलान कर चुके हैं। और जब हम दुरुढ़ शरीफ़ क़बूल करेंगे तो उसके साथ तुफानी ये दुआँ भी क़बूल कर लें, और अगर ये दुआँ क़बूल हो गयी तो दुनिया व आख़िरत की नेमसे हासिल हो गयीं। इसलिये मसिज़ में जाते वक़त और निकलते वक़त दुरुढ़ शरीफ़ ज़ुलूफ़ पढ़ लिया करें।

अहम बात से पहले दुरुढ़ शरीफ़

इसी तरह हुज़ूरे अक़रब़ सल्ल्लाहु अलाईहि व सल्लम ने फर्माया कि जब आदमी कोई अहम बात करना शुरू करे, या अहम बात लिखे, तो उस से पहले अल्लाह तख़्त़ाला की तारीफ़ व सना करें, और फिर हुज़ूरे अक़रब़ सल्ल्लाहु अलाईहि व सल्लम पर दुरुढ़ भेजे, उसके बाद अपनी बात कहे या लिखे, चुनांचे आपने देखा होगा कि तक़रीर के शुरू में एक ख़ूब़त बढ़ा जाता है, उस ख़ूब़त में अल्लाह तख़्त़ाला की तारीफ़ और तौहीद का बयान होता है, और हुज़ूरे अक़रब़ सल्ल्लाहु अलाईहि व सल्लम पर दुरुढ़ और आपकी रिसालत का बयान होता है, और अगर मुख़्तसर वक़त हो तो आदमी सिफ़ऱ इतना ही कह दे:

"नमुद हमदे و نصلى على رسوله الكريم"

"नहमदुहु و نعساللّي اسلام رضوئله الكرم"

यानी हम अल्लाह तख़्त़ाला की तारीफ़ करते हैं और हुज़ूरे पाक सल्ल्लाहु अलाईहि व सल्लम पर दुरुढ़ शरीफ़ भेजते हैं या यह पढ़ेः

"الحمد لله و رَكِّي و سَلَام علی وُلاده الذين اصطفَف"
"अल्हदु लिल्लाहि व कफ़ा व सलामुन अला सिबादि—
हिल्लजीनस्तफा"

यह भी मुख्तासर दुरुद्वार शरीफ़ की एक सूचना है। इसलिये जब भी कोई बात कहनी हो या लिखनी हो, उस वक्त तारीफ़ व दुरुद्वार कहना 
चाहिये, हमारे यहां तो जब कोई शर्में बाक़्यादा तकरीर करता है 
उस वक़्त यह पढ़ता हैः

"नहमदेह व नुसर्ल्ली अला रसूलहिल्ल़ करीम"

लेकिन सहाबा—ए—किराम रिज़यल्लाहु अन्नुम के यहां यह मामूल 
था कि किसी भी मसूले पर बात करनी हो, चाहे वे दुनियावी 
मसाइल ही क्यों न हों, जैसे खरीद व बेच की बात हो या रिश्व नाटे 
की बात हो, तो बात शुरू करने से पहले अल्लाह की तारीफ़ व सना 
और दुरुद शरीफ़ पढ़ते, उसके बाद अपनी मक़सद की बात करते। 
युनांचे अरब वालों के अन्दर अभी तक इसकी झलक और इसका 
नमूना कुछ कुछ मौजूद है कि जब किसी काम के मशिव्रे के लिये 
बेंटे हैं तो पहले अल्लाह की तारीफ़ व सना और दुरुद शरीफ़ 
पढ़ते हैं, हमारे यहां यह सुनन्त ख़तम होती जा रही है, इस सुनन्त 
को जिन्दा करने की जरूरत है।

गुस्से के वक्त दुरुद शरीफ़ पढ़ना

उलमा—ए—किराम ने फर्माया कि जब आदमी को गुस्सा आ रहा 
हो और अंदेरा यह हो कि गुस्से के अन्दर कहीं आप से बाहर होकर 
कोई काम शरीफ़ के ख़िलाफ़ न हो जाये या कहीं ज़्यादती न हो 
जाये, किसी को बुरा भला न कह दे, या कहीं गुस्से के अन्दर मार 
पीट तक नीबट न पहुँच जाये उस वक्त गुस्से की हालत में दुरुद 
शरीफ़ पढ़ लेना चाहिये, दुरुद शरीफ़ पढ़ने से इन्हा अल्लाह गुस्सा 
ठंडा हो जायेगा, वह गुस्सा काबू से बाहर नहीं होगा।

अरब के लोगों में आज तक यह बड़ी अच्छी रस्म चली आ रही
है कि जहां कर्म दो आदमियों में कोई तकरार और लड़ाई की नीति आ गई तो फौरन उस वक्त उनमें से कोई या कोई तीसरा आदमी उन से कहता है कि:

"صل على النبي"

"सल्ला اعلیہم" यानी नबी—ए—करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दुरुद्रू मेजो, उसके जवाब में दूसरा आदमी दुरुदशरीफ़ पढ़ना शुरू कर देता है:

"الله صل على محمد وعلى آل محمد"

"अल्लाहुम्मा—सल्ल्ला अला मुहम्मदिव— व अला आलि मुहम्मद"

बस उसी वक्त लड़ाई खत्म हो जाती है और दोनों फरीक ठन्डे पड़ जाते हैं और दोनों का गुस्सा खत्म हो जाता है। यह हकीकत में उलमा—ए—किरम की तलकीन का नतीजा है कि गुस्से को ठंडा करने के लिये दुरुद शरीफ़ पढ़ना बहुत मुफ़ीद है। इसलिये इसको भी अपने दरमियान रखाव देने की जरूरत है।

सोने से पहले दुरुद शरीफ़ पढ़ना

इसी तरह उलमा ने फरमाया कि जब आदमी सोने के लिये बिस्तर पर लेटे, उस वक्त वह पहले मसून दुआएँ पढ़े, उसके बाद दुरुद शरीफ़ पढ़ते पढ़ते सो जायें, ताकि इस्नान के जागने की हालत का आख़री कलाम दुरुद शरीफ़ हो जाये, ये ऐसी बातें हैं जिन पर अंगल करने में कोई मेहनत और मशाकुशत नहीं, और कोई वक्त भी खर्च नहीं होता। इसलिये ये तुम सोने के लिये लेटे हो, कोई और काम तो नहीं कर सकते, इसलिये दुरुद शरीफ़ पढ़ते रहो यहां तक कि नींद आ जाये, ताकि तुम्हारे आमल का खात्मा खैर के साथ हो जाये, इसको भी अपना मामूल बना लेने की ज़रूरत है। बहर हाल, ये वे मौक़े थे जिन में दुरुद शरीफ़ पढ़ना उलमा ने मुस्तहब यानी पसन्दीदा बताया है, इनको अपने मामूलात में दाखिल कर लेना
चाहिये।

रोजाना तीन सौ बार दुरूद शरीफ़

कुछ बुजुर्गों ने फरमाया कि कम से कम सुबह व शाम तीन सौ बार दुरूद शरीफ़ पढ़ना चाहिए, हजरत मौलाना रशीद अहमद गंगोही रह. से मुक्तूल है कि वे अपने ताल्लुक रखने वाले और मुसीदों को तलकीन फरमाया करते थे कि कम से कम दिन में तीन सौ बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लिया करो, और इन्हा अल्लाह इसकी वजह से कस्रट से दुरूद शरीफ़ पढ़ने वालों में तुम्हारा शुभार हो जायेगा, वन्न कम से कम सौ बार तो ज्जगर ही पढ़ लिया करो। अल्लाह तालाला हम सब को इसकी तोफ़ीक अता फरमाये, आमीन।

दुरूद शरीफ़ मुहब्बत बढ़ाने का ज़रिया

और दुरूद शरीफ़ पढ़ने पर आखिरते में जो नेकिया और जो अज व सवा लिया है, वह तो मिलेगा, लेकिन दुनिया में इसका फायदा यह है कि जो शख्स जितनी कस्रट से दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा उतना ही हुजूरे अक़बर सल्ल्लाहु अल्लैहिः व सल्लम की मुहब्बत में इजाफ़ा होगा, और जितनी हुजूरे अक़बर सल्ल्लाहु अलैहिः व सल्लम की मुहब्बत बढ़ेगी, उन्न तो इस्लाम पर खूँव व भलाई के दरवाज़े खुलते जायेगे। हदीस शरीफ़ में है कि एक सहाबी ने पूछा: या रसूलल्लाह! कियामत कब आयेगी? आपने पूछा कि तुमने उसकी क्या तैयारी की है? सहाबी ने फरमाया कि या रसूलल्लाह! मैंने बहुत ज़्ज़या नफ़ली नमाज़े या नफ़िल रोज़े तो नहीं रखे लेकिन में अल्लाह और अल्लाह के रसूल से मुहब्बत रखता हूँ, हुजूरे अक़बर सल्ल्लाहु अलैहिः व सल्लम ने फरमाया कि:

"المرء مع من احب" (ترمذي شريف)

इन्सान आखिरत में उसी के साथ होगा जिसके साथ उसने दुनिया में मुहब्बत की। इसलिये जो शख्स हुजूरे अकबर सल्ल्लाहु अलैहिः व सल्लम से मुहब्बत रखता होगा, आखिरत में अल्लाह
तभाला उसको हुजूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का साथ भी अता फरमायेगे। इसलिये दुरुद शरीफ पढ़ने का दुनियावी फायदा यह है कि हुजूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुहब्बत में इज़ाफ़ा हो जायेगा, वैसे तो अल्लाहु लिल्लाह हर मौमिन के दिल में हुजूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुहब्बत है, कोई मौमिन ऐसा नहीं होगा जिसके दिल में हुजूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुहब्बत न हो, लेकिन मुहब्बत मुहब्बत में फर्क होता है, इसलिये जो शक्स जितना ज्ञायदा दुरुद शरीफ पढ़ने वाला होगा, उसके दिल में उतनी ही ज्ञायदा मुहब्बत होगी। और यह दुरुद शरीफ का कोई मामूली फायदा नहीं है।

दुरुद शरीफ दीदारें रसूल का सबब

बुजुर्गों ने दुरुद शरीफ का एक दुनियावी फायदा यह बताया है कि जो शक्स कसूरत से दुरुद शरीफ पढ़ेगा अल्लाह तभाला उसको हुजूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का दीदार नसीब फरमायेगे। अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती रह. ने जो बड़े दर्जे के उलमा—ए—किराम में से हैं, वह वह बुजुर्ग हैं जिन्होंने ने दीन व दुनिया के उलूम में से कोई ऐसा इलम नहीं छोड़ा जिस पर कोई किताब न लिखी हो। इलमे तफसीर पर, इलमे हदीस पर, फिकह पर, वलागत पर, नसह पर, हिसाब पर, गोया हर मौजूद पर आपकी तस्सीफ मौजूद है, और इलमे तफसीर पर आपकी तीन किताबें हैं, जिनमें से एक (८०) जिल्दों पर मुस्तमिल है, जिसका “मज़उल बहरैन” है, दूसरी तफसीर है “दुरे मन्सूर” और तीसरी है “जलालैन” उनकी लिखी हुई सारी किताबें अगर आज कोई शक्स पढ़ना चाहें तो उसके लिये पूरी उमर चाहिए, लेकिन अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती रह. ने चालीस की उमर के अन्दर यह तमाम किताबें लिखीं और उसके बाद अपने आपको अल्लाह की इबादत के लिये फारिग कर लिया।
जागते में हुजूरे पाक की जियारत

उनके हालात में लिखा है कि अल्लाह तःज़ाला ने उनको यह दौलत अता फरमाई कि 35 बार सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अल्लाही व सल्लम की जागने की हालत में जियारत हुई, और जागने की हालत में हुजूरे अक्दः सल्लल्लाहु अल्लाही व सल्लम की जियारत एक करफ़ की एक किस्म है, किसी ने अल्लाहमा जलालुद्दीन सुयूती से पूछा कि हज़रत! हमने सुना है कि आपने 35 बार जागने की हालत में हुजूरे अक्दः सल्लल्लाहु अल्लाही व सल्लम की जियारत की है?

हमें बताये कि वह क्या अमल है जिसकी बदौलत अल्लाह तःज़ाला ने आपको इस दौलत से सरफ़राज़ फरमाया? जवाब में उन्होंने फरमाया कि मैं तो कोई ख़ास अमल नहीं करता, लेकिन अल्लाह तःज़ाला का मुझ पर यह ख़ास फज़ल रहा है कि मैं सारी उम्र दुरुदः शरीफ़ बहुत कसरत से पढ़ता रहा हूँ, चलते फिरते, उठते बैठते, सोते जागते मेरी यह कोशिश होती है कि हुजूरे अक्दः सल्लल्लाहु अल्लाही व सल्लम पर दुरुदः शरीफ़ पढ़ता रहूँ, शायद इसी अमल की बदौलत अल्लाह तःज़ाला ने मुझे यह दौलत अता फरमाई हो।

हुजूरे पाक की जियारत का तरीक़ा

बहर हाल, बुज़ुर्ग़ों ने लिखा है कि अगर किसी शख़्स को नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अल्लाही व सल्लम की जियारत का शीर्ष हो तो वह जुमे की रात में दो रक्तात नफिल नमाज़ इस तरह पढ़े कि सूरः फ़तहिहः के बाद 11 बार आयतुल्ल्ह कुस्ती और 11 बार सूरः इख़्लास पढ़े और सल्लम फरसने के बाद सी बार यह दुरुदः शरीफ़ पढ़े।

"ललम चल उल मुहम्मद औपि अल्लाहु आलिही व सल्लम"

अगर कोई शख़्स चन्द बार यह अमल करे तो अल्लाह तःज़ाला
उसको जियारत नसीब फरमा देते हैं, बशर्त कि शौक और तनबा कामिल हो और गुणाहों से भी बचता हो।

हज़रत मुफ़्ती साहिब रह. का मैलान

लेकिन सच्ची बात यह है कि हम कहां और नबी---ए---करीम सल्लल्लाहु अल्लाह व सल्लम की जियारत कहां? चुनांचे मेरे वालिद माजिद हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद शाफ़ी साहिब रह. की खिदमत में एक साहिब आये और कहा कि हज़रत! मुझे कोई ऐसा वजीफ़ा बता दीजिये कि जिसकी बक़ृत से हुज़ूरे अफ़ज़ल सल्लल्लाहु अल्लाह व सल्लम की जियारत नसीब हो जाये, हज़रत वालिद साहिब रह. ने फरमाया कि: भाई! तुम बड़े हौसले बाले आदमी हो कि तुम इस बात की तमन्ना कर रहे हो कि सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अल्लाह व सल्लम की जियारत हो जाये, हमें तो यह हौसला नहीं होता कि यह तमन्ना भी करें, इसलिये कि हम कहां और नबी---ए---करीम सल्लल्लाहु अल्लाह व सल्लम की जियारत कहां, और अगर जियारत हो जाये तो उसके आदाब, उसके हुकूक और उसके तकाज़े किस तरह पूरे करेंगे, इसलिये खुद इसके हासिल करने की न तो कोशिश की और न कभी इस किस्म के अभाल सीखने की नौबत आई जिसके ज़रिये हुज़ूरे अफ़ज़ल सल्लल्लाहु अल्लाह व सल्लम की जियारत हो जाये, लेकिन अल्लाह तालाबा अपने फ़ूज़ से खुद ही जियारत करा दे तो यह उनका इनाम है, और जब खुद करायें तो फिर उसके आदाब की भी तोफ़ीक़ बढ़ायें।

हज़रत मुफ़्ती साहिब रहस्तुल्लाहु अल्लाह और रौज़ा---ए---अफ़ज़ल की जियारत

हज़रत वालिद साहिब रह. जब रौज़ा---ए---अफ़ज़ल पर हाजिर होते तो कभी रौज़ा---ए---अफ़ज़ल की जाली के करीब नहीं जाते थे बल्कि हमेशा का यह सामूल देखा कि जाली बराबर में जो सतून है उस
सत्तून से लग कर खड़े हो जाते, और अगर कोई आदमी खड़ा होता तो उसके पीछे जाकर खड़े हो जाते।

एक दिन खुद फराबने लगे कि एक बार मेरे दिल में यह ख्याल पैदा हुआ कि शायद तू बड़ा बांद किस्मत है, इस वजह से जल्दियों के करीब होने की कोशिश नहीं कर रहा है, और ये अल्लाह के बन्दे हैं जो जाली के करीब होने और उस से चिमटने की कोशिश कर रहे हैं, और सरकार दो आलम सल्लल्लाहु अलाह्विन व सल्लम का जितना कुर्ब हासिल हो जाये वह नेमत ही नेमत है, लेकिन मैं क्या करूँ कि मेरा कुदम आगे बढ़ता ही नहीं, जैसे ही मुझे यह ख्याल आया उसी बल्कि मुझे महसूस हुआ कि रोजा—ए—अक्बदास की तरफ से यह आवाज़ आ रही थी कि:

“यह बात लोगों तक पहुंचा दो कि जो शह्स हमारी सुनन्तो पर अमल करता है वह हम से करीब है, चाहे हजारों मील दूर हो, और जो शह्स हमारी सुनन्तो पर अमल पैरा नहीं है, वह हम से दूर है, चाहे वह हमारी जालियों से चिमटा खड़ा हो”।

चूंकि इसमें हुक्का थी भी था कि “लोगों तक यह बात पहुंचा दो” इसलिए मेरे वालद साहिब रह, अपनी तकरीरों और खुदबात में यह बात लोगों के सामने बयान फराबते थे, लेकिन अपना नाम ज़िक्र नहीं करते थे, बल्कि यह फराबते थे कि एक जियारत करने वाले ने जब रोजा—ए—अक्बदास की जियारत की तो उसको रोजा—ए—अक्बदास पर यह आवाज़ सुनाई दी, लेकिन एक बार तन्हाई में बताया कि यह वाकिफ़ मेरे ही साथ पेश आया था।

असल चीज़ सुनन्त की इतिबा है

हकीकत यह है कि असल चीज़ नबी—ए—करीम सल्लल्लाहु अलाह्विन व सल्लम की सुनन्त की इतिबा है, अगर यह हासिल है तो फिर इन्हा अल्लाह नबी—ए—करीम सल्लल्लाहु अलाह्विन व सल्लम का कुर्ब (निकटता) भी हासिल है, खुदा न करे अगर यह चीज़ हासिल
इस्लाही खुलतात
जिल्द(6)

यह तरीका बिद्रबत है

जैसे अज कल दुरुद व सलाम भेजने का मतलब यह हो गया कि दुरुद व सलाम की तुमाशा करो, चुनावे बहुत से आदमी मिलकर खड़े होकर लाड़ज़िल्पीकर पर जोर जोर से तरनुम के साथ पढ़ते हैं।
"अस्सलालाहु वस्सलामु अल्लाह"

और यह समझते हैं कि दुरुद व सलाम का भेजने का यही तरीका है, जुनाऊंचे अगर कोई शख्स तन्हाई के कोने में बैठ कर दुरुद व सलाम पढ़ता है तो उसको दुरुस्त नहीं समझते, और उसकी इतनी कृत्व व इज्जत नहीं करते, हालांकि पूरी सीरते तैयबा में और सहाबा-ए-किराम की ज़िन्दगी में कहीं भी यह मुसलमान तरीका नहीं मिलता, जबकि सहाबा-ए-किराम में से हर शख्स मुज़म्मम दुरुद था और सुबह से लेकर शाम तक नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अल्लाह व सल्लम पर दुरुद शरीफ भेजता था।

इस से भी बड़ी बात यह है कि अगर कोई शख्स इस तरीके में शामिल न हो तो उसको यह ताना दिया जाता है कि इसको हुज़ूर अक़बर सल्लल्लाहु अल्लाह व सल्लम से मुहब्बत नहीं, यह दुरुद व सलाम का इन्कार है, वगैर्ह वगैर्ह। यह ताना देना और ज्यादा बुरी बात है, ख़ुब समझ लीजिये, दुरुद भेजने का कोई तरीका उस तरीक़े से ज्यादा बेहतर नहीं हो सकता जो तरीक़ा नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अल्लाह व सल्लम ने खुद बताया हो। वह तरीक़ा यह है कि एक सहाबी ने सबाल किया कि या रसूलल्लाह! अप पर दुरुद भेजने का क्या तरीक़ा है? हुज़ूर अक़बर सल्लल्लाहु अल्लाह व सल्लम ने जवाब में दुरुदे इज़्जाहीमी पढ़ा और फरमाया कि इस तरीक़े से दुरुद शरीफ़ पढ़ा करो।

नमाज़ में दुरुद शरीफ़ की कैफियत

दूसरी तरफ़ यह देखिये कि अल्लाह तअ़ाला ने दुरुद शरीफ़ को नमाज़ का एक हिस्सा बनाया है, लेकिन नमाज़ के अन्दर सूरा फातिमा: ख़ड़े होकर पढ़ी जाती है, सूरत ख़ड़े होकर पढ़ी जाती है, लेकिन जब दुरुद शरीफ़ के मोक़ा आया तो फरमाया कि तशह़हुद के बाद इत्मीनान के साथ अदब के साथ हुज़ूरे अकबर सल्लल्लाहु
अलौहिं व सल्लम पर दुरुद शरीफ पढ़ो।

बहर हाल, वैसे तो खड़े होकर दुरुद शरीफ पढ़ना, बैठ कर पढ़ना, लेट कर पढ़ना, हर हालत में दुरुद शरीफ पढ़ना जायज है, लेकिन इनमें से किसी एक तरीके को ख़ास करके मुक्तरंग कर लेना और उसके बारे में यह कहना कि यद तरीका दूसरे तरीकों के मुकाबले में ज्यादा बेहतर और अफ़ज़ल है, वह बुनियाद और गलत है।

क्या दुरुद शरीफ के वक्त हुजूरे पाक तश्रीफ लाते हैं?

और यह तरीक़ा उस वक्त और ज्यादा गलत हो गया जब उसके साथ एक ख़रब अकैदा भी लग गया है, वह यह है कि जब हम दुरुद शरीफ पढ़ते हैं तो उस वक्त हुजूरे अक्रदस सल्लल्लाहु अलौहि व सल्लम तश्रीफ लाते हैं, या आपकी रूह मुबारक तश्रीफ लाती है, और जब आप तश्रीफ ला रहे हैं तो ज़ाहिर है कि आपकी ताज़ीम और अदब में खड़े होना चाहिये, इसलिये हम खड़े हो जाते हैं।

बताइये यह बात कि हुजूरे अक्रदस सल्लल्लाहु अलौहि व सल्लम तश्रीफ लाते हैं यह कहां से साबित है? क्या कुरआन की आयत से या हुजूरे अक्रदस सल्लल्लाहु अलौहि व सल्लम की किसी हदीस से, या किसी सहाबी के कोई से साबित है? कहीं भी कोई सुबूत नहीं, यह हदीस जो अभी मैंने आपके सामने पड़ी, इसका गौर से पढ़ लें तो बात समझ में आ जाएगी, वह यह कि:

"अनं त्तहुल्लाह मलाहेक्श फिर फिलह फिर फिलह मन अमेमि अल्लाम".

(गानी) हुज़ूर अबुद्दल्लाह बिन मसूद रजियतल्लाहु अनु हिरवायत करते हैं कि नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलौहि व सल्लम ने फरमाया कि अल्लाह तज़ीले के कुछ फरिश्ते ऐसे हैं जो सारी ज़मीन का वक्कर लगाते रहते हैं, और उनका काम यह है कि जो शक्ति मेरी उम्मत मे से मुझ पर दुरुद व सल्लम मेज़ता है, वे मुझ तक पुहंचाते हैं।
देखिये इस हदीस में यह तो बयान फरमाया कि फरिश्ते मुझ तक दुरूद शरीफ पहुंचाते हैं, लेकिन किसी हदीस में यह नहीं आया कि जहां कहीं दुरूद पढ़ा जा रहा होता है तो मैं वहां पहुंच जाता हूँ।

हदिया देने का अदब

फिर जरा गौर तो करें कि यह दुरूद शरीफ क्या चीज़ है? यह दुरूद शरीफ एक हदिया और तोहफ़ा है, जो नबी—ए—करीम सल्ल्लाल्हु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में पेश किया जा रहा है, और जब किसी बड़े को हदिया दिया जाता है तो क्या उसको यह कहा जाता है कि आप हमारे घर तरीका लायें हम आपकी ख़िदमत में तोहफ़ा पेश करेंगे? या उसके घर भेजा जाता है? जाहिर है कि जिस शख्स के दिल में अपने बड़े की इज़ज़त और पूर्वतना होगा, वह कभी इस बात को गवारा नहीं करेगा कि वह बड़े से यह कहे कि आप हदिया कुबूल करने के लिये मेरे घर आयें, वहां आकर यह हदिया ले लें, बल्कि वह शख्स हमेशा यह चाहेगा कि वह अदब और पूर्वतना के साथ उसकी ख़िदमत में यह हदिया पहुंचा दे। युनाइटेड अल्लाह तख़्वाला ने तो अपने नबी—ए—करीम सल्ल्लाल्हु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में दुरूद शरीफ पहुंचाने के लिये यह तरीका मुक़र्रर फरमाया कि आपका उम्मती जहां कहीं भी है, उसको यह हक हासिल है कि वह सरकारे दो आलम सल्ल्लाल्हु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हदिया पेश करे, और फिर उस दुरूद शरीफ को वसूल करके आप तक पहुंचाने के लिये अल्लाह तख़्वाला ने अपने फरिश्ते मुक़र्रर कर रखे हैं जो नाम लेकर पहुंचाते हैं कि आपके फ़िलां उम्मती ने जो फ़िलां जगह रहता है, आपकी ख़िदमत में यह हदिया भेजा है।

यह ग़लत अक़ीदा है

लेकिन इसके उलट हमने अपनी तरफ़ से यह तरीका मुक़र्रर कर लिया है कि हम दुरूद शरीफ वहां तक नहीं पहुंचायेंगे बल्कि
हज़ूरे अक्दस सल्ल्ल्लाहु अलैहि व सल्लम को हंदिया लेने के लिये ख़ुद हमारी ख़िदमत में आना होगा, जब आप हमारी मस्जिद में तस्रीफ़ लायेंगे तो उस वक़्त हम हंदिया पेश करेंगे, हालांकि यह अदब और ताज़ीम के ख़िलाफ़ है कि अपने बड़े को हंदिया वुसूल करने के लिये घर बुलाया जाये कि यहां आकर मुझ से हंदिया वुसूल कर लो।

इसलिये यह तसबूर कि जब हम यहां बैठ कर हज़ूरे अक्दस सल्ल्ल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में दुरुद भेजते हैं तो हज़ूरे अक्दस सल्ल्ल्लाहु अलैहि व सल्लम उस दुरुद शरीफ़ को लेने के लिये ख़ुद तस्रीफ़ लाते हैं, और चूँकि ख़ुद हमारी महफिल में तस्रीफ़ लाते हैं तो हम उनकी ताज़ीम के लिये ख़द्दे हो जाते हैं, यह तसबूर हज़ूरे अक्दस सल्ल्ल्लाहु अलैहि व सल्लम की अज़ुमते शान के बिल्कुल मुताबिक नहीं, इसलिये दुरुद शरीफ़ भेजने का यह तसबूर और यह तरीक़ा दुरुस्त नहीं, जो तरीक़ा अल्लाह और अल्लाह के रसूल सल्ल्ल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बताया है वह तरीक़ा इख़्तियार करना चाहिए।

आहिस्ता और अदब के साथ दुरुद शरीफ़ पढ़े

dूसरी तरफ़ कुरआन के फरमाया कि जब तुम्हें अल्लाह ताज़ा ले कोई दुआ करनी हो, या अल्लाह का जिक्र करना हो तो जितना आहिस्ता और आज़िज़ी से करोगे उतना ही ज्यादा अफ़ज़ल होगा, चुनावः फरमाया:

"ادعوا ربكم تضرعا وخفية" (الاعرف:५५)

यानी अपने रब को आज़िज़ी और आहिस्ता के साथ पुकारो। अब दुरुद शरीफ़ में तुम अल्लाह ताज़ा को बुलद आवाज़ से पुकार रहे हो, "अल्लाहु-म सल्लिल अला मुहम्मदिन" ऐ अल्लाह! मुहम्मद सल्ल्ल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दुरुद भेजिये, यह तरीक़ा दुरुस्त नहीं, बल्कि जितना आहिस्तगी के साथ अदब के साथ हज़ूरे अक्दस
सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दुरूह भेजेंगे, उतना ही अफजल होगा। इसलिये दुरूह शरीफ़ भेजने का यह तरीका है। लेकिन अगर कोई शख्स अपनी तरफ से कोई तरीका घड़ कर दुरूह शरीफ़ भेजेगा तो वह अल्लाह और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पसन्दीदा तरीका नहीं होगा।

खाली जेहन होकर सोचिये

आज कल फिर्का बनियां हो गयी हैं, और इन फिर्का बनियां की बजह से यह सूरत हाल हो गयी है कि अगर कोई सही बात कहे तो भी कान उसको सुनने के लिये तैयार नहीं होते, यह बात में कोई ऐब जोई के तौर पर नहीं कर रहा हूँ बल्कि दर्दमंदी के साथ, दिल सोजी के साथ हकीकत हाल बयान करने के लिये कह रहा हूँ। इसलिये इस हकीकत को समझने की जरूरत है, सिर्फ ताना दें देना कि फूल फिर्का तो दुरूह शरीफ़ का दक्षिणी है, उनके दिल में तो हुजूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुहब्बत नहीं है। इस तरह ताना देने से बात नहीं बनती, अगर जरा कान खोल कर बात सुनी जाये और यह देखा जाये कि हुजूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मुहब्बत का तकाजा क्या है? तब जाकर हकीकतें हाल सामने आयेगी।

तुम बहरे को नहीं पुकार रहे हो

एक बार कुछ सहाबा--ए--किराम कहीं तरीफ़ लेजा रहे थे तो उन्होंने ने रास्ते में बुलन्द आवाज से जिक्र करना और दुआ करनी शुरू कर दी, हुजूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनको मना करते हुए फरमाया कि आहिस्तगी के साथ दुआ करो। और फरमाया कि:

"अंकम लातेदुन अमल नि गायबा"

यानी तुम बहरे को नहीं पुकार रहे हो, और न ऐसी ज़ात को पुकार रहे हो जो तुम से गायब है, वह तो तुम्हारी हर बात को सुनने
बाला है, यहां तक कि वह तुम्हारे दिल में गुज़रने वाले ख्यालों से भी वाकिफ है। इसलिये उसको पुकारने के लिये आवाज़ प्रथादा बुलन्द करने की जरूरत नहीं, इसलिये उसको आहिस्तगी और अदब के साथ पुकारो। यह तरीक़ा हुज़ूरे अक्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा–ए–किराम को तलक़ीन फ़रमाया। अल्लाह तब़ाला हम सब को इस तरीक़े पर अभ्यास करने की तौफीक अता फ़रमायें, और दुरुद शरीफ़ को उसके सही आदाब के साथ, उसके अहकाम और पसन्दीदा तरीक़ों के साथ अदा करने की तौफीक अता फ़रमायें, आमीन।

"وأخيرًا، دعوانتا أن الحمد لله رب العلمين"
मिलावट

नाप तौल में कमी

और दूसरों के हक अदा करने में कोठाही

अल्लाहُ الٍلّٰهُ عَمّـتّهُ وَتَسَوَّقَتْهُ وَتَسَّتَفَّرَهُ وَتَنَّوَّنَّهُ وَتَتَنَّوَّكُلٌّ عَلَيْهِ وَتَفْغُّدُ

بَالّهُ مِنْ شُرَّوٍرٍ آنفِسًا وَمِنْ سَكِّبَتِهِ أَغْفَطَلاً مَّنْ يَجُتُّ اللّٰهُ قَالَ مَضَلَّ ِّلَمْ وَتَنََّفْسَلا

يُضِلَّةُ فُلَا هَادِئٍ لَّهَ وَتَشْهِدُ أَنَّ لَّا إِلّا الدّٰلِّلٰهُ وَحَدٌّ لَّهَ لَا شّرِيكٌ لَّهُ وَتَشْهِدُ أَنَّ

سُبْحَانَ وَتَسْتَبْنِيَ مُلَّوَّنَا مَحْمُودًا عَبْدًا وَرَسُولًا صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَرَضَيْنَاهُ عَلَيْهِ وَعَلَيْهِ وَ

آصْحَبُهُ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيمًا كَثِيرًا كَثِيرًا. آمَّا بَعْدُ:

فَأُعْرَضَ بِاللّٰهِ مِنْ السَّمَٰطَنِ الزَّجَيمِ وَسَمَّى اللّٰهُ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

وَمَّلِئَ الْمَطْفُوْنَ الْأَنْبِيَّينَ إِذَا أَكْتَفَلَ بِعَلَى النَّاسِ يَسْتَفْنُفُونَ وَإِذَا كَلَّمُوهُمْ أَوْ

وَرَنُوْهُمْ يُحْسَرُونَ أَلَا يُظْنُّنَّ أَنْ هُمْ مُبْغَفُونَ أَلَا يُظْنُّنَّ أَنْ هُمْ مُبْغَفُونَ لَيْتَمُّ عَلَيْهِمْ يُؤْمُّ يَقُومُ

الْمَآمِلِ لِرَّبِّ الْعَالَمِينَۚ (سَرْوَةِ الْمَطْفُوْنِ) ۚ

آمَنَتْ بِاللّٰهِ صِدِّقُ اللّٰهُ مَوْلُوَنَا العَظِيمُ وَمَسَّ قَرْمُهُ النَّبِيُّ الْكَرِيمُ وَنَحْنُ

عَلَى ذَلِكَ مِنْ الشَّاهِدِينَ وَالشَّاكيِّينَ وَالجَمِيلِ الْجَمِيلِ

कम तौलना एक बड़ा गुनाह

बुजुर्गने मोहतरम और बिसरातने अज्जीज़! मैंने आप हज़रात के सामने सूर: मुत्तफ़िफ़ीन की युक्त की आयतें तिलावत कीं, इन आयतों में अल्लाह तख़ाला ने हमें एक बहुत बड़े गुनाह और ना फरमानी की तरफ मुत्तफ़िफ़ीन फरमाया है, वह गुनाह है "कम नापना और कम तौलना" यानी जब कोई चीज़ किसी को बेची जाये तो जितना उस ख़रीदने वाले का हक है, उस से कम तौल कर दे। अर्थ में कम नापने और कम तौलने को "तत्त्फ़िफ़" कहा जाता है, और यह "तत्त्फ़िफ़" सिर्फ तिजात और लेन देन के साथ मख्सूस नहीं, बल्कि "तत्त्फ़िफ़" का मतलब बहुत फैलाव वाला है, वह यह कि दूसरे का
जो भी हक हमारे जिम्मे वाजिब है, उसको अगर उसका हक कम करके देंगे तो यह “तात्पर्य” के अन्दर वाखिल है।

आयतों का तर्जुमा

आयतों का तर्जुमा यह है कि कम नापने और कम तौलने वालों के लिये अफसोस है, (अल्लाह तअला ने “वैल” का लफज़ इस्तेमाल फर्माया, “वैल” के एक मायने तो “अफसोस” के आते हैं, दूसरे मायने इसके हैं “दर्दनाक अज़ाब” इस दूसरे मायने के लिहाज से आयत का तर्जुमा यह होगा कि) उन लोगों पर दर्दनाक अज़ाब है जो दूसरों का हक कम देते हैं और कम नापते और कम तौलते हैं। ये वे लोग हैं जिस दूसरों से अपना हक वुसूल करने का मौका आता है तो उस वक्त अपना हक पूरा पूरा लेते हैं। (उस वक्त तो एक दमड़ी भी छोड़ने को तैयार नहीं होते) लेकिन जब दूसरों को नाप कर या तौल कर देने का मौका आता है तो उस वक्त (दन्दी मार देते हैं) कम कर देते हैं। (जितना हक देना चाहिये था, उतना नहीं देते) (आगे अल्लाह तअला फर्मा रहे हैं कि) “क्या उन लोगों को यह ख्याल नहीं कि एक अज़ीम दिन में दोबारा जिन्दा किये जयेंगे, जिस दिन सारे इन्सान रखबुल आलमीन के सामने पेश होंगे” (और उस वक्त इन्सान को अपने छोटे से छोटे अंश को भी छुपाना मुक्त नहीं होगा, और उस दिन हमारा आमाल नामा हमारे सामने आ जायेगा, तो क्या उन लोगों को यह ख्याल नहीं कि इस वक्त कम नाप कर और कम तौल कर दुनिया के चन्द टकाँ का जो थोड़ा सा फायदा और नफा हासिल कर रहे हैं, यह चन्द टकाँ का फायदा उनके लिये जहन्नम के अज़ाब का सबब बन जायेगा। इसलिये कुरआने करीम ने बार बार कम नापने और कम तौलने की बुराई बयान फर्माई, और इस से बचने की ताक़ीद फर्माई। (और हजरत शुक्रः अल्लाहिसलाम की कौम का वाकिया भी बयान फर्माया)
शुैौँब अल्लहिस्सलाम की कौम का जुर्म

हज़रत शुैौँब अल्लहिस्सलाम जब अपनी कौम की तरफ भेरे गये उस वक़्त उनकी कौम बहुत से गुनाहों और ना फरमानियों में मुख्तार थी, कुफर, शिक्र और बुत परस्ती में तो मुख्तार थी ही इसके अलावा पूरी कौम कम नापने और कम तीलने में मशहूर थी, तिज़ारत करते थे लेकिन उसमें लोगों का हक पूरा नहीं देते थे, दूसरी तरफ़ वे एक इन्सानियत के खिलाफ़ हर्कत यह करते थे कि मुसाफिरों को रास्ते में बराबर करते और उन पर हमला करके लूट लिया करते थे। चुनावें हज़रत शुैौँब अल्लहिस्सलाम ने उनको कुफर, शिक्र और बुत परस्ती से मना किया और तौहीद की दावत दी, और कम नापने, कम तीलने और मुसाफिरों को रास्ते में तरारे और उन पर हमला करने से बचने का हुक्म दिया, लेकिन वह कौम अपने बुरे आमालों में मस्त थी, इसलिये हज़रत शुैौँब अल्लहिस्सलाम की बात मानने के बजाये उनसे यह पूछा कि:

"अस्लोक़ क़ाम़रक़ अन मशरक़ मा तैब़ा मा तैब़ा अलाओ नूफ़ुल फिल अलामा दाना निशाना"
(सूरा मुहम्मद 82)

यानी कि तुम्हारी नमाज इस बात का हुक्म दे रही है कि हम उन माफ़ूदों को छोड़ दें जिनकी हमारे बाप दादा इबादत करते थे, या हम अपने माल में जिस तरह चाहें तसरफ़ करना छोड़ दें।

यह हमारा माल है हम इस्को जिस तरह चाहें हासिल करें, चाहें कम तील कर हासिल करें या कम नाप कर हासिल करें या धोखा देकर हासिल करें। तुम हमें रोकने वाले कौम हो? इन बातों के जवाब में हज़रत शुैौँब अल्लहिस्सलाम उनको मुहब्बत और शाफ़कत के साथ समझाते रहे और अल्लाह के अज़ाब से और आख़िरत के अज़ाब से दरारे रहे, लेकिन ये लोग बाज़ न आये और आख़िर कार उनका वही अन्नाम हुआ जो नबी की बात न मानने वालों का होता है, वह यह कि अल्लाह तबल्ला ने उन पर ऐसा अज़ाब मेज़ा जो शायद किसी
और कौम की तरफ नहीं भेजा गया।

शुश्रृःख अल्लहिस्सलाम की कौम पर अज्जाब

वह अज्जाब उन पर इस तरह आया था कि पहले तीन दिन लगतार पूरी बस्ती में सख्त गर्मी पड़ी, ऐसा मालूम हो रहा था कि आसमान से अंगारे बरस रहे हैं और ज़मीन आग उगल रही है, हवा के बन्द हो जाने और तपशी ने सारी बस्ती वालों को परेशान कर दिया, तीन दिन के बाद बस्ती वालों ने देखा कि अचानक एक बादल का टुकड़ा बस्ती की तरफ आ रहा है और उस बादल के नीचे ठंडी हवायें चल रही हैं, चूंकि बस्ती के लोग तीन दिन से सख्त गर्मी की वजह से बिलबिलाये हुए थे इसलिये सारे बस्ती वाले बहुत इतिमाद के साथ बस्ती छोड़ कर उस बादल के नीचे जमा हो गये, ताकि यहां ठंडी हवाओं का लुप्त उठायें। लेकिन अल्लाह तबाला उन लोगों को बादल के नीचे इसलिये जमा करना चाहते थे ताकि सब पर एक साथ अज्जाब नाज़िल कर दिया जाये। चुनावे जब वे सब वहां जमा हो गये तो वही बादल जिसमें से ठंडी हवायें आ रही थीं उसमें से आग के अंगारे बरसाना शुरू हो गये और सारी कौम उन अंगारों का निशाना बन कर झुलस कर ख़त्म हो गयी। इसी वाकिदे की तरफ कुरआन करीम ने इन अलफाज़ से इशारा फर्माया कि:

"फक्तबो फाचखियाँ युद्ध यह तुल्य " (सौरा अल्लाह,१८२,१८३)

तर्जुमा: यानी उन्हें ने हज़रत शुश्रृःख अल्लहिस्सलाम को झूलताया, उसके नतीजे में उनको सायबान वाले दिन के अज्जाब ने पकड़ लिया।

एक और जगह फर्माया:

"पुर्सः वे मसाकन में तत्काल है तभा काल का" (सौरा अल्लाह,८५)

"यानी ये उनकी बस्तियाँ देखो जो उनकी हलाकत के बाद आबाद भी नहीं हो सकीं मगर बहुत कम, हम ही उनको सारे माल व
दोलत और जायदाद के वारिस बन गये।

ये तो यह समझ रहे थे कि कम नाप कर, कम तौल कर, मिलावट करके, धोखा देकर हम अपने माल व दोलत में इजाफा करेंगे, लेकिन वहाँ सारी दोलत धरी की धरी रह गयी।

ये आग के अंगारे हैं

अगर तुमने डंडी मार कर एक तौला या दो तौला, एक छटांक या दो छटांक माल ख़रीदार को कम दे दिया और चन्द पैसे कमा लिये, देखने में तो ये पैसा है लेकिन हकीकत में आग के अंगारे हैं, जिनको तुम अपने पेट में ढाल रहे हो, हराम माल और हराम खाने के बारे में कुरआन करीम में अल्लाह तबाह तबाहा ने फरमाया:

"अनं जिन्न याक़लून आंवल यात्ती त़ील्लयं निम्न रियान नारः\n
(सौरा नसे: 10)

यानी जो लोग यतीमों का माल जुल्म करके खाते हैं वे हकीकत में अपने पेट में आग भर रहे हैं, जो लुक़मे हलक से नीचे उतर रहे हैं वे हकीकत में आग के अंगारे हैं, अगरचे देखने में यह रुपया पैसा और माल व दोलत नज़र आ रहा है। क्योंकि अल्लाह के हुक्म की ख़िलाफ़ वर्जी (उल्लंघन) करके और अल्लाह की मासियत और ना फरमानी दरकर ये पैसे हासिल किये गये हैं। ये पैसे और यह माल व दोलत दुनिया में भी तबाही का सबब है और आख़िरत में भी तबाही का जरिया है।

उज्ज्वल कम देना गुनाह है

और यह कम नापना और कम तौलना सिर्फ़ तिज़ारत के साथ ही ख़रास नहीं है बिलकुल कम नापना और कम तौलना अपने अन्दर एक फैला हुआ मपहम रखता है। चुनावे हज़रत अब्बुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्तु जो इमामुल मुफ़्तियसिरीन हैं, सूर: मुतफ़िफ़फ़ीन की शुरु की आयतों की तफ़सीर करते हुए फरमाते हैं:
"शहदा उद्यान तो मैं दिन सत्ता अज्ञात उन लोगों को भी होगा जो अपनी नमाज, ज़कात, रोज़ा और दूसरी इबादतों में कमी करते हैं।"

इस से मालूम हुआ कि इबादतों में कोताही करना, उनको पूरे आदाब के साथ अदा न करना भी तत्त्वात्मक अन्दर दाखिल है।

मज़दूर को मज़दूरी फॉर्म दे दो

या जैसे एक आकर मज़दूर से पूरा पूरा काम लेता है, उसको जरा सी भी सहूलत देने को तैयार नहीं है, लेकिन नौकरी देने के वक्त उसकी जान निकलती है, और पूरी नौकरी नहीं देता, या सही वक्त पर नहीं देता, टाल मटेल करता है, यह भी ना जायज और हराम है, और तत्त्वात्मक में दाखिल है। हुज़ूरे सब्बस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इरशाद है:

"اعطوا الاجير اجره قبل ان يجف عرته." (ابن ماجه شريف)

"यानी मज़दूर को उसकी मज़दूरी पसीना खुशक होने से पहले अदा कर दो।" इसलिये कि जब तुम ने उस से मज़दूरी कराली, काम ले लिया तो अब मज़दूरी देने में ताजीर (यानी देरी) करना जायज नहीं।

नौकर को खाना कैसा दिया जाये?

हकीमुल उम्मत हज़रत मौलाना अशरफ अली साहिब थानवी रह. फरमाते हैं कि आपने एक नौकर रखा, और नौकर से यह तय किया कि तुम्हें महान इतनी तत्त्वात्मिक दी जायेंगी और रोज़ा दो वक्त का खाना दिया जायेगा, लेकिन जब खाने का वक्त आया तो खुद तो खूब पुलाव जूर्दे उड़ाये, आला दर्ज का खाना खाया और बचा कुछा खाना जिसको एक माकूल और शरीफ आदमी पसन्द न करे वह नौकर के हवाले कर दिया, तो यह भी "तत्त्वात्मिक" है, इसलिये कि
तुम ने उसके साथ दो वक्त का खाना तै कर लिया, तो इसका मतलब यह है कि तुम उसको इतनी भिड़दार यानी मात्रा में ऐसा खाना दोगे जो एक माकूल आदमी पेंट भर कर खा सके, इसलिये अब उसको बचा कुछ खाना देना उसकी हक़ तल्की और उसके साथ ना इन्साफी है, इसलिये यह भी “तत्तुफ़ीफ़” के अन्दर दाखिल होगा।

नौकरी के वक़्तों में डंडी मारना

या जैसे एक शख्स किसी महक्मे में, किसी दफ्तर में आठ घन्टे का मुलाज़िम है, तो गोया कि उसने ये आठ घन्टे उस महक्मे के हाथ फरोख्त कर दिये हैं, और यह मुआहदा कर लिया है कि मैं आठ घन्टे अपने पास काम करूँगा और उसके बदले उसको उज़्ज़त और तन्नाउँ मिलेगी, अब अगर वह उज़्ज़त तो पूरी लेता है लेकिन उस आठ घन्टे की डूंगरी में कभी कर लेता है और उसमें से कुछ वक़्त अपने जाती कामों में खर्च कर लेता है तो उसका यह अमल भी “तत्तुफ़ीफ़” के अन्दर दाखिल है, हराम है, बड़ा गुनाह है। यह भी इसी तरह गुनाहगार है जिस तरह कम नापने और कम तौलने वाला गुनाहगार होता है। इसलिये कि उसने आठ घन्टे के बजाय सात घन्टे काम किया तो एक घन्टे की डूंगरी मार दी, गोया कि उज़्ज़त के वक़्त अपना उज़्ज़त का हक़ तो पूरा ले रहा है और जब दूसरों के हक़ देने का वक़्त आया तो कम दे रहा है। इसलिये तन्नाउँ का यह हिस्सा हराम होगा जो उस वक़्त के बदले में होगा जो उसने अपने जाती कामों में खर्च किया।

एक एक मिनट का हिसाब होगा

किसी जमाने में तो दफ्तरों में जाती काम चोरी छुपे हुआ करते थे मगर आज कल दफ्तरों का यह हाल है कि जाती काम चोरी छुपे करने की कोई जरूरत नहीं बल्कि खुल्लम खुल्ला, ऐलानिया, छंदे की चोट पर किया जाता है। अपने मुतालबे पेश करने के लिये हर वक़्त
दारूल उलूम देवबन्द के उस्ताज़ हजरात

आप हज़रात ने दारूल उलूम देवबन्द का नाम सुना होगा, इस आख़िरी दौर में अल्लाह ताज़ा ने इस इदारे को इस उम्मत के लिये रहमत बना दिया, और यहाँ ऐसे लोग पैदा हुए जिन्होंने सहाबा-ए-किराम की यादें ताज़ा कर दी, मैंने अपने बालिद माजिद हज़रत मुक़ती मुहम्मद शाफी साहिब रह. से सुना कि दारूल उलूम देवबन्द के शुरू के दौर में पढ़ने वालों यह मामूल था कि दारूल उलूम के वक़्त में अगर कोई मेहमान मिलने के लिये आ जाता तो जिस वक़्त वह मेहमान आता उस वक़्त घड़ी देख कर वक़्त नोट कर लेते, और यह नोट कर लेते कि यह मेहमान मदरसे के औकात में से इतने वक़्त मेरे पास रहा, पूरा महिना इस तरह करते और जब महिना ख़त्म हो जाता तो उस्ताज़ एक दरख़वास्त पेश करते कि चूंकि फ़लां फ़लां दिनों में इतनी देर तक मैं मेहमान के साथ ग़रीब रहा, उस वक़्त को दारूल उलूम के काम में ख़र्च नहीं कर सका, इसलिये मेरे तनख़्वाह से इतने वक़्त की तनख़्वाह काट ली जायें।
तन्ह्वाह हराम होगी

आज तन्ह्वाह बढ़ाने की दर्शकास्त देने के बारे में तो आप रोजाना सुनते रहते हैं, लेकिन यह कहीं सुनने में नहीं आता कि किसी ने यह दर्शकास्त दी हो कि मैंने दफ्तरी समय में से इतना वक्त जाती काम में खर्च किया था इसलिये मेरी इतनी तन्ह्वाह काट ली जाये। यह अमल वही शाख्स कर सकता है जिसको अल्लाह तालाला के सामने पेश होने की फ़िक्र हो। आज हर शाख्स अपने गरेबान में मुंह खाल कर देखे, मज़दूरी करने वाले, सर्विस करने वाले लोग कितना वक्त दियानतदर्शी के साथ अपनी डूँगी पर खर्च कर रहे हैं? आज हर जगह फसाद बर्पा है, अल्लाह की मक्तूब परेशान है और दफ्तर के बाहर धूप में खड़ी है, और साहब बहादुर अपने ऐरें कन्डीशन्ड कमरे में मेहमानों के साथ गाप शाप में मस्सूफ़ हैं। चाहे पी जा रही है, नाश्ता हो रहा है। इस अमल के इश्कियर करने में एक तरफ़ तो तन्ह्वाह हराम हो रही है, और दूसरी तरफ़ अल्लाह की मक्तूब को परेशान करने का गुनाह अलग हो रहा है।

सरकारी दफ्तरों का हाल

एक सरकारी महक्मे के जिम्मेदार अफ़सर ने मुझे बताया कि मेरे जिम्मे यह डूँगी है कि में मुलाजिमों की हाज़री लगाऊँ। एक हफ्ते के बाद हफ्ते भर का चिड़ा तैयार करके ऊपर वाले अफ़सर को पेश करता हूँ, तकि उसके मुताबिक तन्ह्वाह के तैयार जावह, और मेरे महक्मे में नौजवानों की एक बड़ी तातियाद ऐसी है जो मार पीट वाले नौजवान हैं, उनका हाल यह है जिनकी अवधार तो दफ्तर में आते ही नहीं हैं, और अगर कभी आते हीं तो एक दो घटने के लिये आते हैं और यहां अधीक भी यह करते हैं कि दोस्तों से मुलाकात करते हैं, कैल्स्टीन में बैठ कर गाप शाप करते हैं और मुशिकल से आधा घनटा दफ्तरी काम करते हैं और चल जाते हैं। मैंने हाज़री के रजिस्टर में लिख दिया कि ये हाजिर नहीं हुए तो वे लोग पिस्तौल और रिवालवर
लेकर मुझे मारने के लिये आ गये और कहा कि हमारी हाजरी कण्ण
हाँ लगाई? फौरन हमारी हाजरी लगाओ।

अब मुझे बतायें कि मैं क्या करूं? अगर हाजरी लगाता हूं तो
झूठ होता है, और अगर नहीं लगाता हूं तो उन लोगों के गुस्से और
नाराज़ी का निशाना बनता हूं मैं क्या करूं? आज हमारे दफ्तरों का
यह हाल है।

अल्लाह तअःला के हुकूक में कोशाही

और सब से बड़ा हक़ अल्लाह तअःला का है, उस हक़ की
अदायगी में कमी करना भी कम नापने और कम तौलने में दाख़िल है,
जैसे नमाज अल्लाह तअःला का हक़ है, और नमाज़ का तरीक़ा बता
दिया गया कि इस तरह खड़े हो, इस तरह रुकूँ करो, इस तरह
सज़दा करो, इस तरह इत्तीफान के साथ सारे अर्कां अदा करो, अब
आपने जल्दी जल्दी बग़ैर इत्तीफान के एक मिनट के अन्दर नमाज़
पढ़ ली। न सज़दा इत्तीफान से किया, न रुकूँ इत्तीफान से किया,
तो आपने अल्लाह तअःला के हक़ में कोशाही कर दी, बुनांचे हदीस
शरीफ में आता है कि एक साहिब ने जल्दी जल्दी नमाज़ अदा कर
ली, न रुकूँ इत्तीफान से किया, न सज़दा इत्तीफान से किया, तो एक
सहाबी ने उनकी नमाज़ देख कर फरसाया कि:

"लक्द طلفत।"

यानी तुमने नमाज़ के अन्दर तत्प्रीत की, यानी अल्लाह तअःला
का पूरा हक़ अदा नहीं किया।

याद रखिये, किसी का भी हक़ हो, चाहे अल्लाह तअःला का हक़
हो या बन्दे का हक़ हो, उसमें जब कमी और कोशाही की जायेगी तो
यह भी नाप तौल में कमी के हुकम में दाख़िल होगी, और उस पर वे
सारी बड़ीदें सादिक आयेगी जो कुरआन करीम ने नाप तौल की कमी
पर बयान की हैं।
मिलावट करना हक़ तल्की है

इसी तरह "तल्की" के विस्तृत महत्व में यह बात भी दाखिल है कि जो चीज़ फरोख़ख़ की वह ख़ालिस फरोख़ख़ नहीं की बल्कि उसके अन्दर मिलावट कर दी, यह मिलावट करना कम नापने और कम तौलने में इस लिहाज से दाखिल है कि जैसे आपने एक किलो आटा फरोख़ख़ किया लेखिक उस एक किलो आटे में ख़ालिस आटा तो आधा किलो है और आधा किलो कोई और चीज़ मिला दी है। इस मिलावट का नतीजा यह हुआ कि ख़रीदार का जो हक़ था कि उसको एक किलो आटा मिलता वह हक़ उसको पूरा नहीं मिला, इसलिये यह भी हक़ तल्की में दाखिल है।

अगर थोक विक्रेता मिलावट करे?

बाज़ लोग यह इश्काल पेश करते हैं कि हम छोटे दुकानदार हैं। हमारे पास थोक विक्रेताओं की तरफ़ से जैसा माल आता है, वह हम आगे फरोख़ख़ कर देते हैं, इसलिये हमें मजबूत वह चीज़ वैसे ही आगे फरोख़ख़ करनी पड़ती है। इस इश्काल का जवाब यह है कि अगर एक शख़्स खुद माल नहीं बनाता और न मिलावट करता है बल्कि दूसरे से माल लेकर आगे फरोख़ख़ करता है तो इस सूत्र में ख़रीदार के सामने यह बात जाँच है कि में इस बात का जिम्मेदार नहीं कि इसमें कितनी असलियत है और कितनी मिलावट है, अलवता मेरी मालूमत के मुताबिक इतनी असलियत है और इतनी मिलावट है।

ख़रीदार के सामने वज़्ज़हत कर दे

लेकिन हमारे बाज़ारों में बाज़ चीज़ें ऐसी हैं जो असली और ख़ालिस मिलती ही नहीं हैं बल्कि जहां से भी लोग वह मिलावट शुदा ही मिलती, और सब लोगों को यह बात मालूम भी है कि यह चीज़ असली नहीं है बल्कि इसमें मिलावट है। ऐसी सूत्र में वह तालिका जो उस चीज़ को दूसरे से ख़रीद कर लाया है, उसके जिस्मे यह
جوہری نہیں ہے کہ وہ حرا حرا شکر کو عس کی جج کے بارے میں بتاتے،
یسائے کہ حرا شکر کو عسکنے بارے میں مالیم ہے کہ وہ خالیس
نہیں ہے۔ لہکن اگر وہ خواب ہو کہ خریدنے والہا عس کی جج کی
ہکیکت سے بے خورہ ہے تو اس سوہت میں عسکنے باتنا چاہہیے کہ
یہ جج خالیس نہیں ہے بلکہ اس میں میلائیہ ہے۔

اپ کے بارے میں پرائیک کو بنا دے

یسی ترہ اگر بچے جاانے والے کامآن میں کوئی اپ بھی، وہ اپ
خریدار کو بنا دننا چاہیے۔ تاکہ اگر وہ شکر عس اپ کے
ساتھ کوئی جج خریدنے والہا باتہ ہے تا خریدنے کے
نمو-ا-کریم سالللاہو علہی و سالم نے عرائش فرمایا:

"من باع عیب لم یسیبہ لم یزلف فی وقت اللہ، ولم تزل الملاءکة تعلنه"

(ابن ماجہ شریف)

"یہانی جی شکر اہدبار جج فورنکار کرتے۔ اور عس اپ کے
بارے میں وہ خریدار کو ن بتاتے کہ عسکنے اندر اس خرائی
ہے یہ خریدنے کا اس شکر مسالسال علیاہ کے گجر میں رہنگا اور فرسحتے اسے
آدمی پر مسالسال لانگ مہچتے رہتے ہیں"۔

دوچا لنے والہا حم میں سے نہیں

ایک مرتباہ ہوچرے اکسس سالللاہو علیاءہ و سالم بانِ یار
تشریف لے گے، وہاں آپنے دیکھ کے یہ اک شکر گھوڑ ہیں بچ رہا ہے، آپ
عسکنے کریب تشریف لے گے اور گھوڑ کی دیڑی میں اپنی ہاصل ہاصل
کر عسکنے ہپر نیچہ کیا تو یہ نجار آتا ہے کہ ہپر تو ہیچ
گھوڑ ہے اور نیچہ بارش اور پانی کے اندر گیلاکا ہیکر خرائی
ہو جانے والہ گھوڑ ہے، اب دیکھنے والہا جب اضافہ سے دیکھتا ہے تو
عسکنے یہ نجار آتا ہے کہ گھوڑ ہیکر ہیچ ہے۔ ہوچرے اکسس
سالللاہو علیاءہ و سالم نے عس شکر سے فرمایا کہ تعمید یہ
خرائی والہ گھوڑ اضافہ یکی نہیں رکھتا، تاکہ خریدنے کو مالیم ہو
جاکے کہ یہ گھوڑ اسے ہے، وہ لینا چاہتا ہو ہے لے، ن لینا چاہتا ہو
छोड़ दे। उस शक्ति ने जवाब दिया कि या रसूलल्लाह, बारिश की वजह से कुछ गेहूँ खराब हो गया थी, इसलिए मैंने उसको नीचे कर दिया, आपने फर्माया कि ऐसा न करो बल्कि उसको ऊपर कर दो। और फिर आपने इराशाद फर्माया कि:

"में गश फ़्लिस मना।" (मसलम शरीफ)

यानी जो शक्ति धोखा दे वह हम में से नहीं, यानी जो शक्ति मिलावट करके धोखा दे कि बजाहिर तो खालिस चीज़ बेच रहा है लकिन हकीकत में उसमें कोई दूसरी चीज़ मिला दी गयी है, या बजाहिर तो पूरी चीज़ दे रहा है लकिन हकीकत में वह उस से कम दे रहा है, तो यह गश और धोखा है, और जो शक्ति यह काम करे वह हम में से नहीं है, यानी मुसलमानों में से नहीं है, देखिये ऐसे शक्ति के बारे में हुजूर अज़द सल्ल्लाहु अल्लाह व सल्लम कितनी सज़ुत बात फर्माये रहे हैं, इसलिए जो चीज़ बेच रहे हो उसकी हकीकत ख़रीदार को बता दो कि इसकी यह हकीकत है, लकिन ख़रीदार को धोखे और अंधेरे में रखना मुनाफ़क़ूत है, मुसलमान और मोमिन का शोषा नहीं है।

इमाम अबू हनीफ़ा रह. की दियान्तदारी

हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा रह. जिनके हम और आप सब तक्षील करने वाले हैं, बहुत बड़े ताजिर थे, कपड़े की तिज़ारत करते थे लेकिन बड़े से बड़े नफ़े को इस हदीस पर अमल करते हुए कुर्बान कर दिया करते थे। चुनाव़े एक मर्बा उनके पास कपड़े का एक थान आया जिसमें कोई ऐंब था, चुनाव़े आपने अपने मुलाजिमों को जो दुकान पर काम करते थे, तो दिया कि यह थान फरोख़ करते हुए ग्राहक का बता दिया जाये कि इसके अन्दर यह ऐंब है। चंद्र दिन के बाद एक मुलाजिम ने वह थान फरोख़ कर दिया और ऐंब बताना भूल गया। जब इमाम साहिब ने पुछा कि ऐंबदार थान क्या हुआ? उस मुलाजिम ने बताया कि हज़रत मैंने उसको फरोख़ कर
दिया। अब अगर कोई और मालिक होता तो वह मुलाज़िम को शाबाश देता कि तुमने ऐबदार थान फरोख्त कर दिया, गर इमाम साहिब ने पूछा कि क्या तुमने उसको ऐब बता दिया था? मुलाज़िम ने जवाब दिया कि मैं ऐब बताना तो भूल गया, आपने पूरी शहर के अन्दर उस ग्राहक की तलाश शुरू कर दी जो वह ऐबदार थान खरीद कर ले गया था। काफ़ी तलाश के बाद वह ग्राहक मिल गया तो आपने उसको बताया कि जो थान आप मेरी दुकान से खरीद कर लाये हैं उसमें फलां ऐब है, इसलिये आप वह थान मुक्त वापस कर दे और अगर उसी ऐब के साथ रखना चाहें तो आपकी खुशी।

आज हमारा हाल

हम लोगों का यह हाल हो गया है कि न सिर्फ यह कि ऐब नहीं बताते, किन्तु जानते हैं कि वह ऐबदार सामान है, इसमें फलां खराब है, इसके बावजूद कस्में खा खाकर यह यकीन दिलाते हैं कि यह बहुत अच्छी चीज़ है, आला दर्जे की है, इसको खरीद लें।

हमारे ऊपर यह जो अल्लाह तआला का ग़ज़ब नाज़िल हो, रहा है कि पूरा समाज अज़ाब में मुख्तार है। हर शख्स बद अम्नी और वे चैनी और परिवारी में हैं, किसी शख्स की भी जान, माल, आबर गहरू नहीं है, यह अज़ाब हमारे इन्हीं गुनाहों का नतीजा और वहाल है कि हमने मुहम्मद रसूल्लाह अल्लाह सल्ल्लाल्लाहु अल्लाहिद व सल्लम के बताये हुए तरीकों को छोड़ दिया। सामान फरोख्त करते वक़्त उसकी हकीकत लोगों के सामने वापस नहीं करते, मिलावट, धोखा, फरेब आम हो चुका है।

बीवी के इस्कूस में कोताही गुनाह है

इसी तरह आज शीर्ष बीवी से तो सारे इस्कूस हासिल करने को तैयार है। वह हर बात में मेरी हलाल भी करे, खाना भी पकाये, घर का इन्तज़ाम भी करे, बच्चों की परवारिस भी करे, उनकी तरीकत भी करे और मेरे माथे पर शिकन भी न आने दे और आख के इस्लाम की
इस्लामी खुलासा

[Page 119]

पुस्तक के रूप में रहें। ये सारे हुकूक कूल करने को शौर्य तैयार है, लेकिन जब बीवी के हुकूक अदा करने का वक्त आये उस वक्त ढाँची मार जाये, और उनको अदा न करे, हालांकि कुरआने करीम में अल्लाह ताज्जाला ने शौर्यों को हुक्म फर्मा दिया है कि:

"० उआश्रोहन् बालमुखः " (सूरा अल्लामा: 119) "

"यानी बीबियों के साथ नेक बताव करो"

और हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अल्लैहि व सल्लम ने इशाद फ़र्माया:

"खियारकम खियारकम लन्सालू हम "

(तरमी शरीफ)

"यानी तुम में से भेदतारीन शख्स वह है जो अपनी औरतों के हक़ में भेदत हो"

एक दूसरी हदीस में हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अल्लैहि व सल्लम ने फ़र्माया:

"अस्तोच्च बाल्नसाया, खिया" 

(बख़्रा शरीफ)

"यानी औरतों के हक़ में भलाई करने की नसीहत करने की नसीहत को कुबूल कर लो" यानी उनके साथ भलाई का मामला करो।

अल्लाह और अल्लाह के रसूल तो उनके हुकूक की अदाएँ की हिंसनेमाल फर्मा रहे हैं, लेकिन हमारा यह हाल है कि हम अपनी औरतों के पूरे हुकूक अदा करने को तैयार नहीं, यह सब कम नापने और कम तौलने के अन्दर दाख़िल है और शर्दूल हराम है।

मेरह माफ़ कराना हक़ तल्क़ी है

सारी जिन्दगी में बेचारी औरत का एक ही माली हक़ शौर्य के जिम्मे बाज़ीब होता है, वह है मेरह, वह भी शौर्य अदा नहीं करता। होता यह है कि सारी जिन्दगी तो मेरह अदा नहीं किया, जब मरने का वक़्त आया तो मौत के बिसर्त पर पड़े हैं, दुनिया से जाने वाले हैं, रुँड़ती का मन्ज़र है, उस वक़्त बीवी से कहते हैं कि मेरह माफ़
कर दो, अब इस मौके पर बीवी क्या करें? क्या रुखसता होने वाले शोहर से यह कह दे कि मैं माफ नहीं करती, चुनावे उसको मेहरा माफ करना पड़ता है। सारी उसे उस से फायदा उठाया, सारी उसे उस से हुकूक तलब किये लेकिन उसका हक्क देने का वक़्त आया तो उसमें झंडी मार गये।

ख़ार्च में कमी हक्क तलफ़ी है

यह तो मेहरा की बात थी, ख़ार्च के अन्दर शरीर का यह हुक्म है कि उसको इतना ख़ार्च दिया जाये कि वह आजादी और इत्तफाम के साथ गुज़ारा कर सके, अगर उसमें कमी करेगा तो यह भी कम नापने और कम तौलने के अन्दर दाख़िल है और ह्रस्व है। ख़ुलासा यह कि जिस किसी का कोई हक्क दूसरे के जिम्मे वाजिब हो, वह उसको पूरा अदा करे, उसमें कमी न करे, वर्ना उस अज़ाब का हकदार होगा जिस अज़ाब की वजह अल्लाह त़ालाला ने इन आयतों में बयान फर्माई है।

यह हमारे गुनाहों का वबाल है

हम लोगों का यह हाल है कि जब हम मजलिस जमा कर बैठते हैं तो हालात पर तब्सरा करते हैं कि हालात बहुत ख़राब हो रहे हैं, बद अम्नी है, वे चैनी है, डाके पड़ रहे हैं, जान महफूज़ नहीं, आर्थिक बदहाली के अन्दर गुलाल हैं, ये सब तब्सरे होते हैं लेकिन कोई शख़्स इन तमाम परेशानियों का हल तलाश करके इसका इलाज करने को तैयार नहीं होता, मजलिस के बाद दामन झाड़ कर उठ जाते हैं।

अरे, यह देखो कि जो कुछ हो रहा है, वह ख़ुद से नहीं हो रहा है, बल्कि कोई करने वाला कर रहा है। इस कायनात का कोई जरूर और कोई पता अल्लाह त़ालाला की मर्जी के बगैर हरक्त नहीं कर सकता। इसलिये अगर बद अम्नी और बैचैनी आ रही है तो उसकी मर्जी से आ रही है। अगर सियासी संकट पैदा हो रहा है तो वह भी
अल्लाह की मर्जी से हो रहा है। अगर चौरियां और डॉक्टरां हो रही हैं तो उसी की मर्जी से हो रही हैं। यह सब कुछ क्यों हो रहा है? यह हकीकत में अल्लाह तजाला की तरफ से अजाब है। कुरआने करीम का इर्दगरद है:

"मायासबकम मन मसीहा फिसमू सियदिक कॉन उएफुर कॉन कॉफार" ।
(सूरा शुरौमः:२)

"यानी जो कुछ तुम्हें बुराई या मुसीबत पहुँच रही है, वह सब तुम्हारे हाथों के कर्म से हो जाओ, और बहुत से गुनाह तो अल्लाह तजाला माफ़ नहीं देते हैं" । दूसरी जगह कुरआने करीम का इर्दगरद है:

"लो याद जातो लाललाल नास बिमबो मार टून क्यों हादी हानमा।"
(सूरा गँगावः:४५)

"यानी अगर अल्लाह तजाला तुम्हारे हर गुनाह पर पकड़ करने पर आ जायें तो रूप जमीन पर कोई चलने वाला जानवर बाकी न रहे, सब हलक व बर्बाद हो जायें, लेकिन अल्लाह तजाला अपनी हिक्मत से और अपनी रहस्य से बहुत से गुनाह माफ़ करते रहते हैं" । लेकिन जब तुम हड़ से बड़ा जाते हो, उस वक्त इस दुनिया के अंदर भी तुम पर अजाब नाज़िल किये जाते हैं, ताकि तुम सभाल जाओ, अगर अब भी सभाल गये तो तुम्हारी बाकी जिन्दगी भी दुरस्त हो जायेगी और आखिरत भी दुरस्त हो जायेगी, लेकिन अगर अब भी न सभाल तो याद रखो, दुनिया के अंदर तो तुम पर अजाब आ ही रहा है, अल्लाह बचाये, आखिरत का अजाब इस से भी ज्यादा सख्त है।

हराम पैसों का नतिजा

आज हर शक्स इस फ़िक्र में है कि किसी तरह दो पैसे जल्दी से हाथ आ जायें, कल के बजाय आज ही मिल जायें, चाहे हलाल तरीक़े से मिलें या हराम तरीक़े से मिलें, धोखा देकर मिलें या फरेब
देकर मिलें या दूसरे की जेब काट कर मिले, लेकिन मिल जायें। यदि
खो, इस फिक्र के नतीजे में तुम्हें दो पैसे मिल जायेंगे, लेकिन यह
dो पैसे न जाने कितनी बड़ी रकम तुम्हारी जेब से निकाल कर ले
जायेंगे। यह दो पैसे दुनिया में तुम्हें कभी अन्य न सुकून नहीं दें
सकते, यह दो पैसे तुम्हें चैन की जिन्दगी नहीं दे सकते। इसलिये
कि यह दो पैसे तुमने हराम तरीके से और दूसरे की जेब पर ढाका
ढाल कर, दसुरे इतना की मजबूरी से फायदा उठा कर हासिल किये
हैं। इसलिये गिनती में तो यह पैसे शायद इजाफा कर दें, लेकिन तुम्हें
चैन लेने नहीं देंगे और कोई दूसरा शख्स तुम्हारी जेब पर ढाका
ढाल देगा और उस से ज्यादा निकाल कर ले जायेगा। आज बाजारों
में यही हो रहा है कि आपने मिलाया करके, धोखा देकर दूसरे कमाये,
दूसरी तरफ दो हथियार बंद अफ़साद आपकी दुकान में दाखिल हुए
और अर्थियों के जोर पर आपका सारा असाला लूट कर ले गये।
अब बताइये, जो पैसे आपने हराम तरीकों से कमाये थे वे फायदे
मन्द साबित हुए या सुकून देख साबित हुए? लेकिन अगर तुम हराम
तरीका इस्तिमाल न करते और अल्लाह तबाला के साथ मामला
दुरुस्त रखते तो इस सूरत में यह पैसे अगरचे गिनती में कुछ कम
होते, लेकिन तुम्हारे लिये आराम और सुकून और चैन का जरिया
बनते।

अज़ाब का सबब गुनाह है

बाज़ लोग यह कहते हैं कि हमने तो बहुत अमानत और दियानत
के साथ पैसे कमाये थे, इसके बावजूद हमारी दुकान पर भी ढाकू आ
गये और लूट कर ले गये। बात यह है कि ज्यां गौर करो कि अगरचे
तुमने अमानत और दियानत से कमाये थे लेकिन यकीन करो कि
कोई न कोई गुनाह ज्यादा होआ होगा, इसलिये कि अल्लाह तबाला
यही फरमा रहें हैं कि जो कुछ ढूँढ़े नसीबत पहुँच रही है वह तुम्हारे
हाथों के करतूत की वजह से पहुँच रही है, हो सकता है कि तुमने
कोई गुनाह किया हो लेकिन उसका ध्यान और ध्यान नहीं किया, हो सकता है कि तुमने ज़कात पूरी न अदा की हो, या ज़कात का हिसाब सही न किया हो या और कोई गुनाह किया हो, उसके नतीजे में यह अज़ाब तुम पर आया हो।

यह अज़ाब सब को अपनी लपेट में ले लेगा

दूसरे यह कि जब कोई गुनाह समाज में फैल जाता है, और उस गुनाह से कोई रोकने वाला भी नहीं होता तो उस वक़्त जब अल्लाह तबाहा का कौई अज़ाब आता है तो अज़ाब यह नहीं देखता कि किस ने उस गुनाह को किया था और किस ने नहीं किया था, बल्कि वह अज़ाब आम होता है, तबथा लोग उसकी लपेट में आ जाते हैं, तुरान्म चुनावे कुरआने करीम का इरशाद है:

"रात्रि फ़तेरतो न तस्मिन दिनों उल्लम मुकमम न होगी" (सूरत अनन्त: 25)

यानी उस अज़ाब से डरे जो सिर्फ जालिमों ही को अपनी लपेट में नहीं लेगा, बल्कि जो लोग ज़ुलम से अलग थे वे भी उस अज़ाब में पड़े जाएंगे, इसलिये कि अगर ये लोग खुद तो जालिम नहीं थे लेकिन कभी जालिम का हाथ पकड़ने की कोशिश नहीं की, कभी ज़ुलम को मिटाने की कोशिश नहीं की, उस ज़ुलम के खिलाफ़ उनकी पेशानी पर वल नहीं आया, इसलिये गोया कि वे भी उस ज़ुलम में शामिल थे। इसलिये यह कहना कि हम तो बड़ी अमानत दारी और दियानत दारी के साथ तिज़ारत कर रहे थे इसके बावजूद हमारे यहां चोटी हो गयी और डाका पड़ गया, तो इतनी बात कह देना काफ़ी नहीं, इसलिये कि उस अमानत और दियानत को दूसरों तक पहुंचाने का काम तुमने अन्जाम नहीं दिया, उसको छोड़ दिया, इसलिये इस अज़ाब में तुम भी गिरफ्तार हो गए।

गैर मुस्लिमों की तरक़्क़ी का सबब

एक जुमान वह था जब मुसलमान का यह शोषा और तरीक़ा था कि तिज़ारत बिल्कुल सफ़ सुथरी हो, उसमें दियानत और अमानत
हो, धोखा और फरेब न हो। आज मुसलमानों ने तो इन चीजों को छोड़ दिया और अंग्रेजों और अमेरिकियों और दूसरी पश्चिमी कौनों ने इन चीजों को अपनी तिजारत में इत्तियार कर लिया। इसका नतीजा यह है कि उनकी तिजारत को तरक्क़ी हो रही है, दुनिया पर छा गये हैं। बल्कि माजिद हजरत मुहम्मद शाफी साहिब रह. फरमाया करते थे कि याद रखो, बातिल के अन्दर कभी उभरने और तरक्क़ी करने की ताक़त ही नहीं, इसलिये कि कुरआने अलिम का साफ़ इरशाद है: "अंबातल कन जबूवा।" यानी बातिल तो मिटने के लिये आया है, लेकिन अगर कभी तुम्हें यह नज़र आये कि कोई बातिल तरक्क़ी कर रहा है, उबर रहा है, तो समझ लो कि कोई हक़ चीज़ उसके साथ लग गयी है और उस हक़ चीज़ ने उसको उभार दिया है। इसलिये यह बातिल लोग जो खुदा पर ईमान नहीं रखते, आदिया पर ईमान नहीं रखते, मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान नहीं रखते, इसका तक़ाज़ा है कि उनका दुनिया के अन्दर भी जलील और रुष्वा कर दिया जाता, लेकिन कुछ हक़ चीज़ें उनके साथ लग गयी, वह अफानत और दियानत जो हुजूरे अक़्बद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमें सिखाई थी, वह उन्होंने इत्तियार कर ली, उसके नतीजे में अल़फ़ाद तझा. ने उनकी तिजारत को तरक्क़ी अटा फरमाई. आज वे पूरी दुनिया पर छा गये और हमने थोड़े से नफ़्स की ख़ातिर अफानत और दियानत जो छोड़ दिया और भोङ्गे व फरेब को इत्तियार कर लिया, और यह न सोचा कि यह धोखा और फरेब आगे चल कर हमारी अपनी तिजारत को तबाह व बरबाद कर देंगे।

मुसलमानों की खुसूसियत
मुसलमान की एक खुसूसियत यह है कि वह तिजारत में कभी धोखा और फरेब नहीं देता, नाप तील में कभी कभी नहीं करता, कभी
खुलासा

खुलासा यह कि "तत्कालीन" के अन्दर वे तमाम सूरतें दाखिल हैं जिनमें एक शर्स अपना हक पूरा पूरा दुसूर लिये हर वक्त तैयार रहे, लेकिन अपने जिम्मे जो दूसरों के हकूक वाजिब है वह उनको अदा न करे। एक हदीस शरीफ में हुजूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया:

"लाई अहदक हि इसलाम लाई पर लाई मिर्च मिर्च नेरिया।"

"यानी तुम में से कोई शर्स उस वक्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक वह अपने मुसलमान भाई के लिये भी वही चीज़ पसन्द न करे जो अपने लिये पसन्द करता है।"

यह न हो कि अपने लिये तो पैमाना कुछ और है और दूसरों के लिये पैमाना कुछ और है। जब तुम दूसरों के साथ कोई मामला करो
तो उस बक्त यह सोचो कि अगर यही मामला कोई दूसरा शाखा मेरे साथ करता तो मुझे नागवार होता, मैं इसको अपने ऊपर ज़ुम्ला तस्वीर करता। तो अगर मैं भी यह मामला जब दूसरों के साथ करूँगा तो वह भी आखिर इन्सान है, उसको भी इस से नागवारी और फ़रेशानी होगी, उस पर ज़ुल्म होगा, इसलिये मुझे यह काम नहीं करना चाहिये।

इसलिये हम सब अपने गरेबान में मुंह डाल कर देखें और सुबह से लेकर शाम तक की जिन्दगी का जायज़ा लें कि कहां कहां हम से हक़ तहतीयां हो रही हैं, कम नापना, कम तौलना, धोखा देना, मिलावट करना, फ़रेब देना, ऐबदार चीज़ बेचना, ये तिजारत के अन्दर हराम हैं। जिसकी वजह से तिजारत पर अल्लाह तआ़ला की तरफ से वबाल आ रहा है। यह सब हक़ तल्फ़ी और “तल्फ़ीफ़” के अन्दर दाखिल है, अल्लाह तआ़ला हम सब को इस हक़ीकत की समझ और अक्षर अता फ़रमाये और हूक़ूक़ आदा करने की तोफ़ीक अता फ़रमाये, और “तल्फ़ीफ़” के वबाल और अज़ाब से हमें नज़ात अता फ़रमाये, आमीन।

واعترِ دعوَنا ان الحمد لله رب العالمين
भाई भाई बन जाओ

अल्लाहُ اللَّهُ ﷺ ﻫُمَّدَةٌ وَتَسْمَعَىَةَ وَتَسْتَفْقِهْرَةٌ وَتُوْمِئِنَّهُ وَتَتَوْكِلُّ عَلَيْهِ وَتَنْفَوُّ بِاللَّهِ مِنْ شَرُورِ آنفُسَيْنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا مِنْ يَهِيدَهُ اللَّهُ ﷺ ﻫُمَّدَ لَوَلَّىْنَ ﻋَلَىْهُ وَأَنْبَأْنَ أَنْ يُضَلِّلَهُ ﻓَلاَ هَبْيَةَ لَهُ وَأَنْتَشَدَّ آنَ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحَدَّهُ لَا شَرِيعَةَ لَهُ أَنْ سَيِّدَنَا وَسَلَّمَ وَسَلَّمَ مُحَمَّدًا ﷺ عَبْدًا وَرَسُولًا ﷺ ﻫُمَّدُ ﻋَلَىْهُ ﻭَعَلَىْهُ ﷺ ﻓَعْلَيْهِمْ وَأَصْحَابُهُمْ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ ﻟَهُمْ ﻣَعْلُومًا كَثِيرًا ﷺ ﻫُمَّدَ إِنَّمَا ﺛُمُودُ بِاللَّهِ مِنْ الشَّيْطَانِ الْرَّجِيمِ ﻱَمْنُوتُ مُحَمَّدًا ﷺ عَلَىْهُ ﻏَيْبٍ ﻷَلَّهُ ﷺ ﻫُمَّدَ لَوَلَّىْنَ ﻋَلَىْهُ ﷺ ﻫُمَّدَ لَوَلَّىْنَ ﻫُمَّدَ لَوَلَّىْنَ ﻫُمَّدَ لَوَلَّىْنَ ﻫُمَّدَ لَوَلَّىْنَ ﻫُمَّدَ لَوَلَّىْنَ ﻫُمَّدَ لَوَلَّىْنَ ﻫُمَّدَ لَوَلَّىْنَ ﻫُمَّدَ لَوَلَّىْنَ ﻫُمَّدَ لَوَلَّىْنَ ﻫُمَّدَ لَوَلَّىْنَ ﻫُمَّدَ لَوَلَّىْنَ ﻫُمَّدَ لَوَلَّىْنَ ﻫُمَّدَ لَوَلَّىْنَ ﻫُمَّدَ لَوَلَّىْنَ ﻫُمَّدَ لَوَل* 

آयत का मतलब

यह आयत जो अभी मैंने आप हजरत के सामने तिलावत की है, इस आयत में अल्लाह तख्तशा इशाशाद फरमाते हैं कि तमाम मुसलमान आपस में भाई भाई हैं, इसलिये तुम्हारे दो भाईयों के दरमियान कोई रंगशा या लड़ाई हो गयी हो तो तुम्हें चाहिये कि उनके दरमियान सुलह करवाओ, सुलह करने में अल्लाह से उसे ताकि तुम अल्लाह तख्तशा की रहमत के हकदार हो जाओ।

जगड़े दीन को मूंढने वाले हैं

कुराअन व सुन्नत में गौर करने से यह बात खुल कर सामने आजात ि है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु ﷺ अलःहिद व सल्ल तक मुसलमान के आपसी जगड़े किसी कीमत पर पसन्द नहीं, मुसलमानों के दरमियान लड़ाई हो या जगड़ा हो या एक दूसरे से खिचान और तनाव की सूरत पैदा हो या रंजिश हो यह अल्लाह तख्तशा को पसन्दीदा नहीं, बल्कि हुक्म यह है कि जहां तक हो सके रंजिशों और जगड़ों को, आपसी नफरतों और दुःखनियों को किसी तरह ख़त्म
करें। एक हदीस में हुजूर अक्दः सल्ल्ल्लहु अलैहि व सल्ल्लम ने सहाबा—ए—किराम रजिय़ल्ल्लहु अन्हुम से खिताब करते हुए फरमाया कि क्या में तुमको वो चीजें न बताऊं जो नमाज रोजे और सदर्दे से भी अफजल है? इरशाद फरमाया:

"إضلاع ذات الْبَّيْنِ، فساد ذات البين الحالية" (ابوؤاؤد شريف)

यानी लोगों के दरमियान सुलह करना, इसलिए कि झगड़े दीन को मूड़ने वाले हैं, यानी मुसलमानों के दरमियान आपस में झगड़े खड़े हो जायें, फसाद बरपा हो जाये, एक दूसरे का नाम लेने के रवादार न रहें, एक दूसरे से बात न करे बल्कि एक दूसरे से ज़बान और हाथ से लड़ाई करें ये चीजें इन्सान के दीन को मूड़ देने वाली हैं। यानी इन्सान के अंतर जो दीन का ज़बान है अल्लाह और अल्लाह के रसूल की फरमांबरद़ी का जो ज़बान है वो इसके ज़रिये ख़तम हो जाता है, आख़िर कार इन्सान का दीन तबाह हो जाता है, इसलिए फरमाया कि आपस के झगड़े और फसाद से बचो।

बातिन को तबाह करने वाली चीजें

बुजुर्गों ने फरमाया कि आपस में लड़ाई झगड़ा करना और एक दूसरे से बुग़ज़ और दुःस्मनी रखना यह इन्सान के बातिन को इतना ज्यादा तबाह करता है कि इससे ज्यादा तबाह करने वाली चीज़ कोई और नहीं है, अब अगर इन्सान नमाज़ भी पढ़ रहा है, रोजे भी रख रहा है, तसबीहे भी पढ़ रहा है, वज़ीफ़े और नवाफ़िल का भी पाबंद है, इन तमाम बातों के साथ साथ अगर वह इन्सान लड़ाई झगड़े में लग जाता है तो यह लड़ाई झगड़ा उसके बातिन को तबाह व बरबाद कर देगा और उसको अन्दर से खोखला कर देगा। इसलिए कि इस लड़ाई के नतीजे में उसके दिल में दूसरे की तरफ से बुग़ज़ होगा और इस बुग़ज़ की ख़ासियत यह है कि यह इन्सान को कभी इन्साफ पर कायम नहीं रहने देता, इसलिये वह इन्सान दूसरे के साथ कभी हाथ से ज्यादती करेगा, कभी ज़बान से ज्यादती करेगा, कभी दूसरे
का माली हक छीनने की कोशिश करेगा।

अल्लाह की बारगाह में आमाल की पेशी

सही मुस्लिम की एक हदीस है कि नबी करीम सल्ल्लाल्लाहु अल्लाहि
व सल्लम ने इशाराद फरमाया, हर पीर के दिन और जुमेरात के दिन
तमाम इस्मानों के आमाल अल्लाह तख़्ता की बारगाह में पेश किये
जाते हैं और जन्मत के दरवाजे खोल दिये जाते हैं। यों तो हर वक़्त
सारी मस्लूक के आमाल अल्लाह तख़्ता के सामने हैं और अल्लाह
तख़्ता हर शख्स के अमाल से वाकिफ हैं, यहां तक कि दिलों के मद
को जानते हैं कि किस के दिल में किस वक़्त क्या ख्याल आ रहा है,
तो सवाल पैदा होता है कि फिर इस हदीस का क्या मतलब है कि
अल्लाह तख़्ता की बारगाह में आमाल पेश किये जाते हैं? बात
असल में यह है कि वैसे तो अल्लाह तख़्ता सब कुछ जानते हैं
लेकिन अल्लाह तख़्ता ने अपनी बादशाहत का निर्माण इस तरह
बनाया है कि इन दो दिनों में मस्लूक के आमाल पेश किये जाएं
ताकि उनकी बुनियाद पर उनके जन्मत या जहन्नम होने का फैसला
किया जाये।

वह शख्स रोक लिया जाए

बहर हाल आमाल पेश होने के बाद जब किसी इस्मान के बारे में
यह मालूम हो जाता है कि यह शख्स इस हफ़्ते के अन्दर इमान की
हालत में रहा और इस्मान अल्लाह तख़्ता के साथ किसी को शरीक
नहीं ठहराया तो अल्लाह तख़्ता फरमाते हैं कि में आज के दिन इस
की महँगिरत का ऐलान करता हूँ। यानी यह शख्स हमेशा जहन्नम में
नहीं रहेगा बल्कि किसी न किसी वक़्त जन्मत में ज़रूर दाखिल हो
जायेगा, इसलिये इसके लिए जन्मत के दरवाजे खोल दिये जाये,
लेकिन साथ ही अल्लाह तख़्ता यह ऐलान भी फरमाते हैं:

"अल्म बीमे बीन एकिखे शजहान, फिल्ला आन्तर उल्लो हेकी हिज़ीय हसाला"

(एबु दादू शरीफ)
लेकिन जिन दो शख्सों के दरमियान आपस में कीना और बुग़ज़ हो उनको रोक लिया जाये। उनके जन्ती होने का फौसला में अभी नहीं करता, यहां तक कि उन दोनों के दरमियान आपस में सुलत न हो जाये।

बुग़ज़ से कुफ़ का अन्देशा

सवाल यह है कि इस शख्स के जन्ती होने का ऐलान क्यों रोक दिया गया? बात असल में यह है कि यों तो जो शख्स भी कोई गुनाह करेगा, क़ायदे के एटिबार से उसको उस गुनाह का बदला मिलेगा, उसके बाद जन्ती में जायेगा, लेकिन और जितने गुनाह है उनके बाद में यह अन्देशा नहीं है कि वे गुनाह उसको कुफ़ और शिक्षा में मुखता कर देंगे, इसलिए अल्लाह तबाला फरमाते हैं कि चूंकि मोमिन है इसलिए इसके जन्ती होने का ऐलान अभी कर दो।

जहां तक इसके गुनाहों का ताल्लुक है तो अगर यह उन से तीव्र कर लेगा तो माफ़ हो जायेंगे और अगर तीव्र नहीं करेगा तो ज़्यादा से ज़्यादा यह होगा कि उन गुनाहों की सजा भुगत कर जन्त में चला जायेगा। लेकिन बुग़ज़ और दुष्कन्ती ऐसे गुनाह हैं कि इनके बारे में यह अन्देशा है कि कहाँ ये इसको कुफ़ और शिक्षा में मुखता न कर दें और इसका ईमान खला न हो जाये, इसलिए इनके जन्ती होने का फौसला उस वक़्त तक के लिए रोक दो जब तक ये दोनों आपस में सुलत न कर लें। इस से आप अन्दाज़ा कर सकते हैं कि अल्लाह और अल्लाह के रसूल व्लल्लाहु अल्लाहिब व सल्लम को मुसलमानों में आपस का बुग़ज़ और नफरत किया ना पसन्द है।

शबे बराबर भी मस्रिफ़त नहीं होगी

शबे बराबर के बारे में यह हदीस आप इज़रात ने सुनी होगी कि हुज़ूर अक़ब्स सल्लल्लाहु अल्लाहिब व सल्लम ने इरशाद परिषदाया कि इस रात में अल्लाह तबाला की रहमत इन्सानों की तरफ़ होती है, और इस रात में अल्लाह तबाला इतने लोगों की मस्रिफ़त फरमाते हैं।
जितने कब्रियों के जिसम पर बाल हैं, लेकिन दो आदमी ऐसे हैं कि उनकी मस्फिरत इस रात में भी नहीं होती, एक वह शख्स जिसके दिल में दूसरे मुसलमान की तरफ से बुगूज़ हो, कीना हो और दुर्शमनी हो। वो रात जिसमें अल्लाह ताक़वला की रहमत के दरवाजे खुले हुए हैं, रहमत की हवायें चल रही हैं, इस हालत में भी वो शख्स अल्लाह ताक़वला की मस्फिरत से महसूम रहता है। दूसरा वो शख्स जिसने अपना पायजामा टक्करों से नीचे लटकाया हुआ हो, उसकी भी मस्फिरत नहीं होगी।

**बुगूज़ की हकीकत**

और “बुगूज़” की हकीकत यह है कि दूसरे शख्स की बद ख्वाही (बुरा चाहना) की फिक्र करना कि उसको किसी तरह नुकसान पहुँच जायें या उसकी बदनामी हो, लोग उसको बुरा समझें. उस पर कोई बीमारी आ जायें, उसकी तिज़ारत बन जायें या उसको तकलीफ़ पहुँच जायें, तो अगर दिल में दूसरे शख्स की तरफ से बद ख्वाही पैदा हो जायें इसको “बुगूज़” कहते हैं, लेकिन अगर एक शख्स मज़बूत है, किसी दूसरे शख्स ने उस पर जुल्म किया है तो जाहिर है कि मज़बूत के दिल में ज़ालिम के खिलाफ जज्बात पैदा हो जाते हैं और उसका मकराद अपने आप से उस जुल्म को दफ़ा करना होता है, ताकि वह जुल्म न करे. तो ऐसी सूरत में अल्लाह ताक़वला ने इस ज़ालिम से जुल्म का बदला लेने की और अपने से जुल्म को रोकने की भी इजाज़त दी है। चुनाव उस वक्त मज़बूत उस ज़ालिम के जुल्म को तो अच्छा न समझेबल्कि उसको बुरा समझे लेकिन उस वक्त भी ज़ालिम की जात से कोई कीना न रखे, उसकी जात से बुगूज़ न करे और न बद-ख्वाही की फिक्र करे तो मज़बूत का यह अमल बुगूज़ में दाखिल न होगा।

**हसद और कीने का बेहतरीन इलाज**

यह बुगूज़ हसद से पैदा होता है, दिल में पहले दूसरे की तरफ
से हसद पैदा होता है कि वह आगे बढ़ गया में पीछे रह गया, और
अब उसके आगे बढ़ जाने की वजह से दिल में जलन और कुड़न हो रही है, घुटन हो. रही है और दिल में स्वाहिष्ण हो रही है कि में उसको किसी तरह का नुक्सान पहुँचाक और नुक्सान पहुँचाना ताकत और इश्कियार में नही है, इसके नतीजे में जो घुटन पैदा हो रही है 
उस से इसान के दिल में "बुगूज" पैदा हो जाता है, इसलिये बुगूज 
से बचने का पहला रास्ता यह है कि अपने दिल से पहले हसद को 
ख़त्म करो और बुगूजों ने हसद दूर करने का तरीका यह बयान 
फरमाया कि अगर किसी शख्स के दिल में यह हसद पैदा हो जाये कि वह मुझ से आगे बढ़ गया, तो इस हसद का इलाज यह है 
कि वह उस शख्स के हक में यह दुस्सा करे कि या अल्लाह उसको और तरक्की अता फरमा, जिस वक़्त उसके हक में यह दुस्सा करेगा 
उस वक़्त दिल पर आरे चल जाये, उसके लिये दिल तो यह वाह 
रहा है कि उसकी तरक्की न हो बल्कि नुक्सान हो जाये लेकिन ज़बान से वह यह दुस्सा कर रहा है कि या अल्लाह उसको और 
तरक्की अता फरमा, चाहे दिल पर आरे चल जायें लेकिन तकल्लुफ़ 
से और जबरदस्ती उसके हक में दुस्सा करें। हसद दूर करने का यह 
बेहतरीन इलाज है। और जब हसद दूर हो जायेंगा तो इसना अल्लाह 
बुगूज भी दूर हो जायेगा। इसलिये हर शख्स अपने दिल को टोपल 
कर देख ले और जिसके बारे में भी यह प्रायाल हो कि उसकी तरफ 
से दिल में बुगूज या कीना है तो उस शख्स को अपनी पाचो वक़्त 
की नमाजें में शामिल कर ले, यह हसद और कीना का बेहतरीन 
इलाज है।

दुस्मनों पर रहम, नवी की सीरत

dेखिये मक्के के मुशिक लोगों ने हुजूरे अक़बर सल्लल्लाहु 
अलैहि व सल्लम और सहाबा के रंजियल्लाहु अन्नु हुजूम पर जुल्म 
करने और आपको तकलीफ़ देने, ईजा पहुँचाने में कोई कसर नहीं
छोड़ि, यहाँ तक कि आपके खून के प्यासे हो गये, ऐलान कर दिया कि जो शहीद हुए अब्दस सल्लाल्हु अलैहि व सल्लम को पकड़ कर लायेगा उसको सो ऊट इनाम में मिलेगे। गज्जावा—ए—उहद (उहद की लड़ाई) के मौके पर आप सल्लाल्हु अलैहि व सल्लम पर तीरों की बारिश की, यहाँ तक कि आपका चेहरा—ए—अनवर ज़ख़्मी हो गया, दांत मुबारक शहीद हो गये, लेकिन इस मौके पर आप सल्लाल्हु अलैहि व सल्लम की ज़बान पर यह दुआ थी कि:

अल्लाहु ह्विदौमिं फैलैँहुं न इलामुन

ऐ अल्लाह मेरी कौम को हिदायत अता फरसाइए, इनको इलम नहीं है, ये ना वक्फ़ और जाहिल हैं, मेरी बात नहीं समझ रहे हैं इसलिये मेरे ऊपर ज़ुल्म कर रहे हैं। अंदाजा लगाइये कि वे लोग ज़ालिम थे और उनके जुल्म में कोई शक नहीं था लेकिन इसके बावजूद आप सल्लाल्हु अलैहि व सल्लम के दिल में उनकी तरफ से बुगूज़ और कीने का ख्याल भी नहीं पैदा हुआ, तो यह भी नबी करीम सल्लाल्हु अलैहि व सल्लम की अज़ीम सुनन हाफ़ के साथ और आपका नमूना है कि बदू ख़वाही का बदला बदू ख़वाही से न दे बल्कि उसके हक़ में दुआ करें और यही हसद और बुगूज़ को दूर करने का वे लीजन इलाज है।

बहर हाल, में यह अर्ज कर रहा था कि यह आपस के झ़गड़े आखिर कार दिल में बुगूज़ और हसद पैदा कर देते हैं, इसलिये कि जब झ़गड़ा लम्बा होता है तो दिल में बुगूज ज़हर पैदा होगा, और जब बुगूज पैदा होगा तो दिल की दुनिया तबाह हो जायेगी और भागिने ख़राब होगा, और इसके नतीजे में इनसान अल्लाह की रहमत से महरूम हो जायेगा। इसलिये हुक्म यह है कि आपस के झ़गड़े से बचो और उन से दूर रहो।

झ़गड़ा इलम का नूर ख़ल्स कर देता है

यहाँ तक कि इनाम मालिक रह। फरसाइए हैं कि एक झ़गड़ा तो
जिसमानी होता है जिसमें हाथा पाई होती है, और एक झङड़ा पढ़े लिखों का और उलमा का होता है, वह है मुजादला, मुनाफज़रा और बहस व मुबाहसा, एक आलिम ने एक बात पेश की, दूसरे ने उसके खिलाफ़ बात पेश की, उसने एक दलील दी, दूसरे ने उसकी दलील का रद लिख दिया। सबाल व जवाब और बहस व तकरार, एक न ख़त्म होने वाला सिलसिला चल पड़ता है, इसको भी बुजुर्गों ने कभी पसंद नहीं फरमाया, इसलिये कि इसकी वजह से बातिन का नूर ख़त्म हो जाता है। चुनावे यही हजरत इमाम मालिक बिन अनस रह. फरमाते हैं:

अलिराओ, यद्यपि बनोरालिम

यानी इस्लामी झङड़े इल्म को ख़त्म कर देते हैं। देखिये एक तो होता है “मुजाक़रा” जैसे एक आलिम ने एक मसूदा पेश किया,
दूसरे आलिम ने कहा कि इस मसूदाले मुझे फ़ाला इश्काल है, अब
dोनों बेट कर समझाने समझाने के जरिये उस मसूदा को हल करने
के लिये हुए हैं। यह है मुजाक़रा, यह बड़ा अच्छा अमल है, लेकिन यह
झङड़ा कि एक आलिम ने दूसरे के खिलाफ़ एक मसूदा के सिलसिले
में इश्तिहार शाया कर दिया या कोई पोस्टर, रिसाला या किताब
फाप दी और फिर यह सिलसिला चलता रहा। या एक आलिम ने
दूसरे के खिलाफ़ तकरार कर दी, दूसरे आलिम ने उसके खिलाफ़
तकरार कर दी और यो मुख़ालफ़्त बराब मुख़ालफ़्त का सिलसिला
कायम हो गया, यह है मुजादला और झङड़ा जिसको हमारे बुजुर्गों ने,
दोनों के इमामों ने विलक्कुल पसंद नहीं फरमाया।

हजरत थानवी रह. की कुञ्जवते कलाम

हकीमुल-उम्मत हजरत मौलाना अशरफ अली साहिब रह. को
अल्लाह तख्ताला ने कुञ्जवते कलाम में ऐसा कमाल अता फरमाया था
कि अगर कोई शख्स किसी भी मसूदे पर बहस व मुबाहसे के लिये
आ जाता तो आप चन्द मिनट में उसको ला जवाब कर देते थे, बल्कि
हमारे हज़रत डा. अब्दुल हई साहिब रह. ने वाकिया सुनाया कि एक बार आप बीमार थे और बिस्तर पर लेटे हुए थे, उस वक्त आपने इस्लाम फरमाया कि "अल्ह्मूदु लिल्लाह, अल्लाह तआला की रहमत के भरोसे पर यह बात कहता हूँ कि अगर सारी दुनिया के अकल मंद तो जाना होकर आ जायें, और इस्लाम के किसी भी मामूली से मस्ताले पर अतिरिक्त करें तो इन्हें अल्लाह यह नाकारा दो मिन्ट में उनको ला जवाब कर सकता है।

फिर फरमाया कि मैं तो एक मामूली सा तालिब इत्म हूँ, उलमा की तो बड़ी शान है चुनाचे वाकिया यह था कि हज़रत थानवी रह. के पास कोई आदमी किसी मस्ताले पर बात चीत करता तो चन्द मिन्ट से ज़्यादा नहीं चल सकता था।

मुनाज़रे से आम तौर पर फायदा नहीं होता

शुद्ध हज़रत थानवी रह. फरमाये है कि जब मैं दारूल उल्लूम देवबन्द से दरसे निजामी करके फारिग हुआ तो उस वक़्त मुझे बातिल फ़िरफ़िरों से मुनाज़रा करने का बहुत शौक था. चुनाचे कभी शियाओं से मुनाज़रा हो रहा है, कभी गैर मुकलिदीन से तो कभी बरेलियाँ से, कभी हिन्दुओं से और कभी सिखों से मुनाज़रा हो रहा है। चूँकि नया नया फारिग हुआ था इसलिये शौक और जोश में यह मुनाज़रे करता रहा-लेकिन बाद में मैंने मुनाज़रे से लौबा कर ली, इसलिये कि तज्जुब्बा यह हुआ इस से फायदा नहीं होता बल्कि अपनी बातिनी कैफियातों पर इसका असर पड़ता है, इसलिये मैंने इसको छोड़ दिया। बहर हाल, जब हमारे बुजुर्गों ने हक़ के बातिल के दरमियान भी मुनाज़रे को पसन्द नहीं फरमाया तो फिर अपनी नफसानी ख़बाहिशात की बुनियाद पर, या दुनियाबी मामलात पर मुनाज़रे करने और लड़ाई झगड़े करने के कौसँ पसन्द फरमा सकते हैं। यह झगड़ा हमारे बातिन को ख़शाब कर देता है।
जन्नत में घर की ज्मानत
एक हदीस में हुजूरे अकबर सल्ल्लाल्हु अलैहि व सल्लम ने
इरशाद फर्माया:

"मौन तर्क अल्ब्रैया और हवा मुज्जु बनी आह वर्दी अल्लाह (तर्द्दी शरीफ)
"यानी मैं उस शर्स को जन्नत के बीचों बीच घर दिलवाने का
जिम्मेदार हूं जो हक पर होने के बावजूद झगड़ा छोड़ दे। यानी जो
शर्स हक पर होने के बावजूद यह ख्याल करता है कि अगर में हक
का ज्यादा मुलाला करना तो झगड़ा ख़त्म हो जायेगा, वलो इस
हक को छोड़ दो, यानि झगड़ा ख़त्म हो जाये, उसके लिये हुजूरे
अकबर सल्ल्लाल्हु अलैहि व सल्लम फर्माते हैं कि मैं उसको जन्नत
cे बीचों बीच घर दिलवाने का जिम्मेदार हूं। इस से अन्दाज़ा लगाये
कि सरकारे दो अलम सल्ल्लाल्हु अलैहि व सल्लम को झगड़ा ख़त्म
करने की कितनी फ़िक्र थी, ताकि आपस के झगड़े ख़त्म हो जायें। हां
अगर कहीं मामला बहुत आगे बढ़ जाये और बदस्त के काबिल न हो
तो ऐसी सूरत में इसकी इजाज़त है कि मज़ूल हलिम का तोड़ भी
cरे और उस से बदस्त लेना भी जायज़ है, लेकिन जहां तक हो सके
yह कोशिश हो कि झगड़ा ख़त्म हो जाये।

झगड़ों के नतीजे

आज हमारा मुआशरा (समाज) झगड़ो से भर गया है, इसकी
बे-बरकती और अंधेरी पुरे मुआशरे में इस कदम छायी हुई है कि
इबादतों के नूर महसूस नहीं होते, कोटी कोटी बातों पर झगड़े हो रहे
है, कहीं खानदानों में झगड़े हैं तो कहीं मियां बीवी में झगड़े हैं, कहीं
dोस्तों में झगड़े हैं, कहीं भाईयों के दरमियान झगड़े हैं, कहीं
रिस्तेदारों में झगड़ा है। और तो और उल्लम-ए-किराम के दरमियान
आपस में झगड़े हो रहे हैं, दीनदारों में झगड़े हो रहे हैं, और इसके
नतीजे में दीन का नूर ख़त्म हो चुका है।
झगड़े किस तरह ख़त्म हों?

अब सवाल यह है कि ये झगड़े किस तरह ख़त्म हों? हकीमुल उम्मत हज़रत बौलाना मौहम्मद अशरफ अली साहिब थानवी रह. का एक मल्लूफ़ूज़ आप हज़रत को सुनाता हूं जो बड़ा सुनेहरा उस्तूल है। अगर इस्लाम इस उस्तूल पर अमल कर ले तो उम्मीद है कि पिछले फौस्दी झगड़े तो वही ख़त्म हो जायें। चुनांचे फौस्दी कि:

"एक काम यह कर लो कि दुनिया वालों से उम्मीद बांधना छोड़ दो, जब उम्मीद छोड़ दोगे तो इन्हा अल्लाह फिर दिल में कभी बुराज और झगड़े का ख़ियाल नहीं आएगा।"

दूसरे लोगों से जो शिकायतें पैदा होती हैं, जैसे यह कि फलां शख्स को ऐसा करना चाहिये था, उसने नहीं किया, जैसी मेरी इज़ज़त करनी चाहिये थी, उसने ऐसी इज़ज़त नहीं की, जैसी मेरी ख़ातिर मुदारात करनी चाहिये थी, उसने ऐसी नहीं की, या फलां शख्स के साथ मैंने फलां एहसान किया था, उसने उसका बदला नहीं दिया, वग़ैरह वग़ैरह। ये शिकायतें इसलिए पैदा होती हैं कि दूसरों से उम्मीद बांध रखी है, और जब वो उम्मीद पूरी नहीं होती तो इसके नतीजे में दिल में गिरह पड़ गयी कि उसने मेरे साथ अच्छा बरताव नहीं किया, और दिल में शिकायत पैदा हो गयी। ऐसे मौकों पर अल्लाह के रसूल सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फौस्दी है कि अगर तुम्हें किसी से कोई शिकायत पैदा हो जाये तो उस से जाकर कह दो कि मुझे तुम से यह शिकायत है, तुम्हारी यह बात मुझे अच्छी नहीं लगी, मुझे बुरी लगी, पसंद नहीं आयी। यह कह कर अपना दिल साफ़ कर लो। लेकिन अभि कल बात कह कर दिल साफ़ करने का दस्तूर ख़त्म हो गया, बल्कि अब यह होता है कि वाह उस बात को और शिकायत को दिल में लेकर बैठ जाता है, उसके बाद किसी और मौके पर कोई और बात पेश आ गयी, एक गिरह और पड़ गयी, चुनांचे आहिस्ता आहिस्ता दिल में गिरहें पड़ती चली जाती
है, ये फिर बुग्रज की शक्ति इक्वर्टियार कर लेती है, और बुग्रज के नतीजे में आपस में दुश्मनी पैदा हो जाती है।

उम्मीदें मत रखो

इसलिए हजरत थानवी रह. फरमाते हैं कि झाड़ें की जड़ इस तरह काटे कि किसी से कोई उम्मीद ही मत रखो। क्या मन्तव्य से उम्मीदें बांधे बैठे हो, कि फलों यह देगा, फलों यह काम कर देगा, उम्मीद तो सिर्फ उस से वाध्य करो जो स्वालिक और मालिक है, बल्कि दूषित वा वालों से तो बुराई की उम्मीद रखो कि उन से तो हमें बुराई ही मिलेगी, और फिर बुराई की उम्मीद रखने के बाद अगर कभी अच्छाई गिल जाये तो उस क्षण अल्लाह का शुक्र अदा करो कि या अल्लाह आपका शुक्र और एहसान है। और अगर बुराई गिले तो फिर खाली कर लो कि मुझे तो पहले ही बुराइ की उम्मीद थी। तो अब इसके नतीजे में दिल में शिकायत और बुग्रज़ पैदा नहीं होगा, और फिर दुश्मनी पैदा नहीं होगी, न झगड़ा होगा। इसलिए किसी से उम्मीद रखो।

बदला लेने की नियत मत रखो

इसी तरह हजरत थानवी रहे ने एक और उसूल यह बयान फरमाया कि जब तुम किसी दूसरे के साथ कोई नक्सा करो, या अच्छा स्वालिक करो, तो सिर्फ अल्लाह को राजी करने के लिए करो। जैसे किसी की मदद करो या किसी शख्स की सिफारिश करो, तो यह सोच कर करो कि मैं अल्लाह को राजी करने के लिए यह बरताव कर रहा हूँ, अपनी आश्रित संवारने के लिये यह काम कर रहा हूँ। जब इस नियत के साथ अच्छा बरताव करोगे तो इस सूरत में उस बरताव पर बदला का इन्साज नहीं करोगे। अब अगर मान लो कि आपने एक शख्स के साथ अच्छा स्वालिक किया, तो उस शख्स ने तुम्हारे अच्छे स्वालिक का बदला अच्छाई के साथ नहीं दिया, और उसने तुम्हारे एहसास करने को कभी त्यस्ते ही नहीं किया, तो इस
इस्लामी खुलबात

हज़रत मुफ्ती साहिब रह. की अज़ीम कुरबानी

हमने अपने वालिद माजिद हज़रत मुफ्ती महम्मद शफी साहिब रह. की पूरी जिन्दगी में इस हदीस पर अमल करने का अपनी आख्या से नज़ारा किया है, झगड़ा ख़त्म करने की खातिर बड़े से बड़ा हक छोड़ कर अलग हो गये। उनका एक वाकिया सुनाता हूँ जिस पर आज लोगों को यकीन करना मुश्किल मालूम होता है। यह दारुल उलूम जो इस वक़्त कोरंगी में कायम है, पहले नानक बाढ़ में एक छोटी सी इमारत में कायम था, जब काम ज्यादा हुआ तो इसके लिये वह जगह तंग पड़ गयी, ज्यादा और खुली हुई जगह की ज़रुरत थी, चुनावे अल्लाह तबाला की ऐसी मदद हुई कि बिल्कुल शहर के दरमियान में झुकूँत की तरफ से एक बहुत बड़ी और कुशादा जगह मिल गई, जहाँ आज कल इस्लामिया कालिज कायम है, जहाँ हज़रत अल्लामा शाब्बी अहमद उस्मानी रह. का मजार भी है। यह कुशादा जगह दारुल उलूम कराची के नाम अलाट हो गई, इस जमीन के कागज़ात मिल गये, कब्ज़ा मिल गया और एक कमरा भी बना दिया गया, टेलीफोन भी लग गया, उसके बाद दारुल उलूम की बुनियाद
रखते वक्त एक जलसा हुआ। जिसमें पूरे पाकिस्तान के बड़े बड़े
उलमा हज़रात तशीफ़ लाये, उस जलसे के मीके पर कुछ हज़रात ने
झगड़ा खड़ा कर दिया कि यह जगह दारूल उलूम को नहीं मिलनी
चाहिये थी बल्कि फ़ला को मिलनी चाहिये थी, इतिफाक़ से झगड़े में
उन लोगों ने ऐसी कुछ बुजुर्ग हस्तियों को भी शामिल कर लिया जो
हज़रात वालिद साहिब के लिये एहतिराम का दर्जा रखती थी, वालिद
साहिब ने पहले तो यह कोशिश की कि यह झगड़ा किसी तरह खत्म
हो जाए, लेकिन वह खत्म नहीं हुआ, वालिद साहिब ने यह सोचा कि
जिस मदरसे की शुरुआत ही झगड़े से हो रही है तो उस मदरसे में
क्या बर्कत होगी? युवाओं वालिद साहिब ने यह फैसला चुना दिया कि
में इस जमीन को छोड़ता हूँ।

मुझे इस में बर्कत नज़र नहीं आती
दारूल उलूम की मज़लिसे इतिज़ामी ने यह फैसला सुना तो
उन्होंने हज़रत वालिद साहिब से कहा कि! यह आप क्या फैसला
कर रहे हैं? इतनी बड़ी जमीन वह भी शहर के दरमियान में ऐसी
जमीन मिलना भी मुश्किल है, अब जब कि यह जमीन आपको मिल
चुकी है, आपका इस पर कब्ज़ा है, आप ऐसी जमीन को छोड़ कर
अलग हो रहे हैं? वालिद साहिब ने जवाब में फ़रमाया कि मैं मज़लिसे
इतिज़ामी को इस जमीन को छोड़ने पर मज़बूर नहीं करता, इसलिये
कि मज़लिसे इतिज़ामी दर हकीकत इस जमीन की मालिक हो चुकी
है, आप हज़रात अगर चाहें तो मदरसा बना लें, मैं उसमें शमूलियत
इक्तियार नहीं करूँगा। इसलिये कि जिस मदरसे की बुनियाद झगड़े
पर रखी जा रही है, उस मदरसे में मुझे बर्कत नज़र नहीं आती।
फिर हदीस सुनाई कि झुज़ुरे अक़्ब़स सल्लल्लाहु अलैहिब व सल्लम ने
इरशाद फरमाया कि जो शक्स हक पर होते हुए झगड़ा छोड़ दे मैं
उसे जन्मत के बीचों बीच घर दिलवाने का जिम्मेदार हूँ। आप
हज़रात यह कह रहे हैं कि शहर के बीचों बीच ऐसी जमीन कहां
भिलेगी, लेकिन सरकारे दो आलम हुजूर सल्ल्लाहु अलेहि व सल्लम ने फर्माया है कि मैं उसको जन्मत के बीच बीच घर दिलवाना। यह कह कर उस जमीन को छोड़ दिया। आजके दौर में इसकी मिसाल मिलनी पुंशकिल है कि कोई शख्स इस तरह झगड़े की वजह से इतनी बड़ी जमीन छोड़ दे, लेकिन जिस शख्स का नबी-ए-करीम सल्ल्लाहु अलेहि व सल्लम के इरशाद पर कामिल यकीन है, वही यह काम कर सकता है। उसके बाद अल्लाह ताबला का ऐसा फ़ूल हुआ कि चंद ही महीनों के बाद उस जमीन से कई गुना बड़ी जमीन अता फर्मा दी, जहाँ आज दारुल उलूम कायम है। यह तो मैंने आप हज़रत को सामने एक मिसाल बयान की, वर्ना हज़रत बाखिल साहिब को हमने सारी जिन्दगी जहां तक हो सका इस हदीस पर अमल करते हुए देखा। हां मगर जिस जगह दूसरा शख्स झगड़े के अन्दर फाँस ही ले और मुक़ाबले और तोड़ के सिवा कोई चारा न रहे तो वो अलग बात है। हम लोग छोटी छोटी बातों को लेकर बैठ जाते हैं कि फ़लां मोक़े पर फ़लां शख्स ने यह बात कही थी, फ़लां ने ऐसा किया था, अब हमेशा के लिये उसको दिल में लेता और झगड़ा खड़ा हो गया। आज हमारे पूरे मुआझ़रे (समाज) को इस चीज़ ने तबाह कर दिया है। यह झगड़ा इस्नान के दीन को मूंड देता है, और इस्नान के बातिन को तबाह कर देता है। इसलिये खुदा के लिये आपस में झगड़ों को ख़त्म कर दो और अगर दो मुसलमान भाईयों में झगड़ा देखो तो उनके दर्शीयान सुलह करने की पूरी कोशिश करो।

सुलह कराना सद्का है

عن أبي هريرة رضي الله عنه قال: قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: كل سلامي من الناس عليه صدقة كل يوم تطلع فيه الشمس، يعدل بين الاثنين صدقة، و يعين الرجل في دابته فيحمله عليها أو يرفع له عليها مثابة صدقة، والكلمة الطيبة صدقة، وبكل خطوة يشيئها الى الصلاة صدقة، و يميز الآذى عن الطريق صدقة.

(سنده أحمد جلد 2 ص 312)
हजरत अबु हुसेरह रजि. फरमाते हैं कि हुज्जूरे अकड़स सल्लल्लाहु
अलेहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया कि इन्सान के जिसमें जितने
जोड़ हैं, हर जोड़ की तरफ से इन्सान के जिसमें रोजाना एक सदका
करना वाजिब है। इसलिये कि हर जोड़ एक मुस्तकिल नेत्रत है और
हर नेत्रत पर शुक्र करना वाजिब है, और एक इन्सान के जिसमें
360 जोड़ होते हैं, इसलिये हर इन्सान के जिसमें 360 सदके वाजिब
हैं। लेकिन अल्लाह तख़ला ने इस सदके को इन्सान आसान फरमाया
कि इन्सान के छोटे छोटे अमल को सदके के अंदर शुमार फरमा
दिया है, ताकि किसी तरह 360 की गिनती पूरी हो जाये। चुनावे
हुज्जूरे अकड़स सल्लल्लाहु अलेहि व सल्लम इरशाद फरमाते हैं, कि दो
आदमियों के दरमियान झगड़ा और रंजिश थी, तुमने उन दोनों के
दरमियान सुलह सफाई करा दी, यह सुलह सफाई कराना एक
सदका है। इसी तरह एक शख़्स अपने घोड़े पर या सवारी पर सवार
होना चाह रहा था, लेकिन किसी वजह से उस से सवार नहीं हुआ
जा रहा था, अब तुमने सवार होने में उसकी मदद कर दी, और
उसको सहारा दे दिया, यह सहारा दे देना और सवार करा देना एक
सदका है। या एक शख़्स अपनी सवारी पर सामान लादना चाहता
था, लेकिन उस बेचारे से लादा नहीं जा रहा था, अब तुमने उसकी
मदद करते हुए वह सामान लदवा दिया, उसकी सवारी पर रख दिया
यह भी एक सदका है। इसी तरह किसी शख़्स से कोई अच्छा
कलिमा (बात) कह दिया, जैसे कोई गुमज़दा आदमी था, तुमने उसको
कोई तसल्ली की बात कह दी और उसकी तसल्ली कर दी, या किसी
से कोई बात ऐसी कह दी जिस से उस मुसलमान का दिल खुश हो
गया यह भी एक सदका है। इसी तरह जब तुम नमाज के लिये
मसजिद की तरफ जा रहे हो तो हर कृदम जो मसजिद की तरफ उठ
रहा है, वह एक सदका शुमार हो रहा है। इसी तरह रात्रे में कोई
तकलीफ़ देने वाली चीज़ पड़ी है, जिस से लोगों को तकलीफ़ पहुंचने
मक्तब ए अशरफ

इस्लाम का करिश्मा

रसूल लल्ला صلی اللہ علیه وسلم يقول: ليس الكذاب الذي يصل بين الناس

(صحيح بخارى)

यह हज़रत उम्मे कुलसूम रज़ियल्लाहु अन्हा एक सहाबिया है, और उक्ता बिन अबी मुईत की बेटी हैं, और तुक्ता बिन अबी मुईत हुजूरे अक्रदस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लام का जानी दुर्सने था। इतिहास दर्जे का मुहिरक, और हुजूरे अक्रदस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को तक्कलीफ़ पहुँचाने वाले, जैसे अबु जहल और उमया बिन खलफ़ थे, जो कट्टर किस्म के मुहिरक थे, यह भी उन्हीं में से था। और यह वह शाक्त था जिसके लिए हुजूरे अक्रदस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बद् दुआ फरमायी। चुनावे बद् दुआ करते हुए फरमाया:

اللهم سلط عنه كلبا من كلاوبك (فتح الباري جلد ؛)

ऐ अल्लाह, दर्जनों में से किसी दर्जने को इस पर मुसल्लत फरमा दे। हुजूरे अक्रदस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की यह बद् दुआ कुबूल हुई, आखिर कार एक शोर के जरिये इसका इतिकाल हुआ। तो एक तरफ बाप तो ऐसा इस्लाम का दुर्सना था, दूसरी तरफ़ उसकी बेटी हज़रत उम्मे कुलसूम रज़ियल्लाहु अन्हा हैं, जिनको अल्लाह ताउला ने ईमान की दौलत अंता फरमायी और सहाबिया बन गयी।

ऐसा शक्स झूठा नहीं

बहर हाल हज़रत उम्मे कुलसूम रज़ि. फरमाती हैं कि मैँने हुजूरे
अक्कदस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह फर्माते हुए सुना कि 
जो शख्स लोगों के दरमियान सुलह की खातिर कोई अच्छी बात इतनी जरूर 
से उधर पहुँचा देता है, तो एक की बात दूसरे को इस अन्तराज से 
नकल लिए है, कि उसके दिल में दूसरे की कदंब पैदा हो, और 
नफसत दूर हो जाये, ऐसा शख्स कह जाये और झूठा नहीं है। मतलब 
यह है कि वह शख्स ऐसी बात कह रहा है जो बजाहिर सच नहीं है, 
लेकिन वह बात इसलिए कह रहा है ताकि उसके दिल से दूसरे 
मुसलमान की बुराई निकल जाये, आपस के दिल का गुबार दूर हो 
जाये और नफसतें खाल हो जाये, इस मक़सद से अगर वह ऐसी बात 
कह रहा है तो ऐसा शख्स झूठों में शुमार नहीं होगा।

खुला झूठ जायज नहीं

उलमा—ए—किराम ने फर्माया कि खुला झूठ बोलना तो जायज 
नहीं, अलबत्ता ऐसी गोल मोल बात करना जिसका जाहिरी मतलब 
तो वाकिये के ख़िलाफ है लेकिन दिल में ऐसे मायने मुराद ले लिये 
जो वाकिये के मुताबिक थे, जैसे दो आदमियों के दरमियान नफसत 
और लड़ाई है, वह उसका नाम सुनने का रवादार नहीं वह इसका 
नाम सुनने का रवादार नहीं, अब एक शख्स उनमें से एक के पास 
गया तो उसने दूसरे की शिकायत करनी शुरू कर दी कि वह तो 
मेरा ऐसा दुःखन है, तो उस शख्स ने कहा कि तुम तो उसकी 
बुराइयां बयान कर रहे हो हालांकि वह तुष्टा बड़ा खैर—ख़ाह है, 
इसलिये कि मैंने खुद सुना है कि तुम्हारे हक़ में दुआ कर रहा था। 
अब देखिये कि उसने यह दुआ करते हुए नहीं सुना था, मगर उसने 
दिल में यही मुराद लिया कि उसने यह दुआ करते हुए सुना था कि:

اللهم اغفر الملؤودين

यानी ऐ अल्लाह तमाम मोमिनों की माफ़ी से फर्मान। चूकि यह 
भी मुसलमान था इसलिये वह भी उस दुआ में दाख़िल हो गया था। 
अब सामने वाला यह समझेगा कि ख़ास तौर पर मेरा नाम लेकर
इस्लामी ख़बरतात
ज़िल्द (6)

दुआँ कर रहा होगा, ऐसी बात कह देना झूठ में दाखिल नहीं बतकि
इश्शा अल्लाह इस फर भी अज व सवाव मिलेगा।

ज़बान से अच्छी बात निकालो

और जब अल्लाह तख़ाला का कोई बन्दा अल्लाह की रिजा की
झाँरिर दो मुस्लिम भाईयों के दरमियान सुलह कराने के इरादे से
निकलता है तो अल्लाह तख़ाला उसके दिल में ऐसी बात डाल देते हैं
कि उस से ऐसी बात कही जिस से उसके दिल से दूसरे कि नफ़रत
dूर हो जाये, ऐसी बात न कहो कि उनके दरमियान नफ़रत की आग
tो पहले से लगी हुई है और अब आपने जाकर ऐसी बात सुना दी
जिस ने आग पर तेल का काम किया् और जिसके नमोजी में नफ़रत
dूर हो जाने के बजाए नफ़रत की आग और भड़क गई। यह
इन्तिहाई दरजे की मज़ालत का काम है और हुज़ूरुं अक्क़दस
सल्लल्लाहु अल्लैहि व सल्लम को इन्तिहाई ना पसन्द है।

सुलह कराने की अहमियत

हज़रत शौख सादी रह. की मशूहर कहावत आपने सुनी होगी कि:
"दरज़े मस्लिहत आमेज बेहेतर अज़ रास्ती-ए-फित्ना अंगेज"

यानी ऐसा झूठ जिसके ज़रिये दो मुस्लिमों के दरमियान
मुस्लिम बक़ूद हो उस सच से बेहतर है जिस से फित्ना पैदा हो।
लेकिन उस झूठ से मुराद यह नहीं कि सरीह (खुला) झूठ बोल दी
जाए, बल्कि ऐसी बात कह दे जो दो मायने रखती हो। जब हुज़ूरुं
अक्क़दस सल्लल्लाहु अल्लैहि व सल्लम ने इस किस्म के झूठ की
इज़ज़त दे दी तो आप इसी से अद्वाजा लगाये कि दो मुस्लिमों
के दरमियान झांड़ा ख़त्म कराने की किस कदर अहमियत है।

एक सहाबी का वाक़िआ

عن عائشة رضي الله عنها قالت: سمع رسول الله صلى الله عليه وسلم
صوت خصوم بالباب عالية اصواتهم، وإذا اجدهما يستوؤض الاخر ويستر
فته في شئ، وهو يقول: والله لا انفع، فخرج عليهم رسول الله صلى الله
दो तथ्यात्मक तथ्य पिंकल: इसमें तत्त्वात्मक रूप से नहीं है कि काउंटर दूसरे आदमी का नाम लिखता है जो शहीद था। यदि शहीद है और तत्त्वात्मक तथ्य पिंकल नहीं है, तो इसमें तत्त्वात्मक रूप से नहीं है।

उस कर्म का अंदर सारा कर्म आदा करने की गुज़ाश कहीं नहीं है, तुम कुछ कर्म ले लो, कुछ छोड़ दो, उस कर्म के अंदर उन दोनों की आवाज़ से बुलन्द हो रही थी और झगड़ने के दौरान उस कर्म ख्यात ने यह कसम खा ली कि:

**वाल्लाह ला अफूल**

ख़ुदा की कसम में कर्म करने की गुज़ाश नहीं करना। इस दौरान हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अल्लामें व सल्लम भी घर से बाहर तशीफ़ ले आये और आकर आपने पूछा वह शख्स कहां है जो अल्लाह की कसम खा कर यह कह रहा है कि मैं नेक काम नहीं करंगा? उस वक़्त वह शख्स आगे बढ़ा और कहा कि मैं हूँ ऐ अल्लाह के सल्लम और फिर फोरन दूसरा जुलाय यह कहा कि यह शख्स जितना चाहे इस कर्म में से कम दे दे, मैं छोड़ने के लिये तैयार हूँ।

**सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अनुम की हालत**

ये थे सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अनुम कहां तो ज़िज़ात का यह आलम था कि आवाज़ बुलन्द हो रही हैं, वह कम कराना चाहते थे तो यह कम करने के लिये तैयार नहीं थे, और कम न करने पर कसम भी खा ली कि मैं कम नहीं करंगा, उसके बाद न तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अल्लामें व सल्लम ने उन सहाबी को कर्म छोड़ने का हुक्म फरमाया, और न ही छोड़ने का मरियाद दिया, बल्कि सिर्फ़
इतना फर्मा दिया कि कहां है वह शक्स जो यह कसम खा रहा है कि मैं नेक काम नहीं करूंगा। बस इतनी बात सुनने के बाद वहीं ढूंढ़े पड़ गये और सारा जोश ठंडा पड़ गया, और झगड़ा खत्म हो गया। वजह यह थी कि हज़रत सहाबा—ए—किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अल्लाह और अल्लाह के रसूल सल्ल्लाहु अलैहि व सल्लम के आगे इस कृद्दर्फ फरमांबदर थे कि जब आपकी ज़बान से यह जुमला सुन लिया तो उसके बाद भजाल नहीं थी कि आगे बढ़ जायें। अल्लाह तैलाला अपनी रहमत से इस ज़ब्बे का कुछ हिस्सा हमें अंता फर्मा दे, और तमाम मुसलमानों के दरमियान आपस के इख़तिलाफ़ और झगड़े खत्म फर्मा दे, और तमाम मुसलमानों को एक दूसरे के हुकूक अदा करने की तौफीक अंता फर्मा दे, आमीन।

واخر دعاوناً أن الحمد لله رب العالمين
बीमार की इयादत के आदाब

अल्लाह के न्यून रूप से फूलकर तथापि न्यून रूप से स्तंभित, तथा प्रेम बढ़ते हैं। लगातार उन्हें न्युन रूप से फूलकर।

बाल्य के समय, अंतर्मोह से दिल्ली तथा दूसरे जोड़ों के पीछे चलना, दूसरे बीच में पीछे चलना, तीसरे छींकने वाले के "अल्हादु लिल्लाह" कहने के ज्ञान में "यार्नुकल्लाह" कहना, चौथे कमजोर आदमी की मदद करना, पांचवे मल्लूम की इमामदाद करना, छठे सलाम को शिखर देना, सातवे कृत्य खाने वाले की कुस्ती को पूरा करने में मदद करना।

ये सातों चीजें जिनका हुजूर अवकाश सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस हदीस में हुक्म फरमाया है बड़ी एहमियत रखती हैं, इसलिये एक मुसलमान की जिन्दगी के आदाब में से हैं कि वह इन बातों का एहतिमाम करें। इसलिये इन सातों चीजों को तफसील से बयान करता हूँ, अल्लाह तख्ता हम सब को इन बातों पर चुनौत के मुताबिक अभिन्न करने की तौफीक अंता फरमाये। आमीन
बीमार पुरसी एक इयादत

सब से पहली चीज जिसका हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हुक्म दिया है, वह है मरीज़ की इयादत करना, और बीमार की बीमार पुरसी करना। मरीज़ की इयादत करना यह मुसलमान के हुकूक में से भी है और यह ऐसा अमल है जिसको हम सब करते हैं। शायद ही दुनिया में कोई ऐसा शख्स होगा जिसने कभी बीमार पुरसी न की हो, लेकिन एक बीमार पुरसी तो रस्म पूरी करने के लिये की जाती है कि अगर हम उस बीमार की इयादत के लिये न गरे तो लोगों को शिकायत होगी, ऐसी सूरत में इन्सान दिल पर जबब करके इयादत करने के लिये जाता है। इसलिये कि दिल में इखलास नहीं है, एक इयादत तो यह है, लेकिन हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जिस इयादत का ज़िक्र फर्मा रहे हैं वह इयादत वह है जिसका मकःसद अल्लाह तबाहा को राजी करने के अलावा कुछ और न हो, इखलास के साथ और अज़ व सवाब हासिल करने की नियत से इन्सान इयादत करे, हदीसों में जो इयादत के फ़ज़ाइल बयान किये गये हैं वे इसी इयादत पर मुर्तत होते हैं।

सुन्नत की नियत से बीमार पुरसी करें

जैसे आप एक शख्स की इयादत करने जा रहे हैं और दिल में यह ख्याल है कि जब हम बीमार पड़ेंगे तो यह भी हमारी इयादत के लिये आयेगा। लेकिन अगर यह हमारी इयादत के लिये न आया तो फिर आइन्द्र हम भी इसकी इयादत के लिये नहीं जारी करेंगे, हमें इस की इयादत की व्या जरूरत है, इसका मतलब यह है कि यह इयादत "बदले" के लिये हो रही है, रस्म पूरी करने के लिये हो रही है, ऐसी इयादत पर कोई सवाब नहीं मिलेगा, लेकिन जब इयादत करने से अल्लाह तबाहा की रिज़ा मकःसूद हो तो इस सूरत में आदमी यह नहीं देखता कि जब में बीमार हुआ था उस वक़्त यह मरी इयादत के लिये आया था या नहीं? बल्कि यह यह सोचता है कि अगर यह नहीं
शैतानी हबें

यह शैतान हमारा बढ़ा। दुश्मन है इसने हमारी अंधकारी इबादतों का मलियामेट कर रखा है, अगर हम उन इबादतों को सही नियत और सही इरादे से करें तो उन पर हमें अल्लाह तबाला की तरफ से बढ़ा अज्ञ व सवाब मिलेगा, और आखिरत का बढ़ा ज़ख़ीरा जमा हो जायेगा, लेकिन शैतान यह नहीं वाह्यत कि हमारे लिये आखिरत में अज्ञ व सवाब का बढ़ा ज़ख़ीरा जमा हो जायेगा, इसलिये वह हमारी बहुत सी इबादतों में हमारी नियतों को ख़राब करता रहता है, जैसे अज्ञ और रिश्वतों जा दोस्त अहबाब से मेल मुलाकात करना, उनके साथ अच्छा सुनौक करना, उनको हदिया या तोहफा देना, ये सब बढ़े अज्ञ व सवाब के काम हैं, और सब दीन का हिस्सा हैं और अल्लाह तबाला को बहुत महबूब हैं, और इन कामों पर अल्लाह तबाला की तरफ से बढ़े अज्ञ व सवाब के वादे हैं, लेकिन शैतान नियत को ख़राब कर देता है जिसके नतीज़े में वह शख्स यह सोचता है कि जो शख्स मेरे साथ जैसा सुनौक करेगा मैं भी उसके साथ जैसा ही सुनौक करंगा। जैसे फलां शख्स के घर से मेरे घर कोई हदिया नहीं आया, मैं उसके घर क्यों हदिया भेजू? जब मेरे यहां शादी हुई थी तो उसने कुछ नहीं दिया था मैं क्यों हदिया दूं? और फलां शख्स ने क्योंकि हमारे यहां शादी के मौके पर तोहफा दिया था इसलिये मैं भी उसकी शादी में ज़फ़र तोहफा दूंगा, जिसका नतीजा यह हुआ कि एक मुसलमान भाई को हदिया और तोहफा देने का अमल जिसकी हुज़ूरे अक्दास सल्लल्लाहु अल्लाहिव सल्लम ने बड़ी
फजीलत बयान फरमायी थी, शैतान ने उसके अज व सवाब को ख़ाक में मिला दिया, और अब आपस में हदिये और तोहफे का लेन देन जो हो रहा है वह बतौर रस्म के हो रहा है, और बतौर “न्योला” हो रहा है, यह सिला रहमी नहीं है।

सिला रहमी की हकीकत

सिला रहमी वह है जो इस बात को देखे बगार की जाये कि दूसरे ने मेरे साथ क्या सुलूक किया था, नबी करीम सल्लल्लाहु अल्लाह व सल्लम की तालीम पर कुर्बान जाये, आपने फरमाया कि—

ليس الواصل بالمكنافي لكن الوصل من اناقطعه رحمة وصلها (بخارى شريف)

यानी“ वह शख्स सिला रहमी करने वाला नहीं है जो मुकाफ़ात करे और बदला दे और हर वक़्त इस नाप तौल में लगा रहे कि उसने मेरे साथ क्या सुलूक किया था और मैं उसके साथ क्या सुलूक करूँ, बल्कि सिला रहमी करने वाला दर हकीकत वह शख्स है कि दूसरे शख्स के रिश्ता तोड़ने के बावजूद यह उसके साथ सिला रहमी कर रहा है, या जैसे दूसरा शख्स तो उसके लिये कभी कोई तोहफा नहीं लाया, लेकिन यह उसके लिये तोहफा लेकर जा रहा है, और इस नियत से लेजा रहा है कि तोहफा देने का मतलब तो अल्लाह तख़्ता को राजी करना है, और हुजूर अल्लाह सल्लल्लाहु अल्लाह व सल्लम की सुनन्त पर अमल करना है, इसलिये दूसरा शख्स हदिया दे या न दे मैं तो हदिया दूंगा, इसलिये कि मैं बदले का कायाल नहीं हूँ, मैं इसका दुरुस्त नहीं समझता, हकीकत में ऐसा शख्स सिला रहमी करने वाला है, इसलिये हर मामले में तराजू लेकर मत बैठ जाया करूँ कि उसने मेरे साथ क्या सुलूक किया था, जैसा उसने किया था मैं भी वैसा ही करफा, यह गुलत है, बल्कि सिला रहमी को इबादत समझ कर अन्तर्न देना चाहिये। जब आप नमाज़ पढ़ते हैं तो क्या उस वक़्त आपको यह ख़ुशाल आता है कि मेरा दोस्त तो नमाज़
नहीं पढ़ता इसलिये मैं भी नहीं पढ़ता, या मेरा दोस्त जैसी नमज़ पढ़ता है मैं भी वैसी ही नमज़ पढ़ूँ, नमज़ के बाद यह ख्याल नहीं आता इसलिये कि उसकी नमज़ उसके साथ तुम्हारा असल तुम्हारे साथ, बिल्कुल इसी तरह सिला रहने भी एक इबादत है, अगर वह सिला रहने की इबादत अन्जाम नहीं दे रहा है तो तुम तो इस इबादत को अन्जाम दो, और अल्लाह तख़ाला के हक़ की इतालत करो। इसी तरह अगर वह तुम्हारी इयादत के लिये नहीं आ रहा है तो तुम तो उसकी इयादत के लिये जाओ, इसलिये कि इयादत करना भी एक इबादत है।

बीमार पुरस्क की फ़ज़ीलत

यह इबादत भी ऐसी अजीमुस्तान है कि एक हदीस में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहिव सल्लम ने फरमाया—

"إِنَّ الْمُسْلِمَ إِذَا عَادَ أَحَدُ الْمُسْلِمِينَ لَيْزَلُّ فِي جَرْفِ الْجَنَّةِ حَتَّى يُرْجِعَ"

(سمع شريف)

यानी जब एक मुसलमान दूसरे मुसलमान भाई की इयादत करता है, जितनी देर वह इयादत करता है वह मुस्लिम जन्तु के बाग में रहता है, जब तक वह वापस न आ जाये। एक दूसरी हदीस में हुजूर सल्लल्लाहु अलैहिव सल्लम ने इरशाद फरमाया—

"مَا يُنَسِّي وَإِنْ عَادَةٌ عَشِيَّةٌ إِلَّا صَلَّى عَلَيْهِ سَبْعَةً أَلْفَ مَلِكٍ حَتَّى يُرْجِعُ وَكَانَ لَهُ حَرِيفٌ فِي الْجَنَّةِ"

(ترمیف شريف)

यानी जब कोई मुसलमान बंदा अपने मुसलमान भाई की इयादत करता है तो सुबह से लेकर शाम तक सत्तार हजार फरिस्ते उसकी मगफ़िरत की दुआ करते रहते हैं, और अगर शाम को इयादत करता है तो शाम से लेकर सुबह तक सत्तार हजार फरिस्ते उसके हक में मगफ़िरत की दुआ करते रहते हैं, और अल्लाह तख़ाला जन्तु में उसके लिये एक बाग मुताब्यन फरमा देते हैं।
सत्तर हज़ार फरिश्तों की दुआ हासिल करें

यह कोई मामूली अजब व सवाब है? फर्ज़ करें कि घर के करीब एक पड़ोसी बीमार है, तुम उसकी इयादत के लिये चले गये और पांच मिनट के अन्दर इतने अजीमुशाश अजब के दावेदार बन गये। क्या फिर भी यह देखोगे कि वह मेरी इयादत के लिये आया था या नहीं? अगर उसने यह सवाब हासिल नहीं किया, अगर उसने सत्तर हज़ार फरिश्तों की दुआएं नहीं ली, अगर उसने जनन्त का बाग हासिल नहीं किया तो क्या तुम भी यह कहोगे कि मैं भी जनन्त का बाग हासिल नहीं करना चाहता, और मुझे भी सत्तर हज़ार फरिश्तों की दुआओं की ज़रूरत नहीं, इसलिये कि उसे ज़रूरत नहीं। देखिये: इस अजब व सवाब को अल्लाह तख़्लाला ने कितना आसान बना दिया है, लूट का मामला है। इसलिये इयादत के लिये जाओ, चाहे दूसरा शख्स तुर्कारी इयादत के लिये आये या न आये।

अगर बीमार से नाराज़गी हो तो

बल्कि अगर वह बीमार ऐसा शख्स है जिसकी तरफ से तुम्हारे दिल में कराहियत है, उसकी तरफ से दिल खुला हुआ नहीं है, तबीयत को उस से मुनासबत नहीं है, फिर भी इयादत के लिये जाओगे तो इन्होंने अल्लाह दोहरा सवाब मिलेगा, एक इयादत करने का सवाब और दूसरे एक ऐसा मुसलमान जिसकी तरफ से दिल में ना गवारी थी उस ना गवारी के होते हुए तुमने उसके साथ हमदर्दी का मामला किया, इस पर अलग सवाब मिलेगा, इसलिये मरीज की इयादत मामूली चीज़ नहीं है, ख़ुदा के लिये रसम बना कर इसके सवाब को जाया मत करो, सिर्फ़ इस नियत से इयादत करो कि हुज़ूरे अकदस सल्लल्लाहु अल्लाहि व सल्लम का हुक्म है, आपकी सुनन्त है, और इस पर अल्लाह तख़्लाला अजब अता फरमाते हैं।

मुक्तसर इयादत करें

हुज़ूरे अकदस सल्लल्लाहु अल्लाहि व सल्लम ने इयादत के भी
कुछ आदाद बयान फरमाये हैं, जिन्दगी का कोई शोक ऐसा नहीं है जिसकी तफसील आपने बयान न फरमायी हो, ऐसे ऐसे आदाद आप बता कर तशरीफ़ ले गये जिनको आज नमन जिला दिया और उन आदाद को जिन्दगी से खारिज कर दिया, जिसका नतीजा यह है कि यह जिन्दगी अजाज़ बनी हुई है, अगर हम इन आदाद और तालीमात पर अमल करना शुरू कर दें तो जिन्दगी जन्मत बन जाये, सुनाए इयादत के आदाद बयान करते हुए आपने फरमाया—

मनु मुक्तम फ़ेलः झः

यानी जब तुम किसी की इयादत करने जाओ तो हलकी फुलकी इयादत करो, यानी ऐसा न हो कि हमदर्दी की खातिर इयादत करने जाओ और जाकर उस मरीज को तक्लीफ़ पहुँचाओ, बल्कि वक़्त देख तो कि यह वक़्त इयादत के लिये मुनासिब है या नहीं? यह वक़्त उसके आराम करने का तो नहीं है? या इस वक़्त वह घर वालों के पास तो नहीं होगा? इस वक़्त में उसको पद्दा दृष्टिकोण का इन्तजाम करने में तक्लीफ़ तो नहीं होगी? इसलिये मुनासिब वक़्त देख कर इयादत के लिये जाओ।

यह तरीक़ा सुन्नत के ख़िलाफ़ है

और जब इयादत के लिये जाओ तो मरीज के पास ठोढ़ा बैठो, इतना ज़ियादा मत बैठो कि उसको गरानी होने लगे, हुज़ूरे अक्बऱ सल्लातुल्ला विनायित से वाकिफ़ हो सकता है, देखिये बीमार की तब्रः ख़़ासियाँ यह होती है कि वह ज़रा वे तक्लीफ़ रहे, हर काम बिला तक्लीफ़ अन्जाम दे, लेकिन जब कोई मेहमान आ जाता है तो उसकी वजह से तबीयत में तक्लीफ़ आ जाता है, जैसे वह पांव फ़ैला कर लेता चाहता है, मेहमान के अहितिकाम की वजह से नहीं लेता सकता, या अपने घर वालों से कोई बात करना चाहता है मगर उसकी वजह से नहीं कर सकता, अब हुआ यह कि तुम तो इयादत की नियत से सवाब कमाने के लिये गये लेकिन तुम्हारी वजह
हज़रत अबुदुल्लाह बिन मुबारक रह. का एक वाक़िआ

हज़रत अबुदुल्लाह बिन मुबारक रह. जो बहु ऊँचे दरजे के सूफ़िया में से हैं, मुहद्दिस भी हैं, फ़क़ीह भी हैं, अल्लाह तत्त्वा ने उनको बहुत से कमालात अता फेरमाये थे। एक मर्त्या बीमार हो गये, अब चूकिंग अल्लाह तत्त्वा ने बहुत ऊँचा गकाम अता फेरमाया था इसलिये आप से मुहब्बत करने वाले लोग भी बहुत थे, इसलिये बीमारी के दौरान इयाद दर्जने वालों का तांता बंधा हुआ था, लोग आ रहे हैं और खेरियत पूछ कर वापस जा रहे हैं, लेकिन एक साहिब ऐसे आए जो वही जम कर बैठ गये और वापस जाने का नाम ही नहीं लेते थे, हज़रत अबुदुल्लाह बिन मुबारक रह. की ख़वाहिश यह थी कि यह साहिब वापस जायें तो मैं अपने जहरी काम बिला तकल्लुफ़ अताज़ दूं और घर वालों को अपने पास बुलाकर, मगर वह साहिब तो इधर उधर की बातें करने में लगे रहे, जब बहुत देर गुज़र गई और वह शख़्स जाने का नाम ही नहीं ले रहा था तो आख़िर हज़रत अबुदुल्लाह बिन मुबारक रह. ने उस शख़्स से फेरमाया कि भाई यह बीमारी तो अपनी जगह थी मगर इयाद करने वालों ने
अलग परेशान कर रखा है, कि न मुनासिब वक्ता देखते हैं और न आराम का स्खलन करते हैं और इयादत के लिये आ जाते हैं, उस शख्स ने जवाब में कहा कि हज़रत यकीनन इयादत करने वालों की वजह से आपको तकलीफ़ हो रही है, अगर आप इज़ाज़त दें तो मैं दरवाज़े को बन्द कर दूं ताकि कोई आईंदा इयादत करने को न आये। वह अल्लाह का बन्दा फिर भी नहीं समझा कि मेरी वजह से हज़रते वाला को तकलीफ़ हो रही है, आखिर कार हज़रत अबुद्रुल्लाह बिन मुबारक रहे ने फ़रमाया कि हैं दरवाज़ा तो बन्द कर दो मगर बाहर जाकर बन्द कर दो। बाज़़ लोग ऐसे होते हैं कि उनके यह पहसास ही नहीं होता कि हम तकलीफ़ पहुँचा रहे हैं, बल्कि यह समझते हैं कि हम तो इनकी खिदमत कर रहे हैं।

इयादत के लिये मुनासिब वक्ता का चयन करो

इसलिये अपना रीक पूरा करने का नाम इयादत नहीं और न इयादत का यह मक्सद है कि उसके ज़रिये बर्कत हासिल हो, यह नहीं कि बड़ी मुहब्बत से इयादत को गये और जाकर शख्स को तकलीफ़ पहुँचा दी। मुहब्बत के लिये अक़्ल ज़रूरी है यह नहीं कि इज़हार तो मुहब्बत का कर रहे हैं और हक़ीकत में तकलीफ़ पहुँचायी जा रही है, ऐसी मुहब्बत मुहब्बत नहीं बल्कि वह दुश्मनी है, वह नादान दोस्त की मुहब्बत है, इसलिये इयादत में इस बात का ध्यान रखना ज़रूरी है कि जिस शख्स की इयादत के लिये गये हो उसको तकलीफ़ न हो, या जैसे आप रात को बारह बजे इयादत के लिये पहुँच गये जो उसके सोने का वक्त हैं, या दोपहर को आराम के वक्त पहुँच गये और उसको परेशान कर दिया। इसलिये अक़्ल से काम लो और लोच समझ कर जाओ कि तुझहारे जाने से उसको तकलीफ़ न पहुँचे, तब तो इयादत सुनना है वर्ना फिर वह रस्म है। बहर हाल हुजूरे अक़्ल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इयादत का पहला अदब यह बयान फरमाया कि अलैक़ फुलकी इयादत करो।
बे तकल्लुफ़ दोस्त ज़्यादा देर बैठ सकता है।
अलबत्ता बाज़़ लोग ऐसे बे तकल्लुफ़ होते हैं कि उनके ज़्यादा देर बैठने से बीमार को तकलीफ़ के बजाए तसल्ली होती है और राहत हासिल होती है, तो ऐसी सूरत में ज़्यादा देर बैठने में कोई हरज नहीं।

मेरे बालिद माजिद रह. के एक बे तकल्लुफ़ और मुहब्बत करने वाले उस्ताद हज़रत मियां असग़र हुसैन साहिब रह. एक मरम्मा बीमार हो गये, तो हज़रत बालिद साहिब उनकी इयादत के लिये तसरीफ़ ले गये, सुन्नत तरीक़े से इयादत की, जाकर सलाम किया ख़ैरियत मालूम की और दुआ की और दो चार मिनट बाद जाने की इजाज़त मांगी तो मियां असग़र हुसैन साहिब रह. ने फ़रमाया कि मियां यह जो तुमने उसूल पढ़ा है कि:

"من عادة ينكر قُليَّة فِيْكَةَ"

(यानी जो शक्स इयादत करे वह हलकी पुलकी इयादत करे) क्या यह मेरे लिये ही पढ़ा था? यह कायदा मेरे ऊपर आज़मा रहे हो? यह उसूल उस वक़्त नहीं है कि बैठने वाले के बैठने से मरीज़ को आराम और राहत मिले, तसल्ली हो, इसलिये जल्द वापस जाने की कोई जरूरत नहीं, आराम से बैठ जाओ। चुनावें हज़रत बालिद साहिब बैठ गये। बहर हाल हर जगह के लिये एक ही नुसखा नहीं होता, बल्कि जैसा मौका हो और जैसे हालात हों वैसे ही अमल करना चाहिये, इसलिये अगर आराम और राहत पहुँचाने के लिये ज़्यादा बैठेगा तो इन्ह़ा अल्लाह ज़्यादा सवार हासिल होगा, इसलिये कि असल मक़सद़ तो उसको राहत पहुँचाना और तकलीफ़ से बचाना है।

मरीज़ के हक़ में दुआ़ा करो।

इयादत करने का दूसरा अदब यह है कि जब आदमी किसी की इयादत के लिये जाये तो पहले मुख्तसर तौर पर उसका हाल पूछें कि कैसी तबीयत है? जब यह मरीज़ तकलीफ़ बयान करे तो उसके
हक में दुआ करे, क्या दुआ करे? यह भी हजूरी अक्दस सल्लल्लाहु
अल्लैहि व सल्लम हमें सिखा गये, चुनांवे हजूरी अक्दस सल्लल्लाहु
अल्लैहि व सल्लम इन अलफाज से दुआ दिया करते थे।

(صحيح بخارى)

यानी इस तक्लीफ से आपका कोई नुकसान नहीं, आपके लिये
यह तक्लीफ इस्मा अल्लाह गुनाहों से पाक होने का जरिया बनेगी।
इस दुआ में एक तरफ़ तो मरीज को तसल्ली दे दी कि तक्लीफ़ तो
आपको ज़रूर है लेकिन यह तक्लीफ़ गुनाहों से पाकी और आख़िरत
के सवाब का जरिया बनेगी।
दूसरी तरफ़ यह दुआ भी है कि ऐ
अल्लाह इस तक्लीफ़ को इसके हक में अज़ व सवाब का सबब बना
दीजिये और गुनाहों की मग्फ़ित का जरिया बना दीजिये।

"बीमारी" गुनाहों से पाकी का जरिया है

यह हदीस तो आपने सुनी होगी कि हजूरी अक्दस सल्लल्लाहु
अल्लैहि व सल्लम ने इर्दगढ़ फरमाया कि किसी मुसालमान को जो
कोई तक्लीफ़ पहुँचती है यहाँ तक कि अगर उसके पांव में कंटा
भी चुमता है तो अल्लाह तबाला उस तक्लीफ़ के बदले में कोई
न कोई गुनाह माफ़ फरमाते हैं और उसका दर्जा बुलंद फरमाते हैं।
एक और हदीस में हजूरी अक्दस सल्लल्लाहु अल्लैहि व सल्लम ने इर्दगढ़
फरमाया:

"الحمى من فيج جهنم " (بخاری شريف)

यानी यह बुख़ार जहानम की गरमी का एक हिस्सा है।

उलमा-ए-किराम ने इस हदीस की बहुत सी तसलीहत की है,
कुछ उलमा ने इसका जो मतलब बयान फरमाया है उसकी बाज़
हदीसों से ताईद भी होती है, यह भी कि बुख़ार की गरमी इस्नान के
लिये जहानम की गरमी का बदला हो गयी है, यानी गुनाहों की जल्दी
तक आख़िरत में जहानम की जो गरमी बदलाशत करनी पड़ती उसके
बदले में अल्लाह तबाला ने यह गरमी दे दी ताकि जहानम के आन्दर
उन गुनाहों की गर्मी बर्दाशत न करनी पड़े, बल्कि इस बुखार की वजह से वे गुनाह दुनिया ही में धुल जायें और माफ हो जायें। इसकी तारिक उस दुआ से होती है जो हुजूरे अक्कद सल्लल्लाहु अल्लाह व सल्लम इयादत के वंकृत किया करते थे कि:

"लातः तौहौर झाते लाला।"

यानी कोई गम न करो यह बुखार तुम्हारे गुनाहों से पाकी का जरिया और सबब बन जायेगा।

शिफ़ा हासिल करने का एक अमल

इयादत करने का तीसरा अदब यह है कि अगर मौक़ा मुनासिब हो और अगर इस अमल के जरिये मरीज़ को तकलीफ न हो तो यह अमल कर लें कि मरीज़ की पैशानी मुक्त हो रहा कर यह दुआ पढ़े:

"अल्लाह रब्ब नास्स मसूद नब्बे इश्फ़ा अन्न शाफ़ी न अन्न शफ़ा।"

यानी "अल्लाह जो तःमाम इन्सानों के रब हैं तकलीफ को दूर करने वाले हैं, इस बीमार को शिफ़ा अति फरमाईए, आप शिफ़ा देने वाले हैं आपके अलावा कोई शिफ़ा देने वाला नहीं। और ऐसी शिफ़ा अति फरमाई जो किसी बीमारी को न छोड़े।"

यह दुआ जिसको याद न हो उसको चाहिए कि इसको याद कर ले और फिर यह आदत बना लें कि जिस बीमार के पास जाये मौक़ा देख कर यह दुआ जरूर पढ़ ले।

हर बीमारी से शिफ़ा

एक और दुआ भी हुजूरे अक्कद सल्लल्लाहु अल्लाह व सल्लम से मनकूल है जो इस से भी ज्यादा आसान और मुख्तसर है, इसको याद करना भी आसान है, और इसका फायदा भी हुजूरे अक्कद सल्लल्लाहु अल्लाह व सल्लम ने बड़ा अजीम बयान फरमाया है, वो दुआ यह हैः
यानी "मेरे अज्ञति वाले अल्लाह और अजीम अर्श के मालिक से दुआ करता हूँ कि वह तुम्हारे शिकार अता फर्माया दें।"

हदीस में है कि हुजूर अक्बर सल्लल्लाहु अल्लाहि व सल्लम ने इशाद फर्माया कि जो मुसलमान बना दूसरे मुसलमान भाई की इयादत के वक़्त सात मर्तबा यह दुआ करे तो अगर उस बीमार की मौत का वक़्त नहीं आया होगा तो फिर इस दुआ की बरक़त से अल्लाह तबाला उसको सहेत अता फर्मा देंगे, हा अगर किसी की मौत का ही वक़्त आ गया तो उसको कोई नहीं टला सकता।

इयादत के वक़्त नुक़ता-ए-नज़र बदल लो।

और इन दुआओं के पढ़ने में तीन तरह से सवाब हासिल होता है, एक सवाब तो इस बात का मिलेगा कि आपने मरीज की इयादत के दौरान हुजूरे अक्बर सल्लल्लाहु अल्लाहि व सल्लम की सुनन्त पर अमल किया और वे अल्फाज़ कहे जो हुजूरे अक्बर सल्लल्लाहु अल्लाहि व सल्लम कहा करते थे, दूसरे एक मुसलमान भाई के साथ हमदर्दी करने का सवाब हासिल होगा, तीसरे उसको हक में दुआ करने का सवाब हासिल होगा, इसलिये कि दूसरे मुसलमान भाई के लिये दुआ करना अज व सवाब का सबब है, गोया कि इस छोटे से अमल के आदर तीन सवाब जमा है, इसलिये मरीज की इयादत तो हम सब करते ही हैं लेकिन इयादत के वक़्त जरा नुक़ता-ए-नज़र बदल लो और इतिहा-ए-सुनन्त की नियत कर लो, और अल्लाह तबाला को राजी करने की नियत कर लो, और इयादत के जो आदाव हैं उन पर अमल कर लो, यानी मुक़र्रसर वक़्त के लिये इयादत करो, और इयादत के वक़्त हुजूरे अक्बर सल्लल्लाहु अल्लाहि व सल्लम की बताई हुई दुआये पढ़ो तो इस्लाम अल्लाह इयादत का यह मामूली सा अमल अजीम इयादत वन जायेगा। अल्लाह तबाला हम सब को इस पर अमल करने की तौफीक अता फर्माये, आमीन।
दीन किस चीज़ का नाम है

हमारे हज़रत डॉक्टर अब्दुल हाई साहिब रह. एक बड़े काम की बात बयान फर्रामते थे, दिल पर नक्श करने के कार्य है, फर्रामते थे कि दीन सिर्फ नुक़ता-ए-नज़र की तब्दीली का नाम है, सिर्फ जरा सा नुक़ता-ए-नज़र बदल लो तो यही दुनिया दीन बन जायेगी, यही सब काम जो तुम अब तक अन्जाम दे रहे थे वे सब इवादत बन जायेंगे, और अल्लाह तब्दीला की रिझा के काम बन जायेंगे शायद यह है कि दो काम कर लो, एक नियत दुरुस्त कर लो, दूसरे उसकी तरीक़ा-ए-सुन्नत के मुताबिक अन्जाम दे दो, वसा इतना करने से वही काम दीन बन जायेगा। और बुज़ुर्गों के पास जाने से यही फायदा हासिल होता है कि वे इन्सान के नुक़ता-ए-नज़र को बदल देते हैं, सोच का अन्ताज़ बदल देते हैं और उसके बदले में इन्सान के आमाल और कामों का रूख सही हो जाता है, पहले वह दुनिया का काम था और अब वह दीन का काम बन जाता है और इवादत बन जाता है।

इवादत के वक्त हदिया ले जाना

मरीज़ की इवादत के मौके पर एक और रसूम हमारे यहां जारी है, वह यह कि बाज़ लोग समझते हैं कि जब इवादत के लिये जारी तो कोई हदिया तोहफ़ा जरूर लेकर जाना चाहिये, जैसे फल प्रदूष या बिस्कुट वगैरह, और इसको इतना जरूर समझ लिया गया है कि बाज़ लोग जब तक कोई हदिया लेकर जाने की गुंजाईश नहीं होती इवादत के लिये नहीं जाते, और दिल में यह ख्याल होता है कि अगर खाली हाथ चले गये तो वह मरीज़ या मरीज़ के घर बाले क्या सोचेंगे कि खाली हाथ इवादत के लिये आ गये। यह ऐसी रसूम है कि जिसकी वजह से शीतान ने हमें इवादत के अजीम सवाब से महसूम कर दिया है, हालांकि इवादत के वक्त कोई हदिया या तोहफ़ा लेकर जाना न सुन्नत है न फर्ज़ न वाजिब, फिर क्यों हमने
इसको अपने ऊपर लाज़िम कर लिया। खुदा के लिये इस रस्म को छोड़ दो और इसकी वजह से इयादत के फज़ाइल और उस पर मिलने वाले अज़्ज़ व सवाच के महसूम मत हो जाओ, अल्लाह तख़्लाला हम सब को दीन की सही समझ अतः फरमाये और हर काम सुन्नत के अनुसार करने की तौफीक अतः फरमाये, आमीन।

बहर हाल इस हदीस में जिन सात चीज़ों का जिक्र किया गया है उनमें से यह पहली चीज़ का बयान था, बाक़ी चीज़ों का बयान इन्स्ता अल्लाह आइन्दा जुमू अर्ज करेंगा।

وأخيرًا، دعوانيُّ أن الحمد لله رب العالمين
सलाम करने के आदाब

अल्हम्दुल्लाह तृतीय मिलने तथा संयुक्त रूप से यदि उन्हें कहा जाय तो उन्होंने अपने के अधिकृत हो गए।

"अल्हम्दुल्लाह तृतीय मिलने तथा संयुक्त रूप से यदि उन्हें कहा जाय तो उन्होंने अपने के अधिकृत हो गए।"

सात बातों का हक़म

हजरत बरा बिन आजिब रज़ी. फरमाते हैं कि हुजूर अक्फ़द सल्लाल्लाहु अलेहि व सल्लाम ने हमें सात बातों का हक़म दिया है।

नम्बर एक: मरीज़ की इजादत करना, नम्बर दो: जनाज़ों के पीछे चलना, नम्बर तीन: छिकाने वालों के अल्हम्दु लिल्लाह कहने के जवाब में यहाँ खुफ़र्रदः कहना, नम्बर चार: कमज़ोर साद्दि की मदद करना, नम्बर पाँच: मज़ूलूम की इजादत करना, नम्बर छह: सलाम को रिवाज़ देना, नम्बर सात: कुशम खाने वाले की कुशम को पूरा करने में सहयोग करना।

इन सात में से अल्हम्दु लिल्लाह पाँच चीज़ों का बयान हो चुका। छठी चीज़ है सलाम को रिवाज़ देना, और आपस में एक दूसरे से मुलाक़ात के वक्त सलाम करना। सलाम करने का तरीक़ा अल्लाह ताज़ाल ने हमारे लिये ऐसा मुक़रर फर्माया है जो सारी दूसरी कौमों से विन्यस्त जुड़ा और अलग है। हर कौम का यह दस्तूर है कि जब वे आपस में मुलाक़ात करते हैं तो कोई न कोई लफ़ज़ जक़र इस्तेमाल करते हैं। कोई “हैलो” कहता है, कोई “गुड मैनिंग” कहता
है, कोई "मुद इवनिंग" कहता है, कोई नगदते कहता है, कोई "नमस्कार" कहता है। गोया कि हर कोई वाले कोई न कोई लफज इस्तेमाल करते हैं। लेकिन अल्लाह जल्ल जलालुहु और अल्लाह के रसूल सल्लाल्लाहु अल्लाह व सल्लाम ने हमारे लिए जो लफज तजुबीज़ फरमाया है वह तबाह अल्फाज़ से नुमायां और अलग है, वह है "अस्सलामु अल्लाहु व रस्तमुल्लाहि व बारकातुहु।"

सलाम करने का फायदा

देखिए, अगर आपने किसी से मुलाकात के बज़ा "हैलो" कह दिया तो आपके इस लफज़ से उसको क्या फायदा हुआ? दुनिया का कोई फायदा हुआ या आख़िरत का कोई फायदा हुआ? जानिए कि कोई फायदा नहीं हुआ। लेकिन अगर आपने मुलाकात के बज़ा यह अल्फाज़ "अस्सलामु अल्लाहु व रस्तमुल्लाहि व बारकातुहु।" जिसका ताज़ा म्या यह है कि "तुम पर सलामती हो और अल्लाह की रहमतें और बर्फ़त हों" तो इस अल्फाज़ से यह फायदा हुआ कि आपने मुलाकात करने वाले को तीन दुआँ दे दी। और अगर आपने किसी को "गुड मार्निंग" या "गुड इवनिंग" कहा तो अभी सुबह बढ़ी, या शाम बढ़ी तो अगर इसको दुआ के मायने पर महंगूँ कर लें तो इस सूर्त से आपने जो उसको दुआ दी वह सिर्फ सुबह और शाम की हद तक महंगू है, कि तुफ़ानी सुबह अभी हो जाए, या तुफ़ानी शाम अभी हो जाए। लेकिन इस्लाम ने हमें जो कलिमा सिखाया, वह ऐसा जाने कतिपय है कि अगर एक सर्तज्जा भी किसी मुख्तिस मुहतमान का सलाम और दुआ किराये हक में अल्लाह की बारस्पार में कुबूल हो जाए तो इसका अल्लाह नवीन गन्दगी हम से दूर हो जायेगी। और दुनिया व अस्सलाम की कामयाबी हासिल हो जायेगी। वह नेता आपको दुनिया की दूसरी कौम में नहीं मिलेगी।

सलाम अल्लाह का अल्तीया है

हदीस झरिफ़ में आता है कि जब अल्लाह ताआला ने हज़रत
आदम अल्लाह को पैदा फरमाया तो अल्लाह तब अल्लाह ने उसके फरमाया कि जाओ और वह फरिश्तों की जो जमाज्जत बैठी है उसको सलाम करो और वे फरिश्ते जो जवाब दें उसको सुनना, इसलिये कि वह तुहारा और तुहारी औरलाद का सलाम होगा। चुनावे हज़रत आदम अल्लाह ने जाकर सलाम किया "अस्सलामु अलैकुम" तो फरिश्तों ने जवाब में कहा "व अलैक्कुमुस्सलाम व रहमतुल्लाहि" चुनावे फरिश्तों ने लफज "रहमतुल्लाहि" बढ़ा कर जवाब दिया। यह नेमात अल्लाह तब ने हमें इस तरह अर्का फरमाई। अगर जरा गौर करें तो यह इतनी बड़ी नेमात है कि इसका हद और हिसाब नहीं। अब इस से ज्यादा हमारी बद नस्ली बया होगी कि इस आला तरीन कलिमे का छोड़ कर हम अपने बच्चों को "गुड मॉर्निंग" और गुड इव्निंग" सिखाएं और दूसरी कुमाओं की नक़काली करें। इस से ज्यादा ना कदरी और ना शुकी और महरूमी और क्या होगी। (बुखारी शरीफ)

सलाम करनें का अर्थ व सबब

अफज़ल तरीक़ा यह है कि मुलाक़ात ओ दक्त पूरा सलाम किया जाए। यानी "अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व ब–रकातुहूं" सिफर "अस्सलामु अलैकुम" कह दिया तो तब भी सलाम हो जायेगा लेकिन तीन जुलूसे बोलने में ज्यादा अर्थ व सबब है। हदीस शरीफ में आता है कि एक मर्मता हुजूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मिलिंस तरीफ़ फरमा थे, एक सहाबी तरीफ़ लाए और कहा: "अस्सलामु अलैकुम" अपने उनके सलाम का जवाब दिया और फरमाया: "दस" उसके बाद दूसरे सहाबी आए और आकर सलाम किया, "अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि" अपने उनके सलाम का जवाब दिया और फरमाया: "बीस" उसके बाद तीसरे सहाबी आए और आकर सलाम किया, "अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व ब–रकातुहूं" अपने उनके सलाम का जवाब दिया और फरमाया: "तीस"। आपका मतलब यह था कि "अस्सलामु अलैकुम" कहने में इन्सान को दस नेकियों
का सवाब मिलता है, और "अस्सलामु अलैक्कुम व रहमतुल्लाह" कहने में बीस नेकियों का सवाब मिलता है, और "अस्सलामु अलैक्कुम व रहमतुल्लाहि व ब-रकातुहु" कहने में टीस नेकियों का सवाब मिलता है। अगर शुमल की सुनन्त सिर्फ "अस्सलामु अलैक्कुम" कहने से अदा हो जाती है। देखिए इन अल्फाज़ में दुआ भी है और अज व सवाब अलग है। (अबू दाउद शरीफ)

और जब सलाम किया जाए तो साफ अल्फाज़ से सलाम करना चाहिए, अल्फाज़ बिगाड़ करके सलाम नहीं करना चाहिए। बाज़़ लोग इस तरह सलाम करते हैं कि जिसकी वजह से पूरी तरह समझ में नहीं आता कि क्या अल्फाज़ कहे? इसलिये पूरी तरह वाज़ह करके "अस्सलामु अलैक्कुम" कहना चाहिए।

सलाम के वक्त यह नियत कर लें

एक बात में और गौर कीजिए कि हज़ूर अक्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल मे हमें जो किसी तल्कीन फरमाया वह है "अस्सलामु अलैक्कुम" जो जमा का सीगा है। "अस्सलामु अलैक्कुम" नहीं फरमाया, इसलिये कि "अस्सलामु अलैक्कुम" के मायने हैं: तुझ पर सलामती हो, और अस्सलामु अलैक्कुम" के मायने हैं कि तुम पर सलामती हो। इसकी एक वजह तो यह है कि जिस तरह हम लोग अपनी गुफ़्तगु में "तू" के बजाए "तुम" या "आप" के लफज़ से ख़िताब से करते हैं, जिस के जरिये मुख़ातब की ताजीम मक़सूद होती है, इसी तरह "अस्सलामु अलैक्कुम" में जमा का लफज़ मुख़ातब की ताजीम के लिए लाया गया है।

लेकिन बाज़़ उलमा ने इसकी वजह यह बयान फरमाई है कि इस लफज़ से एक तो मुख़ातब की ताजीम मक़सूद होती है, दूसरे यह कि जब तुम किसी को सलाम करो तो सलाम करने वक्त यह नियत करो कि मैं तीन अफ़राद पर सलाम करता हूँ। एक इस शख़्स को और दो उन फरिष्टों को सलाम करता हूँ जो इसके साथ हर वक्त
रहते हैं, जिनको "किरामन् कातिबीन" कहा गया है। एक फरिश्ता
इन्सान की नेकिया लिखता है, दूसरा फरिश्ता उसकी बुराइयां लिखता
है, इसलिये सलाम करते वक़्त उनकी नियत भी कर लो, ताकि
तुम्हारा सलाम तीन अफ़राद को हो जाए। और अब इन्हा अल्लाह
तीन अफ़राद को सलाम करने का सवाब मिल जाएगा। और जब तुम
फरिश्तों को सलाम करोगे तो वे तुम्हारे सलाम का ज़कर जवाब देंगे
और इस तरह उन फरिश्तों की दुआः तुम्हें हासिल हो जायेगी जो
अल्लाह तबाला की मासूम मझ्लुक हैं।

नमज में सलाम फरते वक़्त की नियत

इसी वजह से बुजुर्गों ने फरमाया कि नमज के अन्दर जब
आदमी सलाम फरे तो दाहिनी तरफ सलाम फरते वक़्त यह नियत
कर ले कि मेरे दायें जितने मुसलमान और जितने फरिश्ते हैं उन सब
पर सलामती भेज रहा हूं। और जब बायी जानिब सलाम फरे तो उस
वक़्त यह नियत कर ले कि मेरी बायी जानिब जितने मुसलमान और
जितने फरिश्ते हैं, उन सब पर सलामती भेज रहा हूं। और फिर यह
मुक़म नहीं है कि तुम फरिश्तों को सलाम करो और वे जवाब न दें,
वे ज़कर जवाब देंगे, और इस तरह उनकी दुआः तुम्हें हासिल हो
जायेगी। लेकिन हम लोग बे ख़ाली में सलाम फरे देते हैं और नियत
नहीं करते, जिसकी वजह से इस अज़ीमः फ़ायदे और सवाब से
महरूम रह जाते हैं।

जवाब सलाम से बढ़ कर होना चाहिए

सलाम की शुरुआत करना अज़ व सवाब का सबब और सुन्नत
है। और सलाम का जवाब देना वाजिब है, कुरआन करिम का इरशाद
है:"

"जब तुम लोग सलाम किया जाए तो तुम उसके सलाम से बढ़ कर जवाब दो, या कम से कम वैसा जवाब दो जैसा उसने
सलाम किया। जैसे किसी ने “अस्सलामु अलैकुम” कहा तो तुम “व अलैकुमस्सलाम” तथा वह रहमतुल्लाहि ब—रकातुहू” कहे ताकि जवाब सलाम से बढ़ कर हो जाए, वरना कम से कम “व अलैकुमस्सलाम” ही कह दो ताकि जवाब बराबर हो जाए।

मजिलस में एक बार सलाम करना
अगर मजिलस में बहुत से लोग बैठे हैं और एक शख्स उस मजिलस में आए, तो वह आने वाला शख्स एक बार सब को सलाम कर ले तो यह काफ़ी है। और मजिलस में से एक शख्स उसके सलाम का जवाब दे दे तो सब की तरफ से वाजिब अदा हो जाता है। हर एक को अलग जवाब देने की ज़रूरत नहीं।

इन मौक़ों पर सलाम करना जायज़ नहीं
सलाम करना बहुत सी जगहों पर ना जायज़ भी हो जाता है। जैसे जब कोई शख्स दूसरे लोगों से कोई दीन की बात कर रहा हो और दूसरे लोग सुन रहे हों तो उस वक्त आने वाले को सलाम करना जायज़ नहीं बल्कि सलाम किए बगैर मजिलस में बैठ जाना चाहिए। इसी तरह अगर एक शख्स तिलावत कर रहा है, उसको भी सलाम करना जायज़ नहीं। इसी तरह जिक्र करने वाले को सलाम करना जायज़ नहीं। खुलासा यह है कि जब कोई आदमी किसी काम में मश्शूल हो और इस बात का अंदेशा हो कि तुम्हारे सलाम का जवाब देने से उसके काम में हर्ज होगा, ऐसी सूरत में सलाम करने को पसन्द नहीं किया गया। इसलिये ऐसे मौक़े पर सलाम नहीं करना चाहिए।

दूसरे के ज़रिये सलाम भेजना
कभी कभी ऐसा होता है कि एक शख्स दूसरे शख्स का सलाम पहुँचाता है, कि फलां शख्स ने आपको सलाम कहा है, और दूसरे शख्स के ज़रिये सलाम का भेजना भी सुनना है और यह भी सलाम के कायम मकाम है, और इसके ज़रिये भी सलाम की फ़ज़ीलत
हासिल हो जाती है। इसलिये जब किसी को दूसरे का सलाम पहुँचाया जाए तो उसके जवाब का भस्मणून तरीका यह है “अलैहिम व अलैकुमस्लाम” इसका मतलब यह है कि उन पर सलामती हो जिन्हें ने सलाम भेजा है, और तुम पर भी सलामती हो। इसमें दो सलाम और दो दुआएं जमा हो गयीं और दो आदमियों को दुआ देने का सवाब मिल गया।

बाज़ लोग इस मौक़े पर सिर्फ “व अलैकुमस्लाम” से जवाब देते हैं। इस से जवाब तो अदा हो जायेगा, लेकिन यहीं जवाब नहीं होगा, इसलिये कि इस सूरत में आपने उस शाख को तो सलामती की दुआ दे दी जो सलाम लाने वाला है, और वह शाख जो असल सलाम भेजने वाला था उसको दुआ नहीं दी। इसलिये जवाब देने का सही तरीका यह है कि “अलैहिम “व अलैकुमस्लाम” कह कर जवाब दिया जाए।

लिखित सलाम का जवाब वाजिब है

अगर किसी के पास किसी शाख का ख्त आए और उस ख्त में “अस्लामु अलैकुम व रहमतुल्लाह” लिखा हो तो इसके बारे में बाज़ उमला ने फरमाया कि इस सलाम का लिखित जवाब देना चूंकि वाजिब है इसलिये ख्त का जवाब देना भी वाजिब है। अगर ख्त के जरिये उसके सलाम का जवाब और उसके ख्त का जवाब नहीं देंगे तो ऐसा होगा कि जैसे कोई शाख आपको सलाम करे और आप जवाब न दें। लेकिन बाज़ दूसरे उलमा ने फरमाया कि उस ख्त का जवाब देना वाजिब नहीं है। इसलिये कि ख्त का जवाब देने में पैसे खर्च होते हैं। और किसी इस्मान के हालात कभी कभी इसके बदरास्त करने वाले नहीं होते कि वह पैसे खर्च करे, इसलिये ख्त का जवाब देना वाजिब तो नहीं है लेकिन पतनदीदा ज़रूर है। लेकिन जिस वक़्त ख्त के अन्दर सलाम के अलूफाज़ पढ़े, उस वक़्त ज़बान से उस सलाम का जवाब देना वाजिब है, और अगर ख्त पढ़ते वक़्त भी
जाबन से सलाम का जवाब न दिया और न ख़़त का जवाब दिया तो
इस सूरत में वाजिब के छोड़ने का गुनाह होगा। इसमें हम से कितनी
कोटाही होती है कि ख़़त आते हैं और पढ़ कर वैसे ही जाल देते हैं,
न जबांनी जवाब देते हैं, न लिखित में जवाब देते हैं। और मुफ्त में
वाजिब के छोड़ने का गुनाह अपने नामा-ए-आमाल में लिखवा लेते
हैं। ये सब ना जानकारी की वजह से कर लेते हैं। इसलिये जब भी
ख़़त आए तो फौरन सलाम का जवाब देना चाहिए।

गैर मुस्लिमों को सलाम करने का तरीका

फुजूर-ए-किराम ने लिखा है कि गैर मुस्लिमों को सलाम करना
जायज़ नहीं। अगर किसी गैर मुस्लिम से मुलाकात हो और उसे
सलाम करने की जरूरत पेश आए तो सलाम के लिये वह लफ़्ज़
इस्तेमाल करे जो लफ़्ज़ वह ख़ुद इस्तेमाल करते हैं। लेकिन, अगर
गैर मुस्लिम किसी मुसलमान से मुलाक़ात के वक्त "अस्सालामु
अलैकुम" कहे तो उसके जवाब में सिर्फ "व अलैकुम" कहे और पूरा
जवाब न दे। और यह लफ़्ज़ कहते वक्त यह नियत कर ले कि
अल्लाह तबाला की तरफ से तुम्हें हिदायत और मुसलमान बनने
की तौफ़ीक हो। इसकी वजह यह है कि हुजूर अवःस सल्ल्लल्लाहु
अलैहि व सल्लाम के जमाने में व्यक्तिगत मुनव्वरा और उसके आस पास
बड़ी तायादाद में यहूदी आबाद थे, यह कौम हमेशा से शरीर कौम है,
चुनांचे जब हुजूरे अवःस सल्ल्लल्लाहु अलैहि व सल्लाम या
सहाबा-ए-किराम रज़ि. सामने आते तो ये लोग ख़वासत से काम
लेते हुए उनको सलाम करते हुए कहते: "अस्सालामु अलैकुम" "लाम"
दरमियान से सिर्फ देते थे, अब सुनने वाला जल्दी में यही समझता
कि इसने "अस्सालामु अलैकुम" कहा है। "साम" के मायने अर्थमें
जबान में मौत और हलाकत के हैं। "अस्सालामु अलैकुम" के मायने हुए
कि तुम्हें मौत आ जाए और तुम हलाक और तबाह हो जाओ। जाहिर
में तो सलाम करते और हकीक़त में बद-दुआ देते थे। कुछ दिन
तक यह मामला चल गया लेकिन चन्द दिनों के बाद सहाबा ने समझ लिया कि ये लोग जान बूझ कर दरमियान से "लाम" ख़त्म कर के "अस्सामु अलैकुम" कहते हैं।

(बुख़ारी श्रीरफ)

एक यहूदी का सलाम करने का वाक़िआ

एक बार यहूदियों की एक जमात ने आकर हुज़ूरे अक्बर सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम को इस तरह सलाम किया: "अस्सामु अलैकुम" हज़रत आयशा रज़ि. ने जब यह अल्फ़ाज़ सुने तो उनको गुस्सा आ गया और जवाब में हज़रत आयशा रज़ि. ने फरमाया: "अलैकुमस्साम वल्लांवन्त्" यानी तुम पर हलाक़त हो और लाना हो, दो लफ़ज़ बोल दी, हुज़ूरे अक्बर सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस नए आयशा रज़ि. ने तुर्की बतौरी जवाब दिया है, तो अपने हज़रत आयशा रज़ि. से फरमाया: ऐ आयशा ऐ जाओ और नर्मी से काम लो, फिर फरमाया:

"अन ल्लाह यहूदो किये क्रोध के लायक"

यानी अल्लाह तः अल्लाह हर मामले में नर्मी को पस्ता फरमाते हैं, हज़रत आयशा रज़ि. ने अर्ज दिया कि या रसूलल्लाह! ये कैसे गुस्सा है कि आप से ख़िताब करते हुए "अस्सामु अलैकुम" कह रहे हैं और हलाक़त की बद-दुआ दे रहे हैं! अपने फरमाया: ऐ आयशा! क्या तुमने नहीं सुना कि मैंने उनके जवाब में क्या कहा? जब उन्होंने अस्सामु अलैकुम" कहा तो मैंने जवाब में कहा "व अलैकुम" मतलब यह है कि जो बद-दुआ तुम हमारे लिए कर रहे हो, अल्लाह वह तुम्हारे हक में क़बुल कर ले। इसलिये गैर मुस्लिम के जवाब में सिर्फ "व अलैकुम" कहना चाहिए, फिर अपने फरमाया:

"या उदाराणा: मानक राखो फिलिङ्गने आज़ाद न हो तुम युद्ध न आई या युद्ध न आई।"

ऐ आयशा नर्मी जिस चीज़ में भी होगी उसको जीनत बरक़ोंगी, और जिस चीज़ से निकाल दी जायगी उसको ऐंबदार कर देगी।
इसलिये मामला जहां तक हो सके नर्मी से करना चाहिए, चाहे मुकाबले पर कुष्कार ही हों। (बुखारी शरीफ)

जहां तक हो सके नर्मी करना चाहिए

आप देखिए कि यहूदी ने हुजूरें अक्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ गुस्ताफ़ी की, और हज़रत आयशा रजिया ने जो अल्फाज़ जवाब में फरमाये बजाहिर वे इस्लाम के ख़िलाफ़ नहीं थे लेकिन नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह सिखाया कि मेरी सुन्नत यह है कि नर्मी का मामला करो और उसनी बात ज़बान से अदा करो जितनी ज़रूरत है, बिला वजह अपनी तरफ से बात आगे बढ़ा कर सख़ती का बर्ताव करना अच्छी बात नहीं है।

सलाम एक दुआः

बहर हाल यह “सलाम” गामूली चीज़ नहीं, यह जबरदस्त दुआ है और इसको दुआ की नियत से कहना और सुनना चाहिए। सच्ची बात तो यह है कि अगर एक आदमी की भी दुआ हमारे हक में कुवूल हो जाए तो हमारा बेड़ा पार हो जाए। इसलिये कि दुनिया व आँखिरत की सारी नेमटें इस सलाम के अन्दर जमा हैं। यहां तुम पर सलामती हो, अल्लाह की रहमत हो और अल्लाह की वर्धत हो। इसलिये यह दुआ लोगों से लेनी चाहिए और इस शौक व ज़ोर में लेनी चाहिए कि शायद अल्लाह ताआला इसकी ज़बान मेरे हक में मुबारक करे दे।

हज़रत मारुफ़ करख़ी रह. की हालत

हज़रत मारुफ़ करख़ी रह. बड़े दर्ज के अल्लाह के वलियों में से हैं और हज़रत जुनैद बगदादी रह. के दादा पीर हैं। हज़रत जुनैद बगदादी रह. हज़रत सिर्र सकती रह. के ख़लीफ़ा हैं और सिर्र सकती रह. हज़रत मारुफ़ करख़ी रह. के ख़लीफ़ा हैं। हर वक़्त अल्लाह के जिक्र में मुरूफ़ रहते थे, कोई वक़्त अल्लाह के जिक्र से ख़ाली नहीं था। यहां तक कि एक बार हज़ाम से हज़ामत बनवा रहे
हज़रत अरफ़ कऱख़ी रहे का एक वाकिया

उनका वाकिया लिखा है कि एक बार अलक्प पर से गुज़र रहे थे, रास्ते में देखा कि एक सक्का लोगों को पानी पिला रहा है और यह आवाज़ लगा रहा है कि “अल्लाह उस बन्दे पर रहम करे जो मुझ से पानी पिए” हज़रत अरफ़ कऱख़ी उस सक्के के पास गये और उस से कहा कि एक गिलास पानी मुझे भी पिला दो, चुनांचुनां उसने दे दिया, आपने पानी लेकर पी लिया, एक साथी जो उनके साथ थे उन्होंने ने कहा कि हज़रत अप तो रोज़े से थे और आपने पानी लेकर रोज़ा तोड़ दिया। आपने फ़र्राया कि यह अल्लाह का बन्दा दुआ कर रहा था कि अल्लाह उस बन्दे पर रहम करे जो मुझ से पानी पीले, मुझे स्वयं आया कि क्या मालूम अल्लाह तालाला इसकी दुआ मेरे हक में क़बुल फ़र्राया ले, नपल रोज़ा जो तोड़ दिया इसकी क़ज़ा तो बाद में कर लूंगा लेकिन बाद में इस बन्दे की दुआ मुझे मिल सकेगी या नहीं, इसलिये मैंने इस बन्दे की दुआ के लिये पानी पी लिया।

अब आप अन्दाज़ा लगाइये कि इतने बड़े अल्लाह के बली, इतने बड़े बुजुर्ग, इतने बड़े सूफ़ी, लेकिन एक मामूली सक़के की दुआ लेने के लिये रोज़ा तोड़ दिया। क्यों रोज़ा तोड़ दिया? इसलिये कि हज़रत अल्लाह के बन्दों की दुआ मारे लेने के बहुत ज्यादा तालिब होते हैं, कि पता नहीं किस की दुआ हमारे हक में क़बुल हो जाए।
"शुक्रिया" के बजाए "जजाकुमुल्लाह" कहना चाहिए

इसी वजह से हमारे दीन में हर हर मौके लिए दुआँर्य तल्कीन की गयी है। जैसे छीकने वाले के जवाब में कहो: "यहाँमुक़ल्लाह" अल्लाह तुम पर रहम करे। मुलाक़ात के बजाए "अस्सलामु अलैकुम" कहो, तुम पर सलामती हो। कोई तुम्हारे साथ भलाई करे तो कहो "जजाकुमुल्लाह" अल्लाह तझाला तुम्हें बदला दे। आज कल यह रिवाज हो गया है कि जब कोई शख़्स दूसरे के साथ कोई भलाई करता है तो उसके जवाब में कहता है कि "आपका बहुत बहुत शुक्रिया" यह लफज़ कहना या शुक्रिया अदा करना कोई गुनाह की बात नहीं, अच्छी बात है। हदीस शरीफ़ में है कि:

"मन नै यशकर नस्ल मै यशकराले"

यानी जो शख़्स इन्सानों का शुक्रिया अदा नहीं करता वह अल्लाह का शुक्रिया भी अदा नहीं करता। ले किन शुक्रिया अदा करने का बेहतरीन तरीका यह है कि जिसका शुक्र अदा कर रहे हो उसको कुछ दुआ दे दो, ताकि उस दुआ के नतीजे में उसका कुछ फायदा हो जाए। क्योंकि अगर आपने कहा कि "बहुत बहुत शुक्रिया" तो इन अलफ़ज़ के कहने से उसको क्या मिला? क्या दुनिया व आहिरत की कोई नेमत मिल गयी, या उसको कोई फायदा पहुँचा? कुछ नहीं मिला, ले किन जब तुम्हारे "जजाकुमुल्लाह" कहा तो उसको एक दुआ मिल गयी। बहर हाल! इस्लाम में यह तरीका सिखाया गया कि क़दम क़दम पर दूसरों को दुआँ दे और दुआँएं लो। इसलिए इनको अपने मामूलात में और दिन रात की गुफ़्तगू में शामिल कर लेना चाहिए। खुद भी इनकी आदत दालों और बच्चों को भी बचपन ही से इन कलिमात को अदा करना सिखायें।

सलाम का जवाब बुल्लान्द आयाज से देना चाहिए

एक साहिब ने पूछा है कि सलाम का जवाब बुल्लान्द आयाज से देना जरूरी है या आहिरता आयाज से भी जवाब दे सकते हैं? इसका
जवाब यह है कि वैसे तो सलाम का जवाब देना वाजिब है, लेकिन इतनी आवाज़ से जवाब देना कि सलाम करने वाला वह जवाब सुन ले यह मुस्तहब और सुन्नत है, लेकिन अगर इतनी आहिस्ता आवाज़ से जवाब दिया कि मुख़ातब ने वह जवाब नहीं सुना तो वाजिब तो अदा हो जायेगा लेकिन मुस्तहब अदा नहीं होगा। इसलिये बुलंद आवाज़ से जवाब देने का एहतिमाम करना चाहिए। अल्लाह तत्पर हमें इन बातों पर अमल करने की तौफीक अता फरमाए, आमीन।

और अदुआ अल्लाहु अल्लामिहु अल्लातु अज्जालिमिहु अल्लातु अज्जालिमिहु
मुसाफ़ा करने के आदाब

अल्लाहُ اللّهِ نَحْضَرُهُ وَبَسَّمِعُهُ وَبِسْتَغْفِرُهُ وَبِنَبِيِّهِ وَبِنَتْوَكَلُّ عَلَيْهِ وَبِعَزْوُهُ

بْنِ شُرْكٍ أَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا مِنْ يَهُوَ اللّهُ فَلاَ مُضَلُّ لَهُ وَمِنْ

ُبِسْلِطَةُ فَلَا هَادِيٌّ لَهُ وَمَنْ شَهِدَ آنَ لاَ إِلَهَ إِلَّا اللّهُ وَحَدَّهُ لاَ شَريْكٌ لَهُ وَمَشَهْدُ آنَ

سَيِّدُنَا سَنِدْنَا وَمُؤَمِّنُنَا مُحَمَّدًا اْبْنُ عَبْدُ اللّهِ صَلِّي اللّهُ عَلَيْهِ وَعَلَيْهِ اْلَّي وَ

أَصْحَابِهِ وَبَارِكَ وَسَلِّمْ تَسْلِيماً كِبْرِيْاً. أَمَّا بَعْدُ:

"عن انس بن مالك رضي الله عنه قال: كان النبي صلى الله عليه وسلم إذا استقبل الرجل فصافحة، لا ينزع يده عن يده حتى يكون الرجل هو الذي ينزع. ولا يصرف وجهه حتى يكون الرجل هو الذي يصرفه، ولم يدمدما ركبتية بين يدي جليس له. " (تربذي شريف)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के

ख़ादिमें ख़ास हज़रत अन्स रज़ि.

यह हदीयी हज़रत अन्स बिन मालिक रज़ि. से रिवायत की गयी है, यह वह सहाबी हैं जिनको अल्लाह तख़ाला ने यह ख़ुसूसियत अल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़ादिम रहे, यह दिन रात हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में रहते थे, उनकी वालिदा हज़रत उस्मे सलीम रज़ि. उनको बचबन ही में हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में छोड़ कर गयी थी।

चुनांचे हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में रहते हुए ही उन्होंने होश संभाला, वह ख़ुद कसम ख़ाकर फराते हैं कि मैंने पूरे दस साल तक हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत की, लेकिन इस पूरे दस साल के अर्ते (मुदत) में सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने न कभी मुझे डांटा, न कभी मारा, और न कभी मुझ पर गुस्सा फरामाया और न
कभी मेरे किए हुए काम के बारे में यह पूछा कि तुमने ऐसा क्यों किया, और न कभी न कि ए हुए काम के बारे में यह पूछा कि तुमने यह काम क्यों नहीं किया? इस शारीफ के साथ हुजूरे अक्बर सल्ल्लाल्हु अलेहि व सल्लम ने उनकी परवरिश फरमाई। (तिरमिज्झी सरीफ)

हुजूर सल्ल्लाल्हु अलेहि व सल्लम की शाफ़कत

हजरत अनस रज़ि. फरमाते हैं कि एक बार हुजूरे अक्बर सल्ल्लाल्हु अलेहि व सल्लम ने मुझे किसी काम के लिए भेजा, मैं घर से काम करने के लिए निकला, रात्रि में देखा कि बच्चे खेल रहे हैं, (यह खुद भी बच्चे ही थे) मैं उन बच्चों के साथ खेल में लग गया, और यह भूल गया कि हुजूरे अक्बर सल्ल्लाल्हु अलेहि व सल्लम ने तो मुझे किसी काम के लिए भेजा था, जब काफ़ी देर गुज़र गयी तो मुझे याद आया, अब मुझे फिक्र हुई कि मैंने वह काम तो किया नहीं और खेल में लग गया, चुनांचे मैं घर वापस आया तो मैंने देखा कि वह काम खुद हुजूरे अक्बर सल्ल्लाल्हु अलेहि व सल्लम ने अपने मुबारक हाथ से अन्नाम दे दिया है, गन्ना अपने युग से यह पूछा तक भी नहीं कि मैंने तुमको फलां काम के लिए भेजा था, तुम ने वह काम क्यों नहीं किया? (मस्रिम शरीफ)

हुजूरे अक्बर सल्ल्लाल्हु अलेहि व सल्लम से दुआओं का हासिल करना

ख़िदमत के दौरान हुजूरे अक्बर सल्ल्लाल्हु अलेहि व सल्लम से दुआओं भी ती कि जब भी कोई ख़िदमत अन्नाम देते, उस पर हुजूरे अक्बर सल्ल्लाल्हु अलेहि व सल्लम उनको दुआओं देते, चुनांचे एक बार हुजूरे अक्बर सल्ल्लाल्हु अलेहि व सल्लम ने उनके सर पर हाथ रख कर यह दुआ फरमाई कि ऐ अल्लाह! इसकी उम्मीद और औलाद में बर्तन अता फरमा, यह दुआ इसी कुबूल हुई कि तकरीबन तमाम सहाबा में सब से आख़िर में आपकी वफाद दुई और
आप ही ने बेशुमार इस्लाम ने ताबिक़ होने का शर्फ़ बरक्शा, आपको देख कर, आपकी जियारत करके बहुत से लोग ताबिक़ बन गये, अगर आप न होते तो उनको ताबिक़ होने का शर्फ़ हासिल न होता। हजरत इमाम अबू हनीफा रह. ने हजरत अनस रज़ि. की यकीनी तौर पर जियारत की है, जिसके जरिये यह ताबिक़ बन गये, इतनी लम्बी उम्र अल्लाह तख़ाला ने अता फरमाई। और औलाद में बरकत का यह हाल था कि इतनी औलाद हुई कि वे खुद फरमाते हैं कि आज मेरी औलाद और औलाद की औलाद की तातात सो से ज्यादा हो चुकी है। (मुस्लिम शरीफ)

हदीस का तर्ज़ामा

बहर हाल हज़रत अनस रज़ि. इस हदीस में फरमाते हैं कि हुज़ूर अक्दस सल्लल्लाहु अलेहि व सल्लम का मामूल यह था कि जब कोई आपके पास आकर आप से मुसाफ़ा करता, तो आप अपना हाथ उसके हाथ से उस वक़्त तक नहीं खींचते थे जब तक वह खुद अपना हाथ न खींच ले, और आप अपना चेहरा और अपना रख उस मुलाकात करने वाले की तरफ से नहीं फरसते थे जब तक वह खुद अपना चेहरा न फर से ले। और न कभी यह देखा गया कि जब आप मलिस में लोगों के साथ बैठे हों तो आपने अपना घुटना उनमें से किसी शख़्स से आगे किया हो।

हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलेहि व सल्लम और तवाज़ो

इस हदीस में हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलेहि व सल्लम की तीन सिफ़्तें बयान की गयी हैं, पहली सिफ़्त यह बयान की गयी कि नवी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलेहि व सल्लम की तबीयत में इस कदर तवाज़ो थी कि इतने बुलंद मक़ाम पर होने के बावजूद जब कोई अल्लाह का बन्दा आप से मुलाकात करता, तो आप अपना हाथ उस वक़्त तक नहीं खींचते थे जब तक वह खुद अपना हाथ न खींच ले, और दूसरी सिफ़्त यह बयान की गयी कि आप अपना चेहरा नहीं
कहते थे जब तक वह खुद अपना चेहरा न फरे ले और तीसरी सिफत यह बयान की गयी कि आप अपना घुटना किसी से आगे नहीं करते थे।

बाज़ दूसरी रियायतों में आता है कि जब कोई शख्स आप से बात करना शुरु करता तो आप उसकी बात नहीं काटते थे, और उस वक्त तक उसकी तरफ मुरक्कब रहते थे जब तक वह खुद ही उठ कर न घुटना जाए। और अगर कोई बुहिया भी किसी काम के लिए आपको अपनी तरफ मुरक्कब करती तो आप उसके साथ उसका काम करने के लिए तर्कीफ़ ले जाते थे।

हुजूरे अब्दुस सल्ल्ल्ला हु अलीहि व सल्लम के मुसाफ़ा करने का अन्दाज़

हकीकत में हुजूरे अब्दुस सल्ल्ल्ला हु अलीहि व सल्लम की जितनी सुनन्ते हैं वे सब हमारे लिए हैं। अल्लाह ताज़ाला उन पर हम सब को अमल करने की तौर पर अधिक अंता फर्माए, आमीन। लेकिन बाज़ सुनन्तों पर अमल करना आसान है और बाज़ सुनन्तों पर अमल करना मुश्किल है। इस हदीस में जो सुनन्त बयान की गयी है कि आदमी गुसाफ़ा करने के बाद उस वक्त तक अपना हाथ न खींचे जब तक दूसरा अपना हाथ न खींच ले, और जब दूसरा बात शुरू करे तो उसकी बात न काटे, जब तक वह खुद ही बात खत्म न करे, एक मशूल इन्सान के लिए सारी जिन्दगी इस पर अमल करना बजाहिर दुस्कार मालूम होता है। इसलिए कि बाज़ लोग तो ऐसे होते हैं जो इस बात का ख्याल करते हैं कि दूसरे शख्स का ज्यादा वक्त न लिया जाए, लेकिन बाज़ लीवड़ किस्म के लोग होते हैं, जब बारें करने बैठे तो अब ख़त्म करने का नाम ही नहीं लंगे, इस किस्म के लोगों से मुलाकात के दक्षते उनकी बात सुनते रहना और उनकी बात न काटना जब तक वे खुद अपनी बात ख़त्म न करें, यह बड़ा मुश्किल काम है, खास तौर पर उस जात के लिए जिस पर दोनों
इसे यह बात मालूम हुई कि उस अजीम मकाम और मर्दों के बाबजुद जो अल्लाह तख़्ता ने आपको अल्लाह फरमाया था, आपकी तबाज़ों और इन्सानों का यह आलम था कि अल्लाह के हर बन्दे के साथ तबाज़ों और आजज़ी के साथ पेश आते थे।

दोनों हाथों से मुसाफ़ा करना सुन्नत है

इस हदीस के पहले जुल्म से दो मसूले मालूम हुए। पहला मसूला यह मालूम हुआ कि मुलाकात के बाद मुसाफ़ा करना सुन्नत है, हदीसों में अगर आप के बारे में ज्यादा तपस्सील तो नहीं आई लेकिन बुज़ुर्गों ने फरमाया कि मुसाफ़ा का वह तरीक़ा जो सुन्नत से ज्यादा करीब है, यह यह है कि दोनों हाथों से मुसाफ़ा किया जाए। बुताने बुख़रारी शरीफ़ में इमाम बुख़रारी रह. ने मुसाफ़ा के बयान पर जो बाब कायम किया उसमें हज़रत हम्दाद बिन जैद रह. का हज़रत अबुद्दल्लाह बिन मुबारक रह. से दोनों हाथों से मुसाफ़ा करना बयान किया है। (बुख़रारी शरीफ़)

और गालिबन हज़रत अबुद्दल्लाह बिन मुबारक रह. का यह कौल नक़ल किया है कि आपने फरमाया कि जब अदभुत मुसाफ़ा करे तो दोनों हाथों से करे।

एक हाथ से मुसाफ़ा करना सुन्नत के खिलाफ़ है

आजके दौर में एक तरफ़ तो अंग्रेजों की तरफ़ से फैशन चला कि एक हाथ से मुसाफ़ा करना चाहिए, दूसरी तरफ़ बाज़ हल्कों की तरफ़ से, ख़ास तौर पर सौदी अरब के हज़रत इस बारे में तशहुद इख़्तियार करते हुए यह कहते हैं कि मुसाफ़ा तो एक ही हाथ से करना सुन्नत है, दोनों हाथों से करना सुन्नत नहीं। ख़ूब समझा
लीजिए यह ख्याल गलत है। इसलिये कि हदीस में मुफरद यानी एक लफ़ज़ भी इस्तेमाल हुआ है और तस्निया यानी दो का लफ़ज़ भी आया है, और बुज़ूर्गों ने इसका जो मलब समझा वह यह है कि दोनों हाथों से मुसाफ़ा करना सुन्नत है। चुनांचे किसी हदीस में यह नहीं आया है कि हुज़ूरे अक्बर सल्ल्ला अलेहि व सल्लम ने एक हाथ से मुसाफ़ा किया, जबकि रिवायतों में दोनों हाथों से मुसाफ़ा करने का जिक्र मौजूद है। चुनांचे बुज़ूर्गने दीन में भी यही तरीका चला आ रहा है, इसी तरीके को उलामा-ए-उम्मत ने सुन्नत के करीब समझा है कि दोनों हाथों से मुसाफ़ा किया जाए।

हज़रत अबुद्दल्लाह बिन मसूरद रज़ि. फरमाते हैं कि हुज़ूरे अक़्बार सल्ल्ला अलेहि व सल्लम ने मुझे "अत्तहियात" इस तरह याद कराई कि मेरे हाथ हुज़ूरे अक़्बार सल्ल्ला अलेहि व सल्लम की दोनों हथेलियों के दरमियान थे। इस से मालूम हुआ कि हुज़ूरे अक्बार सल्ल्ला अलेहि व सल्लम के मुबारक ज़माने में भी मुसाफ़ा करने का तरीक़ा यही था, इसलिये दोनों हाथों से मुसाफ़ा करना सुन्नत से ज्यादा करीब है।

अब अगर कोई शक्क़ एक हाथ से मुसाफ़ा कर ले तो उसको में यह नहीं कहता कि उसने ना जायज़ काम किया, या इस से मुसाफ़े की सुन्नत अदा न होगी, लेकिन यह तरीक़ा इक्कियार करना चाहिए जो सुन्नत से ज्यादा करीब हो। और जिस तरीक़े को उलमा, फूरक़ा और बुज़ूर्गने दीन ने सुन्नत से करीब समझ कर इक्कियार किया हो। उसको ही इक्कियार करना ज्यादा बेहतर है।

मौक़ा देख कर मुसाफ़ा किया जाए

दूसरा मसूरत यह मालूम हुआ कि मुसाफ़ा करना अगरचे सुन्नत ज़रूर है, लेकिन हर सुन्नत का कोई महल और मौक़ा भी होता है। अगर वह सुन्नत उसके मौक़े पर अनजाम दी जाए तो सुन्नत होगी और उस पर अमल करने से इन्हें असली सलाम प्राप्त होता है।
हासिल होगा, लेकिन अगर उस सुन्नत को बे मौका और बे जगह इस्तेमाल कर लिया तो सवाब के बजाए उल्टा गुनाह का अन्देशा होता है। जैसे अगर मुसाफ़र करने से सामने वाले शख्स को तकलीफ़ पहुँचने का अन्देशा हो तो इस सूर्ख में मुसाफ़र करना दुरुस्त नहीं। और अगर ज्यादा तकलीफ़ पहुँचने का अन्देशा हो तो इस सूर्ख में मसूफ़र करना ना जायज़ है। ऐसे वक़्त में सिर्फ़ जज़ेन से सलाम करने पर बस करे और “अस्सलामु अल्लाकुम” कह दे और सामने वाला जज़ेन दे दे।

यह मुसाफ़र का मौका नहीं

जैसे एक शख्स के दोनों हाथ मरसूफ़ हैं। दोनों हाथों में सामान है और आपने गुलाक़ात के वक़्त मुसाफ़र के लिए हाथ बढ़ा दिए। ऐसे वक़्त वह बेचारा परेशान होगा। अब आप से मुसाफ़र करने की खातिर अपना सामान पहले जमीन पर रखें और फिर आप से मुसाफ़र करे इसलिए ऐसे हालत में मुसाफ़र करना सुन्नत नहीं बल्कि खिलाफ़ सुन्नत है। बल्कि अगर मुसाफ़र की वजह से दूसरी को तकलीफ़ पहुँचेगी तो गुनाह का भी अन्देशा है। आज कल लोग इस सामानले में बड़ी बे एहतियाती करते हैं।

मुसाफ़र का मकसद “मुहब्बत का इज़हार करना”

देखिए यह “मुसाफ़र” मुहब्बत का इज़हार है, और मुहब्बत के इज़हार के लिए वह तरीका इक़तियार करना चाहिए जिस से महबूब को राहत मिले, न यह कि उसके ज़रिये उसको तकलीफ़ पहुँचाई जाए। कभी कभी यह होता है कि जब कोई बुजुर्ग अल्लाह वाले किसी जगह पहुँचे तो आप लोग ने यह सोचा कि चूंकि यह बुजुर्ग हैं इन से मुसाफ़र करना ज़रूरी है। युगाच मुसाफ़र करने के लिए पूरा मज़मा उन बेचारे जो अगर चूहे मूर्ख बुजुर्ग पर टूट पड़ा, अब अन्देशा इसका है कि वह बुजुर्ग गिर पड़ेगे। उनको तकलीफ़ होगी। लेकिन मुसाफ़र नहीं छोड़ेगे, जैसे में यह है कि मुसाफ़र करके बर्तन
उस वक्त मुसाफ़ा करना गुनाह है

खास तौर पर यह बंगाल और बर्मा का जो इलाक़ा है, उसमें यह रिकार्ज़ है कि अगर किसी बुजुर्ग का बयान और तक्तीर सुनने तो बयान के बाद उन बुजुर्ग से मुसाफ़ा करना लाजगी और जरूरी समझते हैं, चुनावे बयान के बाद उन बुजुर्ग पर दूट पड़नें, इसका क्या दक्षता नहीं होगा कि जिन से मुसाफ़ा कर रहे हैं वे कहीं दब न जाएं, उनको तक्तीफ़ न पहुँच जाएं, लेकिन मुसाफ़ा करना जरूरी है।

पहली बार जब अपने वालिद मातिज़ हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद शाफी साहिब रह. के साथ बंगाल जाना हुआ तो पहली बार यह मन्ज़ुर देखने में आया कि जलसे में हज़ारों अफ़सार का मज़बा था। हज़रत वालिद साहिब ने बयान फर्माया, लेकिन जब जलसे से फारिग हुए तो सारा मज़बा मुसाफ़ा करने के लिए वालिद साहिब पर दूट पड़ा, और वालिद साहिब को वहां से बचा कर निकलना मुश्किल हो गया।

यह तो दुश्मनी है

हज़रत धानवी रह. का एक बज़ूझ है जो अपने रंगून (बर्मा) की सूरती मसिज़ में किया था। उस बज़ूझ में यह लिखा है कि जब हज़रत धानवी रह. बयान से फारिग हुए तो मुसाफ़ा करने के लिए मज़बा का इतना जोर पड़ा कि हज़रत वाला गिरते गिरते बचे। यह हकीकी मुहब्बत नहीं है, यह मुहब्बत की सिफ़र सूरत है। इसलिये कि मुहब्बत को भी अक्ल चाहिए कि जिस से मुहब्बत की जा रही है उसके साथ हमदर्दी का मान्यता किया जाए, और उसको दुख और तक्तीफ़ से बचाया जाए, यह है हकीकी मुहब्बत।

अक्शीदत की इतिहा का वाकिफ़ा

हज़रत धानवी रह. के भवाज़ (तक्तीरों) में एक किस्सा लिखा है कि एक बुजुर्ग किसी इलाके में चले गये, वहां के लोगों को उन
बुजुर्ग से इतनी अक्कीदत हुई कि उन्होंने यह फैसला किया कि उन बुजुर्ग को अब बाहर नहीं जाने देंगे, उनको यहीं रखेंगे, ताकि उनकी बर्खास्त हासिल हो, और उसकी सूरत यह समझ में आई कि उन बुजुर्ग को कूल करके यहां दफ्न कर दिया जाए ताकि उनकी यह बर्खास्त इस इलाके से बाहर न निकल जाए।

मुहब्बत के जोश में वे अक्कीदत का जो अन्दाज है उसका दीन से कोई तालुक नहीं, मुहब्बत यह है जिस से महबूब को राहत और आराम मिले। इसी तरह मुसाफ़े के वक़्त यह देख कर मुसाफ़ा करना चाहिए कि उस वक़्त मुसाफ़ा करना मुनासिब है या नहीं? इसका लिहाज रखना चाहिए। अगर दोनों हाथ मस्तूल हों तो ऐसी सूरत में राहत और आराम की नियत से मुसाफ़ा न करने में ज्यादा सवाल हासिल होगा, इन्हा अल्लाह।

**मुसाफ़ा करने से गुनाह झ़ड़ते हैं**

एक हदीस में हुजूरे अवदस सल्ल्लाल्हु अल्लाहिति व सल्लम ने इरादा फरमाया कि जब एक मुसलमान दूसरे मुसलमान से मुहब्बत के साथ मुसाफ़ा करता है तो अल्लाह तख़़ाला दोनों के हाथों के गुनाह झ़ड़ देते हैं। इसलिए मुसाफ़ा करते वक़्त यह नियत कर लेनी चाहिए कि इस मुसाफ़े के जरिये अल्लाह तख़़ाला मेरे गुनाहों की भी मग़फ़िरत फरमायेंगे और इनके भी गुनाहों की मग़फ़िरत फरमायेंगे। और साथ में यह नियत भी कर ले कि यह अल्लाह का नेके बन्दा जो मुझ से मुसाफ़ा करने के लिए आया है अल्लाह तख़़ाला इसके हाथ की बर्खास्त मेरी तरफ मुस्तकिल फरमा देंगे। ख़ास तौर पर हम लोगों के साथ ऐसे मौके बहुत पेश आते हैं कि जब किसी जगह पर तक़रीर या बयान किया तो बयान के बाद लोग मुसाफ़े के लिए आ गये।

ऐसे मौके के लिए हमारे हज़रत बादलर अबुदुल्लाह साहिब रह. फरमाया करते थे कि भाई! जब बहुत सारे लोग मुझ से मुसाफ़ा करने के लिए आते हैं तो मैं बहुत खुश होता हूँ, इसलिए खुश होता
हूं कि ये सब अल्लाह के नेक बन्दे हैं, कुछ पता नहीं कि कौन सा बन्दर अल्लाह तख़्ता के नज़दीक मकबूल बनता है, जब उस मकबूल बन्दर का हाथ मेरे हाथ से छू जायेगा तो शायद उसकी बर्फत से अल्लाह तख़्ता मुझ पर भी नवाजिश फर्मा दें। यही बातें बुजुर्गों से सीखने की हैं। इसलिये जब बहुत से लोग किसी से मुसाफ़त के लिए आये तो उस बक़्त आदमी का दिमाग़ ख़राब होने का अनदेश होता है, और यह ख़याल होता है कि जब इतनी सारी मक़्क़ूम मुझ से मुसाफ़त कर रही है और मोलिक ही रही है, हकीकत में अब मैं बुजुर्ग बन गया हूं। लेकिन जब मुसाफ़त करते बक़्त यह नियत कर ती कि शायद इनकी बर्फत से अल्लाह तख़्ता मुझे नवाज़ दें, मेरी बर्फ़त फर्मा दें, तो अब सारा नुक़ता-ए-नज़र तव्वदील हो गया। और अब मुसाफ़त करने के नतीजे में तक़बुर और अपनी बद़ाई पैदा होने के बज़ाये तवज़ो और आज़ज़ी और शिकस्तग़ी व इन्किसारी पैदा होगी। इसलिये मुसाफ़त करते बक़्त यह नियत कर लिया करो।

मुसाफ़त करने का एक अदब

हदीस के अनुसार जुम़्ले में यह बयान फर्माया कि हुज़ूरे अक़्बर सल्लल्लाहु अल्लेहि व सल्लम किसी शख़्स से मुसाफ़त के बक़्त अपना हाथ उस बक़्त तक नहीं खिचते थे जब तक सामने वाला शख़्स अपना हाथ न खिच ले। इस से मुसाफ़त करने का एक और अदब मालूम हुआ, कि आदमी मुसाफ़त करते बक़्त अपना हाथ खुद से न खिचे, यानी सामने वाले को इस बात का ईसास न हो कि तुम उसकी मुलाक़ात से उक़ता रहे हो, या तुम उसको कम दर्जा और ज़ैल समझ रहे हो, बल्कि शाग़ुनतग़ी के साथ मुसाफ़त करे, जल्दी बाज़ी न रखे। लेकिन अगर कोई शख़्स ऐसा हो जो चिंता ही जाए और आपका हाथ छोड़े ही नहीं, उस बक़्त बहर हाल गुज़ायश है कि आप अपना हाथ खिच लें।
मुलाक़ात का एक अदब

इस हदीस में हुज़ूर अढ़ादस सल्ल्ल्ल्ल्ल्ल्ल्हु अल्लाह क व भलम का दूसरा वक़्त यह बयान फर्माया कि आप मुलाक़ात के वक़्त अपना चेहरा उस वक़्त तक नहीं फेरते थे जब तक कि सामने वाला अपना चेहरा न फेर ले। यह भी हुज़ूर अढ़ादस सल्ल्ल्ल्ल्ल्ल्ल्हु अल्लाह क व भलम की सुनत है, इस सुनत पर अभाल करने में बड़ा मुज़म्मद है, लेकिन इन्सान की अपनी तरफ से यही कोशिश होनी चाहिए कि जब तक मुलाक़ात करने वाला खुद मुलाक़ात करके रख्सत न हो जाए उस वक़्त तक अपना चेहरा उस से न फेरे, लेकिन अगर कहीं मजबूरी हो जाए तो बात दूसरी है।

इयादत करने का अजीब वाक़िश्का

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह. का वाक़िश्का लिखा है कि जब आप वफ़ात के वक़्त बीमारी में थे, लोग आपकी इयादत करने के लिए आने लगे, इयादत के बारे में हुज़ूर अढ़ादस सल्ल्ल्ल्ल्ल्ल्ल्हु अल्लाह क व भलम की तालीम यह है कि:

"मनु आदमन कम विलिख़फ़्फ"

यानी जो शक्त तुम में से किसी बीमार की इयादत करने जाए उसको चाहिए कि वह हल्की पुल्की इयादत करे, बीमार के पास ज्यादा देर न बैठे, कभी कभी मरीज़ को तनहाई की ज़रूरत होती है और लोगों की मीज़ूरी में वह अपना काम बे तकल्लुफ़ी से अन्जाम नहीं दे सकता, इसलिये मुज़र्रसर इयादत करके चले आओ, उसको राहत पहुँचौ, तकलीफ़ मत पहुँचौ। बहर हाल, हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह. बिस्तर पर लेते हुए थे, एक साहिब इयादत के लिए आकर बैठ गए, और ऐसे जम कर बैठ गये कि उठने का नाम ही नहीं लेते, और बहुत से लोग इयादत के लिए आते रहे और मुज़र्रसर मुलाक़ात करके जाते रहे तब वह साहिब बैठे रहे, न उठे। अब हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक इस इतिज़ार में थे कि यह साहिब
इस्लामी खुशबात

चले जाएं तो मैं तनहाई में बे कलापुरी से अपनी ज़रूरियत के कुछ काम कर लूँ, मगर खुद से उसकी मदद जानने के लिए तय नहीं मुजाहिद नहीं समझते थे। जब काफी देर गुज़र गई और वह अल्लाह का बन्दा उठने का नाम ही नहीं ले रहा था तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह. ने उन सहित से कहा कि: यह बीमारी की तकलीफ़ तो अपनी जगह पर है ही, लेकिन इयादत करने वालों ने अलग परेशान कर रखा है कि इयादत के लिए आते हैं और परेशान करते हैं। आपका मक़सद यह था कि शायद यह अंग्रेज बात समझ कर चला जाए, मगर वह अल्लाह का बन्दा फिर भी नहीं समझा और हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक से कहा कि हज़रत! अगर आप इज़ाज़त दें तो कमरे का दर्व़ाज़ा बन्द कर दूं? ताकि कोई दूसरा शख़्स इयादत के लिए न आए, हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह. ने जवाब दिया कि: हां भाई बन्द कर दो, मगर अंदर से बन्द करने के बज़ाए बाहर से जाकर बन्द कर दो। बहर हाल, बाज़ लोग ऐसे होते हैं जिनके साथ ऐसा भामला भी करना पड़ता है, इसके बगैर काम नहीं चलता, लेकिन आम व्यक्ति में जहां तक हो सके यह कोशिश की जाए कि दूसरा यह महसूस न करे कि मुझ से किनारा किया जा रहा है। अल्लाह तााँला अपनी रहमत से हम सब को इन सुन्नतों पर अंगल करने की और इतनी कराएं, आमीन।

واخر دعوانان الحمد لله رب العالمین
छः कीमती नसीहतें

अल्लाहُ ﷲ ﺡِﻣْدُوُّهُ ﺡِﻣَﺪَّهُ ﻣَسِّيْمَةً وَيِدْوَرُ ﻣَنْ ﺑِنَآءِ اﻟّٰهِ ﻓَآ ﻳَدْوَرُ ﻣَنْ ﻳَدْوَرُ ﻣَنْ ﻳَدْوَرُ ﻣَنْ ﻳَدْوَرُ ﻣَنْ ﻳَدْوَرُ ﻣَنْ ﻳَدْوَرُ ﻣَنْ ﻳَدْوَرُ ﻣَنْ ﻳَدْوَرُ ﻣَنْ ﻳَدْوَرُ ﻣَنْ ﻳَدْوَرُ ﻣَنْ ﻳَدْوَرُ ﻣَنْ ﻳَدْوَرُ ﻣَنْ ﻳَدْوَرُ ﻣَنْ ﻳَدْوَرُ ﻣَنْ ﻳَدْوَرُ ﻣَنْ ﻳَدْوَرُ ﻣَنْ ﻳَدْوَرُ ﻣَنْ ﻳَدْوَرُ ﻣَنْ ﻳَدْوَرُ ﻣَنْ ﻳَدْوَرُ ﻣَنْ ﻳَدْوَرُ ﻣَنْ ﻳَدْوَرُ ﻣَنْ 

अल्लाहُ ﷲ ﺡِﻣْدُوُّهُ ﺡِﻣَﺪَّهُ ﻣَسِّيْمَةً وَيِدْوَرُ ﻣَنْ ﺑِنَآءِ اﻟّٰهِ ﻓَآ ﻳَدْوَرُ ﻣَنْ 

अल्लाहُ ﷲ ﺡِﻣْدُوُّهُ ﺡِﻣَﺪَّهُ ﻣَسِّيْمَةً وَيِدْوَرُ ﻣَنْ ﺑِنَآءِ اﻟّٰهِ ﻓَآ ﻳَدْوَرُ ﻣَنْ 

अल्लाहُ ﷲ ﺡِﻣْدُوُّهُ ﺡِﻣَﺪَّهُ ﻣَسِّيْمَةً وَيِدْوَرُ ﻣَنْ ﺑِنَآءِ اﻟّٰهِ ﻓَآ ﻳَدْوَرُ ﻣَنْ 

अल्लाहُ ﷲ ﺡِﻣْدُوُّهُ ﺡِﻣَﺪَّهُ ﻣَسِّيْمَةً وَيِدْوَرُ ﻣَنْ ﺑِنَآءِ اﻟّٰهِ ﻓَآ ﻳَدْوَرُ ﻣَنْ 

अल्लाहُ ﷲ ﺡِﻣْدُوُّهُ ﺡِﻣَﺪَّهُ ﻣَسِّيْمَةً وَيِدْوَرُ ﻣَنْ ﺑِنَآءِ اﻟّٰهِ ﻓَآ ﻳَدْوَرُ ﻣَنْ 

अल्लाहُ ﷲ ﺡِﻣْدُوُّهُ ﺡِﻣَﺪَّهُ ﻣَسِّيْمَةً وَيِدْوَرُ ﻣَنْ ﺑِنَآءِ اﻟّٰهِ ﻓَآ ﻳَدْوَرُ ﻣَنْ 

अल्लाहُ ﷲ ﺡِﻣْدُوُّهُ ﺡِﻣَﺪَّهُ ﻣَسِّيْمَةً وَيِدْوَرُ ﻣَنْ ﺑِنَآءِ اﻟّٰهِ ﻓَآ ﻳَدْوَرُ ﻣَنْ 

अल्लाहُ ﷲ ﺡِﻣْدُوُّهُ ﺡِﻣَﺪَّهُ ﻣَسِّيْمَةً وَيِدْوَرُ ﻣَنْ 

अल्लाहُ ﷲ ﺡِﻣْدُوُّهُ ﺡِﻣَﺪَّهُ ﻣَسِّيْمَةً وَيِدْوَرُ ﻣَنْ
सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पहली मुलाकात का वाकिया बयान कर रहे हैं, जब कि वह हुजूरे अक्बर सल्ल. को पहचानते भी नहीं थे, फरमाते हैं कि:

"मैंने एक साहिब को देखा कि लोग हर मामले में उनकी तरफ रुजू करते हैं और अपने मामलात में उन्ही से मशिवरा लेते हैं। और वह साहिब जो बात फरमा देते हैं, लोगों को उनकी बात पर इल्लआन हो जाता है। मैंने लोगों से पूछा कि यह कौन साहिब हैं?

लोगों ने बताया कि यह रस्सूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम है। जब मुझे पता चला कि आप ही अल्लाहु अक्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं तो मैंने आपके करीब जाकर इन अलफाज़ से सलाम किया।

"अलैक्ससलाम या रस्सूलुल्लाह" ये अलफाज़ मैंने दो बार कहे तो आपने फरमाया कि "अलैक्ससलाम" न कहो, बल्कि "अस्सलामु अलै-क" कहो। इसलिये कि "अलैक्ससलाम" गुद्दा का सलाम है। यानी जब गुद्दा को सलामती भेजी जाए तो उसमें लफ़्ज़ "सलाम" बाद में होता है, और "अलै-क" पहले होता है।

सलाम का जवाब देने का तरीका

इस हदीस का मतलब यह है कि बुक की पहल करती हो तो "अस्सलामु अलैक्सम" कहना चाहिए। लेकिन जब सलाम का जवाब देना हो तो इसका तरीका हदीस शरीफ़ में यह बताया गया है कि "व अलैक्सुससलाम व रहमतुल्लाह" कहा जाए। गोया कि जवाब में "अलैक्सम" का लफ़्ज़ पहले लाया जायेगा। अगर कोई शख्स "अस्सलामु अलैक्सम" के जवाब में "अस्सलामु अलैक्सम" कह दे तो वाजिब तो अदा हो जायेगा। लेकिन सुन्नत यह है कि जवाब में "व अलैक्सुससलाम" कहे। आज कल यह रीत पढ़ गयी है कि "अस्सलामु अलैक्सम" के जवाब में भी "अस्सलामु अलैक्सम" कह दिया जाता है। यह सुन्नत के ख़िलाफ़ है।
दोनों पर जवाब देना वाजिब है

अगर दो आदमी एक दूसरे से मिले और हर एक दूसरे को सलाम में पहल करना चाहें, जिसके तत्त्वों में दोनों एक साथ एक ही वक़्त में "अस्सलामु अल्लाम" कहें तो इस सूरत में दोनों पर एक दूसरे के सलाम का जवाब देना वाजिब हो जायेगा। इसलिये दोनों "व अल्लामुस्लाम" भी कहें। क्योंकि उनमें से हर एक ने दूसरे को सलाम करने की पहल की है। इसलिये हर शख्स पर जवाब देना वाजिब हो गया।

शरीअत में अल्फाज़ भी मक्सूद हैं

इस हदीस से एक और बुनियादी बात मालूम हुई जिस से आज कल लोग बड़ी गप्पलत बरतते हैं, वह यह कि हदीसों के मायने, मफ़हूम और रूह तो मक्सूद है ही, लेकिन शरीअत में अल्लाह और अल्लाह के रसूल सल्लाल्हाॅल्लाहु आलैहि व सल्लम के बताये हुए अल्फाज़ भी मक्सूद हैं। देखिए "अस्सलामु अल्लाम" और "व अल्लामुस्लाम" दोनों के मायने तो एक ही हैं, यानी तुम पर सलामती हो, लेकिन हुजूरे अक्बर सल्लाल्लाॅल्लाहु आलैहि व सल्लम ने हज़रत जाहिर बिन सुलैम रज़ियल्लाहु अन्हु को पहली मुलाकात ही में इस पर तंबिह फर्साई कि सलाम करने का सुन्नत तरीक़ा और सही तरीक़ा यह है कि "अस्सलामु अल्लाम" कहो। ऐसा क्यों किया? इसलिये कि इसके जरिये आपने उम्मत को यह सबक दे दिया कि "शरीअत" अपनी मर्ज़ी से रास्ता बना कर चलने का नाम नही है बल्कि "शरीअत" अल्लाह और अल्लाह के रसूल सल्लाल्लाहु आलैहि व सल्लम की इतिबा का नाम है।

आज कल लोगों की जबानों पर अक्सर यह रहता है कि शरीअत की रूह देखनी चाहिए। जाहिर और अल्फाज़ के पीछे नहीं पड़ना चाहिए। मालूम नहीं कि वे लोग रूह को किसी तरह देखते हैं, उनके पास कौन सी ऐसी दृष्टि है जिसमें उनको रूह नज़र आ जाती है।
हालांकि शरीअ़त में रूह के साथ जाहिर भी मतलूब और मक्सूद है।
सलाम ही को ले लें कि आप मुलाकात के बज़ार “अस्सलामु अल्लाहु”
के बजाए उद्दू में यह कह दें “सलामती हो तुम पर” देखिए मायने
और मफ़्हूम तो इसके वही हैं जो “अस्सलामु अल्लाहु” के हैं लेकिन
वह बरकत, वह नूर और सुन्नत की इतिबार का अज व सवाब इसमें
हासिल नहीं होगा जो “अस्सलामु अल्लाहु” में हासिल होता है।

सलाम करना मुसलमानों का शिकार है

यह सलाम मुसलमानों का शिकार है। इसके ज़रिये इन्सान
पहचाना जाता है कि यह मुसलमान है। एक बार मेरा चीन जाना
हुआ और चीन में मुसलमानों की बहुत बड़ी तायहदाद आबाद है।
लेकिन उनकी ज़बान ऐसी है जो हमारी समझ में नहीं आती थी,
हमारी ज़बान उनकी समझ में नहीं आती थी। इसलिये उनसे बात
चीत करने और ज़बान के इज़हार का कोई ज़रिया नहीं था। लेकिन
एक चीज हमारे दरभिमान मुश्तरक थी, वह यह तो ज़बान की
कि मुसलमान से मुलाकात होती तो वह कहता “अस्सलामु अल्लाहु व
रजतमुल्ला हिम व बरकातुहू” और इसके ज़रिये वह ज़बान का
इज़हार करता। यह हुज़ूरुर अक्दस सल्लल्लाहु अल्लाहु व सल्लम के
सुन्नत की इतिबार की बरकत थी। इस सुन्नत ने तभाय मुसलमानों को
एक दृश्य हुआ है, और राष्ट्र का ज़रिया है। और इन
अल्फ़ाज में जो नूर और बरकत है वह किसी और लफ़्ज़ से हासिल
नहीं हो सकती। आज कल पैशाज की इतिबार में सलाम के बजाए
कोई “आदाब अर्ज़” कहता है, कोई “तसलीमात” कहता है, किसी ने
“सलाम मस्नून” कह दिया। याद रखिए इन अल्फ़ाज से सुन्नत के
सवाब का नूर हासिल नहीं हो सकता। इस हदीस में आपने देखा कि
हुज़ूरुर अक्दस सल्लल्लाहु अल्लाहु व सल्लम ने एक ज़रा सा लफ़्ज़
बदलने को भी गवाहा नहीं फरमाया।
एक सहाबी का वाक्य
एक सहाबी को हज़ूर के अक्लास सल्लल्लाहु अल्लाहः व इस्लाम ने एक दुआ सिखाई और फरमाया कि जब रात को सोने का इरादा करे तो सोने से पहले यह दुआ पढ़ लिया करो, उस दुआ के अन्दर ये अलफाज़ थे:

"अम्नत बिक़ताबिक दनी अनलेरत अल्लाहु अल्लाहु अल्लाहु अर्सलेन"

"यानी मैं उस किताब पर ईमान लाया जो आपने नाज़िल फरमाया, और उस नबी पर ईमान लाया जिनको आपने भेजा।"

चन्द दिनों के बाद हज़ूर के अक्लास सल्लल्लाहु अल्लाहः व इस्लाम ने उन सहाबी से फरमाया कि जो दुआ मैंने तुम्हें सिखाई थी वह दुआ मुझे सुनाओ, क्या पढ़ते हो? उन सहाबी ने दुआ सुनाते वक़्त एक लफ्झ़ थोड़ा सा बदल दिया, और इस तरह सुनाई कि:

"अम्नत बिक़ताबिक दनी अनलेरत अल्लाहु अल्लाहु अल्लाहु अर्सलेन"

उस दुआ में लफ्झ़ "नबी" की जगह "रसूल" का लफ्झ़ पढ़ लिया। हज़ूर के अक्लास सल्लल्लाहु अल्लाहः व इस्लाम ने फरमाया कि वही लफ्झ़ कहौ जो मैंने सिखाया था। हालांकि नबी और रसूल के लफ्झ़ में कोई ख़ास फ़र्क नहीं है, इस्लामी फ़र्क के एतिहास से भी रसूल का दर्जा नबी के मुकाबले में बुलन्द है, लेकिन इसके बावजूद हज़ूर के अक्लास सल्लल्लाहु अल्लाहः व इस्लाम ने फरमाया कि जो अलफाज़ मैंने सिखाए हैं वही अलफाज़ कहौ।

इतिमार-ए-सुन्नत पर अज्ञ व सवाब
हमारे हज़रत डॉक्टर अब्दुल हई रह. अल्लाह ताज़ाला उनके दरज़ात बुलन्द फरमाए, आमीन। फरमाते थे कि:

"अगर एक काम तुम अपनी तरफ से और अपनी सज़ी के मुलाकिब कर लो, और वही काम तुम इतिमार-ए-सुन्नत की नियत से हज़ूर के अक्लास सल्लल्लाहु अल्लाहः व इस्लाम के बताए हुए तरीक़े के मुलाकिब अन्जाम के दो, दोनों में जमीन व आसमान का फ़र्क महसूस
हज़रत अबू बकर और हज़रत उमर रज़िय़त्तल्लाहु अन्नुमा के तहज़जुद का वाकिया

हदीस शारीफ में है कि हुज़ूर अकबर सल्ल्ल्लाहु अलीक्हि व सल्लम रात के बक़्त गश्त करके सहाबा—ए—किराम के हालाल की खबर—गीरी किया करते थे। एक बार जब आप सल्ल्ल्लाहु अलीक्हि व सल्लम हज़रत सिद्दिक़के अकबर रज़िय़त्तल्लाहु अन्नु के पास से गुजरे तो आपने देखा कि वे तहज़जुद की नमाज़ पढ़ रहे हैं। और आहिस्ता आहिस्ता आवाज़ से कुर्�आन्ने करीम की तिलावत फरमा रहे हैं। और उसके बाद हज़रत फारुक़के आज़म रज़िय़त्तल्लाहु अन्नु के पास से गुजरे तो आप सल्ल्ल्लाहु अलीक्हि व सल्लम ने देखा कि वे बहुत बुलन्द आवाज़ से तिलावत कर रहे हैं। सुबह को आपने दोनों हज़रत को बुलाया और हज़रत अबू बकर रज़िय़त्तल्लाहु अन्नु से पूछा कि रात की तहज़जुद में आप बहुत पस्त आवाज़ में क्यों तिलावत कर रहे थे? हज़रत सिद्दिक़के अकबर ने जवाब दिया:

"असम्भु मन नाज़ूत।"

यानी में जिस ज़ात से मुनाज़त़ कर रहा था, उस ज़ात को मैंने सुना दिया, उस ज़ात के लिए बुलन्द आवाज़ करने की जरूरत नहीं, वह तो हलकी आवाज़ को भी सुनता है। इसलिये में आहिस्ता आवाज़ में तिलावत कर रहा था। उसके बाद हज़रत फारुक़के आज़म रज़िय़त्तल्लाहु अन्नु से पूछा कि तुम जोर से क्यों पढ़ रहे थे? उन्होंने ने जवाब दिया कि:

"अवतार उस्सत्तन और अदोद अल्लाहु तैतान।"
इस्लाही खुटूबोत

महानाथे को जगा रहा था और शीतलन को भगा रहा था।
इसलिये जो के पढ़ रहा था। लेकिन हुजूर अक्तदस सल्लल्लाहु
अलैहि व सल्लम ने हजरत सिद्दीक के अकबर से फर्माया कि:

"अरफुं तभ्यलयल"

यानी तुम अपनी आवाज को जरा बुलंद करो। और हजरत
फारुक के आज़म रज़ियल्लाहु अन्तु से फर्माया कि:

"अङ्कुस्त तभ्यलयल"

यानी तुम अपनी आवाज थोड़ी पस्त कर दो।

हमारे बताए हुए तरीक़े के मुताबिक अमल करो

इस हदीस के तहत हदीस की शरह करने वाले उल्लमा ने लिखा
है कि हुजूर अक्तदस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मक्कूद इन
दोनों हजरत को कुरआने करीम की इस आयत पर अमल कराना
था:

"वाला तजहर बङ्ललयल वाला त्हाहिल बङ्ललयल बङ्ललयल बङ्ललयल बङ्ललयल बङ्ललयल बङ्ललयल"

"यानी नमाज में न तो आवाज बुलंद कीजिए और न बहुत
ज्यादा पस्त कीजिए और दोनों के दरमियान एक (बीच का) तरीक़ा
इतिहायर कीजिए"।

लेकिन हजरत हकीमुल उम्मत रह. ने फर्माया कि:

"यह हिमकत तो अपनी जगह दुरुस्त है लेकिन इसमें एक बहुत
बड़ी हिमकत यह थी कि उन हजरत को यह तालीम देनी थी कि ऐ
सिद्दीक के अकबर और ऐ फारुक के आज़म के तक तुम दोनों अपनी राये
से अपनी मज़ी से एक तरीका मुताबिक करके पढ़ रहे थे, और
आइन्द्र जो तिलावत करोगे वह मेरे बताए हुए तरीक़े की इतिहाय में
मेरे कहने के मुताबिक करोगे, और अब जो रास्ता तुम इतिहायर
करोगे वह इतिहाय-ए-सुन्नत का रास्ता होगा और फिर इसकी वजह
से तुम्हें इतिहाय-ए-सुन्नत का नूर और उसकी बरकतें हासिल होगी,
और इस पर अज़ व सवाब भी मिलेगा।"
इसलिये इस हदीस से यह उसूल मालूम हुआ कि हर काम करते वक़्त सिर्फ यह नियत न हो कि वस यह काम किसी तरह भी पूरा हो जाए, बल्कि उसके अन्दर तरीका भी वो इश्कियार किया जाए जो मुहम्मद रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सिखाया है। और अल्फाज़ भी जहां तक हो सके वही इश्कियार किये जाए जो मुहम्मद रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सिखाए हैं। इसलिये कि उन अल्फाज़ में नूर और बक़र हूं।

में सच्चे खुदा का रसूल हूं

हज़रत जाफर बिन सुलेम रजियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब हुजूर अक्द सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे सलाम करने का तरीका सिखाया दिया तो मैंने सवाल किया कि क्या आप अल्लाह के रसूल हैं? हुजूर अक्द सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि:

“मैं उस अल्लाह का रसूल हूं कि अगर तुम्हें कोई तकलीफ़ पड़ जाए या कोई मुसीबत पड़ जाए और उस मुसीबत के दूर करने के लिए उस अल्लाह को पुकारो तो अल्लाह तंतोला उस मुसीबत और तकलीफ़ को दूर कर देते हैं। मैं उस अल्लाह का रसूल हूं।”

जमाना-ए-जाहिलियत में लोग बुद्धि की फूज़ा करते थे। उनको खुदा बनाया हुआ था। लेकिन उनमें एक सिफ़त यह थी कि जब किसी मुसीबत में फंस जाते तो उस वक़्त सिर्फ़ अल्लाह तंतोला ही को पुकारते थे। कूरआने करीम का इराद़ा है:

“وَاذْبَرْ كُبْرَاٰ في الْفُلُوكَ دَعُوا الله مُحِلِّصَينَ لَهُ النَّيَّنَ”

“यानी जब वे लोग करते में सफर करते हैं, और समुदर में तूफ़ान आ जाता है, और बचने का कोई रास्ता नहीं होता तो उस वक़्त उनको लात, उड़ान, मनात वगैरह कोई बुत याद नहीं आता, उस वक़्त सिर्फ़ अल्लाह तंतोला ही को पुकारते हैं कि या अल्लाह! हमें इस मुसीबत से नज़ार दे दीजिए।”

इस हदीस में हुजूर अक्द सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इराद़ा फ़रमाया कि में इन झूठे खुदाओं का रसूल नहीं हूं बल्कि
सच्चे खुदा का रसूल हूं।

फिर आपने फरमाया कि:

मैं उस अल्लाह का रसूल हूं कि जब तुम्हें कहत (काल) पड़ जाए और उस कहत के दूर करने के लिए उस अल्लाह को पुकारो तो अल्लाह तफ़ाला उस कहत को दूर फ़र्मा देते हैं। और मैं उस अल्लाह का रसूल हूं कि जब तुम किसी चाटियल मैदान और बयाबान में सफर कर रहे हो और वहां तुम्हारी ऊंटनी गुम हो जाए और तुम अल्लाह को पुकारो कि तुम अल्लाह! मेरी ऊंटनी गुम हो गई है, वह मुझे वापस मिल जाए, तो अल्लाह तफ़ाला उस ऊंटनी को तुम्हारे पास लौटा देते हैं।

बड़ों से नसीहत तलब करने चाहिए।

फिर हज़रत जाबिर बिन सुलेम रज़ियल्लाहु अलैहि व सल्लम मुझे कोई नसीहत फरमाये! इसी से बुजुर्गों ने यह उसूल बताया है कि जब कोई शख्स किसी बड़े के पास जाए, और खास तौर पर ऐसे बड़े के पास जो दीन में भी कोई मक़रम रखता हो, तो उस से नसीहत तलब करे, इसलिये कि कभी कभी नसीहत का कलिमा इस अन्दाज़ से अदा होता है कि वह इन्सान के दिल पर असर कर जाता है, और उस से इन्सान के दिल की दुनिया बदल जाती है, और काया पलट जाती है। उसकी वजह यह है कि जब आदमी सच्चे दिल से सच्ची तलब के साथ किसी बड़े से नसीहत तलब करता है तो अल्लाह तफ़ाला उस बड़े के दिल में ऐसी ही नसीहत झालते हैं जो उस बक़्त उस शख्स के लिए मुग़लासिब होती है। यदि रखो, किसी बुजुर्ग के पास उसकी जात में कुछ नहीं रखा, देने वाले तो अल्लाह तफ़ाला है। लेकिन अगर कोई सच्ची तलब लेकर किसी के पास जाता है तो अल्लाह तफ़ाला मतलब की ज़बान पर वह बात जारी फरमा देते हैं जो उसके हक़ में फायदे मन्द होती है, और उसकी ज़िन्दगी बदल
इस्लामी सुत्तात

जाती है। इसलिये फर्माया कि जब किसी के पास जाओ तो उसे नसीहत तलब किया करो।

(पहली नसीहत)

बहर हाल, हुजूरे अक़बर सल्ल्लाहु अलेहि व सल्लम ने उनको नसीहत फर्माते हुए फर्माया:

"लातेस्बिन एहदा"

"यानी किसी को गाली न देना, किसी की बदगोई न करना।"

योग्य कि हर वह बात जो गाली या बदगोई की तारीख में आती हो, ऐसी बात किसी के लिए इस्तेमाल न करना। देखिए हजरत जाबीर बिन सुलेम रजियल्लाहु अल्लाह की हुजूरे अक़बर सल्ल्लाहु अलेहि व सल्लम से पहली मुलाकात है, उसमें पहली नसीहत यह फर्माई कि दूसरों को बुरा न कहो। इस से अन्दाज़ा लागाये कि हुजूरे अक़बर सल्ल्लाहु अलेहि व सल्लम के नज़ीक दूसरे शाख़ के दिल दुखाने से बचने की कितनी अहमदत है। और यह कि एक मुसलमान की जान से कोई भांग और बुरा कलिमा किसी के लिए न निकले।

हजरत सिद्दिक़े अकबर रजि. का एक वाक़िय़ा

हजरत सिद्दिक़े अकबर रजियल्लाहु अल्लाह को एक बार अपने गुलाम पर गुस्सा आ गया, और गुस्से में उस गुलाम के लिए कोई लानत का कलिमा जबान से निकाल दिया। हुजूरे अकबर सल्ल्लाहु अलेहि व सल्लम ने जब कलिमा सुना, फर्माया कि:

"लगातार उस्देरे काला रंग लोकस"।

"यानी आदमी लानत भी करे और सिद्दिक़े भी हो, काबे के रब की क्षम ऐसा नहीं हो सकता। इसलिये कि जो सिद्दिक होता है वह लानत नहीं किया करता।"

देखिए: हुजूरे अकबर सल्ल्लाहु अलेहि व सल्लम ने हजरत
अबू बक्र सिद्धिक रजियल्लाहु अन्नु को इतने सख्त अल्फाज के साथ तबीह फरमाई। और हजरत सिद्धिक के अकबर रजियल्लाहु अन्नु ने उसकी इस तरह तलाफी की कि उस गुलाम ही को कफ़फरारे के तौर पर आज़ाद कर दिया।

इस नसीहत पर जिन्दगी भर अमल किया

इसलिये किसी को बुरा कहना और उसके लिए गलत अल्फाज बोलना ठीक नहीं। आज हमारी जबानों पर इस किस्म के बुरे अल्फाज चढ़ गये हैं, जैसे खबरीस, अहमक, कम्बक्त वगैरह, ये अल्फाज किसी मुसलमान के लिए इस्तेमाल करना हराम है ही, बल्कि किसी जानवर और काफ़िर के लिए भी इन अल्फाज को इस्तेमाल करना अच्छा नहीं है। चुनांचे हजरत जाबिर बिन सुलैम रजियल्लाहु अन्नु फरमाते हैं कि:

"इस नसीहत को सुनने के बाद मैंने फिर कभी न तो किसी गुलाम को, न किसी आज़ाद को, न ऊंट को और न बकरी को कोई बुरा कलिमन नहीं कहा।"

ये थे सहाबा—ए—किराम रजियल्लाहु अन्हुम कि जो नसीहत सुन ली उसके दिल पर नक़्शा कर दिया और सारी जिन्दगी का अमल का दस्तूर बना लिया।

अमल को बुरा कहो, ज़ात को बुरा न कहो

लेकिन इस नसीहत के एक मायने यह भी हैं कि किसी को बुरा न कहो, यानी कोई शख्स चाहे कित्तना ही बुरा काम रहा हो, गुनाह कर रहा हो, ना—फरमानी कर रहा हो, तो उसके फेल को बुरा समझो और बुरा कहो, लेकिन उसकी ज़ात को बुरा न कहो, उसकी ज़ात को हंकीर और जलील न समझो। इसलिये ज़ात को बुरा कहना दुरुस्त नहीं। इसलिये कि तुम्हें क्या मालूम कि उसका अन्जाम कैसा होने वाला है। बेशक आज वह शख्स बुरे काम कर रहा है और उसकी वजह से तुम उसको बुरा समझ रहे हो, लेकिन क्या मालूम कि
अल्लाह तबाला उसकी इस्लाम फरमा दे और मरने से पहले उसको तौबा की और अच्छे आमल की तौफीक दे दे, और जब अल्लाह तबाला के पास पहुंचे तो बिलकुल पाक साफ होकर पहुंचे। इसलिये किसी शख्स की जान को यहां तक कि काफिर की जान को भी बुरा न समझो, इसलिये कि क्या मालूम कि अल्लाह तबाला उसको ईमान की तौफीक दे दे और फिर वह तुम से भी आगे निकल जाए। हदीस शरीफ में हुजूरे अक्तूर नसल्लाहु अल्लाहि व सल्लम ने फरमाया:

"العمرة بالخواتين"

"यानी एतिबार ख़ात्मे का है कि ख़ात्मा किस हालत पर हुआ?। अगर ईमान और नेक अमल पर ख़ात्मा हुआ तो वह अल्लाह तबाला के यहां मक्कूल है, वह तुम से भी आगे निकल गया।"

एक चरवाहे का अजीब वाकिया

गुल्मा-ए-ख़बर के मौके पर एक चरवाहे हुजूरे अक्तूर सल्लल्लाहु अल्लाहि व सल्लम की ख़िदमत में आया, वह यहूदियों की बकरियाँ चराया करता था। उस चरवाहे ने देखा कि ख़बर से बाहर मुसलमाओं का लशकर पढ़ाव डाले हुए है। उसके दिल में ख्याल आया कि मैं जाकर उनसे मुलाकात करूं और देखूँ कि ये मुसलमान क्या कहते हैं और क्या करते हैं? चुनांचे वह बकरियाँ चराता हुआ मुसलमानों के लशकर में पड़ूँ और उनसे पूछा कि तुम्हारे सरदार कहां हैं? सहाबा-ए-किराम ने उसको बताया कि हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहु अल्लाहि व सल्लम उस ख़में के अन्दर हैं। पहले तो उस चरवाहे को यकीन नहीं आया, उसने सोचा कि इतने बड़े सरदार एक मामूली ख़में में कैसे बैठ सकते हैं। उसके जैसे में यह था कि जब आप इतने बड़े बादशाह हैं तो बहुत ही शान व शौकत और टाट बाट के साथ रहते होगे, लेकिन वहां तो खजूर के पत्तों की चटाई से बना हुआ ख़मा था। ख़ैर वह उस ख़मे के अन्दर आए से मुलाकात के लिए दाख़िल हुआ और आप से मुलाकात की, और पूछा
कि आप क्या पैगाम लेकर आए हैं? और किस बात की दावत देते हैं? हुज्जूरे अक्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसके सामने इस्लाम और ईमान की दावत रखी और इस्लाम का पैगाम दिया। उसने पूछा कि अगर मैं इस्लाम की दावत कुबूल कर लूं तों मेरा क्या अन्जाम होगा? और क्या रुतबा होगा? हुज्जूरे अक्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरसाया कि:

"इस्लाम लाने के बाद तुम हमारे भाई बन जाओगे, और हम तुम्हें गले से लगायेंगे"।

उस चरवाहे ने कहा कि आप मुझे से मजाक करते हैं, मैं कहां और आप कहां! मैं एक मामूली चरवाहा हूँ और मैं सियाह फाम (हस्ती) इस्लाम हूँ, मेरे बदन से बदबू आ रही है। ऐसी हालत में आप मुझे कैसे गले लगायेंगे? हुज्जूरे अक्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरसाया कि:

"हम तुम्हें जरूर गले लगायेंगे, और तुम्हारे जिस्म की सियाही को अल्लाह तअला रोशनी और चमक से बदल देंगे, और अल्लाह तअला तुम्हारे जिस्म से उठने वाली बदबू को खुशबू से तब्दील कर देंगे।"

यह सुन कर वह फौसिन मुहम्मद ने गया और कसिमा—ए—शहादत:

"शहीदा तुल्ला ना अल्ला इस्लाम और मुहम्मद इलाह"।

"अर्हदु अल्ला इलाह इल्लल्लाहु व अर्हदु अल्ला इलाह"।

पढ़ लिया, फिर हुज्जूरे अक्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा कि या रसूलल्लाह! अब मैं क्या करूँ? आपने फरसाया कि:

"तुम ऐसे वक्त इस्लाम लाए हो कि न तो इस वक्त किसी नमाज का वक्त कि तुम से नमाज पढ़वाओ, और न ही रोज़े का जमाना है कि तुम से रोजे रखवाओं, जोकि तुम पर फर्ज़ नहीं है।
इस बक्ता तो सिफर एक ही इबादत हो रही है जो तलवार की छाया में अन्जाम दी जाती है, वह है अल्लाह के रास्ते में जिहाद।

उस चरवाहे ने कहा कि या रसूलल्लाह! मैं इस जिहाद में शामिल हो जाता हूं लेकिन जो शख्स जिहाद में शामिल होता है उसके लिए दो में से एक सूरत होती है, या गाजी या शहीद। तो अगर मैं इस जिहाद में शहीद हो जाऊँ तो आप मेरी कोई जमानत लीजिए, हुजूर अकब्दस सल्ल्लाहु अल्लैहि व सल्लम ने फरमाया कि:

“मैं इस बात की जमानत लेता हूं कि अगर तुम इस जिहाद में शहीद हो गये तो अल्लाह तबाला तुम्हें जनता में पहुंचा देंगे, और तुम्हारे जिस्म की बदौलत को खुशशब्द से बदल देंगे, और तुम्हारे चेहरे की सियाही (काले पन) को सफेदी में तब्दील फर्मा देंगे।”

बकरियाँ वापस करके आओ

चूंकि वह चरवाहे यहूदियों की बकरियाँ चराता हुआ वहाँ पहुंचा था, इसलिये हुजूर अकब्दस सल्ल्लाहु अल्लैहि व सल्लम ने फरमाया कि:

“तुम यहूदियों की जो बकरियाँ लेकर आए हों, इनको जाकर वापस कर दो, इसलिये कि वे बकरियाँ तुम्हारे पास अमानत हैं।”

इस से अन्दाजा लगायें कि जिन लोगों के साथ जंग हो रही है, जिनका घेराव किया हुआ है, उनका माल माले गनियत है, लेकिन चूंकि वह चरवाहा बकरियाँ मुआहदेपर लेकर आया था, इसलिये आपने हुक्म दिया कि पहले वे बकरियाँ वापस करके आओ, फिर आकर जिहाद में शामिल हो। चुनावे उस चरवाहे ने जाकर बकरियाँ वापस की और वापस आकर जिहाद में शामिल हुआ और शहीद हो गया।

उसको जन्नतुल फिरदौस में पहुंचा दिया गया है

जब जंग खत्म हो गयी तो हुजूर अकब्दस सल्ल्लाहु अल्लैहि व सल्लम लशकर का जायजा लेने लगे। एक जगह आपने देखा कि
सहाबा-ए-किराम का मजमा इकहा है। जब आप करीब पहुंचे तो उन से पूछा कि क्या बता है? सहाबा-ए-किराम ने फरमाया कि जो लोग यंग में शाहीद हो गए हैं उनमें एक ऐसा आदमी भी है जिसको हम में से कोई नहीं पहचानता, आपने फरमाया मुझे दिखाओ, जब आपने देखा तो फरमाया कि:

“तुम इसको नहीं पहचानने मगर में इस शक्ति को पहचानता हूँ, यह चर्चवाहा है, और यह यह अजीब व गरीब बन्दा है जिस ने अल्लाह की राह में एक भी सज्जा नहीं किया। और मैं इस बात की गवाही देता हूँ कि अल्लाह ताज़ा ले इसको सीधा जहां तुल किरदारों में पहुंचा दिया है। और मेरी आंखें देख रही हैं कि फर्श़िते इसको गुस्त दे रहे हैं, और इसकी सिरात खफ़्दी में बदल गयी है, और इसकी बदबू खुशाबू से तब्दील हो गयी है।”

एतिबार ख़ाल्मे का है।

देखिएः अगर कुछ वक़्त पहले उस चर्चवाहे को मीत आ जाती हो सीधा जहन्नम में चला जाता। और अब इस हालत में मीत आई कि ईमान ला चुका है, और सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अल्लैहि व सल्लम का गुलाम वन चुका है, तो अब अल्लाह ताज़ा ने इतना बड़ा इन्क़िलाब पैदा किया फरमाया। इसलिये फरमाया:

“العبيرة بالخواتيم”

एतिबार ख़ाल्मे का है! इसलिये बड़े बड़े लोग कांपते रहे और यह दुआ करते रहे कि या अल्लाह! ख़ाल्मा अच्छा अता फरमाइए। ईमान पर ख़ाल्मा अता फरमाइए। किस बात पर इत्ना नाजु करे। फ़र्श़ करे और इताराए, इसलिये कि क्या मालूम कि कल क्या होने वाला है। इसी लिये फरमाया कि किसी को भी हकीर और गिरा हुआ मत समझो।

एक बुजुर्ग का नसीहत भरा वाकिया।

मेरे वालिद माजिद हज़रत मुहम्मद शफी साहिब रह. ने
एक बुजुर्ग का वाकिफ़ा सुनाया कि एक अल्लाह वाले बुजुर्ग कहीं जा रहे थे, कुछ लोगों ने उनका मज़ाक उठाया। जिस तरह आज कल सूफी और सीधे सादे मौलवी का लोग मज़ाक उठाते हैं। बहर हालः मज़ाक करने के लिए एक शख्स ने उन बुजुर्ग से पूछा कि वह बताए कि आप अच्छे हैं या मेरा कुत्ता अच्छा है? इस सवाल पर उन बुजुर्ग को न तो गुस्सा आया, न तबीयत में कोई तबीदः और ना गवारी पैदा हुई और जवाब में फरमाया कि अभी तो मैं नहीं बता सकता कि मैं अच्छा हूँ या तुम्हारा कुत्ता अच्छा है। इसलिये कि पता नहीं कि किस हालत में मेरा इन्तिकाल हो जाए। अगर ईमान और नेक अपल पर मेरा ख़ात्ता हो गया तो मैं उस स्वरूप में तुम्हारे कुत्ते से अच्छा हूँ, और खुदा न करे अगर मेरा ख़ात्ता बुरा हो गया तो यकीनन तुम्हारा कुत्ता मुझ से अच्छा है। इसलिये कि वह जहन्नम में नहीं जायेगा और उसको कोई अज़ाब नहीं दिया जायेगा। अल्लाह के बदन्दों का यही हाल होता है कि वे ख़ात्ते पर निघाह रखते हैं। इसी लिये फरमाया कि किसी बदतर से बदतर इस्माई की जात को हकीर मत ख़्याल करो, न उसको बुरा कहो, उसके आमाल को बेशक बुरा कहो कि वह शराब पीता है, वह कुफर में मुख्ता है, लेकिन जात को बुरा कहना जायज़ नहीं। जब तक यह पता न चले कि अन्जाम क्या होने वाला है।

हज़रत हकीमुल्लू उम्मत रह. की तवाज़ों की इन्तिहार

हज़रत हकीमुल्लू उम्मत मौलाना थानवी रह. फरमाते हैं कि:

"मैं हर मुसलमान को फिल्हाल अपने से अफ़ज़ूल समझता हूँ और हर काफ़िर को एहतिमालन् अपने से अफ़ज़ूल समझता हूँ। यानी जो मुसलमान है उसके दिल में न मालूम कितने आला दर्जा का ईमान हो, और वह मुसलमान मुझ से आगे बढ़ा हुआ हो, इसलिये मैं हर मुसलमान को अपने से अफ़ज़ूल समझता हूँ। और हर काफ़िर को एहतिमालन इसलिये अफ़ज़ूल समझता हूँ कि इस वक़्त बज़ाहिर तो
वह बहू है, लेकिन क्या पता कि अल्लाह ताआला उसको ईमान की तौफीक़ दे दे और वह मुस्लिम से ईमान के अंदर आगे बढ़ जाए? 

जब हज़रत थानवी र.ह. यह फर्माया रहे हैं तो हम और आप किस गिनी और किस लाइन में हैं?

तीन अल्लाह वाले

कुछ दिन पहले हज़रत डाक्टर हफ़ीज़ुल्लाह साहिब दारुल उलूम करावी तस्तीफ़ लाए। यह हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद हसन साहिब र.ह. के ख़तीफ़ा हैं और उनकी बहुत सोहबत उठाई है। और हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद हसन साहिब र.ह. हज़रत थानवी र.ह. के खतीफ़ा और आशिक़े जार थे, डाक्टर हफ़ीज़ुल्लाह साहिब मदद–द जिल्लहुम ने हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद हसन साहिब र.ह. का बयान किया हुआ वाकिफ़ा मुनाया कि हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद हसन साहिब र.ह. ने फर्माया कि:

"हम हज़रत थानवी र.ह. की मज़िल में बैठते तो हम पर एक अफ़ज़ीब हालत तारी रहती, यह यह कि हम में से अंदर शक्स को ऐसा मालूम होता था कि मज़िल में जितने लोग मोजूद हैं वे सब मुस्लिम से अफ़ज़ल हैं, और में सब से हकीक़ और कमतर हूँ और ये सब लोग आगे बढ़े हुए हैं, मैं कितना पीछे रह गया हूँ। एक दिन मैंने अपनी यह हालत हज़रत मौलाना ख़ैर मुहम्मद साहिब र.ह. से जिक्र की कि मज़िल में बैठ कर मेरी यह हालत हो जाती है। हज़रत मौलाना ख़ैर मुहम्मद साहिब र.ह. भी हज़रत थानवी र.ह. के ख़तीफ़ा में से हैं। हज़रत मौलाना ख़ैर मुहम्मद साहिब र.ह. ने फर्माया कि यह हालत तो मेरी भी है। बुनांचे हम दोनों हज़रत थानवी र.ह. की ख़िदमत में गये, और जाकर उन से अर्ज़ किया कि हज़रत! हमारी अफ़ज़ीब हालत है कि जब हम आपकी मज़िल में बैठते हैं तो ऐसा लगता है कि सब हम से अफ़ज़ल हैं और हम सब से कमतर हैं। हज़रत थानवी र.ह. ने फर्माया कि तुम यह तो अपनी हालत बयान कर रहे हो, मैं सच
हज्जाज बिन युसुफ़ की गीता करना

ये सब दीन की बातें हैं। दीन की इन बातों को हम लोग मुला बैठे हैं, इबादत, नामज़, रोजा, तबाही वगैरह को तो हम दीन का हिस्सा ख्याल करते हैं, लेकिन इन बातों को दीन से खारिज कर दिया है। और जिस शख्स के बारे में जो मुंह में आता है कह देते हैं। हालांकि अल्लाह तख़ाला की बासगाह में एक एक चीज़ का रिकार्ड हो रहा है। अल्लाह पाक का इरादा हैः

"मा ीलाफ़ मिन ७४०, नि दनु राय बैनिया।"

"यानी वह कोई लफज़ मुंह से नहीं निकालने पाता मगर उसके पास ही एक ताक लगाने वाला तैयार होता है।"
हज़रत अबुद्दल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अर्थ है कि मज़िल्स में किसी शख्स ने हज़राज बिन यूसूफ की बुराई शुरू कर दी। हज़राज बिन यूसूफ को कोई नहीं जानता, उसके ज़ुल्म व सितम बहुत मशहूर हैं, सेंकड़ो मुसलमानों को बे गुनाह कतल किया।

हज़रत अबुद्दल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अर्थ है उस शख्स से ख़िलाब करते हुए फरमाया कि:

"देखो: यह तुम हज़राज बिन यूसूफ की ग़ीवत कर रहे हो, और यह मत समझना कि अगर हज़राज बिन यूसूफ की गर्दन पर सेंकड़ों इन्सानों का खून है तो उसकी ग़ीवत हलाल हो गई। जब अल्लाह तालाला हज़राज बिन यूसूफ से सेंकड़ों इन्सानों के खून का बदला लेंगे तो उस वक़्त तुम से भी हज़राज बिन यूसूफ की ग़ीवत करने की पूँछ तांछ और पकड़ होगी।"

इसलिये बिला वज़ह किसी की ग़ीवत न करें। हां अगर कहीं दूसरे को तक्क़ीफ़ से बचाने के लिए बताने की जरूरत पड़े तो इस तरह कह दिया जाए कि भाई फ़लां शख्स से ज़रा होशियार रहना, और उस से बच कर रहना। लेकिन बिला वज़ह मज़िल्स जमाई जाए, और उसमें ग़ीवत की जाए, यह दुरस्त नहीं।

अंब्रिया अलेहिमुस्सलाम का शेया

अंब्रिया अलेहिमुस्सलाम का शेया तो यह रहा है कि कभी ग़ली का जवाब भी ग़ली से नहीं दिया। हालांकि शरीफ़ ने इसकी इज़राज़त दी है कि जिन्ना तुम पर ज़ुल्म किया गया है, तुम भी उतना बदला ले सकते हो। लेकिन अंब्रिया अलेहिमुस्सलाम ने कभी ग़ली का बदला ग़ली से नहीं दिया। कोई की तरफ से नहीं को कहा जा रहा है कि:

"إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّمَا نَزِلْتُ مِنْهُ -
"तुम बेवकूफ़ हो, हिमाक़त में मुबाल हो, और हमारा ख्याल यह है कि तुम झूठे हो।"
हम जैसा कोई होता तो जवाब में कहता कि तुम अहमक, तुम्हारा बाप अहमक, लेकिन नहीं का जवाब यह था कि:
“ऐ मेरी कौन, मैं बेवकूफ़ नहीं हूं बल्कि मैं परवर्धित अगर की तरफ से रसूल बनाकर भेजा गया हूँ।

हजरत शाह इस्माइल शहीद रह. का वाक्य

हजरत शाह इस्माइल शहीद रह. जो शाही ख़ानदान के फर्ज हैं। अल्लाह ताब्राना ने उनके दिल में दीन की तड़प अता फर्राई थी और दीन की बात लोगों तक पहुँचाने के लिए सीने में आग लगी हुई थी। और शिक्षा और बिदर्धत्रों के ख़िलाफ आपने जिहाद किया। लोग ऐसे आदमी के दुस्मन भी हो जाते हैं। एक दिन दिल्ली की जामा मस्जिद में तकरीर फर्राई रहे थे तो एक आदमी ने हजरत को तकलीफ़ पहुँचाने के लिए भरे मजमे में खड़े होकर कहा कि:
“मौलाना! हमने सुना है कि आप हरामज़दे हैं?

अब्दाजा लगाइये, कि इतने बड़े आलम और शाही ख़ानदान के एक फर्ज हैं, उनको इतनी भड़ी गाली दे दी। कोई और होता तो न जाने वह उस कहने वाले पर कितना ग़ुस्सा निकालता। वह अगर छोड़ देता तो उसकी साथि उसकी तिक्का बोटी कर देते। लेकिन यह प्रेग़म्बरों के वारिस हैं, चुनांचे जवाब में फर्राई:
“आपको गलत इतिलाई मिली है, मेरी मां के निकाह के गवाह तो अब भी दिल्ली में मौजूद हैं।

ये हैं प्रेग़म्बरों जैसे अख़लाक और प्रेग़म्बराना सीरत कि गाली का जवाब भी गाली से नहीं दिया जा रहा है।

(दूसरी नसीहत)

उसके बाद हुज़ूर अकबर सल्ल्ल्लाहु अल्लाहिं व सल्ल्लम ने उनको दर्शनी नसीहत यह फर्राई कि:
“किसी भी नेकी के काम को हरगिज़ हकीर मत समझो, बल्कि
जिस वक्त जिस नेक काम का मौका आ जाए, और उसके करने की तौफीक हो जाए तो उसको गुन्नीमत समझ कर कर लो।"

शैतान का दावा

इसके जरिये हुजूर अल्लाहु अल्लाहि व सल्लम ने शैतान के एक बहुत बड़े दावे को ख़त्म कर दिया। शैतान का दावा यह होता है कि जब किसी शख्स के दिल में किसी नेक काम का ज़रिया और ख्याल पैदा होता है कि फलां नेक काम कर दूं तो शैतान यह वस्तुतः झूठा है कि मिया। यह छोटा सा नेक काम करके तुम कौन सा तीर मार लोग। तुम्हारी सारी ज़िंदगी तो ना जायज़ कामों में गुज़री है, अगर तुमने यह छोटा सा नेक काम कर लिया तो उसके नतीजे में कौन सी तुम्हें ज़रूरत मिल जायेगी। इसलिये इस नेकी को भी छोड़ो। इस तरह शैतान उस नेकी से भी इन्सान को महरूम कर देता है। हालांकि यह शैतान का बहुत बड़ा धोखा है। इसलिये हुजूर सल्लाल्लाहु अल्लाहि व सल्लम ने फरमा दिया कि किसी भी नेकी के काम को हक्कीर समझ कर मत छोड़ो, बल्कि उसको कर गुज़रो।

छोटा अमल भी नजात का सबब है

और इस नसीहत में बेशुमार हिकमत हैं। पहली हिकमत तो यह है कि जिस नेक काम को तुम हक्कीर समझ कर छोड़ रहे हो, क्या पता कि वह काम अल्लाह तख़्वाला के यहां बड़ा अज़ीज़ हो, और उस काम को अल्लाह तख़्वाला अपनी बारागाह में कुबूलियत से नवाज़ दें? तो शायद वही काम तुम्हारी नजात का जरिया बन जाए। हदीसों में और बुजुर्गों के दीन के वाकिफ़ों में बहुत से ऐसे वाकिफ़ों मन्कूल हैं कि अल्लाह तख़्वाला ने एक छोटे से अमल पर मग़फ़िरत फरमा दी।

एक फाहिशा औरत का वाकिफ़ा

बुखारी शरीफ़ की एक हदीस में यह वाकिफ़ा आता है कि:
"एक फाहिशा औरत रास्ते से गुज़र रही थी, रास्ते में देखा कि एक कुएँ के पास एक कुत्ता हांग रहा है और पानी पीना चाहता है."
लेकिन पानी इतना नीचे है कि वहां तक पहुंच नहीं सकता। उस औरत को उस कुत्ते पर तरस आया और उसने सोचा कि यह कुत्ता अल्लाह की मस्तूक़ है और प्यास से बेहूल है, इस कुत्ते को पानी पिलाना चाहिए। उसने ढूल तलाश किया तो कोई ढूल वहां नहीं मिला, आखिर उसने अपने पांव से एक चब्बे का मोजा उतारा और किसी तरह उस कुए से पानी भरा और उस कुत्ते को पिला दिया और उसकी प्यास दूर कर दी। हुजूरे अक्बर सल्लाल्हु अलाइहि व सल्लम फरमाते हैं कि अल्लाह तआला को उसका यह अमल इतना पसंद आया कि सिर्फ इस अमल पर उसकी मगफिरत फरमा दी।

बताईए! अगर वह औरत कह सोचती कि मैं तो एक फाहिशा औरत हूँ, मैं तो जहन्नम की हकदार हूँ। अगर मैंने कुत्ते को पानी पिलाने का यह छोटा सा अमल भी कर लिया तो कौन सा इन्किलाब आ जायेगा। अगर वह यह सोचती तो इस अमल से महरम हो जाती और अल्लाह तआला के यहां उसकी नजात न होती। बहर हालः अल्लाह तआला ने इस अमल पर उसकी नजात फरमा दी।

मगफिरत के भरोसे पर गुनाह मत करो

लेकिन इस वाकिफ्र से कोई यह न समझ बैठे कि बस अब जितने चाहो गुनाह करते रहे, सारी जिन्दगी गुनाहों में गुजार दो। बस एक दिन प्यासे कुत्ते को पानी पिला देंगे तो सब गुनाह माफ हो जायेंगे। यह सोच बिल्कुल गलत है। इसलिये कि एक तो अल्लाह तआला का कानून है, और एक अल्लाह तआला की रहमत है। अल्लाह तआला का कानून तो यही है कि जो शख्स गुनाह करेगा, उसको गुनाह का अजाब भुगतना पड़ेगा। और अल्लाह तआला की रहमत और करम यह है कि किसी बदने के किसी अमल की वजह से उसके गुनाह को माफ़ फरमा दे। लेकिन इस करम और रहमत का कुछ पता नहीं है कि किस अमल पर किस वक्त होगी? और किस वक्त नहीं होगी? इसलिये इस भरोसे पर आदमी गुनाह करता रहे कि
अल्लाह तख़ाला के यहां कोई न कोई अमल कुबूल हो जायेगा, और गुनाह माफ़ हो जायेगे। यह बात ठीक नहीं। हदीस शरीफ़ में हुज़ूरेद्वारा सल्लल्लाहु अल्लेहि व सल्लम ने इरशाद फरशाया:

"العجز من اتبع نفسه هواها وتسليم على الله" (ترمذي شريف)

"आज़ज़ वह शाक्स है जो अपने को ख़ाफ़िशात के पीछे खड़ा हो दे। जहां ख़ाफ़िशात उसको लेजा रही है वह वहीं जा रहा है। और साथ में अल्लाह तख़ाला पर आरजू बांधे बैठा है कि अल्लाह तख़ाला सब माफ़ फरशा देंगे।"

और जब किसी से कहा जाए कि गुनाहों को छोड़ दो तो जवाब में कहता है कि अल्लाह तख़ाला बड़े गफूररहमी है, माफ़ फरशा देंगे। इसी को कहा जाता है कि अल्लाह तख़ाला पर तमन्नाएं बांधता है।

गोया कि वह पूरब की तरफ़ दौड़ा जा रहा है और अल्लाह से यह उम्मीद लगा रहा है कि अल्लाह तख़ाला मुझे परिम्रहण में पहुँचा देंगे।

रास्ता तो जहानम का इख़्तियार कर रखा है और यह उम्मीद लगा रखी है कि अल्लाह तख़ाला जन्मत में पहुँचा देंगे। यह तरीक़ा ठीक नहीं है। लेकिन अल्लाह तख़ाला कभी किसी अमल की बदौलत अपनी रहमत से किसी इन्सान की मगफ़िरत फरशा देते हैं। जिसका कोई कायदा मुकर्दर नहीं। लेकिन कोई शाक्स इस उम्मीद पर गुनाह करता रहे कि किसी वक़्त अल्लाह तख़ाला की रहमत हो जायेगी और में बच जाऊँगा, यह ठीक नहीं है। बल्कि ऐसे शाक्स पर अल्लाह तख़ाला की रहमत भी नहीं होती जो मगफ़िरत के भरोसे पर गुनाह करता रहे।

एक बुजुर्ग की मगफ़िरत का वाक्याः

मैंने अपने शैख़ हज़रत डा. अबुदुल इर्र रह. से यह वाक्याः सुना कि:

"एक बुजुर्ग जो बहुत बड़े मुहिस्स भी थे, किन्होंने सारी उमर हदीस की ख़िदमत में गज़ारी। जब उनका इन्तकाल हो गया तो
किसी शख्स ने ख्याब में उनकी जियारत की, और उनसे पूछा कि हज़ारत! अल्लाह तख़्ता ने कैसा मामला फर्माया? जवाब में उन्होंने फर्माया कि बड़ा अजीब मामला हुआ। वह यह कि हमने तो सारी उमर इल्म की ख़िदमत में और हदीस की ख़िदमत में गुज़ारी, और पढ़ने पढ़ाने और किताबें लिखने और तकरीर बग़ाने में गुज़ारी। तो हमारा ख्याल यह था कि इन आमाल पर अज़ मिलेगा, लेकिन अल्लाह तख़्ता के सामने पेशी हुई तो अल्लाह तख़्ता ने कुछ और ही मामला फर्माया। अल्लाह तख़्ता ने मुझ से फर्माया कि हमें तुम्हारा एक अमल बहुत पसन्द आया, वह यह कि एक दिन तुम हदीस शरीफ़ लिख रहे थे, जब तुमने अपना कलम दबात में उड़ा कर निकाला तो उस वक़्त एक व्यासी मख़्ब़िर आकर उस कलम की नोक पर बैठ गई और सियाही चूसने लगी, तुम्हें उस मख़्ब़िर पर तरस आ गया। तुमने सोचा कि यह मख़्ब़िर अल्लाह की मख़्लूक है और व्यासी है, यह सियाही पीले तो फिर में कलम से काम करुं। चुनावे उसने देखा था कि तुमने अपना कलम रोक लिया और उस वक़्त तक कलम से कुछ नहीं लिखा जब तक वह मख़्ब़िर उस कलम पर बैठ कर सियाही चूसती रही। यह अमल तुमने ख़ालिस मेरी रज़ामन्दी की ख़तियाँ किया, इसलिये उस अमल की बदौलत हमने तुम्हारी मग़फ़रत फर्मा दी, और जन्मतुल फ़िरदौस अता कर दी"।

देखिएः हम तो यह सोच कर बैठे हैं कि अजाज़ करना, फ़ुदा देना, तहज़्जुद पढ़ना, किताबें लिखना वग़ैरह वग़ैरह ये बड़े बड़े आमाल हैं, लेकिन ऐसा एक व्यासी मख़्ब़िर को सियाही पिलाने का अमल कभी नहीं किया जा रहा है। और दूसरे बड़े आमाल का कोई तहिकरा नहीं।

हालाँकि अगर गोर किया जाए तो जितनी देर तक कलम रोक कर रखा, अगर उस वक़्त कलम न रोकते तो हदीस शरीफ़ ही का कोई लप़ौज़ लिखते, लेकिन अल्लाह की मख़्लूक पर शफ़कत की बदौलत अल्लाह ने मग़फ़रत फर्मा दी। अगर यह इस अमल को
मामूली समझ कर छोड़ देते तो यह फजीलत हासिल न होती।

इसलिये कुछ पता नहीं कि अल्लाह तअला के यहाँ कौन सा अमल मक़बूल हो जाए। वहाँ कीमत अमल के बढ़ा होने, साइज़ और गिनती की नहीं हैं बल्कि वहाँ अमल के वजन की कीमत है, और यह वजन इक्क़लास से पैदा होता है। अगर आपने बहुत से आमाल किए, लेकिन उनमें इक्क़लास नहीं था तो गिनती के पत्तियाँ से तो वे आमाल ज्ञात थे लेकिन फायदा कुछ नहीं। दूसरी तरफ अगर अमल छोटा सा हो, लेकिन उसमें इक्क़लास हो तो वह अमल अल्लाह तअला के यहाँ बड़ा बन जाता है। इसलिये जिस वक़्त दिल में किसी नेकी का इरादा दिया हो रहा है तो उस वक़्त दिल में इक्क़लास भी मौजूद है। अगर उस वक़्त वह अमल कर लोगे तो उम्मीद है कि वह इस्ना अल्लाह मक़बूल हो जायेगा। यह तो एक हिकमत हुई।

नेकी नेकी को खीचती है

दूसरी हिकमत यह है कि जब नेक काम करने का दिल में ख्याल आया और उसको कर लिया, तो एक नेक काम करने के बाद दूसरे नेक काम की भी तौफ़ीक हो जाती है। इसलिये कि नेकी नेकी को खीचती है और बुराई बुराई को खीचती है। एक बुराई की खातिर कभी कभी इन्सान को बहुत सी बुराइयाँ करनी पड़ती हैं। इसलिये जब तुमने एक नेक काम कर लिया तो उसकी बर्कत से अल्लाह तअला और भी नेकी की तौफ़ीक अँत फर्मा देते हैं। और कभी कभी एक छोटी सी नेकी की वजह से इन्सान की पूरी जिन्दगी बदल जाती है, और जिन्दगी में इम्क़लाब आ जाता है।

नेकी का ख्याल अल्लाह का मेहमान है

मेरे शाख हज़रत मोलाना मसीहुल्लाह ख़ान सहिब रह। अल्लाह तअला उनकी मग़फ़िरत फर्माए, आमिन। फर्माए करते थे कि:

"दिल में जो नेक काम करने का ख्याल आता है कि फलां नेक काम कर लो, उसको सूफ़िया—ए—किराम की इस्तिलाह में "वारिद"
कहते हैं, फर्माने थे कि यह "वारिद" अल्लाह ताज़ा ली की तरफ से आया हुआ अल्लाह ताज़ा का मेहमान होता है। अगर तुमने उस मेहमान की खातिर की, इस तरह कि जिस नेकी का ख्याल आया था, वह नेक काम कर लिया, तो यह मेहमान अपनी कूद दाती की वजह से दोबारा भी आयेगा। आज एक नेक काम की तरफ तवज्जोह दिलाई, कल दूसरे काम की तरफ तवज्जोह दिलाएगा। और इस तरह तुम्हारी नेकियों को बढ़ाता चला जायेगा। लेकिन अगर तुमने उस मेहमान की खातिर मुदारात न की बल्कि उसको धुतकार दिया, यानी जिस नेक काम करने का ख्याल तुम्हारे दिल में आया था उसको न किया, तो फिर रफ़्तार रफ़्तार यह मेहमान आना छोड़ देगा, और फिर नेकी करने का इरादा ही दिल में पैदा नहीं होगा। नेकी के ख्यालात आना बन्द हो जायेगे। कुरआने करीम में इशाराद है:

क्लाल ब्रान रॉन उल क्लोबुम मॉकानो विक्सनो।

यानी बद आमालियों के सबवें उनके दिलों पर जांग लग गया और नेकी का ख्याल भी नहीं आता। इसलिये ये छोटी छोटी नेकियों जो हैं, इनको छोड़ना नहीं चाहिए। इसलिये कि ये बड़ी नेकियों तक पहुँचा देती हैं।

शैतान का दूसरा दावा

तीसरी हिकमत यह है कि जब इमान के दिल में नेक काम करने का ख्याल आता है तो कभी कभी शैतान इस तरह भी इमान को बहकाता है कि यह काम बहुत अच्छा है, जरूर करना चाहिए। लेकिन जल्दी क्या है? कल से यह काम करेंगे, परसों से करेंगे। इसका नतीजा यह होता है कि वह नेक काम टल जाता है। इसलिये कि आज दिल में जो नेकी का जज़बा पैदा हुआ है, मानूस नहीं कल को यह जज़बा बाकी रहेगा या नहीं? कल इस नेक काम के करने का मौका मिलेगा या नहीं? यह भी पता नहीं कि कल आयेगी या नहीं आयेगी। इसलिये जिस वक़्त नेकी का जज़बा दिल में पैदा हो, उसी
वक्त अमल कर लेना चाहिए। जैसे रास्ते में गुजर रहे हैं, कोई तकलीफ़ देख चीज़ पड़ी हुई नज़र आई और दिल में यह ख्याल आया कि इसका हटाना चाहिए, उसी वक्त उसको हटा दो। या जैसे आपने पानी पीने का इरादा किया, दिल में ख्याल आया कि बैठ कर पानी हुज़ूरे अकबर सल्लल्लाहु अल्लाह व सल्लम की हुन्त है, तो फौरन बैठ जाओ, और बैठ कर पानी पीलो। खाना खाने के लिए बैठे, ख्याल आया कि बिस्मिल्लाह पढ़ लूं, तो फौरन पढ़ लो। इसलिये जिस किसी छोटी नेकी का ख्याल भी दिल में आए उसको कर गुजरो। यैसे इसी ज़रिये के तहत “आसान नेकियां” के नाम से एक छोटा सा रिसाला लिख दिया है, और उसमें उन नेकियों को लिख दिया है जो बजाहिर आसान और छोटी छोटी हैं लेकिन उनका अज्ञ व सवाब बड़ा अज्ञिम है। उन पर अमल करने का एहतिमाम करे तो इत्नान बहुत सा अज्ञ व सवाब का ज़बीरा जमा कर सकता है। ये आसान और छोटी नेकियां इन्सा अल्लाह आखिर कारे इत्नान की जिन्दगी में इन्निलाह पैदा कर देंगी। हर शक्त उसको लेकर पढ़े और फिर एक एक नेकी को अपनी जिन्दगी में दाखिल करे और उन पर अमल की कोशिश करे, तो इन्सा अल्लाह मन्ज़िल तक पहुँच देंगी।

किसी गुनाह को छोटा मत समझो।

इसी तरह एक चीज़ और है जो इसके मुकाबल में है? वह यह कि जिस तरह नेकी को हकीक समझ कर छोड़ना नहीं चाहिए, इसी तरह किसी गुनाह को हकीक समझ कर इज्तियार नहीं करना चाहिए। इसलिये कोई गुनाह चाहे वह कितना ही छोटा हो, उसके छोटा होने की वजह से उस गुनाह को मत करो। यह भी शैतान का बहुत बड़ा धोखा होता है। जैसे एक गुनाह करने का दिल में ख्याल आया, लेकिन साथ ही यह भी ख्याल आया कि गुनाह है, इसलिये यह नहीं करना चाहिए तो ऐसे वक्त शैतान यह बहकाता है कि तुमने इतने बढ़े बढ़े गुनाह तो पहले से कर रखे हैं, अगर तुम ने यह छोटा सा
गुनाह भी कर लिया तो कौन सी कियामत आ जायेगी। और अगर तुम्हें गुनाह से बचना है तो बड़े बड़े गुनाहों से बचो, इस छोटे से गुनाह से क्या बच रहे हो। इसलिये इसको तो कर गुजरो। यदि रखो: कोई छोटा गुनाह मामूली समझ कर करने में वह बड़ा गुनाह बन जाता है।

छोटे गुनाह और बड़े गुनाह में फर्क करना

यह जो गुनाहों की दो किर्नें हैं, छोटे गुनाह और बड़े गुनाह, तो छोटे का यह मतलब नहीं कि उसको कर लो और बड़े गुनाह से बचने की कोशिश करो, बल्कि दोनों गुनाह हैं। लेकिन यह छोटा गुनाह है और वह बड़ा गुनाह है। बाज़ लोग इस तहकीक़ में पड़े रहते हैं कि यह छोटा है या बड़ा है? उनकी तहकीक़ का यह मक़सद होता है कि अगर बड़ा गुनाह है तो बचने का एहतिमाम करें, और अगर छोटा है तो कर लें। इस बारे में हज़रत थानवी रह. फरमाते हैं कि:

“इसकी मिसाल तो ऐसी है जैसे आग का एक बड़ा अंगारा और छोटी चिंगारी, कि अगर चिंगारी है तो उसको उठा कर अपने चप्पड़ों की अलमारी में रख लो। इसलिये कि वह छोटी सी है तो है लेकिन यदि रखो! वही छोटी सी चिंगारी दुनियारी अलमारी को जला देगी, जिस तरह बड़ा अंगारा जला डालता है। या जैसे छोटा सांप और बड़ा सांप, डसने में दोनों बराबर हैं। इसी तरह गुनाह छोटा हो चाहे बड़ा हो, जब वह अल्लाह तख़ाला की ना फरमानी का अभास है तो फिर क्या छोटा और क्या बड़ा”।

गुनाह गुनाह को खींचता है

यदि रखो: जिस तरह एक नेकी दूसरी नेकी को खींचती है, इसी तरह एक गुनाह दूसरे गुनाह को खींचता है। बुराई बुराई को खींचती है। आज अगर तुमने एक गुनाह कर लिया और यह सोचा कि छोटा गुनाह है, कर लो। यदि रखो: वह गुनाह दूसरे गुनाह को खींचेगा,
दूसरा गुनाह तीसरे गुनाह को करायेगा, और बात फिर किसी हद पर नहीं रुकेगी। और गुनाह के मायने हैं "अल्लाह की ना फरमानी" अगर अल्लाह तालाला सिफ़र एक ना फरमानी पर पकड़ फरमा लें तो सिफ़र एक ना फरमानी भी जहानम में पहुंचाने के लिए काफी है, चाहे वह ना फरमानी छोटी हो या बड़ी हो। फिर बचने का कोई रास्ता नहीं। इसलिये किसी गुनाह को छोटा मत समझो।

(तीसरी नसीहत)

तीसरी नसीहत यह फरमाई कि:

"तुम अपने भाई से इस हालत में बात करो कि तुम्हारा चेहरा खिला हुआ हो। उसके साथ कुशादा पेशानी के साथ बात करो। हंसते चेहरे से बात करो। इसलिये कि यह भी नेकी का एक हिस्सा है।"

एक हदीस में हुजूरे अक़रब सल्ल्लाहु अलेहि व सल्लम ने फरमाया कि:

"अपने (मुसलमान) भाई से हंसते चेहरे के साथ मिलना भी सदका है, इस पर भी इन्सान को अज़ व सवाब मिलता है।"

यह भी हुजूरे अक़रब सल्ल्लाहु अलेहि व सल्लम की अज़ीज़ सुन्नत है।

हज़रत जरीर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु जो ज़ास सहाबा-ए-किराम में से हैं, जिन को "इस उम्मत के युसुफ" कहा जाता है, इसलिये कि वह बड़े हसीन व ख़ूबसूरत थे। वह फरमते हैं कि:

"जब भी हुजूरे अक़रब सल्ल्लाहु अलेहि व सल्लम पर मेरी निगाह पड़ती तो कभी याद नहीं कि आपने तबस्सुम न फरमाया हो। जब कभी आप से मुलाकात होती तो आपके चेहरे पर तबस्सुम आ जाता, आपका चेहरा खिला हुआ होता।"
पाज़ लोग यह समझते हैं कि जब आदमी दीन की तरफ आये तो बिल्कुल खुशक और खुशदुश बन जाए। और उसके चेहरे पर मुस्कुराहट न आए, इसको दीन का हिस्सा समझते हैं। मालूम नहीं कि कहां से यह बात हासिल कर ली है। हालांकि यह हुजूर अक्सर सल्लल्लाहु अल्लाह व सल्लम की युनन के खिलाफ है। इसलिये जब किसी से मिलो तो मुस्कुराते हुए मिलो। हमारे हजरत रह. फरमाया करते थे कि:

"बाज़ लोग माल के कन्जूस होते हैं और बाज़ लोग मुस्कुराने के कन्जूस और बख़्शील होते हैं। उनके चेहरे पर कभी तबस्सुम यानी मुकान ही नहीं आती। हालांकि यह तो बहुत आसान नेकी है कि जब किसी मुसलमान भाई से मुलाकात करो, मुस्कुराते हुए चेहरे के साथ करो, और उसका दिल खुश करो। और जब तुमने उसका दिल खुश कर दिया तो तुम्हारे नाम-ए-आमाल में नेकी का इजाफा हो गया और सदका लिखा गया।"

चौथी नसीहत

चौथी नसीहत यह फरमाई कि:

"अपने नीचे के कपड़े को चाहे पाजामा हो या शलवार या तहबन्द हो, उसको आदी पिंडली तक रखो, अगर आदी पिंडली तक नहीं रख सकते तो टप्पों तक रखो, और टप्पों से नीचे पाजामा वर्गीकृत लेजाने से बचो, इसलिये कि यह तकबुर का हिस्सा है।"

देखिए: इस हदीस में हुजूर अक्सर सल्लल्लाहु अल्लाह व सल्लम ने यह नहीं फर्माया कि तकबुर हो तो नीचे मत करो, और तकबुर न हो तो नीचे कर लो, बल्कि यह फर्माया कि नीचे मत करो। इसलिये कि यह तकबुर है। बाज़ लोग यह कह देते हैं कि हम तकबुर की वजह से नीचे नहीं करते बल्कि ऐसे ही या फैशन की वजह से नीचे करते हैं। और जो मुमानत (मनही) है वह तकबुर
की बजह से है। ऐसा कहने वाले बड़े अजीब लोग हैं जिनको अपने
घमण्डी न होने का इस कदम इल्मीनात है, हालांकि इस रूप जमीन
पर तकबुर से बाकी और तकबुर से बरी कोई जात हो सकती है तो
मुहम्मद रसूलल्लाह ﷺ अल्लाह व सल्लाह नहीं हो सकती, लेकिन आप
सल्लल्लाह ﷺ अल्लाह व सल्ल मे कभी यह नहीं फरमाया कि चूँकि मेरे अन्दर तकबुर नहीं है इसलिये मे अपनी
इजाार (यानी लुंगी या पाजामा वग़ैरह) नीचे कर देता हूं। बल्कि सारी
उमर कभी टक्कों से नीचे इजाार नहीं किया, अगर तकबुर न होने
की बजह से किसी के लिए टक्कों से नीचे पाजामा या लुंगी वग़ैरह
पहनना जायज़ होता तो हुज्जूरे अक्सर सल्लल्लाह ﷺ अल्लाह व सल्लम
के लिए इसकी इजाज़त होती। इसलिये यह ठायल दिल से निकाल
दो। चुनावे इस नसीहत मे आपने फरमाया कि इस से बचो, इसलिये
कि यह तकबुर का हिस्सा है, और अल्लाह ताज़ाला तकबुर और खुद
पसन्दी को पसन्द नहीं करते। “खुद पसन्दी” के अर्थ है “अपने को
दूसरों से अच्छा समझना” कि मेरे अन्दर बड़ी खूबियाँ और कमाल हैं।
यह बात अल्लाह ताज़ाला को पसन्द नहीं। अल्लाह ताज़ाला को
शिकारतगी और अजिज़ी पसन्द है। अल्लाह ताज़ाला के सामने जितना
शिकारता और अजिज़ रहोगे, तवाज़ो करोगे, उताना ही अल्लाह
ताज़ाला के यहां मक़बूल हो जाऊगे। और जहाँ बड़ाई और खुद
पसन्दी आ गई तो वह अल्लाह ताज़ाला को पसन्द नहीं।

(पांचवीं और छठी नसीहत)

पांचवीं और छठी नसीहत यह फरमाई कि:
“अगर कोई इन्सान तुम्हें गायली दे, या तुमको किसी ऐसे एब की
बजह से आए शर्म दिलाए जो एब वाकई तुम्हारे अन्दर है, तो उसके
बदले मे तुम उसके उस एब पर आए और शर्म न दिलाओ जो ऐब
तुम उसके अन्दर जानते हो।"
यानी गाली के बदले गाली मत दो, और आर दिलाने में उसको आर मत दिलाओ। इसलिये कि उस शक्स के गाली देने और आर दिलाने का वबाल उसके ऊपर है, उसकी पकड़ उस से होगी। और अगर तुम बदला ले लोगे तो तुम्हें कोई फायदा नहीं होगा। और अगर बदला नहीं लोगे बल्कि सब करोगे, तो अल्लाह तआँला के यहां उसका अजरे अजीर मिलेगा। जैसे एक शक्स ने तुम से कहा कि तुम बेबूफ हो, तुमने जवाब में उस से कहा "तुम हो बेबूफ" तो यह तुम ने बदला ले लिया, अगरचे तुमने कोई ना जायज काम नहीं किया। लेकिन यह बताओ कि तुम्हें दुनिया या आशिर्वत का क्या फायदा हासिल हुआ? और अगर तुम खामोश हो गये और कोई जवाब नहीं दिया तो उसके नतीजे में कुड़न पेड़ हुई और गुस्सा आया, लेकिन गुस्से को पी गये और सब से काम लिया तो उसके बारे में अल्लाह तआँला का बादा है कि:

""Înmâ-yü'ûsî 'l-sâhâ'în Âjîrîm 'l-le.'fîr 'Îhâsâb"

"यानी अल्लाह तआँला सब्र करने वालों को बे-हिसाब अज अता फरमाते हैं।"

इसलिये अपनी जवाब को रोक कर और नफ्स को क्रूं में करके बे-हिसाब अज कमा लें। आज हम यहां वैट कर बे-हिसाब अज का अन्दाजा नहीं कर सकते, लेकिन जब अल्लाह तआँला के सामने हाजिर होंगे तो उस वक्त पता चलेगा कि इस जवाब को जरा सा रोक लेने से कितना बड़ा फायदा हासिल हुआ। बहर हाल, हुजूरे अकर सल्लाल्हु अल्लाहि व सल्लम ने यह नसीहत फरमा दी कि गाली का जवाब गाली से मत दो। अगरचे तुम्हें बदला लेने का हक हासिल है, लेकिन हक को इस्तेमाल करने से बेहतर यह है कि माफ कर दो। चुनांचे कुरआने करीम का इरसाद है:

""Wâlîn dâfûr, râyîn dâfûr, 'l-Îâmîr 'l-îâmîr al-âmîr"

"यानी जो शक्स सब्र करे और माफ करे दे तो यह अल्लाह का रजत बढ़े।"
इस्लामी क़ुँद्रात

जिल्द(६)

हिम्मत के कामों में से हैं।

दूसरी जगह इशाशद फरमाया:

"एनफ़ बाल्ती है अखर्स हया ल़ी वीनक वानिता वदारा काना वलि ख़मः, वः यः भः विलोकहा न लाल्डः वो ज्ञाहै अल्लाह अयः"।

यानी जिस ने तुम्हारे साथ बुराई की है तुम अच्छाई से उसका बदला दो। इसका नतीज़ा यह होगा कि जिसके साथ तुम्हारी दुश्मनी थी वह तुम्हारा दोष बन जायेगा। लेकिन साथ में यह भी फरमाया कि यह काम वही शक्ष कर सकता है जिस ने अपने अन्दर सब्र करने की आदत बनाई हो, और वह शर्म कर सकता है जो बहुत ख़ुश नसीब हो।

इसलिये बदला लेने के बजाय माफ़ करने की आदत बनाओ। एक हदीस शरीफ़ में हुजूरुरे अक़ब्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि:

"अल्लाह तयाला फरमाते हैं कि जो शर्म दूसरे को माफ़ कर दे तो उस शर्म को उस दिन माफ़ कर दूंगा जिस दिन उसकी माफ़ी की सब से ज्यादा जरूरत होगी। और ज़ाहिर है कि आख़िर में इन्सान को माफ़ी की सब से ज्यादा जरूरत होगी।"

ये सब हुजूरुरे अक़ब्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नसीहतें हैं। अगर हम इनको अपनी जिन्दगी में अपना लें तो सारे झगड़े ख़त्म हो जाएं, दुश्मनियां मिट जाएं, फितने ख़त्म हो जाएं। अल्लाह तयाला हम सब को इन नसीहतों पर अभिल करने की तौफ़ीक अता फरमाए, आमीन।

واخرذومنا ان الحمد لله رب العالمين
मुस्लिम कौम आज कहां खड़ी है?

विश्लेषण और अमल की राह

हमद लल्ल रब्ब उल्लाह, दिलों का सलाम और सलाम सिद्दा और वॉलाना मुहम्मद
क़ात नबीज़, और सिद्दा और अम्ल और
यह जूह और यह नसीरी का नौका है की मुक्त के एक अमल तक के अंदर के जूह और साया मुक्त
के अलाहे फ़िरं हज़ारत की महफिल एक तक इल्म की हैसियत
ता शामिल होने का नौका मिल रहा है। और एक ऐसे मौजू पर गुफ़्तगू की साया अल्लाह तबाला की तरफ से बस्ती जा रही है
जो हमारे हाल (वॉलाना काल) और मुस्तकबिल (वॉलाना काल) के
लिए बड़ी अहमियत का मौजू है। मेरे वर्तमान मुहतरम जनाब डाक्टर
ज़फ़र इस्काक अन्सारी साहिब ने मेरे बारे में जो अल्लाह इराशाद
फरामायी, उन्होंने अपने मेरे साथ अपने अच्छे गुमान और मुहब्बत की
वजह से जिन ज़मान और जिन उम्मीदों का इज़हार फरामाया है,
उनके बारे में इतना ही अर्ज कर सकता हूँ कि अल्लाह तबाला मुझे
हकीकत में उनका अहल बनने की तौर पर अल्लाह फरामाए, आमीन।

मुस्लिम कौम के अलग अलग दो मुख्तलिफ़ पहलू

जैसा कि आपको हमने है कि आजकी गुफ़्तगू का मौजू यह है कि: "उम्मत मुस्लिमा आज कहां खड़ी है?" यह एक ऐसा मौजू है
जिसके बहुत से पहलू है। उम्मत मुस्लिम सियासी एतिहास से कहां
खड़ी है? आर्थिक एतिहास से कहां खड़ी है? अख़्लाकी एतिहास से
कहां खड़ी है? गरज मुख्तलिफ़ हैसियतों से इस सवाल को मुख्तलिफ़
सूरतें दी जा सकती हैं, जिनमें से हर एक हैसियत मुफ्तसल मुल्कला को मद्दत, और तमाम हैसियतों का एक बैठक और जल्दी में इहाला मुश्किल है, इस्लाम मे इस सवाल के सिर्फ़ एक पहलू पर मुख्तार तीर पर कुछ अर्ज करना चाहता है और वह यह कि उम्मते मुस्लिमा फिर कोई अवधार नहीं कही तो बड़ी है। आज जब हम उम्मते मुस्लिमा की मानोड़ा हालत का जायजा लेते हैं तो दो किस्म के अलग अलग तास्सुरात हमारे सामने आते हैं। एक तास्सुर यह है कि उम्मते मुस्लिमा गिरावट और पस्ती का शिकार है, चुनाव आज कल उम्मते मुस्लिमा की बड़े हाली का तज़किरा जवाब पर आय है। लेकिन दूसरी तरफ इसी माहील में इस्लामी बेदारी का तज़किरा भी जो व शोर के साथ किया जा रहा है। पहले तास्सुर का खुलासा यह है कि उम्मते मुस्लिमा पस्ती की तरफ़ जा रही है, और बड़े हाली का शिकार है, और दूसरे तास्सुर का नतीजा यह है कि उम्मते मुस्लिमा के साथ गैर मामूली उम्मीदें बांधी जा रही है। कभी कभी पहले तास्सुर से जोड़क और मरहम होकर हम मायूसी का शिकार होने लगते हैं और कभी कभी दूसरे तास्सुर से असर लेकर जफत से ज्यादा उम्मीदें बांधना शुरू कर देते हैं।

“हक” दो इन्तिहाओं के दरमियान
मेरी नाकांठे गुज़ारिश यह है कि हक इन दोनों इन्तिहाओं के दरमियान है, जहां भी अपनी जगह दुरुस्त है कि हम एक उम्मत की हैसियत से जवाल और पस्ती का शिकार हैं। और यह भी अपनी जगह दुरुस्त है कि इसी जवाल और पस्ती के दौर में एक इस्लामी बेदारी की तहर पूरी इस्लामी दुनिया में महसूस हो रही है। लेकिन हमें न तो इतना मायूस और न अम्मीदी का शिकार होना चाहिए जो हमें वे अभल बना दे, और न इस्लामी बेदारी के महज उन्नाम और इस्तिलाह से मुतासिफ होकर उस से इतनी उम्मीदें बांधनी चाहिए जो हम अपनी इस्लाम में गाफ़िल हो जायें, बल्कि हक इन दो
इन्तिहाओं के दर्मियान है। और इसी वजह से यह मौजूद बहुत अहमियत रखता है। यह मौजू यह "उम्मत मुस्लिम आज कहां खड़ी है?" अपने दामन में यह सवाल भी खुद खुद रखता है कि इस उम्मत को कहां जाना है? और किस तरह जाना है? इस मौजू पर युपुल्गु करते हुए में इन दो इन्तिहाओं से किसी कुद्रह हट कर दर्मियान की राह इतिहास तर्क करते हुए जाती तौर पर यह समझता हूँ कि अल्लाह लल्लाह इस बात के बावजूद हम बहुत से शोकों और जिन्दगी के गोष्टों में न सिर्फ यह कि गिरावट का शिकार हैं बल्कि और गिरते ही जा रहे हैं, यह एहसास उम्मत मुस्लिम के तक़रीबन हर ख़िलते में गैर हो रहा है कि हमें अपनी असल की तरफ़ लौटना चाहिए, और एक मुसलमान के हैसीत्य से इस दीन इस्लाम की रूप जमीन पर नाफ़ज़ और लागू करना चाहिए। इसी एहसास को आज कल की इस्तिमाल में "इस्लामी बेदारी" के नाम से याद किया जाता है।

इस्लाम से दूरी की एक मिसाल

यह भी अल्लाह तअाला की अजीब व गृहीब कृदरत का करिश्मा है कि इस्लामी दुनिया की सियासी बागड़ीर जिन हाथों में है, अगर उनको देखा जाए तो ऐसा लगता है कि इस्लाम से दूरी की इन्तिहा हो चुकी है। एक वाकिफ़ खुद मेरे साथ पेश आया, और अगर बजाते खुद मेरे साथ पेश न आता तो मेरे लिए शायद इस पर यकीन करना मुश्किल होता। लेकिन चूँकि खुद मेरे साथ पेश आया इसलिये यकीन किए ग़ैर चारा नहीं। मेरा एक वफ़द के साथ एक मशहूर इस्लामी मुल्क़ जाना हुआ, हमारे वफ़द की तरफ़ से यह तज़ीक़ह हुई कि देश के राष्ट्रपति से मुलाक़ात के बदले उनकी खिदमत में वफ़द की तरफ़ से कुरआन के करीम का हदया पेश किया जाए, लेकिन उस देश के राष्ट्रपति को तोहफ़ा पेश करने से पहले प्रोटॉकॉल से संपर्क करना पड़ता है। चुनावे वफ़द की तरफ़ से प्रोटॉकॉल को इतिला दी गयी कि
इस्लामी बेदारी (जागरूकता) की एक मिसाल

लेकिन यह जवाब सुनने के बाद उसी दिन शाम को एक मस्जिद में नमाज़ पढ़ने के लिए जाने का इतिफाक हुआ, मस्जिद नौजवान लड़कों से भरी हुई थी, बड़ी उम्र के अफसर के मुकाबले में नौजवानों की तादाद ज्यादा थी, नमाज़ के बाद वे सारे नौजवान एक जगह बैठ कर अपनी ज़िबान में गुप्ततायु कर रहे थे, पता करने से मालूम हुआ कि यह उनका रोजाना का मामूल है कि नमाज़ के बाद दीन से मुनालिक कोई किताब पढ़ कर सुनाते हैं और आपस में उसका मुज़ाकरा करते हैं। लोगों ने यह बताया कि यह सिलसिला सिफ़र इस एक मस्जिद के साथ खास नहीं, बल्कि पूरे मुल्क की तमाम मस्जिदों में यह तरीका जारी है, जबकि इन नौजवानों की रस्मी तन्त्रीम कोई नहीं है, और न रस्मी तौर पर आपस में राज़ का कोई ताल्लुक है। इसके बावजूद हर मस्जिद में यह सिलसिला कायम है।

कुल मिला कर इस्लामी दुनिया की सूरत हाल

इस से आप अन्दाजा कर सकते हैं कि सियासी सतह पर और इक्तिमाद (यानी सता) की सतह पर इस्लाम के साथ क्या रवैया है, और नई नसल और नौजवानों में इस्लाम के साथ ताल्लुक और जुड़ने का कैसा मुज़ाहरा हो रहा है। वहाँ हाल, कुल मिला कर
इस्लामी दुनिया के हालात पर गौर करने से यह नज़र आयेगा कि सियासी इक्तिदार अभाव तौर पर इस्लाम के बारे में या तो मुख्तारिफाना रैया रखता है, या कम से कम ला ताल्लुक है। उसके इस्लाम से कोई सरकार नहीं, इस से कोई दिलचस्पी नहीं। इल्ला माशा अल्लाह। लेकिन इसके साथ साथ अवाम के अंदर, ख़ास तौर पर नीजवानों के अंदर एक बेदारी (जागरूकता) की तहर है, और इस्लामी दुनिया के मुख्तारिफ़ खिताबों में यह तहरीक अमली तौर पर चल रही है कि इस्लाम को अपनी जिन्दगी के अंदर नाफ़ुज़ और जारी किया जाए, और इसको अमली तौर पर कायम किया जाए।

इस्लाम के नाम पर कुर्बानियाँ

यह दुरुस्त है कि इस रास्ते में कुर्बानियों की कमी नहीं, बहुत से मुल्कों में इस्लाम को नाफ़ुज़ करने के लिए जो तहरीकों चली हैं, और इस अन्दाज़ से चली है कि लोगों ने उनके लिए अपनी जान, माल और ज़िम्मेदारी की कीमती कुर्बानियाँ पेश की। सच्ची बात यह है कि वे हमारे लिए काबिले फ़ूफ़ा हैं। मिस्र में, अलू जजायर में और दूसरे इस्लामी मुल्कों में जो कुर्बानियां दी गयीं, खुद हमारे मुल्क के अंदर इस्लाम के नाम पर, इस्लामी शरीआत के लागू करने की ख़ातिर लोगों ने अपनी जान और माल की कुर्बानियाँ पेश की। वह एक ऐसी मिसाल है कि जिस पर उभरता बिला शुबह फ़ूफ़ा कर सकती है, और इस से यह जाहिर होता है कि आज भी अल्लाह तबाहा के फ़ूफ़ा और करम से दिलों में ईमान की चिंगारी बाकी है।

तहरीकों की नाकामी के अर्थात क्या हैं?

लेकिन इन सारी कुर्बानियों, सारी कोशिशों और मेरनों के बावजूद एक अजीब मन्ज़र यह नज़र आता है कि कोई तहरीक ऐसी नहीं है जो कामयाबी की आँख़ से भन्ने लगा है। या तो वह तहरीक बीच में दब कर ख़त्म हो गयी या उसको दबा दिया गया, या खून तहरीक आगे चल कर टूट फूट का शिकार हो गयी, जिसके
मक्तब-ए-अशरफ

नतीजे में उस तहरीक के जो मतलबा फायदे थे, वे हासिल न हो सके। अब सवाल यह है कि इस सूरते हाल का बुनियादी सब्ज गया है?

इसलिए कि ये बेदारी (यानी जागरूकता) की तहरीकों उठ रही हैं, कुर्बानियां भी दी जा रही हैं, वक्त भी खूब रहा है, मेहनत भी हो रही है, इसके बावजूद कामयाबी की कोई वाजेह मिसाल सामने नहीं आती। हम में से हर शख्स को इस पहलू पर गौर करने की जरूरत है।

में एक मामूली तालिब इलम की हेसियत से इस पर जो गौर कर सका हूँ वह आप हज़ारात की खिदमत में इस महफ़िल में पेश करना चाहता हूँ, कि इस सूरते हाल के बुनियादी अस्थायी क्या है? और हम किस तरह उन्हें दूर कर सकते हैं?

इस सिलसिले में जो बात अर्ज करना चाहता हूँ वह बहुत नाज़ुक बात है। और मुझे इस बात का भी ख़रहा है कि अगर इस नाज़ुक बात की ताबीर में थोड़ी सी भी गलती हुई तो वह गलत फहमियां पैदा कर सकती हैं, लेकिन में यह ख़रहा मोल लेकर उन दोनों पहलुओं की तरफ तवज्जोह दिलाना चाहता हूँ जो मेरे नज़दीक इस सूरते हाल का बुनियादी सब्ज है। और जिन पर हमें सच्चे दिल से और ठंडे दिल से गौर करने की जरूरत है।

गैर मुस्लिमों की साजिशों

इस्लामी सफ़री भी कमायब न होने का एक सब्ज जो हर शख्स जानता है वह यह है कि गैर मुस्लिम ताकतों की तरफ़ से इस्लाम और मुसलमानों को दबाने की साजिशों की जा रही हैं। इस सब्ज का तफसी़ली तत्क्षित करने की जरूरत नहीं, इसलिये कि हर मुसलमान इस से वाक़फ़ है। लेकिन मेरा जाती इमान यह है कि गैर मुस्लिमों की साजिशों उम्मत मुस्लिम को नुकसान पहुँचाने के लिए कभी भी उस वक़्त तक कमायब नहीं हो सकती जब तक खुद उम्मत मुस्लिम के अंदर कोई ख़ामी या नुकसान मौजूद न हो, बहुत साजिशें हमेशा उस वक़्त कमायब होती हैं, और हमेशा उस वक़्त
तबाही का सबब बनती है जब हमारे अंदर कोई नुक्सा आ जाए, वर्ना हुजूर अक्सर सल्लल्लाहु अल्लाहि व सल्लम से लेकर आज तक कोई दौर साजिशों से ख़ाली नहीं रहा।

सतेजा कार रहा है अजल से ता इस्मुजिम

चिरागे मुस्तफ़ी से शरारे बू लहबी

इसलिये यह साजिश न कभी ख़त्म हुई है और न कभी ख़त्म हो सकती है। अल्लाह तालाला ने जब आदम अल्लाहीस्लाम को पैदा फर्माया तो उस से पहले इब्राइस डेडा हो चुका था। इसलिये यह उम्मीद रखना कि साजिशें बदल हो जायेंगी, यह उम्मीद बड़ी ख़ुद फरेबी की बात है।

साजिशों की कामयाबी के अस्वाद

अब हमारे लिए सोचने की बात यह है कि वह नुक्सा और ख़राबी और ख़ामी क्या है, जिसकी वजह से ये साजिशें हमारे द्वीलाफ़ कामयाब हो रही हैं? और यह सोचने की ज़रूरत इसलिये है कि आज जब हम अपनी बदल हाली का करकिरा करते हैं तो आम तौर पर हम सारा इल्जाम और सारी जिम्मेदारी इन साजिशों पर डालते हैं, कि यह फला की साजिश से हो रहा है, यह फला का बोया हुआ बीज है, और ख़ुद फारिश होकर बैठ जाते हैं। हालांकि सोचने की बात यह है कि ख़ुद हमारे अंदर क्या ख़राबियां और क्या ख़ामियां हैं? इस सिलसिले में दो नुमाइदी चीजों की तरफ से तबज्जोह दिलाना चाहता हूँ, जो मेरी नज़र में इन नाकामियों का बहुत बड़ा सबब हैं।

शाक्तित्व (व्यक्तित्व) की तानियर से गुफ्फत

उनमें से पहली चीज शाक्तित्व की तानियर की तरफ तबज्जोह का न होना है, इस से मेरी मुरद यह है कि हर यह लिखा इस्लाम यह बात जानता है कि इस्लाम की तालीम जिन्दगी के हर शोबे से मुलालिक हैं, उनमें बहुत से अहकाम इज्तिमाई किस्म के हैं, और
बहुत से अहकाम इन्फिरादी किस्म के हैं, बहुत से अहकाम का खिलाब पूरी जमानत से है, और बहुत से अहकाम का खिलाब हर एक फर्द से अलग अलग है। दूसरे अनुप्रयोग में या तो कहा जा सकता है कि इस्लामी अहकाम में इज्तिमाशियत और इन्फिरादियत दोनों के दर्शनियाँ एक मुक्तसूत्र तत्त्व (संतुलन) है, उस तत्त्व में उस को कायम रखा जाए तो इस्लामी तालीमात पर बराबर ठौर पर आमल होता है, और अगर उनमें से किसी एक को या तो नज़र अंदाज़ कर दिया जाए या किसी पर ज़रूरत से ज़्यादा जोर दिया जाए और दूसरे की अहमियत को कम कर दिया जाए तो इस से इस्लाम की सही तत्त्व (अनुकूलता) सामने नहीं आ सकती, इज्तिमाशियत और इन्फिरादियत के दर्शनों जो तत्त्व यानी संतुलन है हमने उस तत्त्व में अपने अमल और अपनी फिक्र से एक खलत रैली कर दिया है और उसके नतीजे में हमने तरजीहात की तरहीब उलटी है।

सैक्कुलरिज़म की तरदीद

एक जमाना वह था जिसमें सैक्कुलरिज़म के प्रोपेगन्डे की बजह से लोगों ने इस्लाम को मसिज़ और मंदसूर और नमाज़ रोज़े और इबादात तक सीमित कर लिया था, यानी इस्लाम को अपनी इन्फिरादी जिन्दगी तक महदूद और सीमित समझ लिया था, और सैक्कुलरिज़म का फलस्फ़ा भी यही है कि मज़हब का सावधान इन्सान की इन्फिरादी जिन्दगी से है, इन्सान की सियासी, आर्थिक और समाजी जिन्दगी किसी मज़हब के तात्वें नहीं होनी चाहिए, बल्कि वह वक्त की मसलहत के तात्वें होनी चाहिए। इस गलत फलस्फ़ा और फिक्र को रह करने के लिये हमारे मुआशरे यानी समाज के अन्दर अहले इल्म का एक बड़ा तत्त्व वज़ुद में आया, जिस ने इस फिक्र की तरदीद करते (यानी नकारते) हुए बज़ा ठौर पर यह कहा कि इस्लाम के अहकाम इबादात, अखलाक और सिर्फ इन्सान की इन्फिरादी जिन्दगी की हद तक महदूद और सीमित नहीं, बल्कि
इस फ़िक्र को रह करने का नतीजा

लेकिन हमने इस फ़िक्र के रह करने में इज्तिमाावियत पर इतना जोर दिया कि उसके नतीजे में इन्फ़िरादी अहकाम पीठ पीछे चले गए, और नज़र अंदाज़ हो गये, या कम से कम अमली तौर पर गैर अहम होकर रह गये, जैसे एक नुक़ता—ए—नज़र यह था कि दीन का सियासत से कोई ताल्लुक नहीं।

"دع ما قيصر لقيصر‌ومالله لله"

यानी जो क़ैसर का हक है वह क़ैसर को दो, जो अल्लाह का हक है वह अल्लाह को दो। गोया कि दीन को सियासत में लाने की कोई ज़रूरत नहीं, और इस तरह दीन को सियासत से देस निकाल दिया गया।

हमने इस्लाम को सियासी बना दिया

इस गुलत नुक़ता—ए—नज़र के रह करने में एक और फ़िक्र सामने आई, जिस ने दीन के सियासी पहलू पर इतना जोर दिया कि यह समझा जाने लगा कि दीन का असली मक़सद ही एक सियासी निज़ाम का कियाम है। यह बात अपनी जगह गुलत नहीं थी कि सियासत भी एक ऐसा शोबा है जिसके बारे में इस्लाम के मक़सूस अहकाम हैं लेकिन अगर इस बात को यो कहा जाए कि दीन हकीकत में सियासत ही का नाम है, या सियासी निज़ाम को नाफ़िज़ करना दीन का सब से पहला मक़सद है तो इस से तरजीहात की तत्तीब उलट जाती है। अगर हम इस फ़िक्र को तस्वीर कर लें तो इसका मतलब यह है कि हमने सियासत को इस्लामी बनाने के बजाए इस्लाम को सियासी बना दिया, और दीन में इन्फ़िरादी ज़िदगी का जो हुसन व ख़ूबसूरती थी, उस से हमने अपने आपको महरूम कर दिया।
हुजूर सल्ल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम की मक्की ज़िज्दगी

नबी—ए—करीम सरवरे दो आलम सल्ल्लाल्लाहु अलैहि व सल्ल
तु की मुबारक ज़िज्दगी ज़िज्दगी के हर शोबे में हमारे लिए बेहतरीन
नमूना है, आपकी २३ साल की नववी ज़िज्दगी दो हिस्सों में तक्षीम
है, एक मक्की ज़िज्दगी और दूसरी मद्री ज़िज्दगी। आपकी मक्की
ज़िज्दगी १३ सालों पर पैली हुई है, और मद्री ज़िज्दगी दस साल
पर पैली हुई है। हुजूर अक्दस सल्ल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम की
मक्की ज़िज्दगी को अगर आप देखें तो यह नज़र आयेगा कि उसमें
सियसत नहीं, हुकूमत नहीं, किताल नहीं, जिहाद नहीं, याना तक कि
थप्पड़ का जवाब थप्पड़ से भी नहीं, बल्कि हुक्कम यह है कि अगर
दूसरा शाक्स तुम पर हाथ उठा रहा है तो तुम्हें हाथ नहीं उठाना है।

“واصبر وما صبرك الا بالله”

हालांकि मुसलमान कितने ही कमजोर सही, तायदाद के प्रतिबार
से कितने ही कम सही, लेकिन इतने ही गये गुज़रे नहीं थे कि अगर
दूसरा शाक्स दो हाथ मार रहा है तो उसके जवाब में एक हाथ भी न
मार सकें, या कम से कम मारने वाले का हाथ भी न रोक सकें,
लेकिन वहां हुक्कम यह है कि सब करो।

मक्के में शरियत बनाने का काम हुआ

यह हुक्कम क्यों दिया गया? इसलिए कि पूरी मक्की ज़िज्दगी का
मकसद यह था कि ऐसे अफराद तैयार हों जो आगे जाकर इस्लामी
मुआशरे (समाज) का बोझ उठाने वाले हों। १३ साल की मक्की
ज़िज्दगी का खुलासा यह था कि उन अफराद को भौत में सुलगा कर
उनके किरदार, उनकी शरियत, उनके आमल और अक्लाक की
संबंधाएं और उन्हें साफ सुधार किया जाए, उन १३ साल के अन्दर
इसके अलावा कोई काम नहीं था कि उन अफराद के अक्लाक
दुरुस्त हों, उनके अर्कदे दुरुस्त हों, उनके आमल दुरुस्त हों, उनका
किरदार दुरुस्त हों, और उनकी बेहतरीन सीरत की तामीर हो। उनका
ताल्लुक अल्लाह तअाला से कायम हो जाए, अल्लाह के साथ ताल्लुक की दौलत उनको नसीब हो और अल्लाह तअाला के सामने जवाब देही का एहसास उनके दिलों में पैदा हो जाए।

शख्सियत बनाने के बाद कैसे अफ़राद तैयार हुए?

93 साल तक यह काम होने के बाद फिर मदनी ज़िल्दगी का आगाज (शुरुआत) हुआ, जिसमें इस्लामी हुकूमत भी वजूद में आती है, इस्लामी कानून भी और इस्लामी हुदूद भी नाफिज़ होती हैं, और एक इस्लामी रियासत के जितने लवाजिम होते हैं वे सब वजूद में आते हैं। लेकिन उन तथ्यों लवाजिम के होने के बावजूद चूँकि इन अफ़राद को एक बार ट्रेनिंग कोर्स से गुज़ारा जा चुका था, इसलिए किसी फर्द के हाशिया--ए--ख़ायल में भी यह बात नहीं आती कि हमारा भक्त महज सत्ता हासिल करना है, बिलक इक़तिदार (सत्ता) के बावजूद उनका ताल्लुक अल्लाह तअाला से जुड़ा हुआ था और वे लोग दीन को कायम करने की जहद़ौजिहद में जिहाद और किताब में लगे हुए थे, उनका यह हाल तारीख में लिखा है कि यर्मूक के मैदान में पड़े हुए सहावा--ए--किराम के लशकर पर तब्दिया करते हुए एक गैर मुस्लिम ने अपने अफ़राद से कहा कि वे बड़े अजीब लोग हैं कि:

“रहबान ललिल और रक्षान्तरण बनहार”

यानी दिन के वक़्त में ये लोग बेहतरीन शहसवार हैं और बहादुरी और जवां मर्दी के जोड़ दिखाने वाले हैं, और रात के वक़्त में ये बेहतरीन राहिब हैं, और अल्लाह तअाला के साथ अपना रिश्ता जोड़े हुए हैं, और इबादत में मशूल रहते हैं। हासिल यह कि सहावा--ए--किराम दो दीज़ों को साथ लेकर चले, एक जहद़ौजिहद और दूसरे अल्लाह के साथ ताल्लुक, वे दोनों दीज़े एक मुसलमान की ज़िल्दगी के लिए लवाजिम और ज़ुकरी हैं, अगर इनमें से एक को दूसरे से जुड़ा किया जायेगा तो इस्लाम की सही तस्वीर सामने नहीं आयेगी।
हम लोग एक तरफ झुक गए

सहाबा-ए-किराम रज़िय़ल्लाहु अनहुम के जेहन में यह ख़्याल नहीं आया कि छूकिं अब हम आला और बुल्लद मकाम के लिए निकल खड़े हुए हैं, हमने जिहाद शुरू कर दिया है और पूरी दुनिया पर इस्लाम का सिक्का विठाने के लिए ज़होजिह्द शुरू कर दी है, इसलिए हमें अब तहज्जुद पढ़ने की क्या ज़रुरत है? अब हमें अल्लाह तबाला के सामने रोने और गिड़गिड़ाने की क्या हाजिम है? किसी भी सहाबी के जेहन में यह ख़्याल नहीं आया, बल्कि उन्हें इन सब चीजों को बाकी रखते हुए ज़होजिह्द व अमल का रास्ता इठित्तयार किया। लेकिन हमने जब सियासी इञ्जियंटार हासिल करने के लिए ज़होजिह्द व अमल के रास्ते को अपनाया, और सैकड़ों जल्द का रह करते हुए सियासत को इस्लाम का एक हिस्सा करार दिया तो इस पर इतना जोर दिया कि दूसरे पहलू, यानी अल्लाह की तरफ रूजू और अल्लाह तबाला के साथ ताल्लुक कायम करने, उसके दुःख रोने और गिड़गिड़ाने, उसके दुःख आजिजी के साथ माथा टेंकने और अल्लाह तबाला की इबादत करके मिलास्थ हासिल करने के पहलू को या तो फ़िक़ी तौर पर, या कम से कम अमली तौर पर नज़र अन्वाज़ कर गए, और हमने अपने जेहनों में यह बिठा लिया कि अब हमें इसकी ज़रुरत नहीं, इसलिए कि हम तो इस से बुल्लद और आला मकसिद के लिए ज़होजिह्द कर रहे हैं। इसलिए शख्सी इबादत एक गैर अहम चीज़ है, जिसे इस आला और बुल्लद मकसिद पर कुर्बान किया जा सकता है, या कम से कम उसकी तरफ से ग़फ़्रलत बरती जा सकती है।

हम फर्द की इस्लाम से ग्राफ़िल हो गये

इसलिए इज्तिमाशियत पर ज़रुरत से ज्यादा जोर देने के नतीजे में फर्द के ऊपर जो अहकाम अल्लाह तबाला ने आये फरमाये थे, हम उनसे फ़िक़ी या अमली तौर पर पहलू वचना शुरू
कर देते हैं, इसका नतीजा यह है कि आजकल दौर में उठने वाली बेदारी की तहरीकों बड़े इस्लाम और ज़ब्रे के साथ इस्लाम को नफ़क़ज़ करने के लिए खड़ी होती है, लेकिन चूंकि यह दूसरा पहलू नज़र अन्वेषण हो जाता है इस वजह से वे तहरीकों कामयाब नहीं होती। देखिए, कुराजाने करीम ने वाज़ह तौर पर बयान फर्मा दिया है कि:

"अन तन्सुरालाल यिंसरक़म रिथबित एदामः"

इस आयत में अल्लाह तङ्गळा ने अर्थात मुस्लिमा की मदद, फ़तह और साबित क़व़री को "इन् तन्सुरुल्ला-ह" के साथ मश्रुत किया है, और अल्लाह की तरफ रज़ू के साथ मश्रुत किया है। गोया कि अल्लाह तङ्गळा की मदद उस वक़्त आती है जब इन्सान का रिश्ता अल्लाह तङ्गळा के साथ मज़बूत होता है, अगर वह रिश्ता कर्मजोर पड़ जाए तो फिर वह इन्सान मदद का हकदार नहीं रहता।

जो बात दिल से निकलती है वो दिल पर असर करती है

जो इस्लामी तालीमात फर्द से मुतालिलक हैं, वे तालीमात इन्सान को इस बात पर तैयार करती हैं कि उसकी इज़्ज़ामी जहोजियाद सफ़्स सुधारी हो, फर्द से मुतालिलक तालीमात जिसमें इबादत, अक्लाक, दिली केफियाते सब चीज़ें दाखिल हैं, अगर इन्सान उन पर पूरी तरह अर्थल करने वाला हो, और उन तालीमात में उसकी तर्कियात नाक़िस हो, फिर वह समाज को सुधारने का झंडा लेकर खड़ा हो जाए तो इसका नतीजा यह होता है कि उसकी कोशिशें कामयाब नहीं होती। अगर में जाती तौर पर अपने अक्लाक, किरदार और सीरत के पेइज़ बर से अच्छा इन्सान नहीं हूँ और इसके बावजूद में समाज को सुधारने का झंडा लेकर खड़ा हो जाए, और लोगों को दावत दूं कि अपना सुधार करो, तो इस सूरत में मेरी बात में कोई वज़न और कोई तासीर नहीं होगी। लेकिन जो शक्त स्थानी जाती जिन्दग़ी को, अपनी सीरत को, अपने अक्लाक व किरदार को पाक
साफ़ और सुधार बना चुका है, और अपनी इस्लाम (सुधार) कर चुका है, फिर वह दूसरों को इस्लाम की दावत देता है तो उसकी बात में वजन भी होता है। फिर वह बात सिर्फ़ कान तक नहीं पहुँचती बस्त्रिक दिल पर जाकर अंसर डालने वाली होती है। इसलिए जब हम अपने अख़्ताक को संबंधी बैग़र दूसरों की इस्लाम की किफ़्र लेकर निकल खड़े होते हैं तो उसका नतीजा यह होता है कि जब फितना का सामना होता है, उस वक़्त हथियार डालते चले जाते हैं, और बुलबुल अख़्ताक और किरदार का मुझाहरा नहीं करते, नतीजे में माल व आदों और सता के लालच और मुहब्बत के फितना में गिरफ़्तार हो जाते हैं। 

फिर आगे चल कर असल मक़सद तो पीछे रह जाता है और अपने सर सेहरा बांधने का शौक आगे आ जाता है। फिर हमारी हर नक़ल व हर्कत के गिरद यह बात घूमती है कि किस काम के करने से मुझे कितना कर्डिट हासिल होगा? जिसके नतीजे में कामों के चुनाव के बारे में हमारे फैसले गुलत हो जाते हैं, और हम मनःज़िले मक़सद तक नहीं पहुँच पाते।

अपने सुधार की पहले किफ़्र करो

इसी सिलसिले में कुरआने करीम की एक आयत और हज़ूरे अवदस मुल्ला अलीहि व सल्लम का एक इरशाद है, जो आम तौर पर हमारी नज़रों से अंज़ल रहता है, आयते करीमा यह है कि:

"याहूदाओं जिन्हें आपने हमस्क तात्पर्य नहीं आपने किया वह अंज़ल क्रम में अंज़ल क्रम में आता है "

"याहूदाओं जिन्हें आपने हमस्क तात्पर्य नहीं आपने किया वह अंज़ल क्रम में अंज़ल क्रम में आता है "

(तर्ज़ुमा) ऐ ईमान वालो! तुम अपनी ख़बर लो, (अपने आपको दुरुस्त करने की किफ़्र करो) अगर तुम सीधे रास्ते पर आ गए तो जो लोग गुमराही के रास्ते पर जा रहे हैं वे तुम्हारा कुछ विगाड़ नहीं सकते, तुम्हें कुछ नुकसान नहीं पहुँचा सकते, अल्लाह ही की तरफ तुम सब को लौट कर जाना है, वह उस वक़्त तुम्हें भतायेगा कि तुम दुनिया में क्या अमल करते रहे।"
इस्लामी ख़ुदाबाद

रिवाज़ों में आता है कि जब यह आयत नाज़िल हुई तो एक सहारी रजियल्लाहु अन्नु ने नबी-ए-करीम सल्ल्ल्ल्लाहु अलैहि व सल्लम से सवाल किया कि या रसूलल्लाह! यह आयत तो बता रही है कि अपनी इस्लाम कि फिक्र करो, अंगर दूसरे लोग गुमराह हो रहे हैं तो उनकी गुमराही तुम्हें कुछ नुकसान नहीं पहुँचायेगी। तो क्या हम दूसरों को अच्छे काम का हकूम और बुरे काम से मना न करें? दावत व तब्लीग़ का काम न करें? जवाब में नबी-ए-करीम सल्ल्ल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया: ऐसा नहीं है, तुम तब्लीग व दावत का काम करते रहो, उसके बाद आपने यह हदीस इरशाद फरमायें:

"इन्ते रायत शहामेताना, औहो मतबुम बरंज़या में और अंठा राय।"

प्राये फ़ुलिक़, भाषाते नसक ओ तुम इमामुलामा।

यानी जब तुम समाज के अन्दर चार बीज़ में फैली हुई देखो, एक यह कि जब माल की मुहब्बत के ज़रिये की इतास्त की जा रही हो, हर इन्सान जो कुछ कर रहा हो वह माल की मुहब्बत से कर रहा हो। दूसरे यह कि खबरियात प्रस की पैली की जा रही हो, तीसरे यह कि तुम्हारा ही को हर मामले में तपशील दी जा रही हो और लोग आशरों से गाफ़िल होते जा रहे हों, चौथे यह कि हर राते वाला शख्स अपनी राते पर घमण्ड में मुक्ताला हो जाए, हर शख्स अपने आपको कुल अर्थ का मालक समझ कर दूसरे की बात सुनने समझने से इनकार करे तो तुम अपनी जान की फिक्र करो, अपने आप को दुरुस्त करने की फ़िक्र करो, और आम लोगों को छोड़ दो।

बिगड़े हुए समाज में काम का क्या तरीक़ा इस्लियार करें?

इस हदीस का मतलब बाज़ हज़रत ने तो यह बयान फरमाया कि एक वक़्त ऐसा आयेगा कि जब किसी इन्सान पर दूसरे इन्सान की नसीहत कारगर नहीं होगी, इसलिए उस वक़्त अच्छाई का हुक्का करने और बुराई से मना करने और दावत व तब्लीग का फ़रीज़ा
ख़ास हो जायेगा, बस उस वक़्त इन्सान अपने घर में बैठ कर अल्लाह अल्लाह करे, और अपने हालात की इस्लाम की फिक्र करे, और कुछ करने की जरूरत नहीं। दूसरे जल्दे ने इस हदीस का दूसरा मतलब बयान किया है, वह यह कि इस हदीस में उस वक़्त का बयान हो रहा है जब समाज में चारों तरफ बिगड़ फैल चुका हो और हर शासन अपनी जात में इतना मस्त हो कि दूसरे की बात सुनने को तैयार न हो तो ऐसे वक़्त अपने आपकी फिक्र करो, और आम लोगों के मामले के छोड़ दो। लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि "अच्छे काम का हुक्का और बुराई से मना करने" को पूरी तरह छोड़ दो। बल्कि इसका मतलब यह है कि उस वक़्त "फर्द" की इस्लाम की तरफ "इज़तिमा" की इस्लाम के मुकाबले में तवज्जोह ज़्यादा दो, क्योंकि "इज़तिमा" हकीकत में अफ़राद के मज़बूत ही का नाम है, अगर "अफ़राद" दुरूस्त नहीं हैं तो "इज़तिमा" कभी दुरूस्त नहीं हो सकता, और "अफ़राद" दुरूस्त हैं तो इज़तिमा खुद बख़ूब दुरूस्त हो जायेगा। इसलिए इस बिगड़ को स्वीकार करने का तरीक़ा हकीकत में इन्फ़ारादी इस्लाम और इन्फ़ारादी ज़हीदियह दो रास्ता इस्लाम करने में है, जिस से नशितियों की तामीर हो। और जब शांतियों की तामीर होगी तो भी समाज के अन्दर खुद बख़ूब ऐसे अफ़राद की काजीया में इज़हाफ़ा होगा जो खुद अख़लाका वाले और किरदार के मालिक हों, जिसके नतीजे में समाज का बिगड़ रफ़्ता रफ़्ता ख़ास हो जायेगा। इसलिये यह हदीस दावत व तब्लीग को मन्दूख नहीं कर रही, बल्कि उसका ख़ुद एक तरीक़ा—ए—कार बता रही है।

हमारी नाकामी का एक अहम सबब
बहर हाल, मैं यह अर्ज कर रहा था कि हमारी नाकामियों का बड़ा अहम सबब मेरी नज़र में यह है कि हमने इज़तिमा को दुरूस्त करने की फिक्र में फर्द को खो दिया है, और इस फिक्र में कि हम
पूरे समाज की इस्लाह कराने, फर्द की इस्लाह को भूल गये हैं, और
फर्द को भूलने के मायने यह है कि फर्द को मुसलमान बनने के लिए
जिन तकाज़ियों की जरूरत थी, जिसमें इबादतें भी दाख़िल हैं, जिसमें अल्लाह के साथ ताल्लुक भी दाख़िल है, जिसमें अख़्ताक का पाक़ीज़ा
बनाना भी दाख़िल है, और जिसमें सारी तालीमात पर अमल भी
दाख़िल है, जहाँ सब कुछ पीछे जा चुके हैं, इसलिए जब तक हम
इसकी तरफ वापस लौट कर नहीं आयेंगे, उस वक़्त तक ये तहसीलें
और हमारी ये सारी कोशिशें कामयाब नहीं होंगी, इमाम मालिक रह.
फरमाते हैं कि:

"ليصلح أخر هذه الأمه بما صلح به اولها"

इस उम्मत के आख़री जमाने में इस्लाह भी उसी तरह होगी
जिस तरह पहले जमाने की इस्लाह हुई थी, उसके लिए कोई नया
फारस्मूला वजूद में नहीं आयेगा। और पहले जमाने यानी सहाबा-
ए-किसाम के जमाने में भी फर्द की इस्लाह के रास्ते से समाज की
इस्लाह हुई थी, इसलिए अब भी इस्लाह का वही रास्ता इख़त़ियार
करना होगा।

"अफ़ग़ान ज़िहाद" हमारी तारीख़ का
इन्तिहाई रोशन बाब, लेकिन!

आज हमारी तवज्जोल सियासत की तरफ भी है, रोज़गार की
tरफ भी है, समाजी सिन्दी की तरफ भी है लेकिन फर्द की तामीर
के लिए और फर्द की इस्लाह के लिए इदारे नायाब हैं, इलाह माशा
अल्लाह। इस वजह से आज हमारी तहसीलें कामयाब नहीं हो रही हैं।
kिसी किसी महल्ले पर झकझोर नाकाम हो जाती हैं। यह नाकामी
कभी कभी इसलिए होती है कि या तो ख़ुद हमारे अन्दर आपस में
फूट पड़ जाती है और लड़ाई झगड़ा शुरू हो जाता है। इसकी एक
अफसोसनाक मिसाल हमारे सामने मौजूद है, अफ़ग़ान ज़िहाद हमारी
tारीख़ का इन्तिहाई रोशन बाब है जिसके मुताले से यह वात वाज़ह
होती है कि:

ऐसी चिंतारी थी या रब मेरी खाँकिस्तार में थी।

लेकिन कामकाज़ी की मन्ज़िल तक पहुँचने के बाद जो सूरते हाल हो रही है उसको किसी दूसरे के सामने ज़िंक करते हुए भी शर्म मालूम होती है।

मन्ज़िल से दूर रहने मन्ज़िल था मुलकन
मन्ज़िल करीब आई तो घबरा के रह गया।

आज जिस तरह हमारे अफ़गान भाईयों के अन्दर ख़ाना जंगी (गुह युद्ध) हो रही है, उस पर हर मुस्लिम ने बिना दो रहा है, यह सब कुछ क्यों हुआ? इसलिये कि इस जहाजीहद से जो तकाज़े थे वे हमने पूरे नहीं किए, अगर वे तकाज़े पूरे किए होते तो यह मुक्किन नहीं था कि इस मन्ज़िल पर पहुँचने के बाद दुनिया के सामने जग हंसाई का सच्चाई का सबब बनते।

बहर हाल, सारी तहरीकें अख़िर कार इस महले पर जाकर रुक जाती हैं कि उनमे फर्द की तामीर का हिस्सा नहीं होता और उनमें शक्तिशाल को नहीं संवारा जाता, जिसकी वजह से वे तहरीकें आगे जाकर नाकाम हो जाती हैं।

हमारी नाकामी का दूसरा अहम सबब

हमारी नाकामी का दूसरा सबब मेरी नज़र में यह है कि इस्लाम के तत्तबीकी पहलू पर हमारा काम या तो विल्कुल नहीं है, या कम से कम नाकाफ़ी है, इस से मेरी मुशाद यह है कि एक तरफ़ तो हमने इज़मानिक खत पर इतना ज़ोर दिया कि अमलन इसी को इस्लाम का कुल करार दे दिया, और दूसरी तरफ़ इस पहलू पर जैसा कि उसका हक़ था गौर नहीं किया कि आजके दौर में इसकी तत्तबीक (अनुकूलता) का तरीका-ए-कार क्या होगा? इस तलखनित में न तो हमने उसके हक़ के मुताबिक़ गौर किया न उसके लिए कोई बाक़यदा कोई मन्नुबा तैयार किया, और अगर कोई तरीका-ए-अमल
हर दौर में इस्लाम की अनुकूलता का

tरीका मुख्तलिफ़ रहा है

हम इस्लाम के लिए काम कर रहे हैं, इसके लिए जज़ेजिहद कर रहे हैं, और इसके अमली दौर पर लागू होने के लिए तहरीक चला रहे हैं, लेकिन तहरीक चलाने से पहले और तहरीक के दौरान सब के जेहानों में यह बात हो कि इस्लाम के लागू करने के मायने यह है कि कुरआन और सुन्नत को नाफिज़ (लागू) कर देंगे। और यह कह दिया जाता है कि हमारे पास फ़तावा आलमगीरी मौजूद है, उसको सामने रख कर फ़ैसले कर दिए जायेंगे। हम इस मासूम तस्विर को जहाँ में रख कर आगे बढ़ते हैं, लेकिन यह बात याद रखिए कि किसी "उसूल" का हमेशा के लिये होना अलग बात है और मुख्तलिफ़ हालात और मुख्तलिफ़ जमानों में उस उसूल की तत्त्वक (अनुकूलता) दूसरी है। इस्लाम ने जो अहकाम, जो तालीम, जो उसूल हर अता फसम्याते, वे हमेशा के लिये हैं, और हर दौर के अन्दर कारामद हैं, लेकिन उनको नाफिज करने और बर सरकार लाने के लिए हर दौर और हर जमाने के तकाज मुख्तलिफ़ होते हैं, जैसे मस्तिझ़ पहले भी बनती थी, आज भी बन रही है, लेकिन पहले
इस्लाम की अनुकूलता का तरीका-ए-कार

इसी तरह जब इस्लामी अहकाम को मौजूदा जिन्दगी पर नाफ़िज़ किया जायेगा तो यकीनन इसका कोई तरीक़े का मुताबिक नहीं होगा। अब देखना यह है कि वह तत्त्वीक (अनुकूलता) का तरीका क्या होगा? और अंज हम इस्लाम के उन अ-बदी (हमेशा रहने वाले) उसूलों को किस तरह नाफ़िज़ करेगे? इसके बारे में हम अभी तक ऐसा सोचा समझा मनसूबा और तरीका-ए-अमल तैयार नहीं कर सके जिसके बारे में हम यह कह सकें कि यह पुक़ता तरीक़े कार है। इसके लिए कोशिशें बिला शुबह पूरी इस्लामी दुनिया में और खुद हमारे मुल्क में हो रही हैं, लेकिन किसी कोशिश को यह नहीं कहा जा सकता कि वह हत्मी और आख़री है। और चूंकि ऐसा मनसूबा और तरीका-ए-अमल मौजूद नहीं है इसलिए इसका नतीजा यह होगा कि अगर किसी तहरीक के चलने के नतीजे में फर्ज़ करे इन्कितदार (सत्रा) हासिल भी हो गया तो उसके बाद इस्लाम के अहकाम और उसूलों को पूरी तरह नाफ़िज़ और कायम करने में सक्षम मुश्किलत और मसाइल पैदा होंगे।
नई ताबीर का नुक्ता-ए-नजर गलत है

इस सिद्धांत में एक नुक्ता-ए-नजर यह है कि चुंकि इस दौर के अन्दर हमें इस्लाम को नाफिज़ (लागू) करना है और यह दौर पहले के मुकाबले में बहुत कुछ बदला हुआ है, इसलिए इस जमाने में इस्लाम को अमली तौर पर नाफिज़ करने के लिए इस्लाम की “नयी ताबीर” (यानी इस्लाम के नये मायने बदलने का) की जरूरत है, और बाज़ हल्कों की तरफ से इस नयी ताबीर का मुहाफ़ज़र इस तरह हो रहा है कि इस जमाने में जो कुछ हो रहा है उसको इस्लाम की तरफ से जायज़ होने की सनद देदी जाए, जैसे खूद को हलाल करार दे दिया जाए, “जुए” को हलाल करार दे दिया जाए, शराब को हलाल करार दे दिया जाए, बे-पर्देसी को हलाल करार दिया जाए, गोया कि इस तरह इन सब हराम चीजों को हलाल करार देने के लिए कृपया न देदी की नयी ताबीर की जाए।

यह नुक्ता-ए-नजर गलत है, इसलिए कि इसका हाॅलिल यह निकलता है कि जो कुछ आज हो रहा है वह सब ठीक है, और इस्लाम के नाफिज़ होने के मायने सिर्फ यह है कि इज्तिहाड़ (सच्चा) मुसलमानों के हाथ में आ जाए, और जो कुछ मगरबि की तरफ से हमें पहुँचा है वह ज़ू का तु बाकी और जारी रहे, उसमें किसी तब्दीली की जरूरत नहीं। अगर इस नुक्ता-ए-नजर को दुरुस्त मान लिया जाए तो फिर “इस्लाम के निफ़ज़” की जद्दोजिहद ही बेमानी होकर रह जाती है।

इसलिए मोजूदा दौर में इस्लाम की तत्त्वीक तरीके सोचने के मानने यह नहीं है कि इस्लाम की कांट छांट का काम शुरू कर दिया जाए और उसमें कांट छांट करके उसे पशिची खालाल के सांचे में ठाल दिया जाए, बल्कि मतलब यह है कि इस्लाम के तभाम उसूल और अहकाम अपनी जगह बाकी रहें, उनके अन्दर कोई तब्दीली न की जाए, लेकिन यह बात तय की जाए कि जब इन उसूलों को इस दौर में जारी किया जायेगा तो इस सूरत में इसका अमली तरीके
कार क्या होगा? जैसे तिजारत के बारे में तामाम फिक्री किताबों में इस्लामी उसूल और अहकाम भरे हुए हैं, लेकिन मोजूदा दौर में तिजारत के जो-नये नये मसाइल पैदा हुए हैं, जाहिर है कि इन किताबों में उनका वाजेह और खुला जवाब मोजूद नहीं, उन मसाइल का जवाब कुरआन व सुन्नत और इस्लामी फिक्रे के मुसलम उसूलों की रोशनी में तलाश करना होगा, इस बारे में अभी हमारा काम अधूरा और नाकिस है, जब तक यह काम पूरा नहीं हो जाता उस वक़्त तक हम पूरी तरह कामयाब नहीं हो सकते। इसी तरह सियासत से पुललिक भी इस्लामी अहकाम और उसूल मोजूद हैं, लेकिन हमारे दौर में जब इन इस्लामी अहकाम को नाफिज (लागू) किया जायेगा तो इसकी अन्यल सूरत क्या होगी? इस बारे में भी हमारा काम अभी तक नाकिस और अधूरा है, इस नुक़स की वजह से भी हम कभी कभी नाकामियों के शिकार हो जाते हैं।

खुलासा

बहर हाल, खैर नज़र में ऊपर ज़िक्र किये गये दो बुनियादी सबब हैं, और दोनों का तात्त्विक हकीकत में फ़िक्री अस्बाब से है, पहला सबब फर्द की इस्लाम और शैक्षणिकता की तामीर की तरफ से गफ़लत और इस इस्लां के बग़ैर इज्तिमाई उमूर में दाखिल हो जाना। दूसरा सबब इस्लाम के तत्त्वकी पहलू पर जिस सन्नीदगी से तहकीक की ज़रूरत है, उसका ना काफ़ी होना। ये दो अस्बाब हैं, अगर हम इनको समझने में कामयाब हो जाएं और इनके दूर करने की फ़िक्र हमारे दिलों में पैदा हो जाए और हम इनको बेहतर तौर पर दूर कर सकें तो फिर उम्मीद है कि इस्लाम अल्लाह कामयाब होगी, अल्लाह ताज़ाला अपनी रहमत से वह दिन दिखाए जब ये बेदारी की तहरीकें सही मायने में कामयाब हों।

وأخرج عونانا أن الحمد لله رب العالمين